16, I

नववर्षाङ्क

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

शरदङ्क

वर्ष १६ सं० २०१३



संख्या १ आश्विन

वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्कका मूल्य २)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

दिल्लीमें सहसा डाक कर्मचारियोंकी हड़तालके कारण यह अंक तैयार होने पर भी समय पर डिस्पेच न हो सका।

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।

श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।

श्रीमती सरस्वतीदेवीजी गाडोदिया दिल्ली।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।

श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड सोलन ब्रूरी।

श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)

श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।

श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल, सिल्चर (आसाम)

श्रीमान् ला० रामरत्नदास श्रीकृष्णदासजी, रुईकी मण्डी, दिल्ली।

श्रीमान् ला० बनवारीलाल ओंकारनाथजी, कूचा महाजनी दिल्ली।

श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

★-❀-★

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उपसम्पादक—

आचार्य श्री पं० रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'श्रीस्वाध्याय'के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विनशुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्रशुक्ला १० और आषाढ़शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) और १ प्रतिका १।=) एक रुपया छः आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीच में किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तक के शेष अङ्कों का मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मास का मूल्य ३॥) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।=) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्य में तेरह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्च के अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवाने में ही ग्राहकों को विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डर के कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर के कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिन के अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

[शरदङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति —श्रीराष्ट्रालोक

| वर्ष १६ | सोलन, आश्विन शु० १० रविवार सं० २०१३ वि० | संख्या १ |

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

श्रीस्वाध्यायमहिमा

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

स्वतो नो नेदीयान् भवति न दवीयानपि च यः
स्वयं ज्योतिः स्वात्मा स्वहृदि निरपेक्षो निवसति।
सलभ्योऽलभ्यो वा भवति गदितुं केन सुशको
विना श्रीस्वाध्यायं दलित भव भेदं बुधवराः ॥१॥

चमत्कारं किञ्चिद्रसयति कवेः कर्म परमं
बुधाः प्राहुः काव्यं रुचिररुचिशब्दार्थकलनम्।
अनैवं तत्कर्म व्रजति खलु नो काव्यपदवी-
मिति श्रीस्वाध्यायः प्रभवति रहस्यं गमयितुम् ॥२॥

नववर्षीय-निवेदन

"चरैवेति ! चरैवेति !! चरैवेति !!!"　　"मामनुस्मर युद्ध्य च"

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड-नायिका सृष्टिस्थित्यन्त स्वरूपिणी पराम्बा श्रीदेवताके कृपा कटाक्षावलम्बसे 'श्रीस्वाध्याय' अपने विगत पन्द्रह वर्ष पूर्ण कर अब नवीन वर्षमें पदक्रमण कर रहा है। किसी भी पत्रको पन्द्रह वर्षकी अवधि पूर्ण कर लेना आजके इस भयंकर कालमें साधारण बात नहीं है। आज नववर्षारम्भकी इस परमपावन वेलामें आवश्यक है कि हम अपना पिछला लेखा जोखा आंककर नवीन वर्षके लिए नया कार्यक्रम विचार करें। जहां तक पिछले पन्द्रह वर्षोंका प्रश्न है ये वर्ष संसारभरके लिए अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। जिन दिनों 'श्रीस्वाध्याय' का जन्म हुआ, हमारा राष्ट्र परतन्त्रताके अभिशापसे ग्रस्त था, द्वितीय महायुद्धने विश्व पर व्यापक प्रभाव डाल रखा था। सर्वत्र अशांति, उद्विग्नता, भय और विचित्र प्रकार की कसमसाहट व्याप्त थी। राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके साथ ही पाकिस्तानका निर्माण, भीषण नरमेध, राष्ट्र सुपुत्र महात्मा गांधीकी असामयिक हत्या, विस्थापितोंकी समस्या आदि आदि कितनी ही विभीषिकाएं इस बीचमें आईं। जिन सबका स्मरण मात्र अब भी रोमांचक है। ऐसे दुर्दान्त कालमें जिसकी प्रतिच्छाया अभी तक मिटी नहीं है, बड़े बड़े साधन सम्पन्न पूंजीपतियोंके प्रश्रयतले पनपने वाले बहुत से पत्र रुक गए या सर्वदाके लिये बन्द हो गए, उस समयमें भी बिना किसी विशेष आर्थिक सहायताके कुछ अङ्गुलिगणनीय लोगोंके सहयोग-सम्बलसे जो अब भी कुल मिलाकर 'शाकाय वा स्याल्लवणाय वा स्यात् !' से अधिक नहीं है 'श्रीस्वाध्याय'का यह दीप स्थिर बना, उन झञ्झावातोंमें भी अपनी ज्योति बिखेरता रहा, इसे कोई दैवी प्रेरणा वा संकेत न कहकर और क्या कहा जा सकता है।

जब जब 'श्रीस्वाध्याय' की नाव भँवरमें फँसी, तूफानोंमें टकराने लगी, और दीपशिखा धुंधली होने लगी कोई न कोई अज्ञात शक्ति इसे संभालती रही यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है। कारण चाहे कुछ हो, किन्तु मूलमें हम इसे इसके संस्थापक पूज्यपाद अनन्तश्रीविभूषित महामहिम आचार्य अमृतवाग्भवचरणकी सहज सुलभ कृपा और शुभाशीर्वादकी ही पुण्य-प्रभा मानते हैं, जो सदैव इसे आलोकित करती रही और आगे भी करती रहेगी।

जहां तक 'श्रीस्वाध्याय' की उपयोगिता और अनुपयोगिताका प्रश्न है इसका निर्णय तो हम अपने विद्वान् पाठकों पर ही छोड़ते हैं, किन्तु इतना अवश्य हम अपनी ओरसे निवेदन करना उचित समझते हैं कि इस बीचमें 'श्रीस्वाध्याय' की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ी ही है घटी नहीं। इसके अतिरिक्त व्यावहारिक दृष्टिसे भी हमने जैसा पहले निर्धारण किया था उसी अनुपातसे विशेषांकोंका क्रम चालू रखा है। और वर्षभरमें उतने ही पृष्ठोंको भी देनेका प्रयत्न किया है—फिर भी वार्षिक मूल्य समयकी महर्घता भीषणता एवं अपने स्वल्प साधनों पर ध्यान देते हुए कोई विशेष नहीं रखा है। आज भी हिन्दी संसारमें ऐसा प्राणवान् सांस्कृतिक साहित्यिक व महत्वपूर्ण इतना सस्ता पत्र स्यात् ही कोई दूसरा हो। बहुतसे पत्र चलते हैं और वार्षिक मूल्य लेकर भी वर्षमें दो दो तीन-तीन अंकोंका एक संयुक्तांक निकाल डालते हैं अथवा चाहे जैसे इधर उधरके उचित अनुचित विज्ञापनोंको बटोर कर जैसी तैसी सामग्री जनताको सौंप देते हैं जो न केवल उनकी ही महत्ताको कम करती है, प्रत्युत सरल पाठकोंको भी लाभ पहुँचानेकी अपेक्षा हानि ही अधिक पहुँचाती है।

जब तक जन-मानसको अच्छे स्वस्थ विचारोंका उचित खाद्य नहीं मिलेगा, न तो उनका स्तर ही ऊंचा उठेगा और न वे अपनी सर्वाङ्गीण समुन्नतिके हेतु अग्रसर ही होंगे—विश्व कल्याणकी स्वार्थसे परमार्थकी—अपनी इस मान्यताका हमने यथाशक्ति पालन करनेमें प्रयत्न किया है और कर रहे हैं—हम नहीं जानते कि हम इसमें कितने सफल हुए हैं। किन्तु हमारे सामने केवल एक ही लक्ष्य मन्त्र है, चरैवेति ! चरैवेति !! चरैवेति !!! अर्थात् चलते चलो ! चलते चलो !! चलते चलो !!!

निःसीम गगनमें रात्रिन्दिव परिभ्रम्यमाण ये ग्रह उपग्रह और नक्षत्र पिंड अपनी गतिसे किसी अनिर्दिष्ट प्रेरणावश अविराम चल ही तो रहे हैं और इस भचक्रपर जिसकी

ओर ही हमारी सतत दृष्टि रहती है, हम भी देखते हुए अपने इस कर्त्तव्य पथ पर चल रहे हैं। जहां तक हमें ज्ञात है अभी तक सही दृष्टिकोणसे अपने कार्यके प्रति ईमानदारीकी भावनाका हमने पालन किया है।

पर साथ ही हमारे इस प्रयासमें जो त्रुटियां हैं हमें उनका भी भान है और उनके प्रति हम सतर्क भी हैं। जैसे 'श्रीस्वाध्याय' के निर्धारित पांचों स्तम्भों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और इतिहासमें सभी स्तम्भोंकी सामग्री जैसी प्रत्येक अंकमें जानी चाहिए नहीं जा पा रही है। इस सामग्रीके अतिरिक्त अनेक लेखोंमें यथा स्थान चित्र आदि का भी अभाव जानबूझ कर दूर करनेमें हमें अक्षम रहना पड़ा है। पत्रके स्तरको भी हम और उन्नत करना चाहते हैं। देशी विदेशी बहुतसे विद्वानोंके लेख, एवं अन्य भाषाओंमें लिखित साहित्यको भी अनूदित करा प्रकाशित करने एवं तदुपयोगी पारिश्रमिक जुटा सकनेमें भी हम असमर्थ रहे हैं। किन्तु ये हमारी विवशताएं क्यों हैं इससे भी हमारे विज्ञ पाठक सुपरिचित हैं। हमारी इच्छा है कि 'श्रीस्वाध्याय' शीघ्र ही त्रैमासिकसे मासिक हो और इससे भी अच्छे सुन्दर रूपमें निकलता रहे, किन्तु जब हम इन बातोंको सोचते हैं और अपनी वर्तमान स्थितिका अवलोकन करते हैं तो हमें एक बात स्मरण हो आती है कि मयूर अपने पंखोंकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर नृत्य तो करता है, किन्तु पैरोंकी ओर देखकर विषादसे खिन्नमनस्क हो जाता है—ठीक वही स्थिति हमारी हो जाती है।

इसलिए अब आज नववर्षारम्भकी इस नवीन घटीमें हम कोई नवीन संकल्प करनेकी स्थितिमें नहीं हैं और न कोई योजना ही उपस्थित कर सकते हैं, फिर भी इतना अवश्य है कि यदि इस निवेदन पर ध्यान देकर आर्य संस्कृति प्रिय-मनस्वी हमारे कृपालु पाठकोंने इन पंक्तियोंके मर्म पर ध्यान देकर क्रियात्मक सहयोग देनेका कष्ट किया तो हम इस पत्रको अपनी ओरसे सर्वथा सर्वाङ्ग सुन्दर बनानेका प्रयास करनेमें कोई कसर न उठा रखेंगे।

हम तो अपनी ओरसे भगवान् श्रीकृष्णके वाक्य "मामनुस्मर युद्ध्य च" का अनुसरण कर कर्त्तव्यपालन कर रहे हैं और यही वाक्य हमारी प्रेरणाका स्रोत बनकर हमारे प्रत्येक श्वासमें व्याप्त है।

अन्तमें हम अपने उदारमना सहज-करुण उन सभी संरक्षक सहायकों, विद्वान् लेखकों ग्राहकों तथा सहयोगियोंके प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं जिनके इस प्रकारके सहयोगके बिना हम अपने अतीतकी इस स्थिति तक पहुंचनेमें असमर्थ रह पाते। हमें आशा है कि आगे भी वे सभी महानुभाव इसी प्रकार हमें सहयोग देकर अनुगृहीत करते रहेंगे। जिससे हम उनकी और अधिक सेवा कर सकें। हमारी कामना है —

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा !
भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगै स्तुष्टुवाम सस्तनूभि-
र्व्यशेम हि देवहितं यदायुः॥

नये सहायकोंका अभिनन्दन

दिल्लीकी सुप्रसिद्ध राष्ट्रकार्यकर्त्री श्रीमती सरस्वती देवीजी गाडोदिया (धर्मपत्नी श्रीमान् सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया) श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल सिल्चर, श्रीमान् सेठ जौहरीमल्लजी (श्रीरामरत्नदास श्रीकृष्णदास रुईकी मण्डी दिल्ली) और श्रीमान् सेठ बनवारीलालजी (बनवारीलाल ओंकारनाथ कूचा महाजनी दिल्ली) ने इस १६वें वर्षसे 'श्रीस्वाध्याय' का सहायकत्व स्वीकार कर भारतीय साहित्य संस्कृति एवं ज्योतिर्विज्ञान-प्रचार कार्यमें सहयोग दे अपनी गुणज्ञ उदारताका परिचय दिया अतः हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए आशा करते हैं कि भविष्यमें भी आपके द्वारा राष्ट्र धर्म एवं पुरातन साहित्य संस्कृतिकी उत्तरोत्तर अधिक सेवा होती रहेगी।

श्रीमती सरस्वती देवीजी गाडोदिया पुरानी राष्ट्रसेविका हैं। स्व०श्री महात्मा गांधीजी,स्व०सेठ जमनालालजी बजाज आदि उच्च कांग्रेस नेताओंके सम्पर्कमें भी आप रही हैं। अनेक सार्वजनिक संस्थाओंको आपका सक्रिय सहयोग प्राप्त है। भारतीय सनातन-संस्कृति सभ्यता और सादगीकी प्रतीक आप एक आदर्श महिला रत्न हैं। श्री सेठ गयाप्रसादजी, श्री बनवारीलालजी और श्री जौहरीमल्लजी भी परमधार्मिक उदारमना महानुभाव हैं। आपका विशेष परिचय आगामी अंकमें प्रकाशित किया जावेगा।

इस अंकमें पृष्ठ ३३ से ६४ तकके प्रूफ मैं स्वयं नहीं देख सका अतः छपनेमें अक्षर मात्रा सम्बन्धी कोई त्रुटि हो तो विज्ञ पाठक सुधार लेवें।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादकीय विचार—

भारतकी एकता संकटमें

संं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि ।
अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि ॥ (अ० ६—९४—१)
यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यं चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ (यजु० २०-२५)

राष्ट्रिय एकताके लिए मन और संकल्पकी एकता आवश्यक है। मन और संकल्पकी एकता ही कर्ममें एकता उत्पन्न करती है। प्रधानमंत्री श्री नेहरूने भी अनेक बार इस बात पर बल दिया है कि देशकी एकताको अक्षुण्ण रखनेके लिए देशमें मानसिक और विचारकी एकता आवश्यक है। सारे देशमें एक व्यापक अनुभूति होनी चाहिए कि हम सब भारत रूपी विराट् शरीरके एक अंग हैं। इसी अनुभूतिका आज अभाव है, इस सत्यको छिपानेसे कोई लाभ नहीं है।

भारत एक लौकिक व ऐहिक राज्य है। इस देशकी एकताको पहले धार्मिक भावना और संस्कृतिकी एकता, ये दो तत्त्व इसको बल देते थे। ये दोनों तत्त्व आज भी विद्यमान हैं। किन्तु ये दोनों तत्त्व देशमें राजनीतिक एकता कभी उत्पन्न नहीं कर सके। आज देश एक राजनीतिक एकता का अनुभव कर रहा है। किन्तु इसका आधार दृढ नहीं है। इस एकताका आधार भारत देशके प्रति सर्वोपरि प्रेम ही हो सकता है, अन्य कुछ नहीं। भारतके प्रति प्राचीन लोगों में कितना प्रेम था यह निम्न पद से प्रकट है :—

"गायन्ति देवाः किल गीतकानि
　　धन्यास्तु ये भारत भूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गाश्च हेतु भूते
　　भवन्ति भूयः पुनः सुरत्वात् ॥"

श्रीमद्भागवत पुराणकी यह भावना आज देशके प्रत्येक व्यक्तिमें प्रबल रूपसे विद्यमान नहीं है, यह पिछले कुछ मासोंकी घटनाओंने स्पष्ट कर दिया है।

प्रवाहमें

लौकिक व ऐहिक राज्यकी कल्पनाने आज भी देश के एक वर्गमें स्थान नहीं पाया है, यह "रिलीजियस-लीडर्स" नामक पुस्तकको लेकर उठाए गए आन्दोलनने स्पष्ट कर दिया। सरकार इस बारेमें सोती रही और एक देशव्यापी आन्दोलन सहसा देशमें उठ खड़ा हुआ, यह आश्चर्यकी बात है! "कौआ कान ले गया" जैसा ही यह आन्दोलन था, जैसा कि उत्तरप्रदेशके मुख्यमंत्री डा० सम्पूर्णानन्दने कहा है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि देवबन्द-मुस्लिम-जमीयत और विदेशी एजेण्ट इतने विराट रूपमें भारत विरोधी आन्दोलन खड़ा करनेमें सफल कैसे हुए और क्यों हुए? एवं इसके प्रवाहमें कांग्रेसी और राष्ट्रिय समझे जाने वाले मुसलमान नेता भी क्यों बह गए? और अनेक जगह वे इसके नेताके रूपमें क्यों प्रगट हुए!

तर्क और बुद्धिको अन्ध विश्वासमें कदाचित् कोई स्थान प्राप्त नहीं है। अतः यह कहनेसे कोई लाभ नहीं कि विद्याभवनसे प्रकाशित पुस्तक पन्द्रह वर्ष पहले प्रकाशित हुई थी और किसी भी इस्लाम-भक्तने इसके विरुद्ध पहले कभी कुछ नहीं कहा। इसी प्रकार यह कहनेसे कोई भी लाभ नहीं कि पाकिस्तानके शिक्षणालयोंके पाठ्य क्रममें मि० डेविस लिखित "आऊट-लाइन-आफ-वर्ल्ड हिस्ट्री" रखी रही, जिसमें पैगम्बरका चरित्र-चित्रण 'रिलीजीयस-लीडर्स' की अपेक्षा भी अधिक कुत्सित रूपमें चित्रित किया गया। यही क्यों इसका उल्लेख करनेसे भी कोई लाभ नहीं कि अमरीकाके प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'टाइम' ने उस अंशको प्रकाशित करना उचित समझा जिस पर भारतके

मुसलमानोंने पाकिस्तानके संकेत पर आपत्ति उठाना उचित समझा। यहां महत्वको और विशेष रूपसे ध्यान देने योग्य बात यह है कि भारतीय मुसलमान नौ वर्ष बाद भी अपनी भक्ति, श्रद्धा और निष्ठाके लिए प्रथम स्थान भारत को नहीं इस्लामको देते हैं, जोकि उनका वैयक्तिक विश्वास का विषय होना चाहिए था। भारतीय मुसलमानोंके हृदय और मनमें सर्वतोपरि स्थान भारतके लिए होता, तो बड़े से बड़े प्रलोभन और बड़ीसे बड़ी उत्तेजनाके होते हुए भी भारत विरोधी आन्दोलनमें सम्मिलित नहीं होते।

क्या निरापद् है?

ऐहिक व लौकिक राज्यका आधार परधर्म-सहिष्णुता है। दूसरेके अपनेसे भिन्न विचारोंके प्रति जब तक आदरका भाव न होगा, तब तक सहिष्णुता भी उत्पन्न न होगी। किसी भी धर्म संस्थापककी निन्दा करना ठीक नहीं है। किन्तु यदि मुसलमानोंका यह आग्रह करना कि वे जिस रूपमें अपने पैगम्बरको देखते हैं, सब लोग उसी दृष्टिसे उनको देखें, विचार स्वतंत्रता पर कुठाराघात करना है। भारतके विभिन्न नगरों और कस्बोंमें उस पुरानी पुस्तकके नाम पर जो उपद्रव हुए उसके पीछे यही भावना काम कर रही थी। आश्चर्यकी बात यह है कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालयके छात्रों और कुछ प्रोफेसरोंने भी इसमें योग दिया और उत्तेजनाकी आग भड़कानेके लिए अलीगढसे बाहर भी गए। विश्वविद्यालय ज्ञान और सहिष्णुताका केन्द्र होना चाहिए। किन्तु इसकी स्थापना की नींवमें ही संशय भय और असहिष्णुता है। आज भी यह विद्यमान है। प्रश्न यह हैकि देशके ४,२०,००,००० लोगोंमें जब इस प्रकारकी भावना विद्यमान है, तब क्या भारतकी शान्ति और एकता निरापद् रह सकती है?

क्या उपेक्षणीय है?

द्विभाषी बम्बई राज्य बनानेके निर्णयकी गुजरातमें जैसी प्रतिक्रिया हुई वह आज भी चिन्ताका विषय बनी हुई है। भाषावार राज्य या प्रान्त बनानेकी कल्पना दूषित है, भारतीय राष्ट्रीयताका विरोधी है, क्षुद्र भावनाओं और जातीय भावनाओंको पुष्ट करने वाली है यह अल्पकालके ही अनुभवने बता दिया है। किन्तु संसदके निर्णयका गुजरातके कुछ पथभ्रष्ट युवकोंने जिस रूपमें महागुजरातके नाम पर विरोध करना उचित समझा और प्रान्तकी शान्ति को भंग कर दिया उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। विरोधकी एक सीमा है, और उसका एक ढंग है। किन्तु संसदीय प्रणालीकी शासन पद्धतिमें अपनी बात मनवाने और अपना मत प्रकट करनेके लिए हिंसा और बलका आश्रय लेना किसी भी अवस्थामें उचित नहीं है और इसका समर्थन नहीं किया जाता। किन्तु विरोध करनेके लिए इसका आश्रय लिया जाता है और यह एक ही प्रान्त तक सीमित नहीं है। बिहार इसका अपवाद कहा जा सकता है जिसने अंग भंगको शान्तभावसे स्वीकार कर लिया है और यह इस बातका सूचक है कि हमारा राष्ट्र अभी परिपक्व अवस्थामें नहीं पहुंचा है। काहिराके लिए प्रस्थान करनेसे पूर्व भारतके प्रतिनिधि श्रीमेननने देशको चेतावनी देना उचित समझी कि उनका शान्तिदूतत्व उसी समय सफल हो सकता है, जब देशमें शान्ति रहेगी। अपने मतको मनवानेके लिए हिंसा, उत्पात, उपद्रव और प्रदर्शनोंका आश्रय लेना इस बातका सूचक है कि उनका पक्ष युक्ति शून्य है, उसको तर्क और प्रमाणका बल प्राप्त नहीं। श्री मुरारजी देसाईके सात दिनके अनशनके बाद भी महात्मा श्री गांधीजीकी महानगरी अहमदाबादमें ऐसा वातावरण उत्पन्न नहीं हो सका कि बम्बईके मुख्यमंत्री अपनी बात जनताको शांतिसे सुना सकें, उनकी सभा पर पत्थरोंकी वर्षा न हो, जनताको बलात् सभामें जानेसे रोका न जाय, और प्रधानमंत्री श्रीनेहरूको ६० मिनट बोलने दिया जाय और छात्र ध्यानसे उनकी बात सुन तो लें, नारे न लगाएं, सभामें गड़बड़ न करें। राजनीतिक शस्त्रके रूपमें उपवासका प्रयोग करना कितना अर्थ शून्य है, यह इस घटनाने प्रकट कर दिया है। इन घटनाओंने हमारे राष्ट्रिय रोगको प्रकट कर दिया है। यह कहकर इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि भावी निर्वाचनका विचार कर राजनीतिक पार्टियोंने इन उपायोंका अवलम्बन किया है। हमें अभिमान है कि हम परमत सहिष्णु हैं! किन्तु हमारा यह अभिमान कितना खोखला है, यह १७ जनवरी १९५६ से १६ अगस्त १९५६ तक देशके विभिन्न भागोंमें राज्य

पुनर्गठन के सम्बन्धमें हुई घटनाओंने प्रकट कर दिया है।

विजयानगरम्

भाषावार प्रान्तोंने जातीय भावनाको उग्र कर दिया है, यह नए राज्योंके मुख्य मंत्रियोंके चुनावके लिए हुए प्रचार और संघर्षने प्रकट कर दिया है । तामिलनाडमें आज ब्राह्मणोंकी जो अवस्था है वह कल्पनातीत है। वे मंत्रि-मण्डलमें ही स्थान पानेके अधिकारी नहीं माने जाते, किंतु उनके लिए अपने राज्यमें उच्च शिक्षा पाना भी कठिन हो रहा है । ब्राह्मण-विरोधी भावना और कट्टरताके ही कारण राजाजीको मुख्यमंत्री पदसे हटना पड़ा । आन्ध्रमें यह दृश्य न देखना पड़े इस विचारसे हैदराबादके मुख्यमंत्री श्री रामकृष्णरावने नए आंध्रके मुख्यमंत्री पदके लिए अपना दावा तक प्रस्तुत करना उचित नहीं समझा। यही नहीं उन्होंने प्रान्तीय राजनीतिसे भी संन्यास ले लिया है और अब वे लोकसभाके सदस्य होंगे । किन्तु इससे संघर्ष रुका नहीं। मुख्यमंत्री पदके लिए 'कम्मा' और 'रेड्डी' दोनों ही चाहते हैं कि उनकी जातिका ही व्यक्ति विशाल आंध्रका प्रथम मुख्यमंत्री हो। कर्णाटकमें भी यही प्रश्न वीरशैव और लिंगायतोंको परेशान कर रहा है । इन आन्दोलनोंमें प्रकट मनोवृत्ति भयंकर है और अवांछनीय है, इसको आंध्र और कर्णाटकके कुछ वृद्ध नेताओंने अनुभव किया है। वे यह मानते हैं कि एक भाषी राज्य ठीक नहीं और द्विभाषी राज्य होने चाहिएं। इससे केन्द्रमें भी उनकी बात ध्यानसे सुनी जायगी। अतः उनका प्रस्ताव है कि आन्ध्र और कर्णाटकको मिलाकर विजयानगरम् नामसे नया राज्य स्थापित किया जाय । विजयागरम् राज्यमें आन्ध्र और कर्णाटक दोनों थे। कुलनूरके पाससे बुद्धकी प्रतिभा मिली है। यह १६ वीं शतीकी है। इस पर आदि कन्नड़ भाषामें प्रतिमाका परिचय लिखा हुआ है । कुरनूल इस समय आन्ध्रकी तीन वर्षसे राजधानी है। इससे प्रकट है कि आंध्र और कर्णाटकको मिलाने वाले तत्वोंका अभाव नहीं है । आवश्यकता है कि इन तत्वोंको दृढ़ किया जाय और उनको पुष्ट किया जाय । क्योंकि देशकी एकताकी दृढ़ताके लिए यह आवश्यक है। देशकी एकता उसी समय रह सकती है जब 'ब्रह्म' और 'क्षत्र ज्ञानी और शूर दोनों मिलकर काम करें। अतः द्विभाषी राज्योंकी कल्पनाका परित्याग न करना चाहिए अपितु इसको जीवित रखना चाहिए। यद्यपि यह एक दुःखान्त घटना मानी जायगी और यह कुछ विरोधाभाष प्रतीत होगा एवं हास्यास्पद भी अनुभव होगा कि द्विभाषी बम्बईके निर्माणके लिए २०० वर्षोंसे चले आ रहे त्रिभाषी राज्य हैदराबादको भाषाके आधार पर तीन विभागोंमें विभक्त कर दिया गया और १०० वर्ष पुराने द्विभाषी मध्यप्रदेशके राज्यको विभक्त कर दिया गया !

संस्कृत आयोग

भारत सरकारके शिक्षा-मंत्रालयने राज्योंसे पूर्व परामर्श किये बिना ही संस्कृत आयोगके सदस्योंकी नामावली घोषित कर दी। अखिल भारतीय संस्कृत-साहित्य सम्मेलन ही इससे वितुष्ट नहीं है, किन्तु उत्तरप्रदेशके मुख्यमन्त्री श्री सम्पूर्णानन्दने भी इसकी नियुक्ति पर क्षोभ और आश्चर्य प्रकट किया है। निस्सन्देह केन्द्र राज्योंसे आयोगकी नियुक्तिसे पहले परामर्श करनेके लिए बाध्य नहीं है । किन्तु केन्द्रको राज्योंका सहयोग अपेक्षित है । इस कारण यदि उनसे परामर्श करके आयोगके सदस्य चुने जाएँ तो कोई हानि न होगी, अपितु लाभ ही होगा और राज्य केन्द्रके साथ अधिक सहयोगके साथ काम करेंगे।

दूसरी बात यह है कि संस्कृतके अध्ययनके जो स्थान आज भी केन्द्र हैं—उत्तरप्रदेश राजस्थान बिहार मध्यप्रदेश मध्यभारत—वहांका एक भी व्यक्ति इस आयोगमें नहीं लिया गया है। असन्तोषका मुख्य कारण यही है। आयोगके सदस्योंकी संख्या बढ़ाकर यह शिकायत दूर की जा सकती है।

संस्कृत-आयोगसे हमारा भी एक निवेदन है। संस्कृतके अध्ययन और शिक्षणकी अवस्थाका मनन करते हुए और इसके अध्ययनको व्यवस्थित करनेके उपाय बताते हुए वह ज्योतिषको न भूले । ज्योतिर्विज्ञान वेदका मुख्य अंग और एक उपवेद है । अतः इसकी शिक्षाको भी संस्कृत शिक्षामें स्थान मिलना चाहिए । संस्कृत आयोगके अध्यक्ष डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्यासे हम निवेदन करना चाहते हैं कि संस्कृतका पठन-पाठन उस समय तक अधूरा रहेगा जब तक उसमें ज्योतिष-शास्त्रके अध्ययनको सम्मिलित न किया जायगा। आशा है संस्कृत आयोगके सदस्य हमारे निवेदन पर उचित ध्यान देंगे।

—

सप्तसती-माहात्म्य

[लेखकः—आचार्य श्रीरमानन्द सारस्वत शास्त्री]

[निखिल-भुवन-नायिका सकल प्रपञ्च बीज-रूपा पराम्बा महामाया जगदम्बाके महास्तोत्रोंमें सप्तशती स्तोत्र प्रमुख है। इस स्तोत्रकी अधिष्ठात्री जगदम्बा पूर्णषोडशी महात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या हैं। इन महाशक्तिके इच्छा, ज्ञान, क्रिया, अथवा रौद्रा ज्येष्ठा और वामा स्वरूपोंका विवेचन ही तीनों चरित्रोंमें त्रिगुण रूपोंमें हुआ है। सृष्टि स्थिति और संहार चक्रोंके इसी त्रिपुरका प्रतिपादन इस स्तोत्रका अन्तर्निहित लक्ष्य है। इसी त्रिगुणात्मिकाके युगल रूपों सहित मूल विद्याको 'सप्तसती' रहस्य गर्भित शब्दोंमें संकलित किया है। इसी त्रिगुणका त्रिगुणरूप 'नवदुर्गा' है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि विविध रहस्यमयी परिभाषाओंसे युक्त इस महास्तवराजका माहात्म्य अनन्त है और इसका सम्यगनुष्ठान करनेसे भुक्ति मुक्ति करतलगत होना अनुभूत विषय है।

इस लेखमें विद्वान् लेखकने उन्हीं सात सतियों अथवा महाशक्तियोंके शास्त्रीय पद्धतिमें प्रचलित नामोंका उल्लेखन किया है। लेख सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण होनेसे इन शारदीय नवरात्रियोंके अवसर पर हम अपने विद्वान् पाठकोंको यह लेख सहर्ष समुपहृत करते हैं।

—सम्पादक]

भारतवर्षमें चिरकालसे महामाया पराशक्ति जगदम्बा की आराधना विविध रूपमें प्रचलित है। उन समस्त उपासना प्रकारोंमें 'सप्तसतीस्तोत्र' का पाठ एवं तदन्तर्गत मन्त्रोंका जप एवं अनेक विधिके प्रयोग कितने ही प्रकारों से प्रचलित हैं। इस लेखमें उसी स्तोत्रके माहात्म्यका कुछ वर्णन करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

'सप्तसती स्तोत्र' वैसे तो मार्कण्डेय पुराणमें मिलता है, किन्तु आगम शास्त्रोंके सूक्ष्म विचारसे पता लगता है कि यह वेदका भाँति अपौरुषेय ही है और पुराणमें इसका संग्रह मात्र प्रकरणवश हो गया है। भुवनेश्वरीतंत्रमें लिखा है—

यथा वेदो ह्यनादिर्हि तद्वत् सप्तशती स्मृता।

इसी प्रकार मेरुतंत्रमें भी आया है कि सप्तशती स्तोत्रका वेदोंकी भांति व्यास भगवान्के हृदयमें स्फुरण होनेसे उन्होंने इसका प्रकाशमात्र किया है।

"सप्तसत्या सकलं तत्वं वेद्म्यहमेव हि।
पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्यर्धं तु प्रजापतिः॥
व्यासस्तुर्यांशकं वेत्ति कोट्यंशं हीतरेजनाः॥"

तात्पर्य यह है इसके सूत्र इनसे पहले भी प्राप्त होते हैं। डामरतन्त्रमें इसकी महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा गया है :—

"यथाश्वमेधः क्रतुषु देवेषु च यथा हरिः।
स्तवेष्वपि सर्वेषु मुख्यः सप्तशती स्तवः।
नातः परतरं स्तोत्रं किंचिदस्ति वरानने।
भुक्ति मुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम्॥"

इन सबसे यह भली भांति ज्ञात होता है कि इस स्तोत्र में अन्य स्तोत्रोंकी अपेक्षा कुछ वैशिष्ट्य है। यही कारण है कि इस नास्तिक्यके युगमें भी लाखों लोग इसका पूरा आधा या थोड़ा पाठ स्वयं नित्य करते अथवा कराते हैं। इस स्तोत्रका यों तो प्रतिदिन पाठ ही शुभफल प्रद है, किंतु शारदीय नवरात्रोंमें विशेष रूपसे यह फलदायक है। लिखा है—

"शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः॥"

भाव यह है कि शारदीय नवरात्रियोंमें महामायाकी महापूजा कर यदि इस स्तोत्रका पाठ किया जाय तो अत्यन्त पुण्य होता है। इस स्तोत्रको अधिकतर लोग 'सप्तशती स्तोत्र' कहते हैं, किन्तु इसका एक असली नाम और भी

शास्त्रोंमें मिलता है जो है 'सप्तसती'। सात सौ श्लोक रूपी मन्त्रोंका संग्रह होनेसे अथवा सात सौ प्रयोगोंका इस स्तोत्रमें वर्णन होनेसे 'सप्तशती' नाम भी वैसे तो अन्वर्थ ही है। उन सात सौ प्रयोगोंका विवरण इस प्रकार है—

"प्रयोगाणां तु नवति मारणे मोहनेऽत्र तु।
उच्चाटे स्तम्भने वापि प्रयोगाणां शतद्वयम्॥
मध्यमेऽथ चरित्रे स्यात्तृतीयेऽथ चरित्रके।
विद्वेषवश्ययोश्चात्र प्रयोगारिकृते मताः॥
एवं सप्तशतं चात्र प्रयोगाः संप्रकीर्तिताः
तस्मात्सप्तशतीत्येवं प्रोक्तं व्यासेन धीमता॥

अर्थात् कुल मिलाकर इस स्तोत्रमें मारणके ९०, मोहन के ९०, उच्चाटनके दो सौ, स्तंभनके सौ तथा साठ साठ प्रयोग विद्वेषण और वशीकरणके इस प्रकार सात सौ कुल प्रयोग वर्णित हैं। इसीलिये चिदम्बर संहिता में इसे—

"तस्मिन् देव्याः स्तवे दिव्ये मन्त्राः सप्तशतं प्रिये!
तस्मात्सप्तशती नाम स्तवं परमदुर्लभम्॥"

इन शब्दोंमें 'सप्तशती' कहा गया है। किंतु यह तो हुआ अन्वर्थ नाम करण। इस स्तोत्रका वास्तविक द्वितीय नाम 'सप्तसती' है। क्योंकि इसमें सात सतियोंका या देवियोंका वर्णन है। इन सात सतियोंकी अथवा देवियोंकी उपासना क्रमशः ब्रह्मा, इन्द्र, गुरु, शुक्र, विष्णु, रुद्र, और असुर इन्होंने की थीं। ये सात देवियाँ इन सातोंकी उपास्य देवताएँ थीं—उन सातोंका स्तवन ब्रह्मा द्वारा किया गया—उसका ही भगवान् व्यासने अपने शब्दोंमें वर्णन किया है। इस समय प्राप्त सप्तशती स्तोत्र 'षट्सूत्री सम्वाद' में परिगणित किया जा सकता है। इन सात देवियोंके चरित्रानुसार तीन-तीन रूप भी हैं, और उनकी मूलाधिष्ठात्री 'महालक्ष्मी' है। इस प्रकार त्रिगुण तत्वका एकविंशात्मिका युक्त प्रकृत्यात्मक स्वरूप इस स्तोत्रमें वर्णित है। इन सात देवियोंके नाम इस प्रकार हैं—

प्रथम चरित्र में—१ काली, २. तारा ३. छिन्न मस्ता ४. सुमुखी ५. भुवनेश्वरी ६. बाला ७. कुब्जा।

द्वितीय चरित्र में—१. लक्ष्मी २. ललिता ३. काली ४. दुर्गा ५. गायत्री ६. अरुन्धती ७. सरस्वती।

तृतीय चरित्र में—१. ब्राह्मी २. माहेश्वरी ३. कौमारी ४. वैष्णवी ५. बाराही ६. नारसिंही ७. चामुण्डा या शिवा। कहीं कहीं ऐंद्री या इन्द्राणीका भी परिगणन किया गया है, वहां चामुण्डा मूल प्रकृति रूपमें वर्णित है। इस प्रकार तीनों चरित्रोंमें कुल २१ देवियोंके माहात्म्य या प्रयोग संगृहीत किये गये हैं। इन देवियोंमें भी जिन सात मूल देवियोंका वर्णन आया है, वे इस प्रकार हैं—१. नन्दा २. शताक्षी ३. शाकम्भरी ४. भीमा ५. रक्तदन्तिका ६. दुर्गा ७. भ्रामरी ये ही तत्वतः इस स्तोत्रकी अधिष्ठात्री देवियां हैं। इनके ही नाम पर इस स्तोत्रको 'सप्तसती स्तोत्र' कहा गया है, इस रहस्यका निदर्शन मेरुतन्त्र के निम्न वचनोंमें मिलता है—

"महाविद्येत्यादि सत्यः सप्तकल्पे तथादिमे।
ब्रह्मेन्द्र गुरुशुक्राणां विष्णुरुद्रसुरद्विषाम्॥
उपास्या देवता जातास्ताश्चात्र ब्रह्मणा स्तुताः।
तस्मात्सप्तसतीत्येव व्यासेन परिकीर्तिता॥"

आदि।

इस प्रकार पता लगता है कि आदिम कल्पमें इन सात शक्तियोंने प्रादुर्भूत होकर संसार चक्रका प्रवर्तन किया और अपना विशिष्ट तेजोंश इस धरतीतल पर प्रसारित किया। इस स्तोत्रसे इसी हेतु सद्यः समस्त कामनाओंकी परिपूर्ति होती है।

इस स्तोत्रके अनेक प्रकारसे अनेक पाठ आदिके भेद प्रचलित हैं। जिनमें गौड़, केरल तथा काश्मीर मुख्य हैं। इन सबका विवेचन प्रकृत विषयसे बहिर्भूत है। हां, प्रसङ्गोपात्त इतना वर्णन आवश्यक लगता है कि इसके मुख्यतः दो प्रकार हैं। एक पक्ष 'नवार्ण पक्ष' का है, दूसरा 'सप्तशती पक्ष' है। नवार्ण पक्षमें दीक्षित व्यक्तिको नवार्ण वर्णित यंत्रमें यंत्रस्थ देवताओंका सावरणार्चन कर उसके अंग रूपमें सप्तशती पाठ करना पड़ता है। सप्तशती माला मंत्र दीक्षित व्यक्तिको द्वितीय पक्षानुसार रहस्योंमें वर्णित प्रकारसे युग्म देवियोंका सावरण 'सप्त सतियों' के मुख्यत्व रूपमें अर्चना कर आद्यन्तमें नवार्णका जपकर स्तोत्र पाठ करना पड़ता है। जहां तक देखा गया है इस स्तोत्रको नवार्ण पुटित पाठ ही करनेका अधिक प्रमाण मिलता है। किंतु दोनों पक्षोंकी अर्चन पद्धति विभिन्न है और आम्नाय परम्परा पूजित साम्प्रदायिक जनों में प्रचलित भी है। अस्तु। इन दोनों पाठ और जप प्रकारों का विवेचन कीलकमें अच्छी तरह किया गया है।

यदि कभी पुनः अवसर हुआ तो रहस्यों पर विचार

शैव-शास्त्र

[प्रो० श्रीबलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री, एम० ए० एम० ओ० एल०]

शास्त्र क्या है ? शास्त्र तो वस्तुतः परमेश्वरकी अनुग्रह शक्तिका एक विशेष प्रकारका उल्लास है। अनुग्रह शक्ति उस शक्तिका नाम है जिसके द्वारा परमेश्वर किसी जीवके हृदयमें मुमुक्षा उत्पन्न करते हैं और तदनन्तर उसे मुक्तिके मार्ग पर चलाकर स्वरूप साक्षात्कारकी चरम अवस्था पर पहुंचाते हुए उसके जीवनको कृतकृत्य कर देते हैं। संसारके जीवों और विशेष करके मनुष्योंका स्थूल शरीर और उसकी आकृति जब एक दूसरेसे मिलते नहीं तो उनका मन जो कि अत्यन्त सूक्ष्म है और सूक्ष्मता के कारण थोड़ेसे हेर फेरसे भी जो एक दूसरेसे भिन्न प्रकारका हो सकता है, वह कैसे सभी मानवोंका एक-जैसा हो। अतः यह बात निर्विवाद है कि मानवोंके अन्तःकरण भिन्न-भिन्न रुचिके, भिन्न भिन्न शक्तिके, और भिन्न भिन्न प्रवृत्तिके होते हैं। इसी कारण परमेश्वरकी अनुग्रह शक्तिका विलास भी भिन्न-भिन्न शास्त्रोंके रूपमें संसारके जीवोंके उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। शास्त्रोंमें कहा भी है:—

> चित्तभेदाद् मनुष्याणां शास्त्र भेदो वरानने !
> व्याधिभेदाद् यथा भेदो भेषजानां महौजसाम् ॥
> यथैकं भेषजं ज्ञात्वा न सर्वत्राभिषज्यति।
> तथैकं हेतुमालम्ब्य न सर्वत्र गुरुर्भवेत् ॥

तो फिर अधिकारियोंकी शक्तिके तारतम्यके अनुसार शास्त्र भी अनेक प्रकारसे कहे गए हैं। अवर शक्तिके अधिकारियोंके लिए जो शास्त्र हैं वे मनुष्यों द्वारा कहे गए हैं। इन्हें पौरुषेय शास्त्र कहते हैं। इन शास्त्रोंसे ऊँचे वे शास्त्र हैं, जो ऋषियोंने कहे हैं। इन्हें आर्ष शास्त्र कहते हैं। ऋषि प्रोक्त शास्त्रोंसे ऊँचे अग्नि, वायु आदि देवताओंसे कहे हुए शास्त्र माने गए हैं। देवप्रोक्त शास्त्रोंसे ऊंचे ब्रह्माजी द्वारा उपदिष्ट शास्त्र हैं। ब्राह्म शास्त्रोंसे ऊपर वैष्णव शास्त्र अर्थात् भगवान् विष्णु द्वारा कहे हुए शास्त्र हैं। उनसे ऊपर भगवान् रुद्रसे उपदिष्ट शास्त्र हैं और उनसे भी ऊपरके शास्त्र क्रमसे भगवान् ईश्वर, भगवान् सदाशिव, भगवती शक्ति और भगवान् शिव द्वारा कहे गए हैं। एक साधारण मनुष्य भी अध्यात्ममार्गमें आगे-आगे बढ़ता हुआ, ऋषिसे लेकर भगवान् शिवकी दशा तक पहुंच सकता है। इस आरोह क्रममें जिस दशा पर पहुंचकर जो शास्त्र उससे कहा जाए, वह शास्त्र उसी दशाके भगवान्का कहा हुआ माना जाता है। उसे मानवीय शास्त्र नहीं कहते। यदि किसी योगीने शिव दशाका साक्षात्कार करते हुए उसी दशामें रहने वाले दृष्टिकोणसे कुछ उपदेश दिया, तो उस उपदेशको पौरुषेय शास्त्र नहीं कहा जा सकता है, वह तो साक्षात् शैव शास्त्र ही माना जा सकता है। परात्रिंशिकाकी विमर्शिनीमें आचार्य अभिनव गुप्त संकेतसे कहते हैं कि जो यह त्रिंशिका शास्त्र उमा महेश्वर संवाद रूप है उसमें शास्त्रकार शक्ति दशा पर अवरोह करते हुए प्रश्न करते हैं और पुनः शिव दशा पर आरोह करते हुए प्रश्नका समाधान करते हैं। शास्त्रोंके उपरोक्त तारतम्यके विषयमें आचार्य महोदयने 'तन्त्रालोक' में आगमोंके प्रमाणको इस प्रकारसे उद्धृत किया है :—

> नरर्षिदेवद्रुहिण विष्णु रुद्राद्युदीरितम्।
> उत्तरोत्तरवैशिष्ट्यात् पूर्वपूर्वप्रबाधकम् ॥

इस प्रकारसे शैवशास्त्र सबसे ऊंचा शास्त्र है और इसका अधिकारी वही हो सकता है जो भगवान्का सच्चा अनुरागी हो, अर्थात् जिसे परमेश्वरकी भक्तिके सामने सांसारिक भोग तुच्छ प्रतीत होते हों, और जिसका हृदय भक्तिके रससे खूब सना हुआ हो। इस शास्त्रके अधिकारीके लिए बड़ा भारी विद्वान् होना आवश्यक नहीं, तीव्र तपस्वी होना भी इतना आवश्यक नहीं। दान धर्म आदि भी यहां आवश्यक नहीं माने जाते, वर्ण और आश्रमकी भी कोई पाबन्दी नहीं, न ही अवस्था या लिंग का ही कोई विचार अधिकारी के विषयमें किया जाता है। शैव शास्त्रकी दीक्षाके लिए

किया जा सकेगा। इन शारदीय नवरात्रियोंमें 'श्रीस्वाध्याय' के सभी पाठकोंको सप्तसती माहात्म्यको हृदयङ्गम करना चाहिये।

अधिकारीके पास जो परम आवश्यक गुण होना चाहिए वह भगवद्भक्ति ही है। इस गुणके होते हुए यदि विद्वत्ता, तप, स्वाध्याय, दानशीलता, ब्रह्मचर्य आदि सद्गुण हों तो सोने पर सुहागा बन सकते हैं। परन्तु भक्तिके बिना ये गुण होने पर भी कोई इस शास्त्रका अधिकारी नहीं बन सकता। आचार्य उत्पलदेवने शिवस्तोत्रावलीमें कहा भी है ;—

न योगो न तपो नार्चा क्रमः कोऽपि प्रणीयते।
अमाये शिव मार्गेऽस्मिन् भक्तिरेका प्रशस्यते॥
तथा—भक्ति लक्ष्मी समृद्धानां किमन्यदुपयाचितम्।
एतया वा दरिद्राणां किमन्यदुपयाचितम्॥

शैवशास्त्रका उपदेश तीन प्रकारसे अधिकारी भेदके अनुसार हुआ है। तीव्र बुद्धिके लिए अद्वैतके दृष्टिकोणसे, मध्यम बुद्धि वालेके लिए द्वैताद्वैतके प्रकारसे और मन्द बुद्धि वाले अधिकारीके लिए द्वैतदृष्टिसे। द्वैत शैवशास्त्रको पाशुपत् शैव शास्त्र कहते हैं और अद्वैत शास्त्रको कश्मीर का शैव शास्त्र कहा जाता है। इस अद्वैत शैव शास्त्रका सूत्र स्थानीय ग्रन्थ आचार्य उत्पलदेवकी ईश्वर प्रत्यभिज्ञा है अतः इस ग्रन्थकी प्रधानताके अनुसार इस शास्त्रका दूसरा नाम प्रत्यभिज्ञाशास्त्र भी है। सर्वदर्शन संग्रहमें माधवाचार्यने इस शास्त्रका उल्लेख इसी नामसे किया है। इस शास्त्रको काश्मीरिक शास्त्र इस कारण कहा जाता है कि इस पर ग्रन्थ लेखनका कार्य कश्मीरमें ही हुआ। इस शास्त्रके त्रिमुनि:—सोमानन्द, उत्पलदेव और अभिनवगुप्त कश्मीरमें ही हुए। भारतीय दर्शनविद्याकी एक प्रफुल्लित और सुफलित शाखाके रूपमें इसका विकास कश्मीरमें ही हुआ। विचारपूर्वक देखा जाए तो कश्मीरकी सीमामें इस शास्त्रको सीमित करना अन्याय है। आचार्य अभिनवगुप्तके ज्ञान नेत्रोंको खोलने वाले गुरु जालन्धर पीठ निवासी श्री शम्भुनाथ थे। श्रीशम्भुनाथके गुरु दक्षिण देशके श्री सुमतिनाथ थे। आचार्य सोमानन्दनाथके पूर्वज आचार्य श्री संगमादित्य पहले तिब्बतमें रहा करते थे और वहांसे कश्मीर आकर यहीं बस गए थे। श्रीसंगमादित्यके पन्द्रहवें पूर्वपुरुष और लुप्तप्राय अद्वैत शैवशास्त्रके पुनः प्रवर्तन करने वाले, आचार्य त्र्यम्बकादित्य भी तिब्बतमें ही कैलास पर्वत की किसी गुफामें रहा करते थे। उनके गुरु श्री दुर्वासा मुनि थे। श्री दुर्वासा मुनिको लुप्तप्राय शैव शास्त्रका पुनः प्रचार करनेमें प्रवृत्ति कराने वाले सिद्ध श्री श्रीकण्ठनाथ थे। श्री श्रीकण्ठनाथके गुरुका नाम श्री अनन्तनाथ था। श्री अनन्तनाथको साक्षात् भगवती पराशक्तिसे उपदेश मिला था। श्री श्रीकण्ठनाथका नामोल्लेख कई एक ग्रन्थोंमें मिलता है, परन्तु श्री अनन्तनाथका नाम मुझे केवल आचार्य अभिनवगुप्तकी विवृति विमर्शिनीमें मिला है। वहां आचार्य स्पष्ट कहते हैं:—

"श्री श्रीकण्ठनाथश्चाधिगत तत्वः श्री मदनन्तनाथात् सोऽपि श्री भगवच्छक्तित इत्यादागमेषु निरूपितम्।"

अद्वैत शैवशास्त्रके प्रयोगके विषयमें कई एक तान्त्रिक योगशास्त्र प्रमाण माने गए हैं। उन सभी में त्रिक शास्त्र को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। तन्त्रालोकमें कहा गया है कि कृतयुगमें श्री खगेन्द्रनाथने, त्रेतायुगमें श्री कूर्मनाथने तथा कलियुगमें श्री मत्स्येन्द्रनाथ (मच्छन्दनाथ) ने त्रिक शास्त्रका प्रवर्तन किया। द्वापरयुगमें शास्त्र प्रवर्तक कौन हुए हैं, इस विषयमें टीकाकारने कुछ लिखा नहीं है। तन्त्रालोकमें ही अन्य स्थान पर कहा गया है कि मच्छन्दनाथ कामरूप अर्थात् आसाममें रहा करते थे। कुल प्रक्रियाके प्रवर्तक भी ये ही मच्छन्दनाथ माने गए हैं। श्री आद्य शंकराचार्यकी सौन्दर्यलहरी पर सूक्ष्म विचार करनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भी स्वरूप साक्षात्कार शैव आगमोंके अनुसार शक्तिकी ही उपासनासे हुआ था। अतः योगके जिस क्रमका उन्होंने अभ्यास किया, वह त्रिकक्रम ही हो तो कोई असम्भव बात नहीं। गोरक्षापरपर्याय श्री महेश्वरानन्दको किसी सिद्धयोगिनीने प्राकृतभाषामें महार्थमंजरी नामक ग्रन्थ का उपदेश किया। उन्होंने उसका संस्कृतमें अनुवाद किया और टीका भी लिखी। ये गोरक्ष नामके महेश्वरानन्द कब और कहां हुए हैं इस विषयमें उन्होंने कुछ लिखा नहीं है। हां, महार्थमंजरीकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृतसे अधिक मिलती है। सन्तोंके सम्प्रदायमें गोरखका गुरुशिष्य संबन्ध मच्छेन्द्रसे माना जाता है। हो सकता है कि ये गोरखनाथ मच्छन्दनाथके ही शिष्य हों।

सिन्धु घाटीमें प्रागैतिहासिक युगके जो अवशेष मोहेंजोदड़ोमें मिले हैं उनसे यह सिद्ध होता है कि शैव धर्म भारतका एक अति प्राचीन धर्म है। मोहेंजोदड़ोके निवासी शैव धर्मके अनुयायी थे, इस बातमें कोई भी सन्देह नहीं। वहां भगवान् पशुपतिकी एक खुदी हुई मूर्ति मिली है।

लिङ्ग तो अनेकों ही मिले हैं। उन लिङ्गों और उनके नीचे प्रणालियोंका आकार ठीक वैसा ही है जैसा कि आजकल सारे भारतमें दीखता है। लिंग और शिवमूर्तिके अतिरिक्त मातृदेवी अर्थात् भगवती शक्ति की भी पूजा सिन्धु घाटीमें प्रचलित थी। इस बातके भी स्पष्ट प्रमाण मिले हैं। इसके अतिरिक्त शाम्भवी मुद्रामें स्थित योगीकी एक प्रस्तर मूर्तिका ऊपरी भाग उपलब्ध हुआ है जो यह सिद्ध करता है, कि शैव शास्त्रके तान्त्रिक योग अभ्यासके क्रम उस युगमें भी भारतमें प्रचलित थे। अभी तक यह बात विवाद ग्रस्त ही है कि मोहेंजो दड़ोंकी सभ्यता वैदिक आर्योंकी सभ्यतासे प्राचीन है या अर्वाचीन, अथवा समकालीन है। यदि इस सभ्यताको आर्य सभ्यतासे प्राचीन माना जाए, जैसा कि अधिकांश इतिहास लेखकोंका अभी तक मत है, तो यह बात सिद्ध होती है कि शैव धर्म ही भारतका अति प्राचीन धर्म है। सिन्धु घाटीकी सभ्यता और वर्तमान हिन्दु-सभ्यता में अधिक अन्तर नहीं, यह बात वहांके अवशेषोंसे सिद्ध होती है। सिन्धु घाटीके लोग भी वर्तमान हिन्दुओंकी तरह स्नान आदि शारीरिक शुद्धिको परम धर्म मानते थे, यह वहां के स्नानागारोंसे पता लगता है। मिट्टीके बर्तन एक बार जूठे हो जाने पर आजकी तरह ही फेंक दिए जाते थे। इससे सिद्ध होता है कि खान पानकी शुद्धि अशुद्धिका विचार सिन्धु घाटीके लोगोंमें भी था। इस प्रकारके प्रमाणों के आधार पर इतिहास लेखक हिन्दुधर्मको आर्योंके आगमनसे भी पुराना मानते हैं। उनके विचारमें आर्योंके आगमनसे शैव धर्मके योग क्रम, लिङ्ग पूजा, शक्ति उपासना, खान पानका आचार धर्म स्नानादि शरीर शुद्धि आदि एक ओर से और वैदिक धर्मके यज्ञ, अग्नि पूजा, देवतोपासना, वर्णाश्रम धर्म आदि दूसरी ओरसे आकर इस प्रकारसे सम्मिश्रित हो गए कि दोनोंका भेदभाव मिट ही गया। दोनों एक हो गए और अभी तक दोनों एक ही हैं। इतिहास वेत्ताओंका यह अनुमान कहां तक सत्य है यह आगे होने वाले नए-नए अन्वेषणसे पता लग सकता है। परन्तु इस बातमें कोई भी संशय नहीं कि सिन्धु घाटीके प्राचीन निवासी हिन्दु थे और शैव सम्प्रदायके अनुयायी थे। इसलिए शैव शास्त्रको हम कालकी सीमासे सीमित नहीं कर सकते हैं। इस समय जो बौद्ध धर्म तिब्बत, चीन और मंगोलियामें प्रचलित है वह वस्तुतः बौद्ध नामका शैव धर्म ही है। कई विद्वानोंका मत है कि जापानके शिन्तो मतका उद्गम भी किसी शैव तन्त्रसे ही हुआ है। मातृदेवीकी पूजाके प्रमाण पश्चिमी एशियामें भी मिल रहे हैं। अतः शैव शास्त्रको किसी विशेष देशकी सीमामें सीमित करना भी उचित नहीं।

इस तरह शैव शास्त्र एक प्राचीनतम और विशालतम शास्त्र है। सहस्रों परिवर्तन और उलटफेर संसारमें आए, परन्तु शैव शास्त्रकी ज्योति चमकती ही रही। इस घोर कलियुगमें धर्म लुप्त हो रहा है, परन्तु शैव शास्त्रके अनुयायी सिद्ध महात्मा और दिव्य शरीरधारी भैरव अभी तक संसारमें विद्यमान हैं और योग्य अधिकारीको दर्शन देकर उसका पथ प्रदर्शन करते ही रहते हैं।

शिवमस्तु,

—

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

पुनर्गठित नये राज्योंकी स्थापनाका सुमुहूर्त

सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

स्वेजनहरके राष्ट्रीयकरण और कर्नल नासरकी जन्मकुण्डली पर विचार

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

ता० ३ अक्टूबरको अहमदाबादमें प्रधानमंत्री श्री नेहरूजीने घोषणा कर दी है कि "पहली नवम्बर १९५६ को पुनर्गठित नये राज्योंकी स्थापना हो जायगी इसमें संसार की कोई भी शक्ति रोड़ा नहीं अटका सकती।" अतः यह समय सम्पूर्ण भारतके लिए बड़े महत्त्वका माना जायेगा। ऐसे चिरस्थायी महत्त्वपूर्ण कार्यारम्भके लिए भारतीय परम्परानुसार सुमूहूर्तका होना परमावश्यक है। भारतीय राजनेताओंने अंग्रेजोंके साथ ही अंग्रेजी भाषाका बहिष्कार करके राष्ट्र भाषाके पद पर हिन्दीको तो अभिषिक्त किया है, परन्तु उनसे अंग्रेजी तारीखोंका मोह अभी चिपटा ही हुआ है। यदि अंग्रेजी तारीखोंको हटाया नहीं जा सकता तो भारतमें भारतीय तिथियोंका बहिष्कार भी तो नहीं होना चाहिए। भारतीय मास और तिथियोंके नाम सूर्य-चन्द्र एवं नक्षत्र गणनाके आधार पर पूर्ण वैज्ञानिक रूपमें निर्धारित किये गये हैं, ये काल्पनिक नहीं हैं। इन तिथि वार नक्षत्रोंके अनुसार शुभयोग (सुसमय) में किये गये कार्य कल्याणकारक एवं अशुभ तिथिनक्षत्रमें प्रारम्भ किये गये कार्य अशोभनीय माने जाते हैं। भारतीय सभी सांस्कृतिक धार्मिक पर्व त्यौहारादि (दीपमाला, दशहरा, रक्षाबन्धन, होली, जन्माष्टमी, रामनवमी शिवरात्रि आदि) तिथिके अनुसार ही मनाये जाते हैं। नेता वा कोई भी महान् शासक इन्हें अंग्रेजी तारीखोंमें नहीं बदल सकता। ता० १ नवम्बरको कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी गुरुवार चित्रानक्षत्र और मध्याह्न ११।२६ तक भद्रा है। ज्योतिश्शास्त्रकी दृष्टिसे चतुर्दशी रिक्ता तिथि है और गुरुवार होनेसे मृत्युयोग बन गया है। यह योग सभी स्थायी शुभारम्भके लिए निषेध माना गया है—

"गुरौ रिक्ता च मृत्युदा।"
"सर्वदा सर्वदेशेषु मृत्युयोगं विवर्जयेत्।"

सं० २००४ (सन् १९४७) में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो अंग्रेजोंसे सत्ता लेनेका दिन १५ अगस्त निश्चित किया गया, उस दिन भी श्रावण कृष्ण चतुर्दशी और अश्लेषा नक्षत्रका दुर्योग था, अतः हमने अधिकारियोंको यह बात सुझाई कि—"यह समय ठीक नहीं है। १५ की अपेक्षा ता० १४ अगस्तको अर्ध रात्रिके समय गुरुपुष्ययोग एवं स्थिरलग्नमें सत्ता ग्रहण की जानी चाहिए।" उस समय ज्योतिर्विज्ञानवेताओंका उक्त सुझाव मानकर १४ अगस्तको अर्धरात्रिमें ही सत्ता ग्रहण की गई। उसीका यह प्रभाव है कि स्वतन्त्रता स्थिर रही और भारतने अनेक विघ्न बाधाओंको पार करके आशातीत उन्नति की है।

पुनर्गठित राज्योंके प्रारम्भ और मंत्रिमंडलकी शपथ विधिके लिए हम महामहिम राष्ट्रपतिजी, प्रधानमंत्रीजी एवं प्रान्तीय मुख्यमंत्रियों तथा राज्यपालोंसे निवेदन करेंगे कि वे अपने विशाल राज्यके उद्घाटनका सुमुहूर्त १ नवम्बरको चतुर्दशी भद्रा और मृत्युयोगमें न रखकर एक दिन पूर्व ता० ३१ अक्टूबर धनत्रयोदशी बुधवारको धनुर्लग्नमें प्रातः १०-१५ से १२ बजे तक शास्त्रीय विधिके अनुसार सम्पन्न करें इसीमें भारत और तत्तद् प्रान्तोंकी भलाई है, 'रोड़ा अटकानेकी इसमें कोई गन्ध नहीं'। सुना है कि बम्बई राज्यके मनस्वी मुख्यमंत्री श्री मुरारजी भाई देसाईने स्थानीय ज्योतिर्विदोंकी बात मानकर ३१ अक्टूबर त्रयोदशीको ही शपथविधिसम्पन्न करनेका निश्चय किया है। आशा है अन्य उच्चाधिकारी भी इस ओर लक्ष्य करके शास्त्रीय मर्यादा पालनके साथ राष्ट्रका कल्याण करेंगे। भगवान् श्रीकृष्णने भी कहा है—

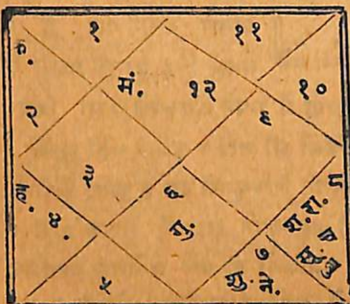
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥

यदि एक दिन पूर्व ३१ अक्टूबरको कथमपि यह विधि सम्पन्न करना सम्भव न हो तो फिर ता० २ नवम्बरको दीपमालाके पुण्यपर्व पर प्रातः धनुर्लग्नमें १० से १२ तक भी सुमुहूर्त साधा जा सकता है। एक दिन आगे पीछे करनेमें कोई बड़ी हानि या असुविधाका कारण हमें दिखाई नहीं देता। मानना न मानना महामात्यकी इच्छा पर निर्भर है। मंत्री गुरु वैद्य और दैवज्ञके लिए शास्त्रकी आज्ञा है कि वह निर्भय होकर हितकर स्पष्ट बात कहनेमें कभी न झिझके, चाहे उसकी वह बात कड़वी ही क्यों न लगे। इसी सिद्धांतके अनुसार हमने अपना कर्तव्य पालन किया है।

सूर्य ग्रहणका संसार पर प्रभाव

मार्गशीर्ष कृष्णामावास्या रविवार ता० २ दिसम्बर १९५६ ई० को भारतमें खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। वृश्चिक अग्नितत्त्व प्रधान मंगलकी राशि है, शनि राहुके साथ ग्रहण समयमें सूर्यचन्द्र बुध भी इसी राशिमें स्थित होनेसे पंचग्रही योग भी बन गया है। स्थिर राशिमें यह ग्रहण हो रहा है और स्थिर लग्न कुम्भमें स्पर्श, मीनमें मध्य एवं मेषमें मोक्ष हो रहा है अतः इस ग्रहणका अनिष्ट प्रभाव प्रकृतिप्रकोप आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात पारस्परिक वैर विग्रहादिके रूपमें चिरकाल तक होता रहेगा। भारतमें ६ मास तक धार्मिक साम्प्रदायिक सामाजिक राजनैतिक हलचलें विशेषरूपसे होंगी। पाकिस्तान, काश्मीर, मद्रास, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, काठियावाड़, आसाम, उड़ीसा, अरब, आस्ट्रेलिया हंगरी स्पेन नार्वे इंगलैंड, फिलस्तीन, फ्रांस और इटली पर इस ग्रहण एवं पंचग्रहोंका बुरा प्रभाव पड़ेगा। "काश्मीरकान्कौशलकामपौण्ड्रान् मृगांश्च हन्यादपरान्तकाश्च।"

ग्रहण मध्यक लीन लग्न



इस वर्षके सम्राट् गुरुदेवकी मीन राशिमें ही ग्रहणका मध्य है और लग्न पर गुरुकी दृष्टि है अतः भारत पर विशेष अनिष्ट प्रभाव नहीं होगा, अपितु विश्वमें भारतका वर्चस्व बढ़ेगा, शान्ति प्रयत्न सफल होंगे और सभी राष्ट्र भौतिकवादकी अपेक्षा अध्यात्मवादकी महत्ताको समझने लगेंगे। किसी बड़े धर्माचार्य एवं वैज्ञानिककी मृत्यु होगी। राजसत्तात्मक सूर्य एवं प्रजासत्तात्मक चन्द्रमा नवमभावमें शनिराहुसे पीड़ित हैं अतः धार्मिक साम्प्रदायिक सामाजिक राजनैतिक हलचलें जोर पकड़ेंगी। ६ मास (ज्येष्ठ) तक भारतीय शासकवर्ग एवं प्रजामें पारस्परिक खेंचतान और अस्थिरता रहेगी, श्रमिकवर्ग और शिक्षित वर्गमें असन्तोष फैलकर कई स्थानोंमें आन्दोलन हड़ताल आदि होंगे। रेलवे पोस्ट टेलीफोन ट्रान्सपोर्ट विभाग में उत्तेजना फैलेगी। दो-तीन बड़ी यान दुर्घटनाएँ होंगी। पौष माघमें भयानक शीत हिमपात ओला वृष्टिसे फसलको हानि होगी। पर्वतीय प्रदेशमें दिसम्बर जनवरीमें बर्फका तूफान सा आयेगा। ज्वरादि रोग फैलेगा। विरोधीतत्त्व अनेक प्रकारसे राष्ट्रद्रोहके प्रयत्नमें लगे रहेंगे; परन्तु लग्नेश राज्येश गुरु बलवान् है यह शनिराहुके कुचक्रसे भारतको बचानेमें समर्थ होगा। कहीं प्रकृति प्रकोप और कहीं कांग्रेस जनोंमें ही पारस्परिक पार्टी बन्दियां व फूटके कारण प्रगतिमें कुछ बाधा पड़ेगी।

पाकिस्तानके लिए यह ग्रहण महा अनिष्टकर सिद्ध होगा। गत 'वसन्ताङ्क' में हमने पाकिस्तानी गणतन्त्र (इस्लामी-जम्हूरियत)की जन्म-कुण्डलीका भविष्यविवेचन करते हुए स्पष्ट लिखा था कि पाकिस्तान विनाशकी ओर अग्रसर होगा। पंचांगमें मुहम्मद अली मंत्रिमंडल समाप्तिकी घोषणा भी हमने एक वर्ष पूर्व की थी वह अक्षरशः सत्यसिद्ध हो चुकी है। इस ग्रहणके बाद ६ मासके अन्दर सुहरावर्दी मंत्रिमंडल भी समाप्तप्राय होगा। और किसी बड़े नेताकी मृत्यु होगी। भयंकर फूट परस्परमें फैलेगी। पाकिस्तानको जन्म देने वाली मुस्लिमलीगकी अन्त्येष्ठी पाक-हाथोंसे ही हो जावेगी। रिपब्लिकन पार्टी और अवामीलीगमें भयानक मतभेद पैदा होगा। पूर्वी और पश्चिमी पाककी खाई गहरी होगी। पाकिस्तानी जनताके असन्तोषको मिटाने और अपनी 'कुर्सी कायम' रखनेके लिए पाकाधिकारी भारतका प्रत्येक बातमें विरोध करके 'जिहाद' का नारा बुलन्द करेंगे। आजाद कश्मीरकी ओरसे कश्मीर पर आक्रमण करके समूचे काश्मीरको हड़पनेका व्यर्थ प्रयत्न किया जायेगा। आगामी वैशाखसे आश्विन तकका समय काश्मीरके लिए चिन्ता कारक है। सूर्यग्रहणके बाद पौष माघमें भी कश्मीरमें विग्रह वा प्रकृति प्रकोपसे कुछ हानि होगी। पंजाबमें अकाली कांग्रेसमें सम्मिलित तो हो गये हैं, परंतु इसका परिणाम

आगे चलकर विशेष श्रेयस्कर न होगा। कांग्रेसमें रहकर ये संकुचित स्वार्थ एवं साम्प्रदायिकताको प्रोत्साहन देंगे, अतः शासनमें गतिरोध होगा। माघसे आगेका समय मुख्यमंत्री स० प्रतापसिंह कैरोंके लिए अनुकूल है। राजस्थान मध्य प्रदेश आंध्र मैसूर प० बंगालके मंत्रिमंडलमें स्थायित्व नहीं रहेगा। सत्तारूढ़ दल गुटबंदीके दल-दलमें धंसता दिखाई देगा।

अन्नादि पदार्थ पर प्रभाव

रविवार और अनुराधा नक्षत्रमें सूर्यग्रहण है अतः गेहूँ चावल मूंग उड़द मक्की ज्वार तिल तैल गुड़ और तांबा लोहादि धातु मात्रमें दो मास तक तेजीका योग बनेगा। ता० २१ नवम्बरसे १७ जनवरी तक गुरुमंगलका समसप्तक योग रहेगा, मार्ग० कृ० ३० सूर्यग्रहणको रविवार व पंचग्रह योग, आगे पौष कृष्णामावस्याको भौमवार और मकर संक्रान्ति रविवारको होनेसे प्रजामें अशान्ति बेचैनी सांठगांठ षड्यंत्र भ्रष्टाचार अनुशासन भंग और कहीं-कहीं दुर्भिक्ष प्रकृति प्रकोपादि उत्पात अधिक होंगे। लिखा भी है—

"वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातौ प्रजायते।"
"रविवारे ग्रहे वर्षं मध्यमं धान्य संग्रहः।
राजयुद्धं च दुर्भिक्षं घृतायस्तैलविक्रयाः।"
"क्रूरसंयुक्त सूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः।
राष्ट्रभङ्ग इति प्राहुर्भद्रज्ञा वै मुनीश्वराः॥"
"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदिस्यात्समस प्रकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"
"अमावास्या सहस्यस्य शनि सूर्यारवासरे।
यदि स्याद्भयमादेश्यं तदा सस्य महर्घता॥"

'श्रीस्वाध्याय' के गत ग्रीष्माङ्क पृष्ठ ५० पर हमने भौम वक्री और शनिराहु युतिके कारण आश्विन मासको उत्पात कारक लिखा था, तथा इसी पृष्ठमें यह भी लिखा था कि "आश्विन कृ० ११ ता० ३० सितम्बरसे कार्तिक कृ० ७ ता० २६ अक्टूबर तक सिंह राशिमें गुरु शुक्रका योग विग्रह और असामयिक वृष्टिकारक है।" तदनुसार इसी आश्विन मासके पितृपक्ष और शारदीय नवरात्रमें पंजाब हिमाचल-प्रदेश दिल्ली उत्तरप्रदेश आदिमें सर्वत्र असामयिक मूसला-धार वर्षासे कच्चे घरों और फसलको असह्य हानि पहुँची है। यह प्रकृतिका प्रकोप ही है कि पहले तो बिहार राज-स्थानादिमें अवर्षण वा सूखासे हानि हुई और अब अति-वृष्टिसे पकी फसल नष्ट हो रही है। अस्तु।

स्वेजका राष्ट्रीयकरण और कर्नल नासर

मिश्रके राष्ट्रपति कर्नल नासरने गत २६ जुलाई १९५६ को रात्रिके समय स्वेजके राष्ट्रीयकरणकी घोषणा करके सारे विश्वका ध्यान अपनी ओर अकर्षित कर लिया। बृटेन और फ्रांसमें इस घोषणासे भारी रोष फैला। कर्नल नासरके कार्यकी निन्दा और बल प्रयोगके लिए गर्जन तर्जन भी हुआ। सर्वसाधारणमें यत्रतत्र यह चर्चा चल पड़ी कि यह स्वेज-संकट ही निकट भविष्यमें विश्वयुद्धकी विभीषिका न बन जावे। पारस्परिक वार्ता द्वारा इस संकटको टालनेका भारतकी ओरसे पूर्ण प्रयत्न हो रहा है। इसका परिणाम क्या होगा। इस प्रश्नपर शास्त्रीय विवेचनार्थ कर्नल नासर और स्वेजनहर राष्ट्रीयकरणकी कुण्डलियोंका निरीक्षण करना परमावश्यक है। मिश्रके राष्ट्रपति श्री नासरकी जन्म कुण्डली-मात्र उपलब्ध हुई है। जन्मका ठीक समय प्राप्त नहीं हुआ, इष्टकाल न होनेसे दशान्तर्दशा सूक्ष्म विचारके बिना स्थूल माननेे कुण्डली पर ही हम यहाँ विचार व्यक्त करेंगे।

ता० २१ जनवरी १९१८ तदनुसार सं० १९७४ पौष शु० १० सोमवारको रात्रि सिंहलग्नमें कर्नल नासरका जन्म हुआ उस समयकी कुण्डली यह है—

६ म.
श. ने.
४
७
५
३ के.
८
२ च.
गु.
बु. ९
११
रा.
१० सू. ह.
शु.
१२

इस कुण्डलीमें दशम (राज्य) भावमें उच्चका चन्द्रमा पंचमेश गुरुके साथ है, यह लग्नेश सूर्य और भाग्येश भौमसे परस्पर त्रिकोण योग बना रहा है, और चारों परस्पर मित्र हैं, ये यशस्वी राष्ट्रनिर्माता निर्भय साहसी एवं दृढ़ प्रतिज्ञ बनानेवाले हैं। नासर सिंह लग्नके प्राणी हैं और गुरुचान्द्रीयोगके कारण वे अपने संकल्पसे कभी विच-लित न होंगे। संसारकी किसी भी शक्तिके सामने नहीं झुकेंगे। छठे भावमें सूर्य हर्शल, शनि नेपच्यूनसे दृष्ट हैं अतः विरोधी वातावरणके रहते हुए भी वह अपने लक्ष्यमें सफल होंगे। इंगलैंड फ्रांस मिश्रको धमकियों वा बल प्रयोगसे पराजित नहीं कर सकेंगे। नासरको मित्रोंका सहयोग पर्याप्त मिलेगा।

[शेष पृष्ठ ८१ पर]

एक शिक्षाप्रद रोचक कहानी

सतीत्व बल

[संकलनकर्त्ता तथा अनुवादक—श्री पं० दयानन्दजी जोशी]

[भारतमें अति प्राचीनकालसे ही पुरुषोंके समान स्त्रियाँ भी बड़ी विदुषी, वीर, भक्त, एवं पतिव्रताएं होती रहीं हैं। मैत्रेयी गार्गी अनुसूयादि ब्रह्मवादिनी मन्त्रद्रष्टा ऋषि भी हो चुकी हैं। जहां परम विदुषी पण्डिताएँ पतिभक्ति परायणा हुई हैं वहां इस पुण्यभू भारतमें ग्रामीण नितान्त अपढ़ देवियां भी भारतीय संस्कृति और सभ्यतामें पलकर अपने सती बलका अद्भुत आदर्श उपस्थित करती रही हैं। ऐसी ही एक ग्रामीण अपढ़ आदर्श पतिव्रताकी कहानी गुजराती भाषाके एक उपन्याससे श्री जोशीजीने 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लाभार्थ हिन्दीमें अनूदित की है। इस कहानीसे सतीबलके साथ भारतीय संस्कृति, सभ्यता, गृहस्थ धर्म, अतिथिसत्कार, सहोदर भाई बहनका तो बात ही क्या वाणी मात्रसे धर्मबन्धनमें बंधे भाई बहनका आदर्श स्नेह, स्वामीभक्ति, राजभक्ति, मित्रके लिए प्राण तक न्योछावर कर देनेकी क्षमता और परमेश्वर सत्ता (महामाया) में अटल विश्वासके परिणाम पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। यह लम्बा उपाख्यान अत्यन्त रोचक भावपूर्ण एवं शिक्षाप्रद है। गताङ्कमें इस कथाका प्रारम्भिक अंश ३४ पृष्ठोंमें प्रकाशित किया था अब शेष सम्पूर्ण कहानी इस अङ्क में दी जा रही है। —सम्पादक]

पूर्व कथाका सारांश

राजा 'एभलवाला' एक दिन आखेटके लिए जंगलमें भटकते हुए कड़ी धूपमें पानी न मिलनेसे व्याकुल हो गया, स्वामी भक्त सधे हुए अश्वने उसे सांईनेहड़ीकी झोंपड़ी के सामने अचेतनावस्थामें पहुँचा दिया। द्वार पर एक अपरिचित अचेतनावस्थामें आये अतिथि को देखकर भारतीय सहृदया नारीका हृदय करुणार्द्र द्रवित हो उठा। उसने सगे भाईके समान समझ निःस्वार्थ भावसे सेवा सुश्रूषा करके उस अपरिचित अतिथिको स्वस्थ किया। स्वस्थ होने पर राजा एभलने सांईनेहड़ीका परिचय पूछा और अपना नाम परिचय उसे बताया। राजा उस निस्पृह ममताकी मूर्तिमयी बहनकी सेवासे गद्‌गद् हो गया। राजप्रासादका ऐश्वर्य और सेवक सेविकाएँ इस निर्धन बहनके निःस्वार्थ स्नेहकी तुलनामें उसे अकिंचन प्रतीत होने लगे। राजधानीको लौटते समय उसने बहन सांईं नेहड़ीसे उपकारके बदलेमें कुछ मांगनेको कहा, पर आत्मसन्तोषी बहनने उत्तर दिया कि—'मैंने अपना कर्त्तव्यपालन किया है किसी लोभवश नहीं, भगवान्‌की कृपा है, मुझे कुछ नहीं चाहिए।" अपढ़ जंगलमें रहने वाली इस बहन के त्यागमय सुखी जीवन और उपदेशका राजा पर अमिट प्रभाव पड़ा और चलते हुए स्नेह गद्‌गद् स्वरसे कहा—"बहन! तेरा उपकार मैं जन्मजन्मान्तर में भी नहीं भूल सकता। यदि तेरे पर कभी कोई आपत्ति व कठिन समय आ पड़े तो उसी समय आधी रातको वा भरी सभामें इस भाईके पास आ जाना। तेरे लिए मेरे महलमें कभी कोई रोकटोक नहीं होगी, यह मैं राज्यमें घोषणा कर दूंगा।"

इधर राजा एभल का ३ दिन सांईं नेहड़ीके पास रहना एक पड़ौसिन कुलटा स्त्रीको अखर रहा था। उस दुष्टा को इन भाई बहनके शुद्ध सात्त्विक स्नेहमें भी स्वार्थ और कालुष्य दिखाई दे रहा था। सांईं नेहड़ीके पतिके घर पहुंचने पर उस पड़ौसिनने गढवीके जो कान भरे और आगे जो जो घटनाएँ हुईं उसका रोचक पूरा वृत्तान्त आगे दिया जा रहा है!

—सम्पादक

सत् (सत्य) परीक्षा

इस घटनाके कई मास पश्चात् सांईनेहड़ीका पति अपने साथियोंके साथ अपने ढोरोंको लेकर वापिस घर आया तो राहमें उसी दुष्टा चागडाल स्त्रीने अवसर पाकर उसे कहा- "रावजी महाराज! आपके घर आपकी अनुपस्थितिमें तीन चार दिन तक कोई ठाकुर ठहरा था, उसको बड़े आदर भाव के साथ घरमें रखा था नेहड़ीने, वह उसका कुछ लगता था या नहीं, यह तो मैं नहीं जानती, पर था वह कोई बड़ा आदमी।"

गढ़वी! भोला भाला गढ़वी! उस दुष्टाकी दोषपूर्ण बातें सुनकर भ्रम में पड़ गया। उसे नेहड़ीके पवित्र आचरण पर सन्देह उत्पन्न हो गया और अपनी प्रतिष्ठामें कलंक लगनेकी कल्पनासे क्रोधान्ध होकर घरमें घुसते ही रक्त नेत्रोंसे देखता हुआ नेहड़ीसे बोला—

"ओ काली नागन! ओ जहरी बावण! तूने मेरे चारण वंशको और सारे भरवाड़ प्रान्तको कलंकित कर दिया अपनी काली करतूतसे। ओ काले बादलोंमें छिपी हुई बिजली बता! बता! कौन बादल बरसनेको आया था? कौन मोर बोलनेको आया था? कौन पपीहा पानी पीने को आया था यहां? बोल बोल जल्दी बोल?" रायका गढ़वीने क्रोधान्ध हो नेहड़ीका हाथ पकड़कर लाल लाल आंखें दिखाते हुए कालरूप होकर पूछा।

"मेरे सिरके मुकुट, मेरी लाजके ताज, मेरे सौभाग्यके श्रृंगार! तुम्हारे सिवाय इस हृदयरूपी पींजरेमें अन्य कौन बैठ सकता है, मेरे प्यारे रावजी! आज तुमको क्या हो गया? किसी रॉंडने मेरे स्वामी पर जादू टोना कर दिया क्या? प्राणनाथ! तुम्हारी यह नेहड़ी कभी भी पर पुरुषकी दृष्टिमें नहीं पड़ी है, और न कभी ऐसा होगा ही, नाथ! वहम (सन्देह) न करो मेरे वचनको सत्य मानो।"

"सांई! सांई! तूने मेरी अनुपस्थितिमें पिछवाड़ेसे अपने किसी प्रेमीको अपने घर बुलाकर रखा था और कहती है कोई नहीं आया" यह कहते कहते गढ़वी विशेष क्रुद्ध हो उठा।

"स्वामी, नाथ! एक और केवल एक व्यक्ति सूर्यके प्रचण्ड तापसे झुलसा घबराया हुआ अर्ध अचेतन अवस्था में आश्रय लेनेको आ पड़ा था। वह था प्रजापालक तलाजा नरेश 'एभल' उसकी मैंने भाईके समान जानकर सेवा की थी और बहनके कर्त्तव्यका पालन किया था नाथ।"

"तीन दिन तक पतिकी अनुपस्थितिमें पराये पुरुषको घरमें रखकर प्रेम पूर्वक सेवा करने वाली बहन बनती है तू उसकी। सांई इससे तो यह अच्छा होता कि तू मर जाती। एक सत्यवादीकी लड़की होकर भी तूने मेरे कुलमें यह अमिट कलंक लगा दिया।" क्रुद्ध गढ़वीने कहा।"

"पतिदेव! मैंने कोई अनुचित और पापमय कर्म नहीं किया, नाथ! कृपाकर मुझे कलंक न लगाओ, मैं पूर्ववत् ही सर्वथा पवित्र और निर्दोष हूं, मैं खोडियार माताकी सोगन (सौगन्द) खाकर कहती हूँ कि वास्तवमें सच्ची सती हूं मैं"। नेहड़ी बोली अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे पतिको देखती हुई।

इसका क्या प्रमाण? यदि तू वास्तवमें सच्ची है तो कोई परिचय दे (चमत्कार बतला) अपनी निर्दोषिता सिद्ध कर।" गढ़वीने कहा।

"भला यदि ऐसा है, मेरे सत्यकी परीक्षा करनी है तो सुनो— यदि मैंने तुम्हें सदा सच्चे हृदयसे पति परमेश्वर माना है, एभलवाला के अतिथि सत्कार करनेमें यदि भूलसे भी उसने मेरा अंग स्पर्श किया हो तो मेरे टुकड़े टुकड़े हो जावें और यदि मैं निष्पाप हूं तो मेरे पर मिथ्या कलंक लगाने वाला कोढ़ी हो जाय अभी।"

इतना कहकर सांईनेहड़ी अचेत हो भूमि पर गिर पड़ी और उधर गढ़वीका सारा शरीर रक्त कुष्ठसे झरने लगा उसी क्षण।

अपनी यह दशा देखकर वह विक्षिप्त सा हो गया, घबरा गया, और चिल्ला पड़ा। "ओ खोडियार माता रक्षा कर रक्षा कर मेरी।"

उसका वह करुण-हृदय-विदारक चीत्कार सुनकर आसपासके सभी चारण भरवाड़ी आ पहुँचे वहां। सारे नेहड़ेमें (ग्राम में) यह समाचार एकदम विद्युत् गतिसे पहुँच गया सब ओर कि सांई नेहड़ी एक सच्ची सती है। थोड़ी देर बाद ज्योंही सांईनेहड़ी मूर्छासे जागी कि अपने

पति गढ़वीको कोढ़ा हुआ देखकर अपने बावलेपनसे पतिको शाप देकर कोढ़ी बनाने पर पछताने लगी बहुत हो; पर अब क्या हो हाथसे छूटा तीर फिर नहीं लौटता। गढ़वी ने स्वयं भी उसे ढाढ़स दिया, बहुत-बहुत समझानेका प्रयत्न किया, परन्तु नेहड़ा न मानी। उसने अन्न जल त्याग दिया और अपने पतिका रोग दूर करनेकी भी प्रतिज्ञा कर ही ली उसी क्षण।

वाह री नारी शिरोमणि, साक्षात् देवी सांई नेहड़ी वाह! तू धन्य है, गंवार भरवाड़ण होते भी इतनी पवित्र पावनताकी पुतली! धन्य !!

अब देखिये किस प्रकार दूर करती है यह अपने पतिका शाप रोग?

सतीत्वलसे पति संकट दूर करने का अद्भुत प्रयास

एभलकी राजधानी तलाजामें दुर्ग तो नहीं था। परन्तु अति गहन कांटोंकी बाड़ थी नगरकी चार दीवारीके स्थान पर। द्वारके दोनो ओर पत्थरोंकी मोटी दीवारें थीं और सिपाहियोंके रहनेके स्थान बने हुए थे अन्दरकी ओर। एक लँगड़ा सा सिपाही पहरा दे रहा था वहां। एभलवाला पर आई हुई कालिमा रूप आपत्तिको भी सांईनेहड़ी ही टाल सकती है यह बात सभी लोग मान रहे थे। स्वयं तलाजा नरेशने भी एक बार साधारण (आम) दरबारमें ही स्पष्टतया यह बात सबको कह दी थी। प्रत्येक दरबारी तथा पहरेदार आदि सबको घोषणा कर दी गई थी कि "सांईनेहड़ी आधी रातको या जब भी आवे तो द्वार खोल दिया जाय उसी क्षण, तथा वह जो भी वस्तु मांगे वही उसे निःसंकोच तत्काल ही दी जाय। इस आज्ञाका उल्लंघन करनेका साहस कोई न कर सके।" कोई भी इस आज्ञाको सुननेसे भी वंचित न रह सके, पूरी-पूरी व्यवस्था कर दी गई थी इस बातकी भी।

अपने ही शापके कारण जैसे सांईनेहड़ीका पति कोढ़ी हो गया था यह ऊपर बता आये हैं। अब वह सती इस चिन्तामें निमग्न हो गई कि किस प्रकार उसका स्वामी शापसे मुक्त हो सके। सोचते सोचते वह स्वयं अपने स्वामी को रोग मुक्त करनेके लिए कमर कसके तैय्यार हो गई। उसने उसके कोढ़को मिटानेका एक ही और केवल एक ही उपाय निश्चय किया कि सुकुमार राज्य बालकको 'खोडियार माता' के बलि देनेसे ही यह कोढ़ नष्ट हो सकता है। अन्य किसी भी उपायसे नहीं। ऐसा दृढ़ निश्चय करने में सांई नेहड़ीके मनमें संकोच तो हुआ, परन्तु तलाजा नरेश एभलवालाके अभय वचन याद आ गये। वह विचारने लगी कि राजकुमार तो राजा का इकलौता युवराज है। ऐसे राज्यके भावी स्वामी को मांगना राज्य नष्ट करना ही है, यह उचित न होगा, परन्तु अपने शापसे व्यथित अपने स्वामीको मुक्त करना भी उसका अपना ही कर्तव्य कर्म है। वह सोचने लगी कि जिस प्रकार मैं निष्कलंक हूँ उसी प्रकार एभल भी निर्दोष है, इसका विश्वास भी गढवीको कराना अत्यावश्यक है ही, अतः वह कुमारको मांगनेके बहाने निर्दोषिता प्रकट करने तथा पतिके कोढ़का निवारण करनेकी सम्मति लेनेके लिए अपने पतिको साथ लेकर तलाजाके लिए रवाना हो गई।

सांईनेहड़ी स्वस्थ और साहसी थी, साथ ही सतीत्व के अद्भुत बलसे शोभायमान भी थी। गढ़वी पर उसकी अपनी ही भूलसे जो आपत्ति आई उसके लिए नेहड़ी स्वयं पछता रही थी, पर क्या करे? पतिके हाथों कलंकित होकर मरना उस जैसी सतीको शोभा नहीं देता, अतः विवश हो वैसा करना ही पड़ा। सांईनेहड़ीने यह निश्चय कर लिया कि अपने इस देहके बलि भोग होते भी पतिको नीरोग करना होगा, और स्वयं अपनी तथा अपने भाई एभल की निर्दोषिता संसारके समक्ष प्रकट भी करनी ही होगी।

"एभल खरा है तो निज कुमारका बलि देगा ही" ये शब्द स्वार्थी मलिन हृदय गढवी प्रायः कहता ही रहता था, यह भी नेहड़ी भूली न थी। वह निडर निःशंक नगर के द्वारसे कुछ दूरी पर पहुँची ही थी कि दरबानने उन दोनों को देखते ही उच्च स्वरसे धमकाते हुए कहा—"खबरदार, सावधान, इस समय आने वाले ये कौन हैं?"

"दरबान! तेरे राजाकी बहन" सांई नेहड़ीने दृढ़ता पूर्वक कहा।

"महाराज एभलवालाके बहन है ही नहीं बाई...।"

"है सांई नेहड़ी" दरबानकी बातके बीचमें ही कहा नेहड़ीने।

"हाँ, खरी बहन ! पर आधी रात को ?"

"अत्यावश्यक कामके लिए आई हूं, द्वार खोल अभी महलमें जाना है हमें ।"

"आपके साथ कौन है बहन ?"

"मेरे पति देव ! अब देर न कर झट द्वार खोल ।"

दरबानने तुरन्त द्वार खोला और नेहड़ी अपने पति सहित आगे बढ़ी ।

मध्य-रात्रिके समय नि:संकोच अपने पतिके कठोर हृदय पर अपनी पवित्रताकी अमिट छाप अंकित करनेके लिए एभलवालाके नगरमें सांईनेहड़ी महलके अन्तर द्वारके पास अपने दुर्गन्ध युक्त कोढ़ी पतिको लेकर आ खड़ी हुई । वहांके द्वारपालको आश्चर्यमें विचारमग्न देखकर नेहड़ी उसके मनके भावोंको जानकर बोली "तुम्हारे स्वामीसे कहो कि आपकी बहन सांईनेहड़ी पसली (बदला) लेने आई है ।"

गढ़वी यह सुनकर विस्मित हुआ और उसका आधा संदेह दूर हो गया ।

सांई नेहड़ीका नाम सुनकर दरबान मानो जाग उठा । नाम तो जाना हुआ था ही और नेहड़ी पर उसके पति द्वारा थोपा हुआ दोष जग-प्रसिद्ध हो गया था क्योंकि नेहड़ी के शापसे उसका पति कोढ़ी हो चुका था यह चमत्कार पूर्ण समाचार देश भरमें प्रचारित तथा प्रसारित हो चुका था, स्वयं एभलके कानोंमें भी यह बात पड़ चुकी थी । अपने धर्म तथा जीवन पर लगा हुआ कलंकका धब्बा तुरन्त टल गया और संसारमें मान बना रहा । यह सब नेहड़ीकी पवित्रतासे हुआ इस विचारसे एभलके शुद्ध हृदयमें नेहड़ीके प्रति विशेष श्रद्धा और मान उत्पन्न हो गया था । उसका बदला चुकानेकी भावना अन्तरमें घर कर गई थी, अत: नेहड़ीका संदेशा लाने वालेको भी बेरोक टोक किसी भी समय महलमें आने दिया जाय यह आज्ञा भी अपनी राजधानीमें घोषित कर दी गई थी । गढ़का वह अन्तर द्वारका सिपाही भी यह बात जानता था । नेहड़ी और उसके पति को रोकनेका उसको साहस न हो सका । उसने बड़ी ही नम्रता पूर्वक हाथ जोड़कर कहा—"बहन जी ! विराजिये ! महाराज निद्रावस्थामें है अत: प्रात:काल तक मेरी सेवा स्वीकार कीजिये तो बड़ी कृपा होगी ।"

द्वारपालकी इस बातका उत्तर देनेको नेहड़ीने अभी मुंह भी न खोला था कि अन्दरसे राजाकी ठाइ एक दासी द्वारके पास आ पहुँची और बड़े मान व सत्कारके साथ नेहड़ी और उसके पतिको अन्दर ले गई ।

पाठक गण ! भलेकी भलाई ही रहती है अमर ! दुष्टजन वृथा बुराई करके अपने शिर निन्दाओंकी गठड़ी लाद देते हैं । उपकार भूलकर अपकार करनेमें आनन्द मानते हैं वे । दुष्टजन चाहे जितनी भी दुष्टता करे परन्तु सज्जन कभी भी सज्जनता नहीं तजता, वह सदा अपने साथ बुराई करने वालोंके साथ भी भलाई ही करता है । यह गुण तो उनमें स्वाभाविक ही होता है । ऐसे पवित्र आदर्श बदलेकी भावना हमारे इस भारतकी प्राचीन संस्कृति के पुजारियोंमें ही पाई जाती है । सज्जनका सज्जनके सा मिलन दूधमें शक्करके समान है । दुष्टजन उपकारका बदला अपकार से देते ही हैं, उनका स्वभाव ही ऐसा विपरीत होता है, परन्तु पापी तथा दुष्टजनोंकी अन्तमें घोर दुर्दशा होती है बहुधा । यह पाठक गण स्वयं भी अनुभव कर रहे होंगे । नेहड़ा पर बिना विचारे अपवाद जमाने वाले गढ़वी जैसे कच्चे कानोंके मनुष्यके भी पश्चात्तापका समय आ गया । नेहड़ीके साथ ही एभलकी शुद्ध हृदयताका प्रमाण मिलनेका और पूर्व दिये हुए वचनोंके परीक्षणका प्रसंग आ पहुंचा ।

एभलने स्वयं बाहर निकलकर सांई और गढ़वीका सत्कार किया और बड़े आदरके साथ उसी समय अपने महलमें ठहराया ।

रात्रि शेष होने पर नेहड़ी उठी, शौच व स्नानादिसे निवृत्त हो अपने पतिकी यथार्थ सेवा सुश्रूषा करनेके पश्चात् एभलके पास गई । यद्यपि एभल दो तीन दिनसे क्षुब्ध चित्त हो रहा था तथापि नेहड़ीके साथ बड़े शान्त चित्तसे बातें करने लगा—

"बहन ! इस दीन भाईको आज कैसे याद किया ?" एभलने बड़ी नम्रता पूर्वक शुद्ध हृदयसे पूछा ।

"भाई ! तुम्हारी बहन आज तुम्हारे पास पसली (बदला) लेने आई है ।"

"धन्य भाग बहन ! कह कह क्या चाहिए ? तू कहे तो ग्राम नगर देऊं, कहे तो माल मिलकियत, धन, दौलत

राजपाट दूं और कहे तो इस शरीर ...."

"तुम्हारे जैसे माने हुए भाई, कहने वाले और देनेवाले बहुत थोड़े मिलेंगे।" नेहड़ीने बीचमें ही बात काटकर कहा।

"पर तू ने मेरी बात कहां मानी ?" एभलने उत्तर दिया।

"मैंने अपने धर्म और स्वार्थवश जो कुछ भी किया पर तुम्हारी मधुर वाणीमें कुछ नवीनता लगती है" नेहड़ीने कहा।

"नहीं नवीनता कुछ नहीं है। मेरा धर्म है कि तेरे जैसी पवित्र बहनका यथाथ सत्कार करूं और जो मांगें सो ही प्रसन्नतापूर्वक भेंट करूं।"

"भाई तुम हँसते हुए मीठे शब्दोंमें जो कह रहे हो, मेरी मंगनी सुनकर भी वह कह सकोगे क्या ?" गंभीर होकर नेहड़ीने कहा।

"चिन्ता नहीं बहन ! बोल अपनी इच्छित वस्तु बता दो।" एभलने कहा।

"भाई तुम्हारे चरणोंसे मेरी झोंपड़ी पवित्र हुए पश्चात् मेरे पर काली कलंक कालिमाने भीषण आक्रमण किया, उससे मुझे और तुम्हें दोषी ठहरानेका विकट प्रसंग आ गया। मेरे पतिने जब मेरे शुद्ध भाल पर कलंकका टीका लगानेका घोर प्रयत्न किया और मुझे अपनी निर्दोषता सिद्ध करनेके लिये परचा देने (चमत्कार बताने) को बाध्य किया, तब मुझ हतभाग्या अबलाको अपने धर्मकी सत्यता प्रमाणित करनेको विवश होकर अपने पतिको शाप देना ही पड़ा। क्रोधावेशमें अपने सत्य पतिव्रताका प्रमाण देनेके लिये अपने आराध्य देवको शाप देनेके सिवाय अन्य कोई उपाय न सूझ सका, उसका फल तुम प्रत्यक्ष देख रहे हो।"

"अहा बहन ! अब उस शापसे इनको अपने सतीत्वके बलसे ही मुक्त करनेकी भी इच्छा दिखती है तुम्हारी।"

"हाँ, भाई मैंने जैसे अपनी पतिव्रताकी रक्षाके लिये उनकी यह दशा कर दी उसी प्रकार अब अपनी पवित्रतासे उन्हें रोगमुक्त भी करना है।"

"उसमें मेरी जो सहायता चाहिये वह निःशंक होकर बता दे बहन ?"

"भाई जिस प्रकार मैंने अपनी टेक रखनेको अपना बलिदान किया। उसी प्रकार तुम्हारा कलंक मिटानेको भी जो बलि देनी होगी वह बड़ा विकट और कठिन है परन्तु, तुम्हें उससे भयभीत नहीं होना है. तुम्हारी उदारता दृढ़ता और निर्दोषिताका बदला अवश्य मिलेगा। यह तुम्हारी बहन प्रभुके द्वार पर बैठकर मीरांकी भांति गिरिधारी गोपालको प्रसन्न करेगी और तुम्हारी आशाका अस्त होता सूर्य उदय हो जायगा, संसार भली प्रकार समझ लेगा कि अपना सम्बन्ध कितना पवित्र, कितना उच्च, कितना गंभीर और गहन है ! बहन, भाई जैसे एक माताके उदरसे उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों पर भी पति पत्नी के समागम सरीखा दुर्गन्ध पूर्ण दोष (कलंक) लगानेमें भी ये काले शिरके कलुषित हृदय मानव शरीरधारी जीव, किञ्चित् भी भय नहीं खाते। यह कैसा दुर्भाग्य है ? ऐसा अपवाद प्रायः किसी भी सज्जन पर दुष्ट जन लगाया ही करते हैं सदा, यह तो उनका स्वभाव ही है। अब अपने इस कलंकको धोकर जीवनको निर्मल और विशुद्ध बनाना भी अपना दृढ़ कर्तव्य है।"

"हां मुझे स्वीकार है बहन।" एभलने कहा उत्साह पूर्वक।

"जैसे मुझे जगत्को बताना है कि मैंने अपने पतिको अपने सतीत्व पर लगाये कलंकसे मुक्त होनेके लिये शाप तो दे दिया था पर उन्हें उस शापसे मुक्त भी कर दिया, उसी प्रकार जिस पर मेरे हेतु अपवाद रूप कलंक लगा, उसने भी अपनी निर्दोषिताके लिये बलि भोग दिया। उसका बचाना और बताना अन्य जनसे नहीं हो सकता।"

"ऐसा ! तो बता बहन वह क्या बलि है ?"

"जो तुम ऐसी बलि दे सको कि जिससे देवी प्रसन्न हो जाय तो तुम्हारा और मेरा सत्य अचल रह सके, किन्तु वह अति कठिन है, यद्यपि अन्तमें सत्यकी विजय होती ही है।"

"बहन ! अब, कठिन और सुगमका प्रश्न ही नहीं, बता तो सही।"

"तो भी कहते हुए मेरी जीभ.... "

"तो फिर आकाशवाणी होगी।" बीचमें ही राजा ने कहा।

नेहड़ी कहने लगी:—"अच्छा तो सुनो—खोडियार माताके पास मैं अपने स्वामी सहित जा रही हूं, वहां अपनी पवित्रता और इनकी (अपने स्वामीकी) रोगमुक्तिके लिये प्रार्थना करूंगी, परन्तु तुम्हें भी अपना कलंक मिटानेको राजकुमारको लेकर धूम धामसे सवारी सहित आना होगा वहां पर, और आवश्यकता पड़ने पर कुमारकी बलि भी सत्य की परीक्षा स्वरूप देनी होगी भाई।"

"बड़ी प्रसन्नतासे बहन! जब आप सच्चे हैं तो डर किस बातका? मैं अवश्य ही धूम धामके साथ आता हूं।"

इस प्रकार बातचीत करके राजाने नेहड़ीको संतोष दिलाया परन्तु मनमें बड़ा संताप हुआ और थोड़ी देरमें मूर्छित हो तड़पने लगा।

मित्रके लिए बलिदान

माधवका अपने मित्र अन्नाकुमारके बदले स्वयं बलि होनेको उद्यत होना

युवराज अन्नाकुमार पर बलिरूप आपत्ति आई जानकर उसके अभिन्न हृदय मित्र माधवके मनमें अति खेद हुआ। पिताके वचनोंका मान करते तथा उसके प्रणको निभानेके लिए यदि पुत्रको प्राण त्यागना पड़े तो भी उचित ही है, किन्तु यदि वंशका नाश होता हो तो ऐसे प्रणको त्याग देना यह पिताको भी विचारना चाहिये ऐसे विचारते-विचारते राज्यवंशको बचाने तथा मित्रकी रक्षार्थ अपना कर्तव्य निर्धारित कर लिया माधवने।

माधव प्रातः अन्नाकुमारके पास गया था वहीं सांई नेहड़ी वाली वास्तविक बात उसे ज्ञात हुई थी। उसने सब बातें यथाक्रम विचारकर भली भांति जान लिया कि मित्र अन्नाकुमारका बलि होगा ही, अतः उसने अपने मित्र की रक्षा कर, राज्यके उत्तराधिकारीको बचानेका यत्न सोच लिया। वह उसी क्षण चुपचाप सांई नेहड़ीके पास जा पहुँचा और बड़ी नम्रतापूर्वक बोला:—"आदरणीय बुआ जी! आवश्यकता पड़े तो क्या कुमारके बदले दूसरे कुमारकी बलि नहीं हो सकती? किसी भी राज्य बालक के बलिदान का प्रतिज्ञा हो तो मैं स्वयं उपस्थित हूं पर राजकुमारका बलि न हो।"

माधवके मुखसे उपरोक्त निष्कपट वाक्य सुनकर सांई नेहड़ी आश्चर्य चकित हो गई, उसे महान् प्रसन्नता हुई। यह जान करके कि जगत्में ऐसा मित्र अभी तक भी है जो मित्र के प्राणरक्षार्थ अपने प्राणोंका मोह त्याग सकता है। उसने नम्रता तथा स्नेहपूर्ण शब्दोंमें माधवसे कहा—"बेटा! किसीको भी बलि वलि नहीं चढ़ाना है. परन्तु जगत्के भ्रमको दूर करना है, तुम चिन्ता न करो, मिथ्या निन्दाको हटाना है, केवल दिखावा मात्र करना है।

नेहड़ीके ये वचन सुनकर माधवको संतोष हुआ और सभी दृश्य धैर्य पूर्वक देखता रहा क्योंकि उसे नेहड़ी पर पूर्ण विश्वास था।

इधर एभलकी मूर्छा दूर होते ही उसने राजकुमारको तुरन्त बुला भेजा। सांई नेहड़ी विक्षुब्ध हो गई, रानीका मन भी उदास हो गया, वह विशेष खिन्न हो गई पर कुछ न बोल सकी, नौकर चाकर भी चिन्तित हो गये।

"भाई एभल! तुम्हें बड़ा कष्ट पहुंचा दिखता है, तुम खिन्न हो गये दिखते हो, अपने इकलोते कुमारको बलि चढ़ानेका तुम्हारा साहस लुप्त हो गया दीखता और रानी—"

नेहड़ी इतना ही कह पाई थी कि कुमार अन्ना आ पहुंचा और कहने लगा—

"महाराज एभलवाला वज्र हृदयका वीर मानव है और उसका पुत्र भी कभी मरनेसे डरने वाला नहीं, सत्यके हेतु यह शुद्ध क्षत्रिय बच्चा मरनेको सदैव उद्यत है। अपने पिताश्रीका वचन निभानेके लिये मैं अपनी बलि देनेको उपस्थित हूं।"

"बसकर मेरे सिंह बच्चे बस! तेरे मुख से इतना ही सुनना था।" ऐसा कहकर राजाने अपने कुंवरको अंकमें लेकर आलिंगन किया। रानी भी हर्षित हो बोली—

"बेटा! तेरी भाव पूर्ण पितृ भक्ति देखकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ है।"

"इस चन्द्र स्वरूप तेजस्वी राजकुमारका बलि" किसी दासीने धीरेसे कहा।

"मेरा कुंवर अमर है।" रानी बोली।

"हां अमर ही है केवल सूर्य पर बादल छाया हुआ है" इतना कह सांई नेहड़ी पुनः कहने लगी—"प्यारे भाई एभल, प्यारी बहन रानी जी और कुमार अन्ना सुनो—मैं

पवित्र हूं, एभल मेरा पिता तुल्य तथा भाई समान है, किन्तु, कुटिलोंके बहकावेमें आकर मेरे पति देवको मेरी पावनता पर संदेह हो गया था, अनेक अनुनय विनय करने पर भी इनका संदेह न मिट सका, परन्च वह तो सीमा लांघकर हमारे सत्यका विनाश करने पर आरूढ़ हो गया और मुझसे अपने सत्यकी परीक्षार्थ कुछ परचा देनेका तीव्र आग्रह किया, तब विवश होकर मुझे परचा देना ही पड़ा जिसके फलस्वरूप मेरे स्वामीकी जो दशा हुई वह आप लोगोंके समक्ष है ही। अब, उनका शाप और संदेह मिटाते हुए अपने भाई एभल का कलंक भी धोकर जगत्को दिखानेका यह सब प्रयत्न है। माता जगदम्बा मेरे पर प्रसन्न है, कुमारका भोग बलि तो निमित्त मात्र है। यह सब होने पर दृश्य जगत्में सांई नेहड़ी और एभल वालाके बहन भाईका पवित्र सम्बन्ध सत्य सिद्ध हो जायगा। सच्चा और विशुद्ध सम्बन्ध होने पर भी एभल ने अपने कुंवरकी बलि देनेमें रंचक भी संकोच नहीं किया। हम दोनों सच्चे हैं। माता भोग माँगती ही नहीं। 'मेरी लाज तथा एभलकी टेक जा नहीं सकती। यही लोकको दिखाना है।'"

प्रभुने सब ही के हृदयोंमें सत्य प्रकटा दिया, सभी संकोच, सोच शोक और ग्लानि हीन मनसे एक मत हो गये।

"कुमार! तू मेरी आंखोंका तारा, जीवनका सहारा है पर..." एभलने इतना ही कहा था कि कुमार बीचमें ही बोल उठा—

"अपना और अपने बड़ोंका प्रण निभाने और वंशकी लाज रखाके लिये प्राणान्त तक पूर्ण प्रयत्न करना पुत्रका कर्तव्य है, और उसीका जन्म सार्थक है। कुपुत्रकी निन्दा और सुपुत्रकी पीठ पीछे भी बड़ाई ही होती है। पिताजी! मैंने आपका नाम उजागर करनेको जन्म लिया है, आपके प्रणको निभाना मेरा सच्चा जीवन है। यद्यपि यह तो संदेह तथा भ्रम निवारणार्थ केवल नाट्य लीला ही है, पर यदि सत्य भी हो तो क्या चिन्ता? क्षत्रियका बच्चा तो उदरमें से ही शूर उत्पन्न होता है। मृत्यु तो उसके वीर-जीवनका पट्टा है।"

अब यही निश्चय रहा कि कल प्रातःकाल माताके आगे कुमारकी बलि धूमधाम से होगी।

धन्य है नरवीर क्षत्रिय पुत्रों! तुम जन्मसे ही सिंहनी जैसी माताका दूध पीते रहे हो, तुम्हारा शरीर तो रणके लिये ही है, युद्ध अरु मृत्यु तो तुम्हारा आखेट और भक्ष्य ही है, तुम सदा इसी प्रकार पवित्र कार्य करते रहो, अपनी टेक निभाते रहो।

अब देखिये कि एभलके धैर्य, अन्नाकुमारके साहस, माधवकी मैत्री और सांई नेहड़ीकी पवित्रताका क्या परिणाम होता है।

सत्य प्राकट्य-जगदम्बा माताका परचा (अभयदान)

एभल वालाके राज्य भरमें पवन वेग के साथ ये समाचार प्रसारित हो गये कि 'सांई नेहड़ी अपने सतीत्वकी परीक्षाके लिए माता खोडियारके समक्ष उद्यत हैं और उसके हेतु महाराज एभल वाला अपने कुमारकी बलि देनेको भी सहर्ष उपस्थित हैं।' यह सुनते ही चारों दिशाओंसे लोगोंके ठट्ठ के ठट्ठ जगदम्बा माता भवानीके मठके सामने एकत्र होने लगे।

नगरमें कुमार बलि सुनकर हा हा कार मच गया, कई चाटुकार चापलूस राजाको मना करने लगे, दया दर्शाने लगे, राज्य हितैषी होनेका ढोंग बताने लगे। पाटवी राजकुमारके बलिसे राज गद्दी रिक्त हो जायगी आदि आदि मन मानी बातें बनाने लगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल कुमारको सभी प्रकारके श्रृंगार कराके हाथी पर बिठाया, उसका मित्र माधव भी पास बैठ गया और बड़ी धूम धाम बाजे गाजेके साथ सवारी चली जगदम्बाके मंदिरकी ओर। राजा, रानी मन्त्री आदि सभी छोटे मोटे अधिकारी, कर्मचारी, सेठ साहुकार आदि प्रजागण अपने अपने अधिकार तथा स्वरूपानुसार वाहनादि पर सवार होकर और दीनजन पैदल ही मातेश्वरीके मंदिरकी ओर जा रहे थे, मंदिरके पास पहुंचते ही घोर नाद होने लगा, पुजारी तथा साधु आदि सभी देवीका जय घोष करने लगे।

एभल, रानी, कुंवर और माधवने देवीके चरणोंमें साष्टांग प्रणाम किया, फिर ये सब एक ओर खड़े हो गये।

सांई नेहड़ीको सत चढ़ा, वह जगदम्बाकी स्तुति करने लगी। घड़ी पलमें ही रायका (नेहड़ का पति) अचेत होकर

गिर पड़ा। सभी दर्शकोंके नयनोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। इतनेमें ही एक नवीन बनाव बना—

सांई नेहड़ीने माताके चरणोंमें शिर नवाया, फिर नंगी तलवार हाथमें लिये ही पुनः युगल कर जोड़कर बोली:—

'ओ महामाया जगदम्बा। यदि मनसा वाचा कर्मणा मैं पतिव्रता हूं और तुझे अपना भोग (बलि) मिल गया हो तो मेरा स्वामी गढ़वी जो कुष्ठसे पीड़ित अचेत पड़ा है, पूर्ववत् नीरोग हो जाय।''

इतना कहते ही गढ़वी आरोग्य, दिव्य, तेजस्वी हो गया, किन्तु कुमार तुरन्त ही मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ा, उसके साथ ही माधव भी चेतना-रहित हो गया। हाहाकार मच गया दर्शकोंमें।

नेहड़ीने ज्योंही खांडा उठाकर अपने गले पर प्रहार करनेका प्रयास किया कि चट देवी जगदम्बाने प्रत्यक्ष प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोली: "सौभाग्यवती नेहड़ी बोल! बोल! मांग ले अब क्या चाहती है तू?"

नेहड़ीने खड्ग नीचे कर हर्षाश्रु पूरित नेत्रोंसे देखते हुए हाथ जोड़कर निवेदन किया—"महामाया! मैं दीन अबला क्या मांगूं? आपने मेरा सौभाग्य, मेरी टेक रख दी, अब तो इतना ही मांगता हूं कि यदि मेरा भाई एभल भी मेरी ही भाँति पवित्र है और मुझे सगी बहन ही मान रहा है तो उसपर कोई कलंक न रहे और उसका सुकुमार बालक अपने मित्रके साथ जीवित हो जाय तथा सदा न्याय पूर्वक प्रजा पालन करते हुए विजय लाभ कर दीर्घ आयु भोगकर प्रसिद्ध भक्त भी हो।"

"तथास्तु" कह कर माता जगदम्बा अन्तर्ध्यान हो गई और कुमार माधव सहित दिव्य, प्रकाश लिये उठ बैठे। यह आश्चर्यजनक स्वप्नवत् लीला देखकर सभी दर्शक गण, महामाया जगदम्बाका जय घोष करते हुए, सांई नेहड़ी, राजा, राजकुमार और माधवके गुण गान वा बड़ाई करते करते स्वस्थानको चलने लगे।

आस्तिक भावुक जन नेहड़ीके कारण जगज्जननी मातेश्वरीके प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त कर अपने भाग्यको सराहते हुए नेहड़ीको आशीष देते जा रहे थे।

पाठक गण! यह है भारतकी देवियोंका पवित्र पुनीत चरित्र, जिसकी समता संसारके अन्य सभ्य कहे जाने वाले किसी भी देशकी कोई एक भी स्त्री नहीं कर सकी और भविष्यमें भी कर सके इसमें तो संदेह ही है।

★★

योगासनों द्वारा आरोग्य-लाभ

योगका अर्थ है संयोग या मिलन। आत्माका परमात्माके साथ मिलाप करने या जोड़नेकी क्रियाओंका दिग्दर्शन कराना ही योगका मुख्य ध्येय है। इसी लक्ष्यसे योगदर्शनकार महर्षि पतंजलिने कहा है—"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।" चित्तवृत्तिके निरोधको योग कहते हैं; अर्थात् मनकी स्वाभाविक चंचलता (चलायमान प्रवृत्ति) को रोक कर मनको आत्माके साथ ही परमात्मामें एकाग्र करना; विविध विषयोंमें प्रवृत्त मनको एक ही विषय—परमात्मा—की ओर प्रवृत्त करना अति दुस्साध्य कार्य है। फिर भी गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि यद्यपि मनको किसी एक पदार्थमें स्थापित करना असम्भव प्रतीत होता है, फिर भी, निस्पृह भावसे सतत अभ्यास करते रहने पर मनकी चंचलताको रोक कर उसे आत्मवशीभूत या आत्माका आज्ञाकारी बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत लेखका विषय आत्मा परमात्माका दार्शनिक विवेचन नहीं है। योगासनों द्वारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य-लाभकी क्रियाओंका ही वर्णन करने हम जा रहे हैं। विशेषज्ञोंके मतानुसार इन योगासनोंके सतत साधन से साधक मन और शरीर—दोनों पर प्रभुत्व स्थापित कर लेता है। मनकी चलायमाना प्रवृत्ति पूर्णतः नष्ट हो जाती है और मन साधकके आदेशानुसार किसी एक देशमें—कार्यमें—एकाग्र हो जाता है। यहां यह ध्यान रखना अत्यावश्यक है कि बिना मनकी स्वस्थताके शरीर स्वस्थ हो ही नहीं सकता। इसलिये योगासनोंके साधकके समक्ष मनकी

निर्विकार और स्वस्थ और आत्मवशी बनानेकी सर्वप्रथम शर्त है। मनको तन्मय, तल्लीन करके योगासनों की क्रिया-प्रक्रियाओं द्वारा साधकको जो स्वास्थ्य-लाभ होगा, वह बहुत बड़ा और स्थायी होगा। इस लिये मानसिक साधना पर भी विशेष बल दिया गया है। आशा है साधकगण इस सम्बन्धमें विशेष विचार-पूर्वक कार्य करेंगे और योगासनों द्वारा अपनी मानसिक और शारीरिक शक्तियोंको पुष्ट और सक्षम बनायेंगे।

योगदर्शनमें योग-सिद्धिके लिये आठ अंग बताये गये हैं। इन आठ के अनेक उपांग भी हैं। फिर भी, हमारा वर्ण्य विषय केवल योगका तृतीय अंग आसन या शारीरिक साधन है। फिर भी, साधना-कालमें भोजन-सम्बन्धी कुछ नियमोंका और ब्रह्मचर्यका पालन नितान्त आवश्यक होगा। घी-दूधकी अधिकताके साथ सादा और परिमित भोजन साधकके लिये निस्सन्देह लाभप्रद होगा और ब्रह्मचर्यका सम्पूर्ण पालन तो स्वर्ण-भाजनमें अमृत-रस-पान करनेके समान हितकर होगा। इसके साथ ही अहिंसा, सत्य, ईश्वर पर विश्वास, शुभ संकल्प और अपनी मानसिक और शारीरिक उन्नतिके शुभ विचारोंसे सतत ओत-प्रोत रहना भी इस दिशामें निस्सन्देह सहायक होंगे और साधकगण निश्चय अपनी साधनामें कृतकार्य होंगे।

अब यहां हम कुछ आसनोंका दिग्दर्शन करा रहे हैं, जिनके प्रयोगसे शारीरिक तथा मानसिक अंगोंमें आरोग्यकी उपलब्धि की जा सकती है।

पद्मासन

इस आसनके प्रयोगसे मनुष्यकी आकृति पद्म अर्थात् कमल जैसी हो जाती है। लगभग दो हाथ लम्बे और दो ही हाथ चौड़े दर्भासन या गद्दे पर पैर फैला कर बैठें। तत्पश्चात् बायें पैरको घुटनोंसे मोड़कर दाहिनी जंघा पर दृढ़ स्थापित करें और फिर दाहिने पैरको मोड़ कर बाईं जंघा पर रखें। तदुपरान्त बायें हाथको बायें पैर पर तथा दाहिने हाथको दाहिने पैर पर स्थापित कर सीधा तन कर बैठ जायें, यही पद्मासनकी स्थिति है।

पद्मासनसे लाभ

(१) पद्मासन जप-तप, साधना और ध्यानके लिये सर्वश्रेष्ठ आसन है। पैरोंकी ओर रक्तका दबाव कम होने से अन्य अंगोंको रक्तकी अधिकाधिक उपलब्धि होती है।

(२) मन, प्राण तथा इन्द्रियोंको स्वाधिकृत और संयमित रखनेमें यह आसन बहुत सहायक है। इसके साधनसे जानु तथा पैरकी नाड़ियां शुद्ध होकर कार्यकुशल बन जाती हैं।

(३) यह आसन सुषुम्णा नाड़ीको सक्रिय बना देता है, अतः साधनाका फल अविलम्ब मिलता है। मन स्थिर तथा प्रशान्त बन जाता है और आत्मा स्थितप्रज्ञ।

आसनका सम्राट्—शीर्षासन

इस आसनमें शिर भूमि पर और पैर ऊपर आकाशकी ओर तने रहते हैं; अतः इसे शीर्षासनके नामसे पुकारा जाता है। आसनोंमें यह सर्वश्रेष्ठ आसन है।

पद्मासन-जैसी लम्बी-चौड़ी एक रुईकी गद्दी बिछा दें। दोनों हाथके पंजों की उंगलियोंको परस्पर सटा कर दोनों पंजोंको गद्दी पर स्थापित करें। फिर मस्तकको गद्दी पर दो पंजोंके आधार पर रखें। अब पैरके पंजों पर स्थिर रह कर घुटनोंसे पैरको सीधा करें। क्रमशः कमर पर बल देते हुए पैरोंको आकाशकी ओर ले जायें। इस आसनको आरम्भमें किसी व्यक्ति या दीवारके सहारे करना चाहिये।

महत्त्वपूर्ण सलाह

शीर्षासन बिना गद्दीके कभी न किया जाये, अन्यथा ज्ञानतन्तुओंको हानि पहुँचती है। शीर्षासन आरम्भमें १० सेकण्डसे अधिक समय तक करना उचित न होगा। क्रमशः समयमें १० ही सेकण्डकी वृद्धि करते हुए इस आसनको अधिकसे अधिक आध घण्टे तक करना हितकर होगा। किसी हलके व्यायामसे थक जानेकी स्थितिमें ही शीर्षासन शान्ति और लाभ प्रदान करता है। शीर्षासनके बाद तुरन्त कठोर व्यायाम करना वर्जित है। रातमें सोनेके समय शीर्षासन न करें।

शीर्षासन कौन कर सकता है ?

(१) किसी भी आयुके स्त्री-पुरुष इस आसनको कर सकते हैं। इससे रोगी नीरोग और नीरोगी अधिक आरोग्यवान् और बलवान् बन सकते हैं।

(२) कान पक रहा हो, हठीली सरदी और पुराना कब्ज सता रहा हो, हृदयमें कोई बीमारी हो, रक्त दबावका

रोग हो, तो शीर्षासन हानि पहुँचायेगा। जीर्ण पाण्डु रोगी, अत्यन्त कृशकाय और जीर्णज्वरके रोगियोंको शीर्षासन करना न चाहिये। नाकमें कोई विशेष खराबी हो और आंख अत्यधिक खराब हो, तो ऐसे लोग शीर्षासन न करें।

शीर्षासनका महत्त्व

"किडनीकी खराबी, हृदय-रोग, पाण्डु-रोग, रक्त-विकार सूजन आदि अनेक रोगोंकी शीर्षासन अव्यर्थ औषधि है।

—स्वामी शिवानन्द सरस्वती

"कुछ हास्यास्पद प्रतीत होने वाले शीर्षासनके व्यायाम से मेरी विनोद वृत्ति पर्याप्त विकसित हुई है। जीवनकी विचित्रताओंके प्रति मैं अधिक सहिष्णु बना हूं। अत्यधिक शिर पीड़ा क्या है, यह मैं जानता ही नहीं। अनिद्रासे तो मैं कभी परेशान नहीं हुआ। एक सुप्रसिद्ध डाक्टरने कहा था कि आपको चश्मा लेना पड़ेगा; किन्तु आज तक मुझे चश्माकी आवश्यकता नहीं पड़ी। यह सब शीर्षासनका प्रभाव है।"

—जवाहरलाल नेहरू

३—भुजंगासन

इस आसनके साधन-कालमें मानवकी आकृति सर्प जैसी हो जाती है, अतः इसे भुजगासन या सर्पासन कहते हैं। कन्धोंकी बगलमें दोनों हथेलियां रखकर पेटके बल लेट जायें। पैरोंके साथ ही उंगलियोंको भी खिचा हुआ रखें। प्रथम सिर ऊपर उठाकर गर्दनको जहां तक हो सके, पीछे खींचें और धीरे-धीरे छातीका भाग उठाकर हाथकी कुहनियोंका कोना बढ़ाते जायें और शिर उठाये हुए सर्पकी सी स्थिति बना लें।

आसनसे लाभ

भुजंगासनसे क्रोड़-रज्जु (रीढ) को व्यायाम मिलता है; अतः वह स्थिति-स्थापक और सुदृढ बनती है। कमरके अधिकांश रोग इससे दूर हो जाते हैं। पेटके स्नायुओंको व्यायाम प्राप्त होता है। यह जठरको कार्यकुशल बनाकर जठराग्निको उद्दीप्त करता है। वायुसे पीड़ित जन इस आसनसे अवश्य लाभ उठा सकते हैं। स्त्रियोंके लिए भी यह आसन लाभदायक है। नष्टार्तव, पीड़ितार्तव, श्वेतप्रदर आदि रोगोंमें यह आसन अतीव गुणकारी है। इस आसन से गर्दन हाथ और कन्धोंके स्नायु सुदृढ़ और शक्तिशाली बन जाते हैं।

४—धनुरासन

यह आसन करते समय शरीरकी आकृति धनुष-जैसी हो जाती है, अतः इसे धनुरासन कहा जाता है।

हाथोंको शरीरके पार्श्वमें रखकर पेटके बल लेट जायें। दोनों पैरोंके घुटनोंको मोड़कर नितम्बोंके बीच ऊपर लायें और दोनों पैरोंकी फीलियोंको दोनों हाथोंसे पकड़ कर सिर, छाती, घुटनों तथा जंघाओंको ऊपर उठायें। इस आसनमें नाभिके आस-पासका कुछ भाग जमीनसे सटा रहेगा।

स्मरण रखें

इस आसनमें क्रोड़रज्जुपर दबाव पड़ता है, अतः इस भाग पर धक्का या विशेष दबाव आने न पाये। स्त्रियां गर्भावस्थाके आरम्भसे ही यह आसन करना बन्द कर दें। एपेण्डिक्स या पेटकी किसी प्रकारकी भी सूजनमें यह आसन करना उचित नहीं। यह आसन करनेसे पहले थोड़ा पानी पी लेनेसे आंतें मजबूत बनती हैं।

धनुरासनके लाभ

बड़े पेट वाले व्यक्तिकी चरबी इस आसनसे एकदम कम हो जाती है। कठिन और भारी पेट कोमल और हलका हो जाता है। इस आसनसे बड़ी आंतको वेग और प्रोत्साहन प्राप्त होता है; फलतः मल-शुद्धि द्रुतगतिसे होती है। यह आसन स्त्रियोंके शरीरको सुन्दर सुडौल सुदृढ और स्वास्थ्य-सम्पन्न बना देता है। क्रोड-रज्जुपर प्रभाव पड़नेसे यह आसन ऊंचाई बढानेमें भी सहायक होता है। शरीरके सामान्य आरोग्य पर इसकी उत्तम प्रतिक्रिया होती है। यकृत्, प्लीहा, फेफड़े, आमाशय आदि सजीव कार्यपरायण अवयवों पर इस आसनका शुभ प्रभाव होता है; फलतः स्वास्थ्यमें सुधार होता है।

—

विजयादशमीका महत्त्व

[श्री दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश]

मैं आजन 'श्रीसनातनधर्मालोक' ग्रन्थमालाके ❀पञ्चम पुष्पके प्रकाशनमें लगा हुआ था; जिसकी पृष्ठ संख्या साढ़े आठसौके लगभग है—अतः 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी सेवा नहीं कर सका। अब सम्पादक महोदयकी प्रेरणासे विजयदशमीके समय होनेसे तदनुसार उनके सामने 'विजयादशमी' का महत्त्व रखा जाता है।

यह विजय दशमीका दिन है। इसी दिन भारतके हृदय सम्राट् भगवान् श्रीरामचन्द्रने राक्षस-राज दशमुख रावणकी विजयार्थ यात्रा प्रारम्भ की थी, और विजय प्राप्त की थी। यही दिन भारतमें अत्याचारी वैदेशिक-राजाका दमन कारी होनेसे भारतके लिए महत्त्व-पूर्ण है। यही दिन आर्योंका अनार्यों पर आक्रमणका कहा जाता है, अथवा पुण्यका पाप पर आक्रमणका दिन है यह। यह भारतके महोत्सवका दिन है। यही दिन हमें स्मरण कराता है कि भारतीय एक भी स्त्रीको यदि कोई विदेशी राजा कुविचारके संकल्पसे ले जाता है; जब तक उसे ससम्मान तथा अखण्डित रूपसे वापिस नहीं लौटाया जाता, तब तक विश्राम नहीं करना चाहिये। वैसे अत्याचारीको इस प्रकार मूलसे उखाड़ दो कि भविष्यमें फिर किसी भी वैदेशिकको भारतीय महिला पर कुदृष्टि करनेका संकल्प ही न हो। इसके अतिरिक्त जो वैदेशिक, ऋषि, मुनि वा तपस्वियों पर अत्याचार करता है, अथवा जो भारतीय धनको इकट्ठा करके समुद्र पार विदेशमें ले जाता है, वह भारतका अहित-कारक है। उसे इस प्रकार दण्डसे ठीक करो कि आगे कोई विदेशी भारतके प्रति कुदृष्टि कर ही न सके यह भारतीय क्षत्रियोंका कर्तव्य है— यह आजका दिन सिखला रहा है। वह यह भी समझाता है कि 'न्याय-मार्ग में चलने पर पशु-पक्षी भी आपके सहायक होंगे। जैसे कि कहा गया है—

'यान्ति न्याय प्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम्।
अपन्थानं तु गच्छन्तुं सोदरोऽपि विमुञ्चति'

यह विजयाका दिन भी है, सब देवोंने मिलकर शक्ति देवीको उत्पन्न किया था, जिसका दूसरा नाम 'विजया' था, उसने भारतीय नारियोंके अपमानकर्त्ता महिषासुर, शुम्भ, निशुम्भ, आदिका वध करके दिखला दिया कि—भारत-माताके अहित-कारकोंकी यही दशा हुआ करती है। इन्हीं दिनों सरस्वती-विसर्जन वा सरस्वती अवकाश करके दिखलाया जाता है कि यह विजय-यात्राका समय है। इस समयमें सभीको विद्या पठन-पाठनको भी स्थगित करके शक्तिका सञ्चय करना चाहिये, और स्वदेशके विजयार्थ विचार करना चाहिये। दुर्दान्त, भारत देशको ग्रस्त करती हुई, युद्धोन्मत्त जातियोंके विषमय-दाँत तोड़ देने चाहियें, उनकी विषैली पूंछको काट लेना चाहिये।

यह समय होता है वृष्टिकी समाप्तिका। ऐसा ही समय छः मासके बाद चैत्र मासके शुक्ल पक्षमें आता है। वह हिमपातकी समाप्तिका सूचक होता है। उसमें रामका जन्म होता है, और इसमें रामकी यात्रा होती है। यह नवरात्र शक्तिकी उपासनाके होते हैं। शक्तिकी उपासनासे ही युद्धमें दुर्मद महिषासुर आदिकी शक्तिका विनाश होता है। दैवी-शक्ति आसुरी शक्तिको शान्त करती है। इस समय न तो हिमकी प्रतिबन्धकता होती है न ही गर्मी वा वर्षाका प्रतिरोध ही होता है। तो शत्रु अनायास ही जीता जाता है।

इसमें विजयनायक वह हो सकता है, जो माता (भारत माताकी प्रतीक) पिता (विष्णु देवके प्रतीक) का आज्ञापालक होवे जिसका भाइयों (भारत भूमिके नाते अपने बन्धुओं) से सौहार्द हो; जहाँ पति-पत्नीकी पारस्परिक-सहानुभूति हो, पत्नीका पतिके विरहमें भी पातिव्रत्यमें अवधान हो, राजा प्रजाका परस्पर विश्वास हो। कहीं स्वजनों, बन्धु आदिमें ईर्ष्या वा छल अथवा भेद-नीतिका लेश भी न हो। जो ज्ञान एवं कर्मका सामंजस्य विधाता हो, विजय-

❀यह ग्रन्थमाला सभी प्रकारके व्यक्तियोंके लिए बहुत उपयोगी है; अतः इसे लेखकके नामसे 'रामदल दरीबा देहली' से मंगानेकी हम 'श्रीस्वाध्याय' के सभी हितैषियोंको प्रेरणा करते हैं।
—सम्पादक

श्री उसीके गले में विजय माला डालती है। यही विचारा था वा अनुकृत किया था, बल्कि-आदर्श रूपसे दिखलाया था भगवान् रामचन्द्रने । उनमें पहली बातें तो विश्व श्रुत ही हैं। अन्तिम-विजय सोपान उन्होंने दिखलाया कर्म और ज्ञानके सामञ्जस्य करनेका ।

कातर्यं केवला नीतिः शौर्यं श्वापद चेष्टितम्।
अतः सिद्धिं समेताभ्यांमुभाभ्यामन्विषेष सः ॥

यहां नीतिको ज्ञान और शूरताको कर्म बताया गया है। केवल नीति (पालिसी) का अवलम्बन कायरता बताई गई है, केवल शूरताका अवलम्बन क्रूरता-पशुगन खूंखार जीवोंकी दहाड़ माना गया है। एकके आश्रयणसे असिद्धि और दोनोंके आश्रयणसे सिद्धि कही गई है।

येषां दोर्बलमेव, दुबलतया ते सम्मतास्तैरपि,
प्रायः केवल नीतिरीति शरणैः कार्यं किमुर्वीश्वरैः।
ये क्ष्माशक्र! पुनः पराक्रमनय-स्वीकार कान्तक्षमा!
ते स्युर्नैव भवादृशास्त्रिजगति द्वित्राः पवित्राः परम् ॥

इस पद्यमें केवल भुज-बल वालेको भी दुर्बल माना गया है। केवल नीति करने वालोंको भी कुछ नहीं माना गया। पराक्रम और नीति दोनोंका जिन्होंने ठीक क्रम अवलम्बित किया है, वे ही सबल माने गए हैं। इसमें श्रीराम स्वयं ज्ञानके सजीव प्रतिनिधि थे। और लक्ष्मण हनुमान् आदि कर्मके प्रतिनिधि थे। इनके सामंजस्यसे ही इस पक्षकी विजय हुई। कर्म चाहिए अधिक, ज्ञान चाहिए थोड़ा। इसलिए उक्त-पद्यमें कर्मस्थानीय पराक्रमको 'अभ्यर्हितं पूर्वम्' इस नियमसे पूर्व रखा गया है, और ज्ञान स्थानीय नय (नीति) को पीछे। युद्धमें सेना कर्मस्थानीय होती है, और सेनापति ज्ञान स्थानीय। सेनापति थोड़े अपेक्षित होते हैं और सेना अपेक्षित होती है बहुत। यदि अधिक सेनापति हों, उनके अनुपातसे सेना थोड़ी हो, तब पराजय निश्चत हुआ करती है। इसी कारण शत-वर्षके हमारे जीवनमें ७५ वर्ष तक कर्मकाण्ड आदिष्ट किया गया है, और २५ वर्ष ज्ञानकाण्ड। तभी अभ्युदय निश्रेयस लक्षण साफल्य मिलता है।

इस प्रकार श्रीराम एक ज्ञानस्थानीय थे, लक्ष्मण हनुमान् आदि तथा वानर सेना यह कर्म स्थानीय थे। ऐसे सामञ्जस्यमें ही विजय हुआ। जिस पक्षका विजय नहीं होता, उसमें कारण कर्म एवं ज्ञान दोनोंका असामञ्जस्य ही होता है। तब जो पुरुष, अथवा जो संघ, अथवा जो जाति, या जो देश कर्म-ज्ञान रूप शूरता एवं नीति, सैनिक बल और प्रणिधि (जासूस) बल, शस्त्रबल एवं प्रचारबल (प्रोपेगण्डा), दोनोंका ठीक २ सामञ्जस्य करेगा; वही पुरुष, वही संघ, वही जाति, वही देश, वही राजा, वही सम्प्रदाय विजयको प्राप्त होगा।

विजयका महत्व सर्वजनविदित ही है। तब विजय की विचारणा तथा विजययात्राकी दिनस्वरूप-विजयदशमीका महत्व भी स्वतः सिद्ध है; क्योंकि वर्षाऋतु विजय यात्राकी प्रतिबन्धक हुआ करती है। पाकिस्तान हिन्दुस्तान दोनों की प्रतिद्वन्द्विता स्वतः सिद्ध है, अब सोचना पड़ेगा कि इन दोनोंमें किसके पक्षमें कर्म और ज्ञानका यथावत् सामञ्जस्य है? हमें हिन्दुस्तानकी विजय एष्टव्य है। इसमें उक्त दोनों बलोंमें यदि कुछ त्रुटि दीखती है; तो इसके शुभचिन्तकको चाहिए कि वह इसके नेताओंको सावधान करें। यह विशेष-रूपसे ध्यान देने योग्य बात है कि पाकिस्तान देश-विदेशमें अपने पक्षको दूधका धुला और हिन्दुस्तानके पक्षको छल मल युक्त सिद्ध किया करता है। इधर अवधान देना चाहिए। क्योंकि आजकल प्रचारका युग है। इसी प्रचारसे छली भी सरल और सरल भी छली सिद्ध किये जाते हैं। तब विजयेच्छुकोंको केवल सरलका भी आश्रय मायावियोंके साथ नहीं करना चाहिए क्योंकि कहा है—

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथा विधान्
असंवृतांगान् निशिता इवेषवः ॥
(किरातार्जुनीय १।३०)

अर्थात् मायावीसे सरलताका व्यवहार किया जावे, तो पराजय प्राप्त होता है। यही बात नैषधचरितमें कही गई है कि आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः (५।१०३) अर्थात् कुटिलोंके साथ सरलताका आचरण नीति नहीं होती। तब इस प्रकारके युगमें हिन्दुस्तानके धौरेयोंको भी पश्चात्पद न होना चाहिये, और कर्म एवं ज्ञानके सामञ्जस्यका यथावत् रखना चाहिए। इस प्रकारके रहस्योंको अपने आपमें रखती हुई इस विजय दशमीका महत्व स्पष्ट है। वह यही विजयदशमी प्रतिवर्ष आती हुई भारतको

क्या ज्योतिषी और ज्योतिषशास्त्र निरर्थक है ?

श्रीनेहरूजी और उनके साथी सोचें, समझें और विचारें

[लेखक—भक्त श्री रामशरणदास जी]

धर्मप्राण भारत ऋषि-मुनियोंका, ज्ञानियों ध्यानियों का, त्यागी तपस्वियोंका, सतियोंका, योगियोंका, देवी-देवताओंका प्राणप्यारा, नयनोंका तारा, हृदयका दुलारा, अद्भुत दिव्यातिदिव्य देश है और यह भगवान् श्रीराम कृष्णकी क्रीड़ास्थली है तभी तो ऋषियोंने डंकेकी चोट से कहा है 'दुर्लभं भारते जन्म' भारतमें जन्म लेना महान् दुर्लभ है और जिसका भारतमें जन्म हो गया उसके तो मानों भाग्योदय हो गये। मेरे इस दिव्य धर्मप्राण भारतके शासक, भारतके नरेश, राजा महाराजा, चक्रवर्ती सम्राट सदासे ही बड़े-बड़े धर्मात्मा, पुण्यात्मा, सदाचारी, जितेन्द्रिय, गो-ब्राह्मणोंके अनन्य भक्त, प्रतिपालक, परम आस्तिक, कट्टर सनातनधर्मी, देवमंदिरोंके अनन्य प्रेमी, वेद-शास्त्रोंके अनुसार चलने वाले होते चले आये हैं। तभी तो इस देशके एक धर्मात्मा राजा डंकेकी चोट घोषणा करके कहता है—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

मेरे देशमें कोई चोर नहीं, कोई कंजूस नहीं, मद्यप (शराबी) नहीं, और अग्निहोत्र न करने वाला नहीं, और अविद्वान् बे-पढ़ा लिखा नहीं, कोई व्यभिचारी नहीं, व्यभिचारिणी फिर भला कैसे हो सकती है ?

यह था इस धर्मप्राण भारतके शासकोंका महान् उच्चादर्श जिसे देखकर सारा विश्व भारतको जगद्गुरु मानकर श्रद्धासे सर झुकाता था। पर आज इसके विपरीत भारत के शासक प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू हैं जिनके राज्यमें सभी चोर बाजारी, घूंसखोरीमें संलग्न हैं और लाखों प्रत्यक्ष शराब पीते हैं तो करोड़ों अंग्रेजी दवाओंको पी जाते हैं, और अग्निहोत्र तो कौन करे पर घर-घर से बीड़ी सिगार, सिगरेटके गंदे विषैले जहरीले धूंवे निकल रहे हैं, और विद्वान् ऐसे हैं कि अपने देववाणी संस्कृत विद्याका

यह विजय मन्त्र प्रति वर्ष बोधित करती और स्मरण कराती रहती है। पुन पुनः आवृत्ति ही तो स्मरण कराने का साधन हुआ करती है। भारतके उन्नायकों तथा नायकों को उचित है कि वे विजय दशमीके इस सन्देश विजय-रहस्यको याद रखें और इस भारत देशको विजयी बनावें। विजयदशमीके ही दिन भगवान् रामने रावणके प्रति विजय यात्रा प्रारम्भ की थी और विजय प्राप्त किया था, विजयके बीज कर्म एवं ज्ञानका सामञ्जस्य यथावत् रखा। पूर्व ही संकेत किया जा चुका है कि कर्मकी अधिकता और ज्ञानकी अल्पता परन्तु उत्तमता अपेक्षित होती है, तभी विजय होता है। हमने जन्म से लेकर मरण तक सांसारिक युद्ध करके विजय को प्राप्त करना है, उसमें ऋषि मुनियोंने भी हमारे लिए ७५ वर्ष तक कर्मकाण्डका पट्टा यज्ञोपवीत हमें पहनने को कहा, उसके बाद २५ वर्ष तक ज्ञानकाण्डको आश्रयणीय बताया, इसीसे हम विजय रूप अमृतको प्राप्त करते हैं जिसका संकेत वेद ने ईशोपनिषद्में किया है कि—

अन्धतमः प्रविशन्ति ये अविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो च उ विद्यायांश्रिताः॥(यजुः ४०।१२)
विद्यां चाविद्यांच यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

यहां पर 'अविद्या' का अर्थ कर्म और 'विद्या' का अर्थ 'ज्ञान' है। कर्मसे यहां पर मृत्यु (असफलता) का दूर होना तथा ज्ञानसे अमृत (सफलता) का प्राप्त होना कहा है, तो ज्ञान एवं कर्मके सामञ्जस्यसे ही विजय प्राप्त हुआ करती है, यही विजयका रहस्य है, इसलिए विजयदशमीका भी महत्व है यही प्रतिवर्ष याद कराने के लिए 'विजयादशमी' आती रहती है।



तो एक अक्षरका भी ज्ञान नहीं पर अंग्रेजीके बी० ए० एम० ए० हो होकर निकल रहे हैं और कोरे महान् उद्दण्ड, उच्छृङ्खल बन रहे हैं और व्यभिचारके लिए तो तलाक बिल द्वारा पूरी छूट ही दे दी गई है। जवान जवान लड़कियोंसे सबके सामने डांस करा कराकर देशको व्यभिचारकी भट्टीमें झोंका जा रहा है और कलाके नाम पर हिन्दू ललनाओंको वेश्या बनाया जा रहा है।

कम्यूनिस्ट देशोंको छोड़कर क्या अमेरिका, क्या हालेण्ड, क्या जर्मनी-जापान, क्या तुर्की, ईरान, काबुल सभी देशोंके क्या ईसाई, क्या मुसलमान, क्या अंग्रेज क्या बौद्ध सभी किसी न किसी रूपमें ईश्वर को मानते हैं, तीर्थोंको मानते हैं, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरको मानते हैं, स्वर्ग नरक को मानते हैं, परलोकमें विश्वास करते हैं और ज्योतिष विद्याको और ज्योतिषियोंको मानते हैं। कोई भी देश ऐसा नहीं है कि जो ज्योतिष विद्याको गलत बताता हो और जो अपने मौलवियोंसे, पादरियोंसे, लामाओंसे पूछकर कार्य न करता हो? पर भारतके प्रधानमंत्री जहां सनातनधर्मकी प्रत्येक बातसे नाक-भौं सिकोड़ते हैं वहां वह ज्योतिषियोंके पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं और बड़ी-बड़ी लाखोंकी सभाओंमें ज्योतिषियोंके विरुद्ध जो चाहे सो खुलकर कहते हैं।

क्या यह उचित है?

जिन श्री जवाहरलाल नेहरूने ज्योतिष-शास्त्रको कभी नहीं देखा, जिन्हें ज्योतिष-विद्याकी तनिक भी जानकारी नहीं, जिन्होंने कभी सच्चे उच्चकोटिके ज्योतिषियोंसे मिलनेका प्रयत्न नहीं किया, वही विराट सभामें खड़े होकर यह कहें कि ज्योतिषी, तिलकधारी नालायक हैं, झूठे हैं, क्या शोभा देता है? आपने पिछले दिनों पटनामें तिलैया बांधका उद्घाटन करते हुए कहा जो पत्रोंमें इस प्रकार छपा है—

"तिलैया बांधका उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नेहरुने ज्योतिषियों पर विश्वास करने वाले लोगोंको सम्बोधित करते हुए कहा कि तिलैया बांध इस बातका सूचक है कि प्राकृतिक प्रकोपों पर विजय पानेके लिये मनुष्य अपने कठोर परिश्रमसे क्या कर सकता है? केवल मूर्ख लोग ही अपनी कठिनाइयोंके हलके लिए ज्योतिषियोंके पास जाते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य मुसीबतोंसे पार जानेके लिये अपने दिमाग और अपने हाथका प्रयोग करते हैं।"

यह है आपका भाषण जिसमें नेहरुजी ज्योतिषियोंके पास जाने वालोंको मूर्ख बतला रहे हैं। मैं नेहरूजीसे पूछता हूं कि क्या चक्रवर्ती सम्राट् महाराजा दिलीप, महाराजा दशरथ, भगवान् श्रीराम, कृष्ण, जनक, हरिश्चन्द्र, अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरुगोविन्दसिंह, महाराजा रणजीत सिंह, हरिसिंह नलुवा, आदि बड़े-बड़े धर्मात्मा राजा महाराजा और जगद्गुरु भगवान् शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, रामानंद, तुलसी, सूर आदि धर्माचार्य, संत, महात्मा, महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, योगी याज्ञवल्क्य आदि लाखों ऋषि-महर्षि क्या सभी कोरे चालीस सेर मूर्ख थे कि जो ज्योतिष-शास्त्रको मानते थे और प्रत्येक कार्य ज्योतिषियोंको बुलाकर शुभ मुहूर्त दिखाकर करते थे एवं उनके अनुसार चलते थे, सभी धर्माचार्य ज्योतिषि-शास्त्रको मानते थे ज्योतिष-विद्याको जानते थे, और हिन्दू बच्चे-बच्चेके नाम ज्योतिषियोंके द्वारा ही रक्खे हुए थे। आज भी हैं और आगेको भी होंगे, क्या किसीके भी दिमाग नहीं था और सभी दकियानूसी विचार वाले मूर्ख थे? आपके बराबर सृष्टिके प्रारम्भसे लेकर आजतक कोई भी बुद्धिमान् नहीं हुआ? बस एकमात्र आप ही हुए हैं। और सुनिये आपका इलाहाबादमें दिया हुआ भाषण जो देहलीके नवभारत टाइम्स ता० ५ अप्रेल सन् १९५६ पृष्ठ १, कालम ५ पर छापा है जो इस प्रकार है—

ज्योतिषी खतरनाक व्यक्ति

"इलाहाबाद ४ अप्रैल। प्रधानमंत्री नेहरूने आज यहां कहा कि ज्योतिषी खतरनाक व्यक्ति हैं किन्तु जो लोग उनके पास जाते हैं वे और भी ज्यादा खतरनाक हैं। श्रीनेहरूने जो यहां क्रियात्मक भौतिक शास्त्रकी संस्थाका उद्घाटन कर रहे थे कहा कि विज्ञान इतनी तेजीसे आगे बढ़ रहा है कि पता नहीं यह संसारको कहां ले जायगा। कुछ लोग कह सकते हैं कि इसका जवाब ज्योतिषियोंके पास है। प्रधानमंत्रीने हंसीके बीच कहा कि वे बहुत खतरनाक व्यक्ति हैं और उनसे भी वह खतरनाक हैं कि जो ज्योतिषियोंके पास सलाहके लिये जाते हैं।"

इसके अतिरिक्त अप्रेल सन् १९५६ में ही एक दूसरी जगह भाषण देते हुए आपने कहा—

"देशोन्नतिके कार्य माला-जपने, मंत्र पढ़ने और ज्योतिषियोंसे सलाह लेनेसे नहीं होंगे।"

इस प्रकार आप कभी ज्योतिषियोंको खतरनाक बताते हैं तो कभी ज्योतिषियोंके पास जाने वालोंको खतरनाक बताते हैं तो कभी ज्योतिषियोंसे पूछने वालोंको मूर्ख बताते हैं जो जीमें आता है कहते हैं, इस बात पर तनिक भी विचार नहीं करते कि मैं किस देशका प्रधानमंत्री हूँ, मैं किस पद पर हूँ और मेरा क्या उत्तरदायित्व है ? तथा मेरे भाषणका जनता पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

क्या वास्तवमें ज्योतिषी खतरनाक हैं ?

मैं नेहरूजी से पूछता हूं क्या वास्तवमें ज्योतिषी खतरनाक हैं ? आप यदि कहें कि ज्योतिषी झूठ बोलते हैं और उनकी बातें झूठी निकलती हैं और ज्योतिषी ठगते हैं तो मैं पूछता हूँ नेहरूजी क्या सभी ज्योतिषी झूठे हैं और सबकी बातें झूठी हैं और क्या सभी ठगते हैं ? नहीं नहीं ऐसा नहीं, कभी तीन कालमें ऐसा नहीं। मैं पूछता हूं कि यदि अधिकांशमें झूठे हैं और ठगते हैं तो इसमें बेचारे सच्चे ज्योतिषियोंका क्या अपराध और इसमें ज्योतिष-शास्त्र, ज्योतिष-विद्याका क्या दोष ? जिस प्रकार अबसे २५ वर्ष पूर्व सारे विश्वमें असली गाय भैंस के घृतके अतिरिक्त कोटोजम नकली घीका कहीं नाम भी नहीं था सर्वत्र असली ही असली घृत था पर अब असली देखनेको भी नहीं मिलता, सब जगह नकली कोटोजम, डालडा घी मिलता है, तो क्या यह देखकर क्रोधमें भरकर असली घृतको गाली बकने लगना और जो यह कहते हैं कि असली घृत भी होता है वह गलत कहते हैं और न कभी असली घृत हुआ और न है और जो असली घृतकी बातें करते हैं वह नालायक हैं, मूर्ख हैं, खतरनाक हैं, तो क्या ऐसा कहना उचित है ? क्या यह बुद्धिमानी है ? क्या सब जगह नकली घी की भरमार होने पर भी असली गो घृत संसारमें नहीं है ? या नहीं होता था ? यह मूर्खता-पूर्ण बात मानी जायेगी ? मैं पूछता हूं और डंकेकी चोट पूछता हूं कि जरा बतायें तो कि क्या लाखों डाक्टर मरीजोंको, रोगियोंको दवा देते हैं तो क्या सभी रोगी अच्छे हो जाते हैं और सभी मरनेसे बच जाते हैं ? दवा देने पर नहीं मरते ? यदि लाखों मर जाते हैं तो क्या कभी डाक्टरोंको झूठा, लुटेरा मानकर मूर्ख बताया, खतरनाक बताया या इन्हें फांसीके तख्तों पर लटकाया ? हजारों वकील, बैरिस्टर दिन-रात मुकद्में लड़वाते हैं, क्या यह सभी मुकद्में जितवा देते हैं ? यह किसीको नहीं ठगते लूटते ? जब हजारों, लाखों वकील, बैरिस्टरोंको रुपया देने पर भी मुकद्में हार जाते हैं तो क्या किसीने इन्हें लुटेरा, ठग मानकर मूर्ख झूठा, खतरनाक ठहराया ? इसी प्रकार ज्योतिषियोंकी कोई बात यदि झूठी निकल जाती है तो उन्हींके पीछे लठ्ठ लेकर क्यों पड़ा जाय ? पहिले सारे भारतमें सनातनधर्मी ब्राह्मण ज्योतिषी बिलकुल सच्चे, त्रिकालज्ञ होते थे और नामको भी झूठ नहीं बोलते थे। पर कलिकालके कारण जहां असली घृतकी जगह नकली घी आया, जहां देववाणी संस्कृतकी जगह म्लेच्छ भाषा अंग्रेजी फारसी आई, जहाँ हवन यज्ञकी जगह बीड़ी, सिगार, सिगरिटके गंदे-विषैले, धूएं आये और जहां चरणामृतकी जगह डायन चाय, चांडालनी आई और जहाँ पूज्य ब्राह्मणोंके ब्रह्मभोजकी जगह खड़े खड़े मूतने वालोंकी टीपार्टी होने लगी, और जहां राम कृष्णकी जयकी जगह धर्मद्रोही नेताओंकी जय बुलने लगी, जहां शास्त्रोंके स्वाध्यायकी जगह अखबार बाजी होने लगी और कीर्तनकी जगह रेडियोके घर घर गंदे गाने होने लगे और पतिव्रता माताओंकी जगह सिनेमाओंकी तितलियोंकी पूजा होने लगी, गायकी जगह कुत्ते पाले जाने लगे, गोदुग्धकी नदियां बहनेकी जगह गोरक्तकी नदियां बहने लगी वहाँ इसी प्रकार असली सनातनधर्मी, त्यागी तपस्वी ब्राह्मण ज्योतिषियोंकी जगह नकली माली कोली, धुना, जुलाहा, जाट गुजर आदि सभी जातियोंके मनुष्य तिलक छापे लगाकर अपनेको ज्योतिषी बताकर सड़कों पर बैठकर लोगोंको ठगने लगे. इसमें असली सनातनधर्मी ज्योतिषियोंका और ज्योतिष शास्त्रका क्या दोष ? आज देशभक्तिके नाम पर बड़े बड़े लीडर नेता करोड़ों रुपयों का गोलमाल कर रहे हैं और दिन रात जवान जवान लड़कियोंके डांसदेख-देख कर रंग रेलियां मना रहे हैं, जशन मना रहे हैं तो क्या सभी नेताओंको गाली दी जांय या देशभक्तिको बुराभला कहा जाय, क्या शोभा देगा ? जिस प्रकार असली घृत न मिलने पर भी है—अवश्य और वह किसीको भी कभी हानि नहीं पहुंचाता

नेहड़ी कहने लगी :—"अच्छा तो सुनो—खोडियार माताके पास मैं अपने स्वामी सहित जा रही हूं, वहां अपनी पवित्रता और इनकी (अपने स्वामीकी) रोगमुक्तिके लिये प्रार्थना करूंगी, परन्तु तुम्हें भी अपना कलंक मिटानेको राजकुमारको लेकर धूम धामसे सवारी सहित आना होगा वहां पर, और आवश्यकता पड़ने पर कुमारकी बलि भी सत्य की परीक्षा स्वरूप देनी होगी भाई।"

"बड़ी प्रसन्नतासे बहन ! जब आप सच्चे हैं तो डर किस बातका ? मैं अवश्य ही धूम धामके साथ आता हूं।"

इस प्रकार बातचीत करके राजाने नेहड़ीको संतोष दिलाया परन्तु मनमें बड़ा संताप हुआ और थोड़ी देरमें मूर्छित हो तड़पने लगा।

मित्रके लिए बलिदान

माधवका अपने मित्र अन्नाकुमारके बदले स्वयं बलि होनेको उद्यत होना

युवराज अन्नाकुमार पर बलिरूप आपत्ति आई जानकर उसके अभिन्न हृदय मित्र माधवके मनमें अति खेद हुआ। पिताके वचनोंका मान करते तथा उसके प्रणको निभानेके लिए यदि पुत्रको प्राण त्यागना पड़े तो भी उचित ही है, किन्तु यदि वंशका नाश होता हो तो ऐसे प्रणको त्याग देना यह पिताको भी विचारना चाहिये ऐसे विचारते-विचारते राज्यवंशको बचाने तथा मित्रकी रक्षार्थ अपना कर्तव्य निर्धारित कर लिया माधवने।

माधव प्रातः अन्नाकुमारके पास गया था वहीं सांई नेहड़ी वाली वास्तविक बात उसे ज्ञात हुई थी। उसने सब बातें यथाक्रम विचारकर भली भांति जान लिया कि मित्र अन्नाकुमारका बलि होगा ही, अतः उसने अपने मित्र की रक्षा कर, राज्यके उत्तराधिकारीको बचानेका यत्न सोच लिया। वह उसी क्षण चुपचाप सांई नेहड़ीके पास जा पहुँचा और बड़ी नम्रतापूर्वक बोला:—"आदरणीय भुवा जी ! आवश्यकता पड़े तो क्या कुमारके बदले दूसरे कुमारकी बलि नहीं हो सकती ? किसी भी राज्य बालक के बलिदान का प्रतिज्ञा हो तो मैं स्वयं उपस्थित हूं पर राजकुमारका बलि न हो।"

माधवके मुखसे उपरोक्त निष्कपट वाक्य सुनकर सांई नेहड़ी आश्चर्य चकित हो गई, उसे महान् प्रसन्नता हुई। यह जान करके क जगत्में ऐसा मित्र अभी तक भी है जो मित्र के प्राणरक्षार्थ अपने प्राणोंका मोह त्याग सकता है। उसने नम्रता तथा स्नेहपूर्ण शब्दोंमें माधवसे कहा—"बेटा ! किसीको भी बलि वलि नहीं चढ़ाना है, परन्च जगत्के भ्रमको दूर करना है, तुम चिन्ता न करो, मिथ्या निन्दाको हटाना है, केवल दिखावा मात्र करना है।

नेहड़ीके ये वचन सुनकर माधवको संतोष हुआ और सभी दृश्य धैर्य पूर्वक देखता रहा क्योंकि उसे नेहड़ी पर पूर्ण विश्वास था।

इधर एभलकी मूर्छा दूर होते ही उसने राजकुमारको तुरन्त बुला भेजा। सांई नेहड़ी विक्षुब्ध हो गई, रानीका मन भी उदास हो गया, वह विशेष खिन्न हो गई पर कुछ न बोल सकी, नौकर चाकर भी चिन्तित हो गये।

"भाई एभल ! तुम्हें बड़ा कष्ट पहुंचा दिखता है, तुम खिन्न हो गये दिखते हो, अपने इकलौते कुमारको बलि चढ़ानेका तुम्हारा साहस लुप्त हो गया दीखता और रानी—"

नेहड़ी इतना ही कह पाई थी कि कुमार अन्ना आ पहुंचा और कहने लगा—

"महाराज एभलवाला वज्र हृदयका वीर मानव है और उसका पुत्र भी कभी मरनेसे डरने वाला नहीं, सत्यके हेतु यह शुद्ध क्षत्रिय बच्चा मरनेको सदैव उद्यत है। अपने पिताश्रीका वचन निभानेके लिये मैं अपनी बलि देनेको उपस्थित हूं।"

"बसकर मेरे सिंह बच्चे बस ! तेरे मुख से इतना ही सुनना था।" ऐसा कहकर राजाने अपने कुंवरको अंकमें लेकर आलिंगन किया। रानी भी हर्षित हो बोली—

"बेटा ! तेरी भाव पूर्ण पितृ भक्ति देखकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ है।"

"इस चन्द्र स्वरूप तेजस्वी राजकुमारका बलि" किसी दासीने धीरेसे कहा।

"मेरा कुंवर अमर है।" रानी बोली।

"हां अमर ही है केवल सूर्य पर बादल छाया हुआ है" इतना कह सांई नेहड़ी पुनः कहने लगी—"प्यारे भाई एभल, प्यारी बहन रानी जी और कुमार अन्ना सुनो—मैं

पवित्र हूं, एभल मेरा पिता तुल्य तथा भाई समान है, किन्तु, कुटिलोंके बहकावेमें आकर मेरे पति देवको मेरी पावनता पर संदेह हो गया था, अनेक अनुनय विनय करने पर भी इनका संदेह न मिट सका, परन्च वह तो सीमा लांघकर हमारे सत्यका विनाश करने पर आरूढ़ हो गया और मुझसे अपने सत्यकी परीक्षार्थ कुछ परचा देनेका तीव्र आग्रह किया, तब विवश होकर मुझे परचा देना ही पड़ा जिसके फलस्वरूप मेरे स्वामीकी जो दशा हुई वह आप लोगोंके समक्ष है ही । अब, उनका शाप और संदेह मिटाते हुए अपने भाई एभल का कलंक भी धोकर जगत्को दिखानेका यह सब प्रयत्न है । माता जगदम्बा मेरे पर प्रसन्न है, कुमारका भोग बलि तो निमित्त मात्र है । यह सब होने पर दृश्य जगत्में सांई नेहड़ी और एभल वालाके बहन भाईका पवित्र सम्बन्ध सत्य सिद्ध हो जायगा । सच्चा और विशुद्ध सम्बन्ध होने पर भी एभल ने अपने कुंवरकी बलि देनेमें रंचक भी संकोच नहीं किया । हम दोनों सच्चे हैं। माता भोग माँगती ही नहीं। मेरी लाज तथा एभलकी टेक जा नहीं सकती। यही लोकको दिखाना है ।''

प्रभुने सब ही के हृदयोंमें सत्य प्रकटा दिया, सभी संकोच, सोच शोक और ग्लानि हीन मनसे एक मत हो गये।

"कुमार ! तू मेरी आंखोंका तारा, जीवनका सहारा है पर...'' एभलने इतना ही कहा था कि कुमार बीचमें ही बोल उठा—

"अपना और अपने बड़ोंका प्रण निभाने और वंशकी लाज रक्षाके लिये प्राणान्त तक पूर्ण प्रयत्न करना पुत्रका कर्तव्य है, और उसीका जन्म सार्थक है । कुपुत्रकी निन्दा और सुपुत्रकी पीठ पीछे भी बड़ाई ही होती है। पिताजी ! मैंने आपका नाम उजागर करनेको जन्म लिया है, आपके प्रणको निभाना मेरा सच्चा जीवन है । यद्यपि यह तो संदेह तथा भ्रम निवारणार्थ केवल नाट्य लीला ही है, पर यदि सत्य भी हो तो क्या चिन्ता ? क्षत्रियका बच्चा तो उदरमें से ही शूर उत्पन्न होता है । मृत्यु तो उसके वीर-जीवनका पट्टा है ।''

अब यही निश्चय रहा कि कल प्रातःकाल माताके आगे कुमारकी बलि धूमधाम से होगी ।

धन्य है नरवीर क्षत्रिय पुत्रों ! तुम जन्मसे ही सिंहनी जैसी माताका दूध पीते रहे हो, तुम्हारा शरीर तो रक्षाके लिये ही है, युद्ध अरु मृत्यु तो तुम्हारा आखेट और भक्ष्य ही है, तुम सदा इसी प्रकार पवित्र कार्य करते रहो, अपनी टेक निभाते रहो ।

अब देखिये कि एभलके धैर्य, अन्नाकुमारके साहस, माधवकी मैत्री और सांई नेहड़ीकी पवित्रताका क्या परिणाम होता है ।

सत्य प्राकट्य-जगदम्बा माताका परचा (अभयदान)

एभल वालाके राज्य भरमें पवन वेग के साथ ये समाचार प्रसारित हो गये कि 'सांई नेहड़ी अपने सतीत्वकी परीक्षाके लिए माता खोडियारके समक्ष उद्यत है और उसके हेतु महाराज एभल वाला अपने कुमारकी बलि देनेको भी सहर्ष उपस्थित हैं।' यह सुनते ही चारों दिशाओंसे लोगोंके ठठ्ठ के ठठ्ठ जगदम्बा माता भवानीके मठके सामने एकत्र होने लगे।

नगरमें कुमार बलि सुनकर हा हा कार मच गया, कई चाटुकार चापलूस राजाको मना करने लगे, दया दर्शाने लगे, राज्य हितैषी होनेका ढोंग बताने लगे। पाटवी राजकुमारके बलिसे राज गद्दी रिक्त हो जायगी आदि आदि मन मानी बातें बनाने लगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल कुमारको सभी प्रकारके श्रृंगार कराके हाथी पर बिठाया, उसका मित्र माधव भी पास बैठ गया और बड़ा धूम धाम बाजे गाजेके साथ सवारी चली जगदम्बाके मंदिरकी ओर। राजा, रानी मन्त्री आदि सभी छोटे मोटे अधिकारी, कर्मचारी, सेठ साहुकार आदि प्रजागण अपने अपने अधिकार तथा स्वरूपानुसार वाहनादि पर सवार होकर और दीनजन पैदल ही मातेश्वरीके मंदिरकी ओर जा रहे थे, मंदिरके पास पहुंचते ही घोर नाद होने लगा, पुजारी तथा साधु आदि सभी देवीका जय घोष करने लगे।

एभल, रानी, कुंवर और माधवने देवीके चरणोंमें साष्टांग प्रणाम किया, फिर ये सब एक ओर खड़े हो गये।

सांई नेहड़ीको सत चढ़ा, वह जगदम्बाकी स्तुति करने लगी। घड़ी पलमें ही रायका (नेहड़ का पति) अचेत होकर

गिर पड़ा। सभी दर्शकोंके नयनोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। इतनेमें ही एक नवीन बनाव बना—

सांई नेहड़ीने माता के चरणोंमें शिर नवाया, फिर नंगी तलवार हाथमें लिये ही पुनः युगल कर जोड़कर बोलीः—

'ओ महामाया जगदम्बा। यदि मनसा वाचा कर्मणा मैं पतिव्रता हूं और तुझे अपना भोग (बलि) मिल गया हो तो मेरा स्वामी गढ़वी जो कुष्ठसे पीड़ित अचेत पड़ा है, पूर्ववत् नीरोग हो जाय।''

इतना कहते ही गढ़वी आरोग्य, दिव्य, तेजस्वी हो गया, किन्तु कुमार तुरन्त ही मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ा, उसके साथ ही माधव भी चेतना-रहित हो गया। हाहाकार मच गया दर्शकोंमें।

नेहड़ीने ज्योंही खांडा उठाकर अपने गले पर प्रहार करनेका प्रयास किया कि चट देवी जगदम्बाने प्रत्यक्ष प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोलीः "सौभाग्यवती नेहड़ी बोल! बोल! मांग ले अब क्या चाहती है तू?"

नेहड़ीने खड्ग नीचे कर हर्षाश्रु पूरित नेत्रोंसे देखते हुए हाथ जोड़कर निवेदन किया —"महामाया! मैं दीन अबला क्या मांगूं? आपने मेरा सौभाग्य, मेरी टेक रख दी, अब तो इतना ही मांगती हूं कि यदि मेरा भाई एभल भी मेरी ही भाँति पवित्र है और मुझे सगी बहन ही मान रहा है तो उसपर कोई कलंक न रहे और उसका सुकुमार बालक अपने मित्रके साथ जीवित हो जाय तथा सदा न्याय पूर्वक प्रजा पालन करते हुए विजय लाभ कर दीर्घ आयु भोगकर प्रसिद्ध भक्त भी हो।''

"तथास्तु" कह कर माता जगदम्बा अन्तर्ध्यान हो गईं और कुमार माधव सहित दिव्य, प्रकाश लिये उठ बैठे। यह आश्चर्यजनक स्वप्नवत् लीला देखकर सभी दर्शक गण, महामाया जगदम्बाका जय घोष करते हुए, सांई नेहड़ी, राजा, राजकुमार और माधवके गुण गान वा बड़ाई करते करते स्वस्थानको चलने लगे।

आस्तिक भावुक जन नेहड़ीके कारण जगज्जननी मातेश्वरीके प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त कर अपने भाग्यको सराहते हुए नेहड़ीको आशीष देते जा रहे थे।

पाठक गण! यह है भारतकी देवियोंका पवित्र पुनीत चरित्र, जिसकी समता संसारके अन्य सभ्य कहे जाने वाले किसी भी देशकी कोई एक भी स्त्री नहीं कर सकी और भविष्यमें भी कर सके इसमें तो संदेह ही है।

★★



योगासनों द्वारा आरोग्य-लाभ



योगका अर्थ है संयोग या मिलन। आत्माका परमात्माके साथ मिलाप करने या जोड़नेकी क्रियाओंका दिग्दर्शन कराना ही योगका मुख्य ध्येय है। इसी लक्ष्यसे योगदर्शनकार महर्षि पतंजलिने कहा है—"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।" चित्तवृत्तिके निरोधको योग कहते हैं; अर्थात् मनकी स्वाभाविक चंचलता (चलायमान प्रवृत्ति) को रोक कर मनको आत्माके साथ ही परमात्मामें एकाग्र करना; विविध विषयों में प्रवृत्त मनको एक ही विषय—परमात्मा—की ओर प्रवृत्त करना अति दुस्साध्य कार्य है। फिर भी गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि यद्यपि मनको किसी एक पदार्थमें स्थापित करना असम्भव प्रतीत होता है, फिर भी, निस्पृह भावसे सतत अभ्यास करते रहने पर मनकी चंचलताको रोक कर उसे आत्मवशीभूत या आत्माका आज्ञाकारी बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत लेखका विषय आत्मा परमात्माका दार्शनिक विवेचन नहीं है। योगासनों द्वारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य-लाभकी क्रियाओंका ही वर्णन करने हम जा रहे हैं। विशेषज्ञोंके मतानुसार इन योगासनोंके सतत साधन से साधक मन और शरीर—दोनों पर प्रभुत्व स्थापित कर लेता है। मनकी चलायमाना प्रवृत्ति पूर्णतः नष्ट हो जाती है और मन साधकके आदेशानुसार किसी एक देशमें—कार्य में—एकाग्र हो जाता है। यहां यह ध्यान रखना अत्यावश्यक है कि बिना मनकी स्वस्थताके शरीर स्वस्थ हो ही नहीं सकता। इसलिये योगासनोंके साधकके समस्त मनको

निर्विकार और स्वस्थ और आत्मवशी बनानेकी सर्वप्रथम शर्त है। मनको तन्मय, तल्लीन करके योगासनों की क्रिया-प्रक्रियाओं द्वारा साधकको जो स्वास्थ्य-लाभ होगा, वह बहुत बड़ा और स्थायी होगा। इस लिये मानसिक साधना पर भी विशेष बल दिया गया है। आशा है साधकगण इस सम्बन्धमें विशेष विचार-पूर्वक कार्य करेंगे और योगासनों द्वारा अपनी मानसिक और शारीरिक शक्तियोंको पुष्ट और सक्षम बनायेंगे।

योगदर्शनमें योग-सिद्धिके लिये आठ अंग बताये गये हैं। इन आठ के अनेक उपांग भी हैं। फिर भी, हमारा वर्ण्य विषय केवल योगका तृतीय अंग आसन या शारीरिक साधन है। फिर भी, साधना-कालमें भोजन-सम्बन्धी कुछ नियमोंका और ब्रह्मचर्यका पालन नितान्त आवश्यक होगा। घी-दूधकी अधिकताके साथ सादा और परिमत भोजन साधकके लिये निस्सन्देह लाभप्रद होगा और ब्रह्मचर्यका सम्पूर्ण पालन तो स्वर्ण-भाजनमें अमृत-रस-पान करनेके समान हितकर होगा। इसके साथ ही अहिंसा, सत्य, ईश्वर पर विश्वास, शुभ संकल्प और अपनी मानसिक और शारीरिक उन्नतिके शुभ विचारोंसे सतत ओत-प्रोत रहना भी इस दिशामें निस्सन्देह सहायक होंगे और साधकगण निश्चय अपनी साधनामें कृतकार्य होंगे।

अब यहां हम कुछ आसनोंका दिग्दर्शन करा रहे हैं, जिनके प्रयोगसे शारीरिक तथा मानसिक अंगोंमें आरोग्यकी उपलब्धि की जा सकती है।

पद्मासन

इस आसनके प्रयोगसे मनुष्यकी आकृति पद्म अर्थात् कमल जैसी हो जाती है। लगभग दो हाथ लम्बे और दो ही हाथ चौड़े दर्भासन या गद्दे पर पैर फैला कर बैठें। तत्पश्चात् बायें पैरको घुटनोंसे मोड़कर दाहिनी जंघा पर दृढ़ स्थापित करें और फिर दाहिने पैरको मोड़ कर बाईं जंघा पर रखें। तदुपरान्त बायें हाथको बायें पैर पर तथा दाहिने हाथको दाहिने पैर पर स्थापित कर सीधा तन कर बैठ जायें, यही पद्मासनकी स्थिति है।

पद्मासनसे लाभ

(१) पद्मासन जप-तप, साधना और ध्यानके लिये सर्वश्रेष्ठ आसन है। पैरोंकी ओर रक्तका दबाव कम होने से अन्य अंगोंको रक्तकी अधिकाधिक उपलब्धि होती है।

(२) मन, प्राण तथा इन्द्रियोंको स्वाधिकृत और संयमित रखनेमें यह आसन बहुत सहायक है। इसके साधनसे जानु तथा पैरकी नाड़ियां शुद्ध होकर कार्यकुशल बन जाती हैं।

(३) यह आसन सुषुम्णा नाड़ीको सक्रिय बना देता है, अतः साधनाका फल अविलम्ब मिलता है। मन स्थिर तथा प्रशान्त बन जाता है और आत्मा स्थितप्रज्ञ।

आसनका सम्राट्—शीर्षासन

इस आसनमें शिर भूमि पर और पैर ऊपर आकाशकी ओर तने रहते हैं; अतः इसे शीर्षासनके नामसे पुकारा जाता है। आसनोंमें यह सर्वश्रेष्ठ आसन है।

पद्मासन-जैसी लम्बी-चौड़ी एक रुईकी गद्दी बिछा दें। दोनों हाथके पंजों की उंगलियोंको परस्पर सटा कर दोनों पंजोंको गद्दी पर स्थापित करें। फिर मस्तकको गद्दी पर दो पंजोंके आधार पर रखें। अब पैरके पंजों पर स्थिर रह कर घुटनोंसे पैरको सीधा करें। क्रमशः कमर पर बल देते हुए पैरोंको आकाशकी ओर ले जायें। इस आसनको आरम्भमें किसी व्यक्ति या दीवारके सहारे करना चाहिये।

महत्त्वपूर्ण सलाह

शीर्षासन बिना गद्दीके कभी न किया जाये, अन्यथा ज्ञानतन्तुओंको हानि पहुँचती है। शीर्षासन आरम्भमें १० सेकण्डसे अधिक समय तक करना उचित न होगा। क्रमशः समयमें १० ही सेकण्डकी वृद्धि करते हुए इस आसनको अधिकसे अधिक आध घण्टे तक करना हितकर होगा। किसी हलके व्यायामसे थक जानेकी स्थितिमें ही शीर्षासन शान्ति और लाभ प्रदान करता है। शीर्षासनके बाद तुरन्त कठोर व्यायाम करना वर्जित है। रातमें सोनेके समय शीर्षासन न करें।

शीर्षासन कौन कर सकता है?

(१) किसी भी आयुके स्त्री-पुरुष इस आसनको कर सकते हैं। इससे रोगी नीरोग और नीरोगी अधिक आरोग्यवान् और बलवान् बन सकते हैं।

(२) कान पक रहा हो, हठीली सरदी और पुराना कब्ज सता रहा हो, हृदयमें कोई बीमारी हो, रक्त दबावका

रोग हो, तो शीर्षासन हानि पहुँचायेगा। जीर्ण पाण्डु रोगी, अत्यन्त कृशकाय और जीर्णज्वरके रोगियोंको शीर्षासन करना न चाहिये। नाकमें कोई विशेष खराबी हो और आंख अत्यधिक खराब हो, तो ऐसे लोग शीर्षासन न करें।

शीर्षासनका महत्त्व

"किडनीकी खराबी, हृदय-रोग, पाण्डु-रोग, रक्त-विकार सूजन आदि अनेक रोगोंकी शीर्षासन अव्यर्थ औषधि है।

—स्वामी शिवानन्द सरस्वती

"कुछ हास्यास्पद प्रतीत होने वाले शीर्षासनके व्यायाम से मेरी विनोद वृत्ति पर्याप्त विकसित हुई है। जीवनकी विचित्रताओंके प्रति मैं अधिक सहिष्णु बना हूं। अत्यधिक शिर पीड़ा क्या है, यह मैं जानता ही नहीं। अनिद्रासे तो मैं कभी परेशान नहीं हुआ। एक सुप्रसिद्ध डाक्टरने कहा था कि आपको चश्मा लेना पड़ेगा; किन्तु आज तक मुझे चश्माकी आवश्यकता नहीं पड़ी। यह सब शीर्षासनका प्रभाव है।"

—जवाहरलाल नेहरू

३—भुजंगासन

इस आसनके साधन-कालमें मानवकी आकृति सर्प जैसी हो जाती है, अतः इसे भुजगासन या सर्पासन कहते हैं। कन्धोंकी बगलमें दोनों हथेलियां रखकर पेटके बल लेट जायें। पैरोंके साथ ही उंगलियोंको भी खिंचा हुआ रखें। प्रथम सिर ऊपर उठाकर गर्दनको जहां तक हो सके, पीछे खींचें और धीरे-धीरे छातीका भाग उठाकर हाथकी कुहनियोंका कोना बढ़ाते जायें और शिर उठाये हुए सर्पकी सी स्थिति बना लें।

आसनसे लाभ

भुजंगासनसे क्रोड़-रज्जु (रीढ) को व्यायाम मिलता है; अतः वह स्थिति-स्थापक और सुदृढ बनती है। कमरके अधिकांश रोग इससे दूर हो जाते हैं। पेटके स्नायुओंको व्यायाम प्राप्त होता है। यह जठरको कार्यकुशल बनाकर जठराग्निको उद्दीप्त करता है। वायुसे पीड़ित जन इस आसनसे अवश्य लाभ उठा सकते हैं। स्त्रियोंके लिए भी यह आसन लाभदायक हैं। नष्टार्तव, पीड़ितार्तव, श्वेतप्रदर आदि रोगोंमें यह आसन अतीव गुणकारी है। इस आसन से गर्दन हाथ और कन्धोंके स्नायु सुदृढ़ और शक्तिशाली बन जाते हैं।

४—धनुरासन

यह आसन करते समय शरीरकी आकृति धनुष-जैसी हो जाती है, अतः इसे धनुरासन कहा जाता है।

हाथोंको शरीरके पार्श्वमें रखकर पेटके बल लेट जायें। दोनों पैरोंके घुटनोंको मोड़कर नितम्बोंके बीच ऊपर लायें और दोनों पैरोंकी फीलियोंको दोनों हाथोंसे पकड़ कर सिर, छाती, घुटनों तथा जंघाओंको ऊपर उठायें। इस आसनमें नाभिके आस-पासका कुछ भाग जमीनसे सटा रहेगा।

स्मरण रखें

इस आसनमें क्रोड़रज्जुपर दबाब पड़ता है, अतः इस भाग पर धक्का या विशेष दबाव आने न पाये। स्त्रियां गर्भावस्थाके आरम्भसे ही यह आसन करना बन्द कर दें। एपेण्डिक्स या पेटकी किसी प्रकारकी भी सूजनमें यह आसन करना उचित नहीं। यह आसन करनेसे पहले थोड़ा पानी पी लेनेसे आंतें मजबूत बनती हैं।

धनुरासनके लाभ

बड़े पेट वाले व्यक्तिकी चरबी इस आसनसे एकदम कम हो जाती है। कठिन और भारी पेट कोमल और हलका हो जाता है। इस आसनसे बड़ी आंतको वेग और प्रोत्साहन प्राप्त होता है; फलतः मल-शुद्धि द्रुतगतिसे होती है। यह आसन स्त्रियोंके शरीरको सुन्दर सुडौल सुदृढ और स्वास्थ्य-सम्पन्न बना देता है। क्रोड-रज्जुपर प्रभाव पड़नेसे यह आसन ऊंचाई बढानेमें भी सहायक होता है। शरीरके सामान्य आरोग्य पर इसकी उत्तम प्रतिक्रिया होती है। यकृत्, प्लीहा, फेफड़े, आमाशय आदि सजीव कार्य-परायण अवयवों पर इस आसनका शुभ प्रभाव होता है; फलतः स्वास्थ्यमें सुधार होता है।

—

विजयादशमीका महत्त्व

[श्री दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश]

मैं अ.न. 'श्रीसनातनधर्मालोक' ग्रन्थमालाके ॐपञ्चम पुष्पके प्रकाशनमें लगा हुआ था; जिसकी पृष्ठ संख्या साढ़े आठसौके लगभग है—अतः 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी सेवा नहीं कर सका। अब सम्पादक महोदयकी प्रेरणासे विजयदशमीके समय होनेसे तदनुसार उनके सामने 'विजयादशमी' का महत्त्व रखा जाता है।

यह विजय दशमीका दिन है। इसी दिन भारतके हृदय सम्राट् भगवान् श्रीरामचन्द्रने राक्षस-राज दशमुख रावणकी विजयार्थ यात्रा प्रारम्भ की थी, और विजय प्राप्त की थी। यही दिन भारतमें अत्याचारी वैदेशिक-राजाका दमन कारी होनेसे भारतके लिए महत्त्व-पूर्ण है। यही दिन आर्योंका अनार्यों पर आक्रमणका कहा जाता है, अथवा पुण्यका पाप पर आक्रमणका दिन है यह। यह भारतके महोत्सवका दिन है। यही दिन हमें स्मरण कराता है कि भारतीय एक भी स्त्रीको यदि कोई विदेशी राजा कुविचारके संकल्पसे ले जाता है; जब तक उसे ससम्मान तथा अखण्डित रूपसे वापिस नहीं लौटाया जाता, तब तक विश्राम नहीं करना चाहिये। वैसे अत्याचारीको इस प्रकार मूलसे उखाड़ दो कि भविष्यमें फिर किसी भी वैदेशिकको भारतीय महिला पर कुदृष्टि करनेका संकल्प ही न हो। इसके अतिरिक्त जो वैदेशिक, ऋषि, मुनि वा तपस्वियों पर अत्याचार करता है, अथवा जो भारतीय धनको इकट्ठा करके समुद्र पार विदेशमें ले जाता है, वह भारतका अहित-कारक है। उसे इस प्रकार दण्डसे ठीक करो कि आगे कोई विदेशी भारतके प्रति कुदृष्टि कर ही न सके यह भारतीय क्षत्रियोंका कर्तव्य है—यह आजका दिन सिखला रहा है। वह यह भी समझाता है कि 'न्याय-मार्ग में चलने पर पशु-पक्षी भी आपके सहायक होंगे। जैसे कि कहा गया है—

'यान्ति न्याय प्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोपि सहायताम्।
अपन्थानं तु गच्छन्तुं सोदरोपि विमुञ्चति'

यह विजयाका दिन भी है, सब देवोंने मिलकर शक्ति देवीको उत्पन्न किया था, जिसका दूसरा नाम 'विजया' था, उसने भारतीय नारियोंके अपमानकर्त्ता महिषासुर, शुम्भ, निशुम्भ, आदिका वध करके दिखला दिया कि—भारतमाताके अहित-कारकोंकी यही दशा हुआ करती है। इन्हीं दिनों सरस्वती-विसर्जन वा सरस्वती अवकाश करके दिखलाया जाता है कि यह विजय-यात्राका समय है। इस समयमें सभीको विद्या पठन-पाठनको भी स्थगित करके शक्तिका सञ्चय करना चाहिये, और स्वदेशके विजयार्थ विचार करना चाहिये। दुर्दान्त, भारत देशको ग्रस्त करती हुई, युद्धोन्मत्त जातियोंके विषमय-दाँत तोड़ देने चाहियें, उनकी विषैली पूंछको काट लेना चाहिये।

यह समय होता है वृष्टिकी समाप्तिका। ऐसा ही समय छः मासके बाद चैत्र मासके शुक्ल पक्षमें आता है। वह हिमपातकी समाप्तिका सूचक होता है। उसमें रामका जन्म होता है, और इसमें रामकी यात्रा होती है। यह नवरात्र शक्तिकी उपासनाके होते हैं। शक्तिकी उपासनासे ही युद्धमें दुर्मद महिषासुर आदिकी शक्तिका विनाश होता है। दैवी-शक्ति आसुरी शक्तिको शान्त करती है। इस समय न तो हिमकी प्रतिबन्धकता होती है न ही गर्मी वा वर्षाका प्रतिरोध ही होता है। तो शत्रु अनायास ही जीता जाता है।

इसमें विजयनायक वह हो सकता है, जो माता (भारत माताकी प्रतीक) पिता (विष्णु देवके प्रतीक) का आज्ञापालक होवे जिसका भाइयों (भारत भूमिके नाते अपने बन्धुओं) से सौहार्द हो; जहाँ पति-पत्नीकी पारस्पारिक-सहानुभूति हो, पत्नीका पतिके विरहमें भी पातिव्रत्यमें अवधान हो, राजा प्रजाका परस्पर विश्वास हो। कहीं स्वजनों, बन्धु आदिमें ईर्ष्या वा छल अथवा भेद-नीतिका लेश भी न हो। जो ज्ञान एवं कर्मका सामंजस्य विधाता हो, विजय-

---

ॐयह ग्रन्थमाला सभी प्रकारके व्यक्तियोंके लिए बहुत उपयोगी है; अतः इसे लेखकके नामसे 'रामदल दरीबा देहली' से मंगानेकी हम 'श्रीस्वाध्याय' के सभी हितैषियोंको प्रेरणा करते हैं। —सम्पादक

श्री उसीके गले में विजय माला डालती है। यही विचारा था वा अनुकृत किया था, बल्कि-आदर्श रूपसे दिखलाया था भगवान् रामचन्द्रने। उनमें पहली बातें तो विश्व श्रुत ही हैं। अन्तिम-विजय सोपान उन्होंने दिखलाया कर्म और ज्ञानके सामञ्जस्य करनेका।

कातर्यं केवला नीतिः शौर्यं श्वापद चेष्टितम्।
अतः सिद्धिं समेताभ्यांमुभाभ्यामन्विषेष सः॥

यहां नीतिको ज्ञान और शूरताको कर्म बताया गया है। केवल नीति (पालिसी) का अवलम्बन कायरता बताई गई है, केवल शूरताका अवलम्बन क्रूरता-पशुगन खूंखार जीवोंकी दहाड़ माना गया है। एकके आश्रयणसे असिद्धि और दोनोंके आश्रयणसे सिद्धि कही गई है।

येषां दोर्बलमेव, दुर्बलतया ते सम्मतास्तैरपि,
प्रायः केवल नीतिरीति शरणैः कार्यं किमुर्वीश्वरैः।
ये क्ष्माशक्र! पुनः पराक्रमनय-स्वीकार कान्तक्रमा!
ते स्युर्नैव भवादृशास्त्रिजगति द्वित्राः पवित्राः परम्॥

इस पद्यमें केवल भुज-बल वालेको भी दुर्बल माना गया है। केवल नीति करने वालोंको भी कुछ नहीं माना गया। पराक्रम और नीति दोनोंका जिन्होंने ठीक क्रम अवलिम्बत किया है, वे ही सबल माने गए हैं। इसमें श्रीराम स्वयं ज्ञानके सजीव प्रतिनिधि थे। और लक्ष्मण हनुमान् आदि कर्मके प्रतिनिधि थे। इनके सामंजस्यसे ही इस पक्षकी विजय हुई। कर्म चाहिए अधिक, ज्ञान चाहिए थोड़ा। इसलिए उक्त-पद्यमें कर्मस्थानीय पराक्रमको 'अभ्यर्हितं पूर्वम्' इस नियमसे पूर्व रखा गया है, और ज्ञान स्थानीय नय (नीति) को पीछे। युद्धमें सेना कर्मस्थानीय होती है, और सेनापति ज्ञान स्थानीय। सेनापति थोड़े अपेक्षित होते हैं और सेना अपेक्षित होती है बहुत। यदि अधिक सेनापति हों, उनके अनुपातसे सेना थोड़ी हो, तब पराजय निश्चत हुआ करती है। इसी कारण शतवर्षके हमारे जीवनमें ७५ वर्ष तक कर्मकाण्ड आदिष्ट किया गया है, और २५ वर्ष ज्ञानकाण्ड। तभी अभ्युदय निश्रेयस लक्षण साफल्य मिलता है।

इस प्रकार श्रीराम एक ज्ञानस्थानीय थे, लक्ष्मण हनुमान् आदि तथा वानर सेना यह कर्म स्थानीय थे। ऐसे सामञ्जस्यमें ही विजय हुआ। जिस पक्षका विजय नहीं होता, उसमें कारण कर्म एवं ज्ञान दोनोंका असामञ्जस्य ही होता है। तब जो पुरुष, अथवा जो संघ, अथवा जो जाति, या जो देश कर्म-ज्ञान रूप शूरता एवं नीति, सैनिक बल और प्रणिधि (जासूस) बल, शस्त्रबल एवं प्रचारबल (प्रोपेगण्डा), दोनोंका ठीक २ सामञ्जस्य करेगा; वही पुरुष, वही संघ, वही जाति, वही देश, वही राजा, वही सम्प्रदाय विजयको प्राप्त होगा।

विजयका महत्त्व सर्वजनविदित ही है। तब विजय की विचारणा तथा विजययात्राकी दिनस्वरूप-विजयदशमीका महत्त्व भी स्वतः सिद्ध है; क्योंकि वर्षाऋतु विजय यात्राको प्रति बन्धक हुआ करती है। पाकिस्तान हिन्दुस्तान दोनों की प्रतिद्वन्द्विता स्वतः सिद्ध है, अब सोचना पड़ेगा कि इन दोनोंमें किसके पक्षमें कर्म और ज्ञानका यथावत् सामञ्जस्य है? हमें हिन्दुस्तानकी विजय एष्टव्य है। इसमें उक्त दोनों बलोंमें यदि कुछ त्रुटि दीखती है; तो इसके शुभचिन्तक को चाहिए कि वह इसके नेताओंको सावधान करें। यह विशेष-रूपसे ध्यान देने योग्य बात है कि पाकिस्तान देश-विदेशमें अपने पक्षको दूधका धुला और हिन्दुस्तानके पक्षको छल मल युक्त सिद्ध किया करता है। इधर अवधान देना चाहिए। क्योंकि आजकल प्रचारका युग है। इसी प्रचारसे छली भी सरल और सरल भी छली सिद्ध किये जाते हैं। तब विजयेच्छुकोंको केवल सरलका भी आश्रय मायावियोंके साथ नहीं करना चाहिए क्योंकि कहा है—

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथा विधान्
असंवृतांगान् निशिता इवेषवः॥
(किरातार्जुनीय १।३०)

अर्थात् मायावीसे सरलताका व्यवहार किया जावे, तो पराजय प्राप्त होता है। यही बात नैषधचरितमें कही गई है कि आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः (५।१०३) अर्थात् कुटिलोंके साथ सरलताका आचरण नीति नहीं होती।

तब इस प्रकारके युगमें हिन्दुस्तानके धौरेयोंको भी पश्चात्पद न होना चाहिये, और कर्म एवं ज्ञानके सामञ्जस्यका यथावत् रखना चाहिए। इस प्रकारके रहस्योंको अपने आपमें रखती हुई इस विजय दशमीका महत्त्व स्पष्ट है। वह यही विजयदशमी प्रतिवर्ष आती हुई भारतको

क्या ज्योतिषी और ज्योतिषशास्त्र निरर्थक है ?

श्रीनेहरूजी और उनके साथी सोचें, समझें और विचारें

[लेखक—भक्त श्री रामशरणदास जी]

धर्मप्राण भारत ऋषि-मुनियोंका, ज्ञानियों ध्यानियोंका, त्यागी तपस्वियोंका, सतियोंका, योगियोंका, देवी-देवताओंका प्राणप्यारा, नयनोंका तारा, हृदयका दुलारा, अद्भुत दिव्यातिदिव्य देश है और यह भगवान् श्रीराम कृष्णकी क्रीडास्थली है तभी तो ऋषियोंने डंकेकी चोट से कहा है 'दुर्लभं भारते जन्म' भारतमें जन्म लेना महान् दुर्लभ है और जिसका भारतमें जन्म हो गया उसके तो मानों भाग्योदय हो गये। मेरे इस दिव्य धर्मप्राण भारतके शासक, भारतके नरेश, राजा महाराजा, चक्रवर्ती सम्राट सदासे ही बड़े-बड़े धर्मात्मा, पुण्यात्मा, सदाचारी, जितेन्द्रिय, गो-ब्राह्मणोंके अनन्य भक्त, प्रतिपालक, परम आस्तिक, कट्टर सनातनधर्मी, देवमंदिरोंके अनन्य प्रेमी, वेद-शास्त्रोंके अनुसार चलने वाले होते चले आये हैं। तभी तो इस देशके एक धर्मात्मा राजा डंकेकी चोट घोषणा करके कहता है—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

मेरे देशमें कोई चोर नहीं, कोई कंजूस नहीं, मद्यप (शराबी) नहीं, और अग्निहोत्र न करने वाला नहीं, और अविद्वान् बे-पढ़ा लिखा नहीं, कोई व्यभिचारी नहीं, व्यभिचारिणी फिर भला कैसे हो सकती है ?

यह था इस धर्मप्राण भारतके शासकोंका महान् उच्चादर्श जिसे देखकर सारा विश्व भारतको जगद्गुरु मानकर श्रद्धासे सर झुकाता था। पर आज इसके विपरीत भारतके शासक प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू हैं जिनके राज्यमें सभी चोर बाजारी, घूंसखोरीमें संलग्न हैं और लाखों प्रत्यक्ष शराब पीते हैं तो करोड़ों अंग्रेजी दवाओंको पी जाते हैं, और अग्निहोत्र तो कौन करे पर घर-घर से बीड़ी सिगार, सिगरेटके गंदे विषैले जहरीले धूंवे निकल रहे हैं, और विद्वान् ऐसे हैं कि अपने देववाणी संस्कृत विद्याका

यह विजय मन्त्र प्रति वर्ष बोधित करती और स्मरण कराती रहती है। पुन पुनः आवृत्ति ही तो स्मरण कराने का साधन हुआ करती है। भारतके उन्नायकों तथा नायकों को उचित है कि वे विजय दशमीके इस सन्देश विजय-रहस्यको याद रखें और इस भारत देशको विजयी बनावें। विजयदशमीके ही दिन भगवान् रामने रावणके प्रति विजय यात्रा प्रारम्भ की थी और विजय प्राप्त किया था, विजयके बीज कर्म एवं ज्ञानका सामञ्जस्य यथावत् रखा। पूर्व ही संकेत किया जा चुका है कि कर्मकी अधिकता और ज्ञानकी अल्पता परन्तु उत्तमता अपेक्षित होती है, तभी विजय होता है। हमने जन्म से लेकर मरण तक सांसारिक युद्ध करके विजय को प्राप्त करना है, उसमें ऋषि मुनियोंने भी हमारे लिए ७५ वर्ष तक कर्मकाण्डका पट्टा यज्ञोपवीत हमें पहनने को कहा, उसके बाद २५ वर्ष तक ज्ञानकाण्डको आश्रयणीय बताया, इसीसे हम विजय रूप अमृतको प्राप्त करते हैं जिसका संकेत वेद ने ईशोपनिषद्में किया है कि—

अन्धतमः प्रविशन्ति ये अविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो च उ विद्यायांरताः॥(यजुः ४०।१२)
विद्यां चाविद्यांच यस्तद् वेदं भयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

यहां पर 'अविद्या' का अर्थ कर्म और विद्या' का अर्थ 'ज्ञान' है। कर्मसे यहां पर मृत्यु (असफलता) का दूर होना तथा ज्ञानसे अमृत (सफलता) का प्राप्त होना कहा है, तो ज्ञान एवं कर्मके सामञ्जस्यसे ही विजय प्राप्त हुआ करती है, यही विजयका रहस्य है, इसलिए विजयदशमीका भी महत्व है यही प्रतिवर्ष याद कराने के लिए 'विजयादशमी' आती रहती है।



तो एक अक्षरका भी ज्ञान नहीं पर अंग्रेजीके बी० ए० एम० ए० हो होकर निकल रहे हैं और कोरे महान् उद्दण्ड, उच्छृङ्खल बन रहे हैं और व्यभिचारके लिए तो तलाक बिल द्वारा पूरी छूट ही दे दी गई है। जवान जवान लड़कियोंसे सबके सामने डांस करा कराकर देशको व्यभिचारकी भट्टीमें झोंका जा रहा है और कलाके नाम पर हिन्दू ललनाओंको वेश्या बनाया जा रहा है।

कम्यूनिस्ट देशोंको छोड़कर क्या अमेरिका, क्या हालेण्ड, क्या जर्मनी-जापान, क्या तुर्की, ईरान, काबुल सभी देशोंके क्या ईसाई, क्या मुसलमान, क्या अंग्रेज क्या बौद्ध सभी किसी न किसी रूपमें ईश्वर को मानते हैं, तीर्थोंको मानते हैं, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरको मानते हैं, स्वर्ग नरक को मानते हैं, परलोकमें विश्वास करते हैं और ज्योतिष विद्याको और ज्योतिषियोंको मानते हैं। कोई भी देश ऐसा नहीं है कि जो ज्योतिष विद्याको गलत बताता हो और जो अपने मौलवियोंसे, पादरियोंसे, लामाओंसे पूछकर कार्य न करता हो? पर भारतके प्रधानमंत्री जहां सनातनधर्मकी प्रत्येक बातसे नाक-भौं सिकोड़ते हैं वहां वह ज्योतिषियोंके पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं और बड़ी-बड़ी लाखोंकी सभाओंमें ज्योतिषियोंके विरुद्ध जो चाहे सो खुलकर कहते हैं।

क्या यह उचित है ?

जिन श्री जवाहरलाल नेहरूने ज्योतिष-शास्त्रको कभी नहीं देखा, जिन्हें ज्योतिष-विद्याकी तनिक भी जानकारी नहीं, जिन्होंने कभी सच्चे उच्चकोटिके ज्योतिषियोंसे मिलनेका प्रयत्न नहीं किया, वही विराट सभामें खड़े होकर यह कहें कि ज्योतिषी, तिलकधारी नालायक हैं, झूठे हैं, क्या शोभा देता है? आपने पिछले दिनों पटनामें तिलैया बांधका उद्घाटन करते हुए कहा जो पत्रोंमें इस प्रकार छपा है—

"तिलैया बांधका उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नेहरुने ज्योतिषियों पर विश्वास करने वाले लोगोंको सम्बोधित करते हुए कहा कि तिलैया बांध इस बातका सूचक है कि प्राकृतिक प्रकोपों पर विजय पानेके लिये मनुष्य अपने कठोर परिश्रमसे क्या कर सकता है? केवल मूर्ख लोग ही अपनी कठिनाइयोंके हलके लिए ज्योतिषियोंके पास जाते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य मुसीबतोंसे पार जानेके लिये अपने दिमाग और अपने हाथका प्रयोग करते हैं।"

यह है आपका भाषण जिसमें नेहरुजी ज्योतिषियोंके पास जाने वालोंको मूर्ख बतला रहे हैं। मैं नेहरूजीसे पूछता हूं कि क्या चक्रवर्ती सम्राट् महाराजा दिलीप, महाराजा दशरथ, भगवान् श्रीराम, कृष्ण, जनक, हरिश्चन्द्र, अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरुगोविन्दसिंह, महाराजा रणजीत सिंह, हरिसिंह नलुवा, आदि बड़े-बड़े धर्मात्मा राजा महाराजा और जगद्गुरु भगवान् शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, रामानंद, तुलसी, सूर आदि धर्माचार्य, संत, महात्मा, महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, योगी याज्ञवल्क्य आदि लाखों ऋषि-महर्षि क्या सभी कोरे चालीस सेर मूर्ख थे कि जो ज्योतिष-शास्त्रको मानते थे और प्रत्येक कार्य ज्योतिषियोंको बुलाकर शुभ मुहूर्त दिखाकर करते थे एवं उनके अनुसार चलते थे, सभी धर्माचार्य ज्योतिष-शास्त्रको मानते थे ज्योतिष-विद्याको जानते थे, और हिन्दू बच्चे-बच्चेके नाम ज्योतिषियोंके द्वारा ही रक्खे हुए थे। आज भी हैं और आगेको भी होंगे, क्या किसीके भी दिमाग नहीं था और सभी दकियानूसी विचार वाले मूर्ख थे? आपके बराबर सृष्टिके प्रारम्भसे लेकर आजतक कोई भी बुद्धिमान् नहीं हुआ? बस एकमात्र आप ही हुए हैं। और सुनिये आपका इलाहाबादमें दिया हुआ भाषण जो देहलीके नवभारत टाइम्स ता० ५ अप्रैल सन् १९५६ पृष्ठ १, कालम ५ पर छापा है जो इस प्रकार है—

ज्योतिषी खतरनाक व्यक्ति

"इलाहाबाद ४ अप्रैल। प्रधानमंत्री नेहरूने आज यहां कहा कि ज्योतिषी खतरनाक व्यक्ति हैं किन्तु जो लोग उनके पास जाते हैं वे और भी ज्यादा खतरनाक हैं। श्रीनेहरूने जो यहां क्रियात्मक भौतिक शास्त्रकी संस्थाका उद्घाटन कर रहे थे कहा कि विज्ञान इतनी तेजीसे आगे बढ़ रहा है कि पता नहीं यह संसारको कहां ले जायगा। कुछ लोग कह सकते हैं कि इसका जवाब ज्योतिषियोंके पास है। प्रधानमंत्रीने हंसीके बीच कहा कि वे बहुत खतरनाक व्यक्ति हैं और उनसे भी वह खतरनाक हैं कि जो ज्योतिषियोंके पास सलाहके लिये जाते हैं।"

इ के अतिरिक्त अप्रैल सन् १९५६ में ही एक दूसरी जगह भाषण देते हुए आपने कहा—

"देशोन्नतिके कार्य माला-जपने, मंत्र पढ़ने और ज्योतिषियोंसे सलाह लेनेसे नहीं होंगे।"

इस प्रकार आप कभी ज्योतिषियोंको खतरनाक बताते हैं तो कभी ज्योतिषियोंके पास जाने वालोंको खतरनाक बताते हैं तो कभी ज्योतिषियोंसे पूछने वालोंको मूर्ख बताते हैं जो जीमें आता है कहते हैं, इस बात पर तनिक भी विचार नहीं करते कि मैं किस देशका प्रधानमंत्री हूँ, मैं किस पद पर हूँ और मेरा क्या उत्तरदायित्व है ? तथा मेरे भाषणका जनता पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

क्या वास्तवमें ज्योतिषी खतरनाक हैं ?

मैं नेहरूजी से पूछता हूं क्या वास्तवमें ज्योतिषी खतरनाक हैं ? आप यदि कहें कि ज्योतिषी झूठ बोलते हैं और उनकी बातें झूठी निकलती हैं और ज्योतिषी ठगते हैं तो मैं पूछता हूँ नेहरुजी क्या सभी ज्योतिषी झूठे हैं और सबकी बातें झूठी हैं और क्या सभी ठगते हैं ? नहीं नहीं ऐसा नहीं, कभी तीन कालमें ऐसा नहीं। मैं पूछता हूं कि यदि अधिकांशमें झूठे हैं और ठगते हैं तो इसमें बेचारे सच्चे ज्योतिषियोंका क्या अपराध और इसमें ज्योतिष-शास्त्र, ज्योतिष-विद्याका क्या दोष ? जिस प्रकार अबसे २५ वर्ष पूर्व सारे विश्वमें असली गाय भैंस के घृतके अतिरिक्त कोटोजम नकली घीका कहीं नाम भी नहीं था सर्वत्र असली ही असली घृत था पर अब असली देखनेको भी नहीं मिलता, सब जगह नकली कोटोजम, डालडा घी मिलता है, तो क्या यह देखकर क्रोधमें भरकर असली घृतको गाली बकने लगना और जो यह कहते हैं कि असली घृत भी होता है वह गलत कहते हैं और न कभी असली घृत हुआ और न है और जो असली घृतकी बातें करते हैं वह नालायक हैं, मूर्ख हैं, खतरनाक हैं, तो क्या ऐसा कहना उचित है ? क्या यह बुद्धिमानी है ? क्या सब जगह नकली घी की भरमार होने पर भी असली गो घृत संसारमें नहीं है ? या नहीं होता था ? यह मूर्खता-पूर्ण बात मानी जायेगी ? मैं पूछता हूं और डंकेकी चोट पूछता हूं कि जरा बतायें तो कि क्या लाखों डाक्टर मरीजोंको, रोगियोंको दवा देते हैं तो क्या सभी रोगी अच्छे हो जाते हैं और सभी मरनेसे बच जाते हैं ? दवा देने पर नहीं मरते ? यदि लाखों मर जाते हैं तो क्या कभी डाक्टरोंको झूठा, लुटेरा मानकर मूर्ख बताया, खतरनाक बताया या इन्हें फांसीके तख्तों पर लटकाया ? हजारों वकील, बैरिस्टर दिन-रात मुकदमें लड़वाते हैं, क्या यह सभी मुकदमें जितवा देते हैं ? यह किसीको नहीं ठगते लूटते ? जब हजारों, लाखों वकील, बैरिस्टरोंको रुपया देने पर भी मुकदमें हार जाते हैं तो क्या किसीने इन्हें लुटेरा, ठग मानकर मूर्ख झूठा, खतरनाक ठहराया ? इसी प्रकार ज्योतिषियोंकी कोई बात यदि झूठी निकल जाती है तो उन्हींके पीछे लठ्ठ लेकर क्यों पड़ा जाय ? पहिले सारे भारतमें सनातनधर्मी ब्राह्मण ज्योतिषी बिलकुल सच्चे, त्रिकालज्ञ होते थे और नामको भी झूठ नहीं बोलते थे। पर कलिकालके कारण जहां असली घृतकी जगह नकली घी आया, जहां देववाणी संस्कृतकी जगह म्लेच्छ भाषा अंग्रेजी फारसी आई, जहाँ हवन यज्ञ की जगह बीड़ी, सिगार, सिगरिटके गंदे-विषैले, धूएं आये और जहां चरणामृतकी जगह डायन चाय, चांडालनी आई और जहाँ पूज्य ब्राह्मणों के ब्रह्मभोजकी जगह खड़े खड़े मूतने वालोंकी टीपार्टी होने लगी, और जहां राम कृष्णकी जयकी जगह धर्मद्रोही नेताओंकी जय बुलने लगी, जहां शास्त्रोंके स्वाध्यायकी जगह अखबार बाजी होने लगी और कीर्तनकी जगह रेडियोके घर घर गंदे गाने होने लगे और पतिव्रता माताओंकी जगह सिनेमाओंकी तितलियोंकी पूजा होने लगी, गायकी जगह कुत्ते पाले जाने लगे, गोदुग्धकी नदियां बहनेकी जगह गोरक्तकी नदियां बहने लगी वहाँ इसी प्रकार असली सनातनधर्मी, त्यागी तपस्वी ब्राह्मण ज्योतिषियोंकी जगह नकली माली कोली, धुना, जुलाहा, जाट गुजर आदि सभी जातियोंके मनुष्य तिलक छापे लगाकर अपनेको ज्योतिषी बताकर सड़कों पर बैठकर लोगोंको ठगने लगे. इसमें असली सनातनधर्मी ज्योतिषियोंका और ज्योतिष शास्त्रका क्या दोष ? आज देशभक्तिके नाम पर बड़े बड़े लीडर नेता करोड़ों रुपयों का गोलमाल कर रहे हैं और दिन रात जवान जवान लड़कियोंके डांसदेख-देख कर रंग रेलियां मना रहे हैं, जशन मना रहे हैं तो क्या सभी नेताओंको गाली दी जांय या देशभक्तिको बुराभला कहा जाय, क्या शोभा देगा ? जिस प्रकार असली घृत न मिलने पर भी है— अवश्य और वह किसीको भी कभी हानि नहीं पहुंचाता

उसे खाकर मनुष्य धीर वीर महावीर बनते हैं, देशधर्म की, गोब्राह्मणोंकी रक्षा करते हैं जबकि नकली कोटोजम घी खाकर मनुष्य खांसी स्वांस, तपदिक आदि अनेकों प्रकारकी बीमारियोंका अड्डा बन जाता है पर इसमें बेचारे असली गौ के घृतका क्या दोष, क्या अपराध और गोमाता का क्या दोष ?

इसी प्रकार अधिकांश देशमें नकली ज्योतिषियोंकी बाढ़ आने पर भी असली सनातन धर्मी ब्राह्मण ज्योतिषी भी हैं और अवश्य हा हैं और उनसे तीन कालमें किसी को हानि नहीं पहुंच सकती। वरन् यदि असली सच्चे ज्योतिषियोंकी शरणमें जाया जाता तो सारे भारतमें जो हाहाकार मच रहा है और बच्चा बच्चा रो रहा है। इस प्रकार देशमें तीन कालमें विपत्ति नहीं आती और सारा देश चैनकी बंशी बजाता हंसता और सनातन धर्मकी पताका फहराता दृष्टि पड़ता। सच्चे ज्योतिषी ज्योतिष शास्त्रके अनुसार सब काम शास्त्रानुसार कराता और भगवान् विघ्न विनाशक गणेशको प्रसन्न कर अपने काबूमें कर लेता और माँ अन्नपूर्णाका अनुष्ठान करा सारे देश को अन्नसे भरपूर करा देता और नवग्रहोंकी विधिवत् पूजा आदि करा सभी ग्रहोंको शांत कर ठीक शुभ-मुहूर्तमें सब कार्य कराता तो आज यह देशमें दुर्दिन, भूख-मरी, दैवीप्रकोप, अनेकों विघ्न, घोर विपत्तियां और चारों ओर त्राहि त्राहि देखनेमें क्यों आती ?

ज्योतिषियोंसे हानि नहीं महान् लाभ है

यदि देशके अन्दर पहलेकी भांति सब कार्य सनातन धर्मी ब्राह्मण ज्योतिषियोंके बताए अनुसार किए जायं तो सारा देश धन धान्यसे भरपूर हो जाय, घर घरमें सुख शांति फैल जाय, रोग शोकका नाम भी शेष न रहे। और देशमें न इतनी विधवा हों, न अकाल मृत्यु हों, न पति पत्नीके झगड़े हों और न इतनी मुकद्दमेबाजियां हों। जिस समय हम लोग आजके इन नेताओंके माया-जालमें नहीं फंसे थे और अपने सत्य-सनातनधर्ममें और सनातन धर्मी ज्योतिषियोंमें पूर्ण श्रद्धा भक्ति रखते थे तो बच्चेका जन्म होते ही जन्मका समय ठीक ठीक बताकर पंडितजीसे जन्मपत्री तैयार कराते थे। बड़े होने पर लड़के लड़कियोंका जन्मपत्री दिखाकर ही यदि पूज्य पंडित जी महाराजने आज्ञा दे दी तो विवाह करते थे, यदि उन्होंने कह दिया कि विद नहीं मिलती ग्रह ठीक नहीं हैं तो भूल कर भी विवाह नहीं करते थे। इससे लड़केके मिलनेमें परेशानी तो अवश्य ही होती थी परन्तु ज्योतिषियोंके द्वारा बताये अनुसार विवाह करने पर न तो आगेको विधवा होने की आशंका होती थी और न जन्म भर पति पत्नीमें झगड़े रहते थे, न सन्तानकी चिन्ता होती थी और न तलाककी नौबत आती थी। खूब जन्म भर एक दूसरेके साथी रहते थे। सुख दुखमें एक दूसरेका साथ देते थे, अपना लोक-परलोक बनाते थे और चैनकी बंसी बजाते थे। आज जबसे पंडितोंकी ज्योतिषियोंकी बात पूछनी बंद की और जिस जातिकी लड़कीसे आंखें मिलने पर शादी कर बैठे, न जन्म पत्री दिखाई न ग्रह दिखाये, न गोत्रादिका विचार किया न खानदान देखा और न कुलका विचार किया, चटाक पटाक शादी कर डाली उसीका महान् भयंकर दुष्परिणाम यह हो रहा है कि कामी कुत्ते-कुत्तियोंकी भांति कुछ दिन तो प्रेम रहता है बादमें जन्म भर रोते रहते हैं और एक दूसरेको छोड़ने, करनेकी सूझती रहती है, वर्णशंकर संतान पैदा कर यहां भी दुःख भोगते रहते हैं और परलोकमें पितरों सहित घोर नरकका यंत्रणायें भोगते रहते हैं। यदि रोगी होने पर उसे डाक्टरोंके पास न ले जाकर ज्योतिषियोंके पास ले जाँय, ग्रह दिखायें और ज्योतिषीके बताये अनुसार चलें तो धन धर्म शरीर सब कुछ बच जाय। लोक परलोक दोनों बन जायं, सारे विश्वके जीव मारे प्रसन्नतासे फूले न समाएँ। ज्योतिषी ग्रह देखकर बतायें कि इस पर अमुक ग्रह है इसका इतना जप अनुष्ठान कराओ, दान पुण्य करो, चींटियोंको घी बूरासे जिमाओ और मंगलके दिन बंदरोंको लड्डू खिलाओ, उन्हें मीठे रोटका भोग लगाओ अमुक ग्रह है इसलिए कुत्तोंको दही बड़े खिलाओ। मंदिर में दीपक जलाओ, गायों को मीठी लोई खिलाओ, ब्राह्मण को भोजन कराओ, पीपल पर जल चढ़ाओ, पक्षियोंको चुग्गा डालो, श्वानको मीठा दूध और शर्बत पिलाओ। कैसा सुन्दर लोक परलोक बनाने वाला और सब जीव मात्र को सुखी बनाने वाला साधन बताते थे, जिससे सबको सुखी कर स्वयं सब दुखोंसे छुटकारा पा सुखी बन जाते थे। पर है तो रोगीको पापज रोग, ग्रहकी दशा और उसे दिखाया जा रहा है डाक्टरको बेचारे लाखोंकी तादादमें बेमौत मारे

जाते हैं और अंग्रेजी दवाओंमें मछलीका तेल, अंडे और भी न जाने क्या क्या खा पीकर लोक, परलोक बिगाड़ डालते हैं और धन, धर्म, शरीर सब कुछ लुटा डालते हैं। पहले हमारे यहाँ यह नियम था कि रोगी होने पर किसी सनातनधर्मी पूज्य ब्राह्मण वैद्यके पास जाते थे और वह वैद्य भी देवी दुर्गाका अनुष्ठान भजन पूजन करने वाले और ज्योतिष विद्याको जानने वाले होते थे। रोगीकी नाड़ी देखनेके साथ साथ रोगीकी जन्मपत्री भी मंगाकर देखते थे। यदि शारीरिक रोग है तो शुद्ध जड़ी बूंटी द्वारा रोग दूर करते थे और यदि पापज रोग है और कोई अशुभ ग्रह है तो जप अनुष्ठान दान पुण्य द्वारा रोगको मिटा डालते थे, दोनों ओरसे रोगों पर धावा बोलकर रोगको जड़ मूलसे समाप्त करके उसे अच्छा बनाकर ही दम लेते थे। कितने ही हमने आंखोंसे ऐसे रोगी देखे हैं कि उन्हें है तो भूत-प्रेतादि के सताने का रोग, पर इलाज कराया जा रहा है—डाक्टरोंका; इससे वह बेचारे बिना मौतके मारे जाते हैं। यदि उन्हें पंडितोंको दिखाया जाता और उनके बताये अनुसार जन्त्र, मन्त्र, ग्रह निवारणार्थ जप अनुष्ठान कराया जाता तो लाखों बेमौत न मारे जाते। पहिले सभी मकान दुकान ज्योतिषियोंसे शुभ मुहूर्त ग्रह नक्षत्रादि दिखाकर बनाये जाते थे जिससे घरोंमें रहने पर खूब सुख शांति रहती थी, लक्ष्मीकी वृद्धि रहती थी अतः रोग शोक नाम को भी नहीं होते थे पर जबसे ज्योतिषियोंकी शरण लेनी छोड़ी और मन मानी कोठी बनानी शुरू की और जिन्हें वास्तुशास्त्रका तनिक भी ज्ञान नहीं, जिन्हें यह भी पता नहीं कि मकानका मुख किधरको होना चाहिये और उसमें आलमारियां आले कितने होने चाहियें, कड़ियां कितनी होनी चाहियें और किस दिन बनना चाहिये ऐसे मूर्खोंसे ही बनवाये जा रहे हैं, जिसका महान् भयंकर दुष्परिणाम यह होता है कि शास्त्रविरुद्ध बनी कोठीमें आये पीछे पहिले मृत्यु होनी शुरू हो जाती है, लक्ष्मी विदा होने लगती है नाना प्रकारकी बीमारियाँ रोग, शोक डेरा जमा लेते हैं और बुरे कर्म करने सूझते हैं, धर्मसे घृणा होने लगती है। यदि पूज्य पंडितजी महाराजके बताये अनुसार महल मकान दुकान बनते तो सबसे पहिले पंडितजी उस स्थान पर रहने वाली मृतक आत्माओंकी शांतिके लिये जप अनुष्ठान कराकर उन्हें शांत करते जिससे वह जन्म भर कोई उपद्रव नहीं करते। भगवान् श्रीगणेशजी महाराजका पूजन आवाहन कर सब विघ्न बाधाओंको दूर कर देते और ग्रहोंको देवी देवताओंको प्रसन्न करके सब कार्य शास्त्रानुसार कराते तो ऐसे शास्त्रानुसार महल मकानमें रहकर सब चैनकी बंशी बजाते, सब धर्मात्मा पुण्यात्मा बन जाते और बेटे पोते धनधान्यसे भरपूर हो जाते।

जो ज्योतिषको नहीं मानता वह हिन्दू नहीं हो सकता

वेद शास्त्रों पुराणों, उपनिषदोंमें, रामायण, महाभारतमें संतवाणीमें सभीमें ज्योतिषका वर्णन है फिर भला जो वेद शास्त्र, पुराणों रामायण महाभारतको मानता है और ज्योतिष विद्याको नहीं मानता यह कैसे हो सकता है ? यदि शास्त्रोंको मानता है और ज्योतिषियोंको, ज्योतिषविद्याको और ज्योतिष शास्त्रको नहीं मानता तो फिर वह शास्त्र क्या मानता है खाक ? वह तो घोर नास्तिक है। भारतके प्रत्येक महल, मकान, दुकान,बड़े-बड़े किले मठ, मंदिर कूंवे बावड़ी सभीकी पातालकी पहली ईंट पर ब्राह्मण ज्योतिषियोंका मंत्र पढ़ा हुवा है तभी आगेको ईंट लगनी प्रारम्भ हुई है और जब ज्योतिषी महाराजने शुभ मुहूर्त बताकर मकानमें प्रवेश करनेकी आज्ञा प्रदान कर दी है तभी कोई उसमें प्रवेश कर सका है नहीं तो बना पड़ा है। पंडितजीका पत्रा आज्ञा नहीं देता कोई पाँव नहीं रख सकता। ३५ करोड़ हिन्दुओंके नाम ज्योतिषियोंके द्वारा ही रक्खे हुये हैं जो जन्मभर बोले जाते हैं। और तो और पंडितोंकी आज्ञा हो तो कन्या ससुरालको जाये और ससुरालसे आये, नहीं तो नहीं। पंडितजीका पत्रा आज्ञा दे तो खाट चारपाई बुनी जाय नहीं तो नहीं बुनी जाय। प्रत्येक कार्य मुहूर्त देखकर ग्रह देखकर होते थे। ज्योतिष-शास्त्र और ज्योतिषी हिन्दुओंके प्राण हैं इनके बिना हिन्दू एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता और एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। और यदि उद्दण्डता वश ज्योतिष शास्त्रकी परवाह न कर मनमानी करता है तो खतरेसे खाली नहीं है। ज्योतिषियोंसे घृणा करना महान् घोर अनर्थ करना है। साक्षात् अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक जगन्नियन्ता परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीशंकरजी परात्परब्रह्म श्रीराम

लक्ष्मणका दर्शन करनेके लिये ज्योतिषीका रूप बनाकर ही तो महाराज दशरथजीके महलोंमें पहुँचे थे। जब स्वयं श्रीशंकरजी ज्योतिषी बने और हाथकी रेखायें देखीं तो इससे बढ़कर ज्योतिषियोंकी महत्ता और क्या होगी? पर-ब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीराम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्नका नामकरण संस्कार ज्योतिष विद्यामें पूर्ण निपुण महर्षि वशिष्ठजी महाराजके द्वारा ही तो कराये गये। जो ज्योतिष शास्त्रको ज्योतिष-विद्याको नहीं मानता वह शास्त्रोंको नहीं मानता और जो शास्त्रोंको नहीं मानता वह कदापि हिन्दू नहीं हो सकता।

क्या सच्चे ज्योतिषी नहीं हैं?

आज कहा जाता है कि ज्योतिषी झूठे हैं और सच्चे ज्योतिषी नहीं हैं पर सभी ज्योतिषी झूठे हैं और सच्चे नहीं हैं यह कहना अपनी अज्ञानताका परिचय देना है और कुछ नहीं है। यह हम मानते हैं कि आज हजारोंमें एक दो सच्चे ज्योतिषी हैं पर हैं अवश्य ही; यह नहीं है कि नहीं है। आज भी बड़े-बड़े ज्योतिषी मौजूद हैं जिनकी दो-तीन सत्य घटनाएं जो बड़े-बड़े घोर नास्तिकोंको भी चकित कर देने वाली हैं सामने रखते हैं आशा है पाठक जरा ध्यानसे पढ़नेकी कृपा करेंगे।

१—अमृतसरकी सत्य घटना

बम्बईसे निकलने वाले साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' ७ जून सन् १९५३ पृष्ठ १३ पर एक दिनकी बातमें मानकौर देवी अपने जीवनमें घटी ज्योतिष-विद्याको बिल्कुल सत्य सिद्ध करने वाली सत्य घटना इस प्रकार सबके सामने रखती हैं—

"पिता जी पाठ पूजामें बहुत रुचि रखते थे। व्यवसाय उनका ज्योतिष था, उसमें वह बहुत दक्ष थे। जितने मेरे पिता जी सीधे स्वभावके थे तथा प्रभुभक्त थे उतनी ही मेरी मां कर्कशा स्वभाव वाली तथा नास्तिक थीं। एक दिन मां तथा पिताजीमें मेरे विवाह पर झगड़ा हो रहा था और पिताजी मां को समझा रहे थे कि लड़कीकी किस्मतमें शादी का बहुत ही बुरा प्रभाव है परन्तु मां मेरे पिताजीको बहुत बुरा कह रही थीं। दिन बीतते गये। पाँच साल इसी तरह कलह क्लेश में निकल गये। जब भी मेरी मां पिताजीसे मेरी शादीकी बाबत कहतीं तब ही मेरे पिताजी कह देते कि शादीका फल बहुत ही बुरा है। मेरी मां उन्हें कोसती और ज्योतिषको बुरा भला कहती। आखिर शादीका दिन आ गया बड़ी धूम-धाम हुई और पानीकी जगह दूधका प्रयोग किया गया। जब मैं डोली में बैठी तो खूब रोई। मां भी रोई पर वह प्रसन्न थी। पिताजी मुझे समझाने लगे कि बेटी! अभी घण्टे भरमें तुम्हें वापिस आ जाना है तुम क्यों व्यर्थमें रोती हो? अभी मेरी डोली बाजारके दूसरे मोड़ पर मुड़ी ही थी कि पीछेसे एक सांड दूसरे सांडसे हारा हुआ भागता आया और एक दम मेरे पतिसे भिड़ गया। मेरे पति एक दम गिरपड़े और गिरते ही उनके प्राण पखेरू उड़ गए। मेरी डोली उसी रास्तेसे अपने घर वापिस आ गई। इन सब कार्योंको लगभग आधा घंटा लगा और पिता जी के वाक्य बिल्कुल ही ठीक निकले। उस दिनसे पिता जी ने ज्योतिष व्यवसाय बन्द कर दिया और बाकी आयु प्रभुभक्तिमें व्यतीत की और ठीक ७ वर्ष बादमें अपने प्राण त्याग दिये।

—मानकौर अमृतसर

देखा आपने ज्योतिषियोंका और ज्योतिष-विद्याका प्रत्यक्ष अद्भुत चमत्कार। ज्योतिष विद्याके द्वारा मनुष्य किस प्रकार त्रिकालदर्शी हो जाता है। यह इसका जीता-जागता ज्वलन्त उदाहरण है। क्या इस सत्य घटनासे शिक्षा ले अब भी यह आर्यसमाजी कांग्रेसी और नेहरू जी ज्योतिषियोंको गालियां बन्द नहीं करेंगे?

२—नरवरकी सत्य घटना

अभी ५ अप्रैल सन् १९५६ को भारतके सबसे बड़े महान् संत श्रीसाङ्गवेद महाविद्यालय नरवरके संस्थापक कुल-पति १००८ परम पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय बालब्रह्मचारी तपोमूर्ति पं० श्री जीवनदत्तजी महाराजका ब्रह्मलोक प्रयाण हुआ है। आपकी ८५ वर्षकी आयु थी और आप नरवरके श्रीमहाराजजीके नामसे विख्यात थे और ६० वर्षसे निरन्तर श्री गंगातट पर बैठे गायत्रीका जप कर रहे थे और घोर तपस्वी महान् संस्कृतज्ञ दिव्य विभूति थे। आपके ब्रह्मलोक प्रयाणकी बड़ी ही मनोरंजक अद्भुत आश्चर्य-जनक और ज्योतिषियोंको और ज्योतिष विद्याको बिल्कुल सत्य सिद्ध कर देनेवाली एक सत्यघटना है जो इस प्रकार है—

त्रिकालदर्शी ज्योतिषी द्वारा १५-२० वर्ष पूर्व ब्रह्म-लोक प्रयाणकी तिथि लिखकर रख देनेकी आश्चर्यजनक घटना

आपके पास १५-२० वर्ष पूर्व एक पं० श्री रामस्वरूप नामक ज्योतिषी जी महाराज पधारे थे जो त्रिकालदर्शी माने जाते थे। उन्होंने अपने हाथसे पूज्य पं० श्री जीवनदत्तजी महाराजके संबन्धमें भविष्यवाणी करते हुए लिखकर आश्रम में टँकवा दिया था जिसमें लिखा था कि आपका ब्रह्मलोक प्रयाण चैत्र कृष्णा दशमी गुरुवार संवत् २०१२ को प्रातः-काल ८-३० बजे होगा और उस समय आपके पास प्रातः आपकी कुटियामें एक एकाक्षी (काना) साधु आयेगा वह आपके दर्शन करेगा और आप उसे देखते ही ॐ का उच्चारण कर अपना शरीर छोड़ देंगे। यह लिखा हुआ आज भी रखा हुआ है।

भाद्रपद शु० १४ संवत् २०१२ को अकस्मात् आपको शीत ज्वर हो गया जो फाल्गुन कृष्णा ३० तक छोड़ कर आता रहा। आपने नित्यकर्म करना नहीं छोड़ा इससे निर्बलता बढ़ती गयी। इधर ज्योतिषीजीका बताया समय भी निकट आ पहुंचा। ठीक शरीर छोड़नेसे एक दिन पूर्व एक एकाक्षी (काना) साधु फरुखाबादसे पूज्य पं० श्री जीवनदत्तजीकी प्रशंसा सुनकर दर्शनकी लालसासे चला और रात्रिको नरौरा आकरके ठहर गया। प्रातःकाल नरवर आकर श्रीगंगा स्नान किया और गीताका पाठ करना था सोचा कि पहिले दर्शन कर आऊं ज्योंही वह महाराजके दर्शनों के लिए चला तो इधर श्रीमहाराजजीको गीताका दूसरा अध्याय सुनाया जा रहा था वह पूरा हुआ झटसे एकाक्षी (काना) साधु कुटियामें घुसा और उसने श्री महाराजजीको प्रणाम किया और महाराजजीने उसे देखते ही हरिः ॐ का उच्चारण कर ब्रह्मलोक प्रयाण कर दिया। ठीक वही चैत्र कृष्णा दशमी गुरुवार संवत् २०१२ प्रातःकाल ८-३० का समय और एकाक्षी (काना) साधु पासमें सब बातें ठीक ठीक निकलीं। एकाक्षी साधु के हजारों चित्र लिए गए।

इस प्रकारकी एक नहीं हजारों लाखों घटनाएं हैं कि जो डंकेकी चोट ज्योतिषियोंको ज्योतिषशास्त्रको सत्य सिद्ध कर रही हैं। फिर भी अपनी हिटलरशाहीके बल पर कोई न मानें तो क्या किया जाय ?

भूत वही जो सर चढ़ बोले

यह कांग्रेसी हिन्दूकोडबिल तलाकबिल पास कर और गोवध, बन्दर-वध जारी रख कर अपनेको सनातन-धर्मसे पृथक् कर चुके हैं "पर भूत वही जो सर चढ़ बोले" के कथनानुसार एककी घटना हम सामने रखते हैं। पिछले दिनों राष्ट्रपति श्रीराजेन्द्रप्रसादजीसे एक सज्जनने प्रश्न किया था कि 'आप जो ज्योतिषियोंमें श्रद्धा रखते हैं क्या आपको विश्वास है कि मनुष्यों पर ग्रहोंका प्रभाव पड़ता है?' उत्तरमें राजेन्द्रप्रसादजीने कहा बताते हैं कि "जब चन्द्रमाके द्वारा समुद्रमें ज्वार भाटा आ सकता है और चन्द्रमाका प्रभाव समुद्र पर पड़ सकता है तो मनुष्यों पर ग्रहोंका प्रभाव क्यों नहीं पड़ सकता ?' इतना ही नहीं जब हमारे परम माननीय पूज्य पं० श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी महाराज आपसे भेंट करने गए तो आप बड़ी श्रद्धाभक्तिसे मिले और ज्योतिषाचार्योंसे बड़े ही प्रभावित हुए।

और देखिए 'नवभारत-टाइम्स' तारीख २ फरवरी सन् १९५६ पृष्ठ १ पर—

ग्रहों का कुपरिणाम

राज्य पुनर्गठनके प्रश्नको लेकर देशमें इतने उपद्रव क्यों हुए, इसका आज लोकसभामें श्री कामथने एक बहुत ही मनोरंजक कारण बताया। उन्होंने कहा जिस "दिन राज्यपुनर्गठनसे सम्बन्धित संविधान संशोधन विधेयक लोकसभामें प्रस्तुत हुआ चन्द्रग्रहण था और जिस दिन राज्य पुनर्गठन आयोगकी रिपोर्ट पर विवाद हुआ—सूर्यग्रहण था, हो सकता है कि ग्रहोंका कुछ परिणाम हो।"

यहीं तक नहीं जो कांग्रेसी आर्यसमाजी नास्तिक, ज्योतिषियोंको ज्योतिषशास्त्रको, ग्रहोंको देवताओंको मंदिरोंको दिन रात गालियां बकते हैं बुरा भला कहते हैं वही चुनावों-के समय ज्योतिषियोंके पीछे पीछे मारे मारे डोला करते हैं। और देवी देवताओंकी मनौती मनाते हैं, ग्रहोंके जप पूजन कराते हैं, नाक रगड़ते हैं पर ज्योंही सफलता प्राप्त की फिर रावणकी भांति अभिमानमें अंधे होकर गालियां बकने लगते हैं। फिर तो अपने सामने ईश्वरको भी कुछ नहीं समझते। आज सनातनधर्मकी प्रत्येक बातको समाप्त करनेका बीड़ा उठा लिया गया है और इसे मिटानेके लिये खुलकर मैदान में निकल आये हैं बिलोंकी मारसे जड़मूलसे समाप्त करनेके

भगवान् बुद्ध और भारतीय पुरातत्त्व

[लेखक—डाक्टर श्री बहादुरचंद्रजी छाबड़ा]

[प्रस्तुत लेखके लेखक श्री बहादुर चन्द्र छाबड़ा इतिहास एवं पुरातत्व विषयके लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् हैं। आप इस समय केन्द्रीय पुरातत्त्व विभागके उप-संचालक पद पर अधिष्ठित हैं। भगवान् तथागत के दर्शनका सार सरल शब्दोंमें सज्जित करते हुए आपने इस लेखमें बतलाया है कि चित्र निर्माण (मूर्तिकला) तथा स्थापत्य आदि सभी कलाओं पर जितना व्यापक प्रभाव भगवान् बुद्धका पड़ा है, उतना मध्यकालकी कलाओं पर अन्य किसीका नहीं पड़ा। केवल भारतमें ही नहीं अपितु विश्वके अधिकांश भाग पर भगवान् बुद्धका प्रभाव अभी तक व्याप्त है और युग युग तक रहेगा इसमें सन्देह नहीं। उपलब्ध पुरातत्व सामग्रीमेंसे यदि भगवान् सुगत सम्बन्धित अंशको निकाल दिया जाय तो वह निष्प्राण सी प्रतीत होगी इसमें दो मत नहीं हो सकते। ऐसे सार गर्भित मीमांसा पूर्ण लेख हमारे विचारसे पाठकोंके ज्ञानवर्धनमें अवश्य सहायक होंगे।

—सम्पादक]

गौतम बुद्ध भारतकी सर्वश्रेष्ठ विभूतियोंमेंसे एक हैं। जब हम अतीत पर दृष्टि डालते हैं तो हमें कुछ एक ही ऐसे व्यक्ति मिलते हैं जिन्होंने अपने माहात्म्य, सच्चरित्र और सदुपदेशों द्वारा भारतका नाम संसार भरमें रौशन कर दिया। और जो जनता की स्मृति में आज भी जीवित हैं। उनमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम, सकल कलासंपूर्ण भगवान् कृष्ण, एवं भगवान महावीर और भगवान् बुद्धके नाम विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में महात्मा गांधी भी इसी कोटिके एक नररत्न हुए हैं। धर्म और संस्कृतिके क्षेत्रमें भारत के प्रति इन महानुभावों की जो देन है उसका यथावत् मूल्यांकन सर्वथा असम्भव है।

परतन्त्रताके वातावरणमें भारतीय जनता अपनी इस अमूल्यदेनके प्रति सुतरां उदासीन थी। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्तिके अनन्तर ही देश भरमें जागृतिकी एक अपूर्व लहर दौड़ गई है। जिसके फलस्वरूप आज हरेक भारतवासी अपने अतीत गौरवके गीत गाता, उस पर अभिमान करता एवं उसमें अधिकाधिक रुचि और जिज्ञासा प्रकट करता दिखाई देता है। नित्य नए उत्सव और नित्य नए प्रकाशन इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अभी कुछ ही समय पूर्व भारत भरमें जैन धर्म प्रतिष्ठापक भगवान् वर्धमान काश्यप महावीर एवं भगवान् गौतम बुद्ध की २५०० वीं जयन्ती बड़े समारोहके साथ मनाई गई थी।

भगवान् महावीरसे भी अधिक संसार पर भगवान बुद्ध

लिये तुल गये हैं इस लिये प्रत्येक सनातनधर्मीका परम कर्तव्य है कि वह संगठित होकर जिधरसे भी आक्रमण हो उसीका डट कर सामना करनेके लिये, सनातनधर्मकी रक्षाके लिये कटिबद्ध हो जांय और इनके अनर्गल प्रलाप पर तनिक भी ध्यान न दें, इसीमें कल्याण है। मेरे देशका प्रत्येक कण परम पवित्र है और मेरे सनातनधर्मकी प्रत्येक बात वेद शास्त्रानुमोदित मानने योग्य है फिर भला ज्योतिष शास्त्रकी मखौल उड़ाई जाय और हम बैठे बैठे देखते रहें क्या यह डूब मरनेकी बात नहीं है? हम यह मानते हैं कि हजारों ज्योतिषी ऐसे हैं कि जो अपनेको ज्योतिषी बताते हैं और शराबें पी जाते हैं, दर्जनों सिगरेटोंके डिब्बे फूंक डालते हैं, जुल्फोंमें तेल चूते रहते हैं और सिनेमाकी खाक छानते हैं और कुर्मके चर्र चर्र करने वाले जीवित गायको मारकर बनाये गये जूते पहिनते हैं और नेताओंके तलुवे चाटते हैं पर इसका मतलब यह तो नहीं कि सभी ज्योतिषी ऐसे हैं या यह लीडर ऐसोंको मेटना चाहते हैं? आशा है पाठक हमारी प्रार्थना पर ध्यान देकर ज्योतिषशास्त्रकी रक्षा करनेके लिये अवश्य ही कटिबद्ध हो जायेंगे।

—

के उपदेशोंका प्रभाव अभी तक व्याप्त है क्योंकि राग और द्वेषसे ग्रस्त, वैर और विरोधसे व्याकुल, ईर्ष्या और अनाचारसे पीड़ित संसारके लिए भगवान् बुद्धके वचनामृत ही परमौषध हैं—उन्हींके द्वारा शांति और सुखकी प्राप्ति संभव है।

[इस लेखमें बौद्ध दर्शनका सार निदर्शित करते हुए भारतीय—पुरातत्व पर भगवान बुद्धके प्रभाव पर प्रकाश डाला जा रहा है]

भगवान् बुद्धके उपदेशोंका सार यह है कि भूत और भविष्यकी मत सोचो, वर्तमान पर दृष्टि रखो, विषय वासनाओंमें नितान्त लम्पट मत बनो, और नाही अति कठोर तपस्यासे अपने शरीरको कष्टमें डालो; बड़े बूढ़ोंका कहा मानो और दास भृत्यों पर कृपादृष्टि रखो, मनको पवित्र रखो, और जानबूझकर किसीका बुरा मत करो, सबसे मैत्रीभाव रखो—बस इसी मध्यम पथ पर चलकर, हे मानव तेरा कल्याण होगा। तुम्हें सुख मिलेगा और शान्ति मिलेगी।

कितनी सीधी सादी फिलास्फी है। भगवान्ने पहिले स्वयं इस पर आचरण किया और फिर अपना आदर्श औरोंके सामने रखा। पांओं प्यादे चलकर, गांव गांव और देश देशमें चालीस वर्ष तक भगवान्ने इसीका प्रचार किया। जनता मुग्ध हो उठी। भगवान्की सौम्य मूर्तिको देखते ही लोगोंको अपूर्व आनन्दका अनुभव होता संतप्त हृदयोंको शान्ति और दुखियोंको सान्त्वना मिलती। भगवान्के अंग अंगसे करुणा और मैत्रीके फव्वारे से छूटते थे। गरीब अमीर, छोटे बड़े, स्त्री पुरुष, सबने उनका प्रसाद पाया और अपनेको धन्य माना।

बदलेमें जनताने भगवान् बुद्धको क्या दिया? श्रद्धा और भक्ति, पूजा और सत्कार। कृतज्ञ जन अपनी कृतज्ञता प्रकाशनके निमित्त एवं उपकारके ऋणको चुकानेके लिए क्या क्या नहीं करता? वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करनेके लिए उत्सुक हो उठता है। यही संस्कृतिकी क्रिया और प्रतिक्रिया है, इसके अन्तरंग और बहिरङ्ग दो रूप हैं। भगवान् बुद्धने अपने सदाचरण एवं अपनी मधुरवाणी द्वारा जनताको जो सरल सन्मार्ग दिखाया, उसे संस्कृतिका अंतरङ्ग रूप समझो। उसके प्रतिरूप जनताने भगवान्का तथा उनके सिद्धान्तों एवं विचारोंका जो आदर और सम्मान किया, उसे संस्कृतिका बहिरङ्ग रूप मानो। ऐसी अवस्थामें जनता कोरे शब्दोंसे ही संतुष्ट नहीं होती, केवल हाथ जोड़कर नमस्कार करने मात्रसे उसकी तृप्ति नहीं होती। वह अपनी कृतज्ञताका प्रकाशन किसी मूर्त और चिरस्थायी रूपमें करना चाहती है। उसे मनोहर और आकर्षक बनाना चाहती है—और उसमें भी प्रत्येक नरमें स्पर्धा होती है कि मैं दूसरोंसे बढ़कर अद्‌भुत काम करके दिखाऊं, मुझे ज्यादा वाहवाह मिले। ये उदात्त विचार और सत्प्रेरणाएं ही संस्कृतिके बाह्य अथवा दृश्यमान रूपके मूल कारण हैं। इन्हींसे कविता, अभिनय, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि ललित कलाओंका उदय होता है। किंच ये ललितकलाएं ही मुख्यतः संस्कृतिका बाह्य रूप हैं। इन्हीं द्वारा तत्तद् देशकी संस्कृतिकी उत्तमता और उज्ज्वलताके तारतम्यका अनुमान होता है।

अब जरा भारत भूमिके सांस्कृतिक इतिहास पर नजर दौड़ाइये, इसकी साहित्यिक और कलामयी निधिका सिंहावलोकन कीजिए, और देखिए कि भगवान् बुद्धका इसमें कहाँ तक हाथ है। गत दो हजार पांच सौ सालोंमें इन्होंने भारत भरमें ही नहीं अपितु भारतेतर कई बृहद् भूभागों पर हजारों और लाखों साहित्यकारों और कलाकारोंको सत्प्रेरणा दी है और उन्हें अनुप्राणित किया है। पर्यायमें इन साहित्यकारों और कलाकारोंकी कृतियोंसे बादके साहित्यकार और कलाकार भी सत्प्रेरणा पाते आए हैं और वे भी अपनी अपनी कृतियोंसे जगत्को चमत्कृत करते आए हैं। फलतः आज हमारे पास जो पुंजीभूत कलानिधि है वह सुतरां अमूल्य अनुपम और अप्रमेय है।

भारतमें जहां तक वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकलाका संबन्ध है, गत सौ सवासौ वर्षसे पुरातत्त्व विभाग श्लाघनीय काम कर रहा है। पुरातत्त्व-परायण खोज और खुदाईके फलस्वरूप देशके हर कोनेसे ध्वंसावशेषोंके रूपमें जो प्रचुर सांस्कृतिक सामग्री मिली है उस पर हजारों किताबें लिखी जा चुकी हैं और आगे भी लिखी जा सकती हैं। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि भारतमें आज तक ऐतिहासिक युग के जो प्राचीन अवशेष मिले हैं वे प्रायः सभी धर्मसे ही सम्बन्ध रखते हैं—स्तूप, यूप, चैत्य, विहार, मन्दिर, मठ, प्रतिमाएं, चित्रपट, पूजापात्र आदि। हां, मुसलमानी युगसे लेकर आगे धर्मेतर अवशेष

भी पर्याप्त संख्यामें मिलते हैं। मुसलमानी युगसे पूर्वकी भारतीय पुरातत्त्व सामग्री धर्मप्रधान है और वह प्रायः समान रूपसे तीन विभागोंमें विभक्तकी जा सकती है— ब्राह्मण, जैन और बौद्ध। ब्राह्मणको कई विद्वान् 'हिन्दू' संज्ञा भी देते हैं, परन्तु 'हिन्दू' संज्ञा बहुधा अधिक व्यापक रूपमें प्रयुक्त होती है जिसमें जैन और बौद्ध भी समाविष्ट हैं। 'हिन्दू' कहनेसे ब्राह्मण अर्थात् वैदिक एवं जैन और बौद्ध सभीका बोध होता है। संप्रदायोंके भेदसे इनके अवान्तर भेद और उपभेद भी बहुत हैं, जैसे पहिले में शैव और वैष्णव, दूसरेमें दिगम्बर और श्वेताम्बर, तथा तीसरेमें हीनयान और महायान भेद हैं, और आगे चलकर इनके भी नाना उपभेद हो जाते हैं, जिनकी चर्चा यहां निष्प्रयोजन है।

प्रकृतमें हम केवल बौद्ध स्मारकों और अवशेषोंकी ही कुछ चर्चा करेंगे। उपर्युक्त कथनके अनुसार प्राचीन (मुसलमानी युगसे पहिलेकी) भारतीय पुरातत्त्व सामग्रीका एक तिहाई हिस्सा बौद्ध है, और महत्ताकी दृष्टिसे यह कदाचित् सबसे बढ़कर है। इसका श्रेय मौर्य सम्राट् अशोक को है जिसने संसारमें बौद्धधर्मके प्रचारके निमित्त भारतसे बाहिर कई भिक्षु भेजे। उनमें स्वयं उसका अपना पुत्र महेन्द्र और उसकी अपनी पुत्री संघमित्रा भी थे जिन्होंने सिंहल द्वीपमें अर्थात् लंकामें जाकर बौद्ध मतका प्रचार किया। बौद्ध भिक्षुओंके प्रयाससे यूनान, तिब्बत, चीन, जापान, बर्मा, स्याम, कम्बोडिया, चम्पा आदि देशोंमें मलय प्रायद्वीपमें एवं सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, सेलिबस आदि द्वीपोंमें भी बौद्ध मतका सम्यक् प्रचार हुआ। उक्त देशोंमें बौद्ध कलाके जो निदर्शन मिलते हैं वे भी जगद्विख्यात हैं। उनकी गणना यहां न करके भी, केवल भारत में ही विद्यमान बौद्ध कलाके नमूने देखें तो आश्चर्यकी सीमा नहीं रहती।

भारतके पुरातत्त्वसे यदि बौद्ध अंश निकाल दिया जाए तो उसमें सचमुच एक कल्पनातीत ह्रास होगा, मात्रामें ही नहीं, अपितु गुणमें भी! क्योंकि उसमें मूर्तिकलाके ऐसे ऐसे अद्भुत उदाहरण मिलते हैं जो संसारमें अद्वितीय माने जाते हैं जैसे कि सारनाथसे प्राप्त गुप्तकालीन धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्राएं, पद्मासनासीन भगवान् बुद्धकी प्रतिमा। यों तो भारतके कोने कोनेमें बौद्ध स्मारक एवं अवशेष मिलते हैं और वे अतिप्राचीन कालसे लेकर अर्वाचीन समय तकके हैं, परन्तु उन सबका वर्णन न कर हम यहां कुछेक मुख्य स्मारकोंका उल्लेख मात्र करते हैं।

बौद्ध तीर्थोंमें चार स्थान अतिप्रसिद्ध हैं— (१) नेपाल की तराईमें रुम्मिनदेई नामका गांव (लुम्बिनी ग्राम) जहां भगवान्का जन्म हुआ था, (२) बोध गया जहां पीपलके वृक्षके नीचे बैठकर अनशन व्रत धारण किए तपस्या करते हुए भगवान्को बोधि अर्थात् ज्ञान या सम्यग् दृष्टिकी प्राप्ति हुई थी—मानों उनकी आंखें खुल गई थीं जिससे भगवान् को सम्यक् संबुद्ध अथवा केवल बुद्ध कहते हैं (३) बनारस के पास सारनाथ जिसे इसिपतन (ऋषि पतन) या मिगदाव (मृगदाव-वह वन जिसमें हरिण बहुत संख्यामें हों) भी कहते हैं जहां भगवान्ने बोधिप्राप्तिके अनन्तर सबसे पहली धर्मदेशना की थी, धर्मके चक्रको मानों घुमाना शुरू किया था—धर्मचक्र प्रवर्तन!, और (४) कसिया नाम का गांव (कुशिनारा) जहां भगवान्का परिनिर्वाण हुआ था अर्थात् जो दीपक ८० साल तक बराबर जलता रहा और जनताको ज्ञानका प्रकाश देता रहा वह यहां कसियामें आकर बुझ गया। ये चारों स्थान गंगाके आर पार, बिहार और उत्तरप्रदेशमें विद्यमान हैं। इस पवित्र भूखण्डकी यात्राके लिए चारों ओरसे बौद्ध भिक्षु और उपासक आते रहे हैं और आज भी आते रहते हैं। उक्त चार स्थानोंमें भी सारनाथका महत्त्व सबसे अधिक माना जाता है।

इनके अतिरिक्त भारतमें कई एक और भी महत्वशाली बौद्ध क्षेत्र हैं जैसे मथुरा, सांची, भारहुत सेठमहेठ (श्रावस्ती), कोसम (कौशाम्बी), नालन्दा, राजगिर, टैक्सिला (तक्षशिला), पेशावर, चारसद्दा, बेग्राम, शालिहुण्डम्, अमरावती, जगाय्यपेट, नागार्जुन कोण्ड, घंटासाला, मस्की, ब्रह्मगिरी, सिद्धपुर, धौलि, जौगढ़, जूनागढ़ अजंटा, एलोरा, कार्ले, भाजा, नासिक, कन्हेरि, जूनागढ़ इत्यादि। इन स्थानों पर पुरातत्त्व विभाग द्वारा खुदाइयां हो चुकी हैं और फलतः कई प्रकारके ध्वंसावशेष—स्तूप, चैत्य, बिहार, मूर्तियां आदि—प्रकाशमें आ चुके हैं। ध्यान रहे कि सैकड़ों स्थान ऐसे पड़े हैं जहां अभी कोई खोज या खुदाई नहीं हो पाई और जहां असंख्य बौद्धविशेष भूगर्भमें ही प्रच्छन्न पड़े हैं। उड़ीसा और विन्ध्यके जंगलोंमें नाना प्रकारकी भग्नाभग्न प्रस्तर मूर्तियां जा-बजा बिखरी मिलती

भाग्यफल

लेखक :— श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री
ज्योतिषाचार्य

चैत्रमासमें जन्मे व्यक्तियोंका फलादेश

चैत्र मासमें जन्मे व्यक्ति भावुक, मिलनसार, कार्य-परायण और उद्योगी होते हैं। विघ्न बाधाओंको बातकी बातमें पार कर लेते हैं। यद्यपि इनका स्वभाव एकान्त प्रिय होता है, पर सार्वजनिक कार्योंमें अधिक भाग लेनेके कारण शीघ्र ही नेता बन जाते हैं। इनकी शिक्षा साधारण होने पर भी ये अपनी कार्यपटुतासे प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। यों तो इस मासके जन्मे व्यक्ति सैंकड़े पचास शिक्षित होते हैं। तथा सैंकड़े चौदह उच्च शिक्षित होते हैं। कला-कौशल से इन्हें प्रेम होता है, कृष्णपक्षकी अपेक्षा शुक्लपक्षमें जन्मे व्यक्ति अधिक भाग्यवान्, मननशील और उत्तरदायी होते हैं। जिनका जन्म चैत्रसुदी पूर्णिमाको होता है, वे प्रायः धनी, कलापारखी और चलते पुरजे होते हैं। चैत्रवदी १, २, ४ और ७ तिथियोंको दोपहरके पश्चात् जन्मग्रहण करने वाले व्यक्ति कृषि कार्यमें विशेष निपुण होते हैं, परन्तु कुछ व्यक्ति व्यापारमें भी प्रवीणता प्राप्त करते हैं। चैत्रसुदी ६, १३ को जन्म लेने वाले महान् होते हैं।

नारचन्द्र और नारदसंहिताके अनुसार इस मासके जन्मे व्यक्ति शिक्षक, मैनेजर, साधारण नौकर, जिलाधीश पुलिस अफसर और साधारण चिकित्सक होते हैं। यदि ये व्यक्ति उद्योग-धन्धोंके विकासमें लग जाते हैं, तो इन्हें अच्छी सफलता मिलती है। व्यवसायकी बुद्धि जन्मजात होती है यदि थोड़ा सा सहयोग मिल जाय तो फिर ये अधिक उन्नतिशील हो सकते हैं।

जिस व्यक्तिका जन्म चैत्र वदी ६ शनिवार को दोपहर के दो बजे होवे, वह व्यक्ति अधिक उन्नति करता है, उसका यश सर्वत्र व्याप्त रहता है। अन्तर्राष्ट्रीय कार्योंमें उसे ख्याति मिलती है, साधारणतः शनिवार और मंगलवारको जन्मे इस मासके व्यक्ति पहलवान, लड़ाकू और सफल सैनिक होते हैं। इनका शरीर ५ फुट २ इंच से लेकर ५ फुट ६ इंच तक ऊंचा होता है। रंग गोरा, शरीर दुबला-पतला और स्वभाव रूक्ष पर अभिमानी होता है।

आर्थिक स्थिति

इस महीनेमें जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति सर्वदा धनकी कमीका अनुभव करते हैं। इनमें तृष्णा इतनी अधिक होती है जिससे विपुल परिमाणमें धनके होने पर भी ये अपनेको तुच्छ समझते हैं, सैंकड़े दस इस मासके जन्मे व्यक्ति अधिक धनी, सैंकड़े पच्चीस मध्यम श्रेणीके धनी और सैंकड़े पन्द्रह साधारण धनी होते हैं। अवशिष्ट व्यक्ति दरिद्र होते हैं। इस महीनेकी विषम तिथियोंमें जन्मे व्यक्ति प्रायः दरिद्री होते हैं, पर धातुओंके व्यापारमें इन्हें धन की आमदनी होती है। रावण-संहिताके मतानुसार चैत्रसुदी १, ५, ६, १०, १३, १५ को जन्मे व्यक्ति अच्छे धनी और यशस्वी होते हैं ३० वर्षकी आयु में इस मास वालोंको अकस्मात् धन मिलता है। व्यापारमें वृद्धि राज्यसे लाभ और सुसरालसे भूसम्पत्तिकी प्राप्ति होती है।

जिनका जन्म गुरुवार और सोमवारकी रातको इस महीने में होता है वे २२ वर्षकी आयुसे धन कमाने लगते हैं, जिनका जन्म इन्हीं दिनोंमें दिनका होता है, वे २५ वर्षकी आयुसे धन कमाते हैं। मंगल, बुध और शुक्रवार को दिनमें जन्मे व्यक्तियोंको कभी भी कोई आर्थिक कष्ट नहीं होता है, वे २४ वर्षकी आयुसे अपने व्यवसायमें लग जाते हैं, जिससे योगक्षेमके योग्य सदा अर्जित करते रहते हैं। उपर्युक्त वारोंमें रातमें जन्मे व्यक्तियोंको जीवनके पूर्वार्द्धमें आर्थिक कष्ट और उत्तरार्धमें धन लाभ होता है वास्तवमें इस मासके जन्मे व्यक्तियोंके लिए २०, २२, २३,

---

हैं। यह सब पुरातत्व विभागके ध्यानमें है और संभावना है कि निकट भविष्यमें ही इस सब बिखरी सामग्रीको बटोर कर इसका यथावत् संरक्षण, संपादन एवं प्रदर्शन किया जायगा। नमो भगवते सम्यक् संबुद्धाय।

——

२४, २८, ३२, ३५, ४१, ४६, ६४ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं।

विवाह

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंका विवाह प्रायः जल्दी होता है। रावणसंहिता और भद्रबाहुसंहिताके अनुसार इस मास वालोंके विवाह वर्ष १०, ११, १२, १४, १६, १८, १६ और २२ बताये हैं। पाश्चात्य ज्योतिषियोंके मतसे इस मास वालोंका विवाह २१ वर्षसे लेकर ३० वर्षकी आयु तक होता है। सैंकड़े बत्तीस व्यक्तियोंका विवाह अल्पवय में, सैंकड़े २८ व्यक्तियोंका विवाह युवावस्थामें और सैंकड़े पन्द्रह व्यक्तियोंका विवाह प्रौढ़ावस्था या वृद्धावस्था में होता है। सैंकड़े पच्चीस व्यक्तियोंका विवाह नहीं होता है। नारचन्द्राचार्य ने बताया है कि जिनका जन्म चैत्रवदी ३ को सायंकाल होता है, उनके दो या तीन विवाह और जिनका जन्म शुक्ल पक्षकी सम तिथियोंमें होता है, उनके भी प्रायः दो विवाह होते हैं।

मित्रता

इस मासके जन्मे व्यक्तियोंकी मित्रता अधिक व्यक्तियों से होती है। ये जहां रहते हैं, वहां मित्रोंका एक गिरोह रखते हैं। शत्रु इनके बहुत कम होते हैं। ४० वर्षकी आयुमें एक बड़े शत्रु का जन्म होता है, जिससे इन्हें अन्त तक संघर्ष करना पड़ता है। शुक्ल पक्ष वाले व्यक्ति इस नियम के अपवाद भी होते हैं।

स्वास्थ्य

साधारणतः स्वास्थ्य अच्छा रहता है। परन्तु २३ वर्षकी आयुके पश्चात् अकस्मात् रोग उत्पन्न होते हैं, जिससे कष्ट होता है। ४, ५, ७, ६, १०, १४, १६, १६, २०, २३, २८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५१, ५४, ५७ और ६७ वें वर्ष कष्टप्रद होते हैं। इनमें स्वास्थ्यको हानि होती है और ५४ तथा ६७ वें वर्ष अकालमृत्युदायक भी होते हैं। इनको वात जन्य गठिया, लकवा, खुजली और संक्रामक, रोग होनेका भय रहता है।

चरित्रकी कमजोरी और दृढ़ता

इस महीनेमें जन्मे व्यक्ति प्रायः सत्यनिष्ठ और ईमानदार होते हैं। चरित्रके अत्यन्त पक्के होते हैं। इनकी नैतिकताकी छाप आस-पासके सभी व्यक्तियों पर पड़ती है। शुक्लपक्षमें जन्मे व्यक्ति अत्यन्त धर्मात्मा, दयालु और सत्यवक्ता होते हैं। अपने आचरणके बलसे ये नेता भी बन जाते हैं। किन्तु कृष्णपक्षके व्यक्तियोंमें आचरणहीनता भी पाई जाती है।

अच्छा और बुरा समय

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंका भाग्योदय यों तो १८ वर्षकी आयुमें ही हो जाता है, परन्तु इनके लिये २२ वर्षसे लेकर २७ वर्षकी आयु तकका समय महत्वपूर्ण है, इसी समय इनके भाग्यका निर्माण होता है, यदि इस समयका सदुपयोग किया गया तो फिर भावी जीवन सुखमय व्यतीत होता है। ३१ वर्षकी आयुसे लेकर ३६ वर्षकी आयु तक अत्यन्त सुखप्रद है, इन वर्षोंमें इस मासके जन्मे व्यक्ति सब प्रकारका सुख प्राप्त करते हैं। ५५ से लेकर ५६ वर्षकी आयु का समय भी शान्तिदायक है। १४, १८, २४, ३७, ३६, ४२, ४५, ४६, ५३ वें वर्ष कष्टप्रद होते हैं।

शारीरिक सुख-दुःखकी दृष्टिसे ११, १७, २७, ३२ और ४२ वें वर्ष विशेष महत्वके हैं, इन वर्षोंमें इस मास वालोंको या तो शारीरिक दृष्टिसे अत्यन्त कष्ट होता है, अथवा अत्यन्त सुख प्राप्त करते हैं। इनके लिये श्रावण, कार्तिक, माघ, फाल्गुन और चैत्र मास सभी कार्योंके लिये अच्छे होते हैं। इन महीनोंमें ये नवीन कार्य आरम्भ कर सकते हैं। इस मासके जन्मे व्यक्तियोंके लिये रवि और शुक्र ये दो दिन अच्छे होते हैं, तिथियोंमें ६, १०, १३, १५ अच्छी बताई गई हैं।

संख्या

इस मास वालोंके लिये ६, ५ और ३ के अंक अच्छे होते हैं तथा इन अंकोंके योगसे बनी हुई संख्याएं भी शुभ मानी गई हैं। रेशों या फाटका लगाने वालोंको इन अंकों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

सन्तान

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंको सन्तान सुख अच्छा होता है। प्रथम सन्तान १७, २२, २५, २८, ३२ वर्षकी आयु में होनेका योग है। जिनका जन्म इस महीनेमें सोमवारको आर्द्रा नक्षत्रमें होता है, उन्हें संतान नहीं होती तथा जिनका गुरुवारको १५ घटी १० पल इष्टकाल पर जन्म होता है, उन्हें ३८ वर्षकी आयुमें सन्तान होती है। कृष्णपक्षमें जन्मे

व्यक्तियोंको कन्याएं अधिक और शुक्लपक्षमें जन्मे व्यक्तियोंको पुत्र अधिक होते हैं। कुल सन्तानें ८ तक होती हैं, किन्तु जिनका जन्म रोहिणी नक्षत्रके चतुर्थ चरणमें होता है, उनके ५ ही सन्तानें होती हैं।

विशेष फलादेश

चैत्रमासमें जन्मे व्यक्ति परोपकारी होते हैं, इन्हें ३० वर्षकी आयुमें सम्मान मिलता है, राजमान्य, देशमान्य और अपने वर्गके लिये पूज्य भी इसी आयुमें हो सकते हैं। किन्तु यह फलादेश चैत्र सुदी १३ तक जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्तियोंको ही मिलता है। ३० वें वर्षमें इन्हें अकस्मात् धन प्राप्ति होती है, परन्तु मंगल-ग्रहकी अनिष्ट-कारी दृष्टि होनेसे इन्हें इस फलकी प्राप्तिमें बाधाओंका सामना करना पड़ता है। अतएव मंगल-ग्रहकी शान्ति कराना आवश्यक है। ४८ वर्षसे लेकर ५२ वर्षकी आयु तक किसी बड़े व्यापारकी संभावना है, इस व्यापारमें सहस्त्रों रुपयेकी आय होती है। सूर्यके उच्च होने पर जन्म ग्रहण करने वाले बिना किसीके सहयोगके अपना विकास करते हैं। वैशाखकी सन्धि अर्थात् चैत्र पूर्णिमाकी समाप्तिके बाद जन्मे व्यक्ति अत्यन्त प्रभावशाली होते हैं। शासन करनेमें इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता है। देश-विदेशमें सब जगह आदर पाते हैं।

चैत्रमासमें जन्मी नारियोंका फलादेश

इस महीनेमें जन्मी देवियां सुन्दर, गौरवपूर्ण और ऊंचे कदकी होती हैं। इनका दाम्पत्य-जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। इन्हें १५ वर्षकी आयुमें कुछ चिन्ताएं होती हैं तथा चैत्रमासमें जन्मी नारियोंको चालीस प्रति सैकड़े २४ वर्षकी आयुमें वैधव्य जीवनकी यातनाएं सहनी पड़ती हैं। यद्यपि कुछ देवियां १६ वर्षकी आयुमें भी विधवा हो जाती हैं, किन्तु अनुपात २४-२५ वर्षकी अवस्थाका ही है। साठ प्रति सैंकड़े भाग्यवान् और सुखी होती हैं।

इस मासकी नारियोंको सन्तान अधिक उत्पन्न होती है। प्रथम सन्तान १४, १६, १८, १९ और २५ वर्षकी आयुमें होती है। इनका स्वभाव साधारणतया अच्छा होता है, माता जैसा वात्सल्यभाव इनमें पाया जाता है। कृष्णपक्ष की १, ३, ४, ५, ६ और ११ को जन्मी देवियां प्रायः शिक्षित होती हैं तथा शुक्लपक्षमें जन्मी नारियां सभी साक्षरा होती हैं। हाँ जिनका जन्म सन्ध्याकालमें होता है, वे मूर्ख होती हैं। प्रातः काल सूर्योदयसे लेकर २॥ घंटेके भीतर जिनका जन्म होता है; वे राज-रानीका सुख भोगती हैं। जैसे-जैसे दिन ढलता जाता है, वैसे-वैसे शुभ फलका ह्रास और अशुभ फलकी वृद्धि होती जाती है। चैत्र, वैशाख, आषाढ़, माघ और फाल्गुनमें जन्मे व्यक्तियोंके साथ विवाह करनेसे इस मासकी जन्मी नारियोंका सौभाग्य अच्छा होता है तथा दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक बीतता है। ज्येष्ठ और पौष मासमें जन्मे व्यक्तियोंके साथ विवाह करने से वैधव्य योगका फल प्रायः भोगना पड़ता है, दाम्पत्य जीवनमें कलह, अशान्ति भी होती है।

ज्येष्ठ मासके जन्मे व्यक्तियोंके साथ विवाह सम्बन्ध चैत्रमासके शुक्लकी द्वादशी तिथिमें जन्मी नारियोंके सन्तान नहीं होती तथा कृष्ण पक्षकी द्वादशी तिथिको जन्मी देवियोंका सम्बन्ध अगहन (मार्ग शीर्ष) वदी ४ को जन्मे पुरुषके साथ होनेसे २८ से ३२ वर्षकी आयुके मध्यमें सन्तान होती है। जिन देवियोंका जन्म चैत्रवदी ५ बुधवार को रातमें होता है, वे प्रायः धनी होती हैं, तथा उनके भाग्यका सुख अन्य व्यक्ति भी उठाते हैं; जहां उनका पदार्पण होता है, वहां सुख और शान्ति व्याप्त रहती है। साधारणतः ये ३१ वर्षकी आयुमें विशेष सुखी होती हैं। इनके जीवनके १८, २०, २४, ३१, ३८, ४४ और ५२ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इन वर्षोंमें इनका शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक विकास होता है। कृष्णपक्षमें जन्मी नारियों की आंखें कुछ निर्बल होती हैं, जिससे उन्हें चश्मा लगाना पड़ता है। शुक्लपक्षकी २, ५, ८ को जन्मी नारियां सम्पन्न होती हैं, पर इनका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है।

—



लोकगीतोंका सारतत्व



[लेखक—श्री सूर्यमणि शास्त्री]

[प्रत्येक देशके आचार विचार, रहन सहन, राष्ट्रिय एवं सामाजिक, ऐतिहासिक परिवर्तनोंका प्रभाव तथा लोक साधारण की भावनाओं का वास्तविक चित्रण उस देशके लोकगीतोंमें ही सुचारु रूपेण मिलता है—इस दृष्टिसे लोकगीतोंका महत्व अनुपम है। विदेशी लोगों द्वारा इस दिशामें काफी कार्य किये जाने के बाद अब भारतीय लोग भी इस ओर प्रयत्न करने लगे हैं। लोकगीतोंके संग्रह आदि कार्यका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। अब भी बहुत से लोककाव्य ग्रामीण लोगोंके परम्परा या कंठस्थ हैं। राजस्थानमें 'निहाल दे सुलताना' 'बगड़ावतका ख्याल' तथा 'मा भारत' जैसी कृतियां कुछ लोगों को परम्परासे कंठस्थ हैं। और वे इन्हें महीनों तक गाते हैं, अन्य प्रान्तोंमें भी ऐसे ही बहुतसे काव्य मुखाग्र होंगे। निःसंदेह आवश्यकता इस बातकी है कि उन्हें लेखबद्ध कर संगृहीत किया जाय तथा उचित रूप में सम्पादित कर ऐतिहासिक टिप्पनियोंके साथ योग्य अधिकारी विद्वानों द्वारा उन्हें प्रकाशित कराया जाय। इससे अनेक अप्रकाशित ऐतिहासिक तथ्य भी प्रकाशमें आसकते हैं। इस लेखमें लोक गीतोंके महत्वको प्रतिपादित करते हुए लोक गीतों सम्बन्धी कार्योंका क्रमिक वर्णन किया गया है। लोकगीतों सम्बन्धी वर्तमान कार्योंके वर्णनमें लेखक द्वारा केन्द्रीय सरकारके 'कल्चरल अफेयर्स' के प्रकाशनों, भोजपुरी मैथिली लोकगीतोंके बारे में राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद् पटनाके कार्यों, उदयपुरके 'राजस्थान विद्यापीठ' की शोध पत्रिका एवं तत्सम्बन्धी प्रकाशनों आदि बहुत से विषयोंकी चर्चा छूट गई है। फिर भी लेखकने परिश्रमके साथ लोक गीतोंका सार तत्व प्रदर्शित किया है जो प्रत्येक पाठकका पठनीय है।

—सम्पादक]

इस समय लोकगीतोंका संग्रह करना, उनकी व्याख्या करना, उनका मौलिक संदेश समझना और उन्हें समाजकी उन्नति और विकासके आधारके रूपमें प्रयुक्त करना अत्यावश्यक हो गया है। सच यह है कि हमें स्वयं अपनेको खोजना है। यह खोज कोई साधारण खोज न होगी। जो तथ्य और तत्व विस्मृतिकी अनेक पर्तोंमें दब गये हैं, जो भाव-धारायें विदेशी संस्कृतिके जलते सिकताकणों के नीचे खोसी गयी हैं, जो लोग अपनी परम्पराओं, विकास-क्रम और इतिहास को भूल-से गये हैं, जिस जाति का आत्म-विश्वास तक डिग गया है, उसे उसके पुरानी निधियों के प्रति जागरूक बनना, उसे इतना समर्थ बना देना कि वह अपने पुरखों की कृतियों और रचनाओं का पुनर्मूल्यांकन कर सकें। उन भाव-धाराओं को फिर से चमका देना। जो कभी हमारी जाति को जीवित और गतिशील बनाये हुये थीं, उन तथ्यों और तत्वों को फिर से उभार कर ऊपर लाना जो हमारे सांस्कृतिक जीवन का मूल आधार थी; आसान काम नहीं है। इस क्षेत्र में खोज और शोध का कार्य करने वालोंके मार्गमें अनेक कठिनाइयां आती हैं। उनकी सहायता कोई नहीं करता। विदेशोंमें अनेक सभायें और समितियाँ ऐसी हैं—जो इस विषय पर काम करने वालों को नाना प्रकार की सहायता और सुविधायें देती रहती हैं। हमारे देश में ऐसा कुछ नहीं है। हमारे विश्वविद्यालयोंमें इस विषय पर खोज कार्य हो रहा है। पिछले दस वर्षों में इस विषयकी ओर सबका ध्यान अधिकाधिक आकृष्ट हुआ है। परन्तु विश्व-विद्यालयोंमें भी छात्रोंकी एक विषयमें दक्षताकी ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। वहां यह प्रयास नहीं किया जाता कि जो छात्र इस विषय पर काम करना चाहते हैं उनमें ज्ञानपिपासा को तृप्त करनेकी इच्छा के साथ-साथ श्रद्धा, स्नेह, सहानुभूति और व्यापक दृष्टि भी पैदा हो। वे कोरे विद्वान हो जाते हैं, सजग, सक्रिय कार्यकर्त्ता अथवा उदार चेता विचारक—नहीं हो पाते, उनमें न वह उदारता आ पाती है कि वे समस्त बाधाओं और सीमाओं को तोड़ सकें। न वह विचारशीलता आ पाती है कि वे उन तहों और पर्तों को सही रूपमें उतार

सकें। अलग कर सकें । जो इन गीतोंके विकास-क्रमको ढंके हुये हैं । इसका परिणाम यह होता है कि इस महत्वपूर्ण कार्यमें उनका उतना अधिक सहयोग नहीं मिलता जितने अधिक सहयोगकी अपेक्षा उनसे की जाती है। हमारी राष्ट्रीय सरकारने इस ओर ध्यान दिया है। परन्तु उसके कर्मचारी इस कार्यमें आगे बढ़नेकी मनोवृत्तिका परिचय नहीं देते। वे तो हर अन्य कार्य अथवा योजनाकी भांति इस कार्यमें भी सफलताका सस्ता नुस्खा चाहते हैं। मगर इस क्षेत्रमें सफलता पाना इतना सहज नहीं है। हमें दुःख है कि इस अवसर पर जबकि सारे राष्ट्रकी प्रतिभायें लगकर समाजके अभ्युत्थान सम्बन्धी कार्यों तथा योजनाओंको सफल बनाना चाहती हैं, इन लोक गीतोंके संग्रह, व्याख्या, स्वरलिपियोंकी सुरक्षा आदिके बारेमें कोई सुनियोजित कार्य नहीं हो रहा है। ऐसा क्यों है? इन लोकगीतोंकी इतनी उपेक्षा क्यों हो रही है?

कारण स्पष्ट है। इस समयका अधिकारी तथा शिक्षक वर्ग और हमारे नेतागण सभी को ऐसी शिक्षा मिली है— जिसमें लोकगीतों और लोक साहित्यके लिये कोई स्थान न था। लोकगीतोंको "बुढ़ियों का बेसुरा राग" और लोक साहित्योंको "नानीकी कहानी" से अधिक महत्त्व देना इनके बसकी बात नहीं। हमारा बुद्धिजीविवर्ग दो प्रकार की मानसिक-गुलामीसे संत्रस्त रहा है। या तो वह यह समझता रहा कि जो कुछ उच्च और महान है वह सब पाश्चात्य साहित्यमें है। अथवा फिर जो कुछ महत्वपूर्ण गौरव है वह संस्कृत साहित्य या अन्य शिष्ट साहित्यमें ही है। लोक साहित्य और लोकगीतोंको वे अपढ़, असंस्कृत, अशिष्ट, लोगोंकी कुघड़, चटपटी, ज्ञानविहीन तथा कल्पनाशून्य, कलाहीन रचनाओं से अधिक महत्वपूर्ण नहीं मानते। इसीलिए आज जब सांस्कृतिक उत्सवों पर हम लोकगीतों, लोकनृत्यों आदिको सुनते देखते हैं तो हमें कुतूहल अधिक होता है। हमें ये चीजें कुछ विचित्र सी लगती हैं, मजेदार मालूम होती हैं। इनसे हमारा पर्याप्त मात्रामें मनोरंजन होता है परन्तु हम इनसे प्रेरणा ग्रहण नहीं करते। हम इनसे कुछ लेते नहीं, सीखते नहीं, हम इस साहित्य-सरिता में अवगाहन कर अपने तन-मनको अधिकाधिक स्वस्थ और पवित्र नहीं बना पाते। यह स्थिति लज्जास्पद है। इसमें सन्देह नहीं।

अमेरिका, जर्मनी, इंगलैंड, फ्रान्स और सोवियट रूस में इस सम्बन्धमें सबसे अधिक काम हो रहा है। लगभग १०० वर्ष पहिले जब पाश्चात्य देशोंमें इस सम्बन्धमें खोज शोध-कार्य आरम्भ हुआ तो वहांके साहित्यकारों और विद्वानोंने लोकगीतों और लोक साहित्यके प्रति वही अरुचि और उदासीनता प्रकट की जो आज हिन्दी के शिष्ट साहित्यके प्रति दिखा रहे हैं। परन्तु उदासीनता उपेक्षाकी परम्परा अधिक दिनों तक चल न सकेगी। जिस तरह बिना धरती से जीवन-रस प्राप्त किये कोई भी पौधा फल-फूल नहीं सकता। उसी प्रकार लोकसाहित्यसे और लोकगीतों से सीधा सम्बन्ध स्थापित किये बिना, उससे शक्ति और प्रेरणा प्राप्त किये बिना, कोई भी शिष्ट साहित्य टिकाऊ, शाश्वत अथवा अमर नहीं हो सकता। तुलसीकृत रामायण ही इसके प्रमाण-स्वरूप है।

जहांतक लोकवार्ता, लोकगीतों और लोकसाहित्यका सम्बन्ध है। कर्नल टाडने राजस्थान का इतिहास लिखते समय वहाँकी लोकवार्ताओंको भी संगृहीत किया। श्री आरसी टेम्पलने अपनी पुस्तक "लीजेन्ड्स आफ दी पंजाब" की भूमिका में बताया है कि टाडकी पुस्तक के बाद के पचास वर्षकी अवधि में "स्लावोंके गीतों और लोक वार्त्ताओंका बहुत अनुलेखन लेखकोंके बाद लेखकों ने कर डाला है। रूसी, पोली, श्वेत, क्रोशीय, सर्वी, मेरावी, वेंडी, रूथेनी तथा अन्य बोलियों पर पूरा-पूरा काम हुआ है। भारत में, किम्बहुना जहांके शासक अपनी उच्च बुद्धि पर, अपने भेजे हुये प्रतिनिधियोंकी ऊंची शिक्षा पर तथा शासकके उच्चलक्ष्यों पर गर्व करते हैं, वहां कार्य अभी आरम्भ ही हुआ है।

टैम्पल महोदयने यह बात ठीक ही कही थी। सन् १८८४ तक विदेशोंमें इस सम्बन्धमें जितना काम हुआ था उतने काम का एक अंश भी हमारे देशमें तब तक नहीं हो पाया था। सन् १८६६ में टैम्पल महोदयके उद्योग से रेवरेन्ड एस० हिस्लपके लेखों का प्रकाशन हुआ। इन लेखोंका सम्बन्ध मध्यप्रदेश तथा मध्य भारतके आदिवासियोंसे था। १८६३ ई० में मिस फ्रेयेरकी कहानियोंका एक संग्रह "ओल्डडेकन डेज" के नाम से निकला।

सन् १८७१ में डाल्टन महोदयने "डिस्क्रिपटिव एथनालीजी आफ बंगाल" प्रकाशित किया। उसी समय "इन्डियन ऐन्टीक्वेरी" में बंगालकी लोक-कथाओंका प्रकाशन डैमन्ड महोदय ने आरम्भ किया। सन् १८८३ में रेवरेन्ड लाल-विहारी देकी पुस्तक "फोक टेल्स आफ बंगाल" प्रकाशित हुई। सन् १८८४ ई०में टेम्पल महोदयकी "लीजेन्ड्स आव दी पंजाब" तीन भागोंमें प्रकाशित हुई। सन् १८८५ ई० में श्रीमती एफ० ए० स्टोरीज नामसे कहानियोंका संग्रह प्रकाशित किया गया। "फोक्लोर इन सदर्न इण्डिया" के नामसे श्री नरेश शास्त्रीकी कहानियों का संग्रह प्रकाशित हुआ। सन् १८६० ई०में श्री डब्लयू कुक ने "नार्थ इंडियन नोट्स एन्डक्वैरीज" नाम का पत्र प्रकाशित किया था। थोड़े दिनों बाद कैम्बल तथा नोलीज महोदयने संयुक्त रूपसे संथालों और काश्मीरकी कहानियोंका संग्रह करना शुरू किया। श्री आर० सी० मुकर्जी की "इन्डियन फोकलोर" श्रीमती डूकोर्ट, "शिमला विलेज टेल्स" रेवरेन्ड सी० स्वीनर्टन की "रोमान्टिक टेल्स फ्राम पंजाब" आदि से लोकवार्ताओं सम्बन्धी पर्याप्त महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुई। सन् १६०६ में श्री जी० एच० बोम्पस ने रेवरेन्ड ओ० बौन्डिग द्वारा संकलित संथाली कहानियों का अनुवाद प्रकाशित कराया। श्री एम० कुन्तलकी "बंगाली हाउस होल्ड टेल्स", सुश्री शोभना देवीकी "ओरियन्ट पर्ल्स" पुस्तकें प्रकाशित हुईं। श्री पार्थरका विलेज फोक्टेल्स आफ सीलोन" तीन भागों में प्रकाशित हुआ। "कथासरित्सागर" का अनुवाद टानी महोदयने किया और इसका सम्पादन पेंजर महोदयने किया "कथा सरित्सागर" के सम्बन्धमें इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि इसका स्थान लोक वार्ता में अत्यन्त महत्वपूर्ण और उच्च है।

इनके अतिरिक्त सर्वश्री विनयकुमार सरकार, शरतचन्द्र राय, ग्रिगसन, रामस्तामीराजू, जी० आर० सुब्रह्मण्य पुंतुल, आदि कोड़ियों शोधकों और विद्वानोंने इस क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य्य किया है। मारिस बूमफिल्ड, नार्मन ब्राउन, रूथार्टन, एम० बी० ऐमेन्यू जैसे अमेरिकन और शोखोलब जैसे रूसी विद्वानोंने लोक-साहित्यके अध्ययनमें मार्ग-प्रदर्शन किया है। प्रसन्नता की बात है कि हमारे विश्वविद्यालयोंमें लोकसाहित्यसे रुचि रखने वाले छात्रोंको इन महत्वपूर्ण पुस्तकोंसे पूरी सहायता मिल रही है।

ऊपर हमने जिन पुस्तकोंकी चर्चा की है वे सब अंग्रेजीमें हैं। सच यह है कि भारतकी विभिन्न गीतों और भाषाओंमें लोकवार्ता, एवं लोक साहित्यके सम्बन्ध में जो चेतना उत्पन्न हुई और जो जागृति आयी वह इन्हीं कृतियोंके कारण थी। देशी भाषाओंमें जो पुस्तकें—प्रकाशित हुई उनमें कुछ ये हैं—(१) आचार्य क्षितिमोहन सेन "दारामणि" (बंगला) (२) मैननसिंह "गीतिका" (बंगला) आदि। हिन्दीमें श्रीमन्नन द्विवेदीने सर्वप्रथम "सरवरिया" नामकी पुस्तक प्रकाशितकी। लाला संतराम ने "सरस्वती" में पंजाबी लोकगीत प्रकाशित कराये। पं० रामनरेश त्रिपाठीने इस सम्बन्धमें जो परिश्रम और प्रयास किया उससे सारा हिन्दीसमाज परिचित है। उनका "ग्राम गीत" अमर हो चुका है। श्री सूर्यकरणजी पारीक, श्रीकन्हैयालाल 'सहल' श्रीदेवेन्द्र सत्यार्थी श्री रामइकबालसिंह "राकेश", श्री नरोत्तम स्वामी, ठाकुर रामसिंह, श्री कृष्णानन्दजी गुप्त, श्री श्यामचरण दुबे, श्री शिवसहाय चतुर्वेदी आदि लोकवार्ता और लोकगीतोंके प्रेमियों और विद्वानोंने जो सत्प्रयास किये; उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी होगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दुस्तानी अकेडमी, "भोजपुरी" "राजस्थान", "लोकवार्ता" आदि पत्रिकाओं और अनेक विद्वानोंने इस क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण कार्य्य किया है। व्रज साहित्यमें व्रज-साहित्यमंडल" ने सामूहिक उद्योग करके इस दिशामें महत्वपूर्ण कार्य्य किया है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० उदयनारायण तिवारी, आदि विद्वानोंने अपने अध्ययन और मार्ग प्रदर्शनसे न जाने कितने छात्रों और स्नातकों को उत्साहित करके उन्हें इस महत्वपूर्ण कार्य्यमें लगाया है। इन आचार्योंकी कृपासे अब लोक-साहित्यका अध्ययन सम्पूर्णतः वैज्ञानिक होता जा रहा है। यह अत्यन्त शुभ

बात है। अब तक जो इस क्षेत्रमें कार्य्य हो चुका है। हम उसके लिए कृतज्ञ हैं। और इस समय विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा जो प्रयास किये जा रहे हैं; हम उनका अभिनन्दन करते हैं; परन्तु जैसा कि हमने बार-बार कहा है—अभी तो इस विशद, विशाल कार्य्यका श्रीगणेश भर हुआ है। हमारे भीतर अभी वह सहानुभूति और उदारता भी पूरी तरह अंकुरित नहीं हो पायी है। जो लोकसाहित्य तथा लोकगीतोंकी पहली शर्त है :—

अथर्ववेद के मंत्र हैं:—

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या
यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत्
सा नो भूमिर्गोस्वप्यन्ने दधातु॥
यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे
यस्यां देवा असुरानभ्यवर्त्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा
भगं वर्चः पृथिवी नोदयातु।
यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तष्ठन्ति विश्वहा।
पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छा वदामसि॥

"हमारे प्यारे देशकी चार दिशायें हैं, चारों दिशाओं में कृषि कर्म किया जाता है। यह कृषि कर्म अनेक प्रकार से इस देशमें प्राणियोंकी रक्षा करता है। हमारी यह मातृ-भूमि हमको उत्तमोत्तम पशुओं तथा अन्नकी समृद्धिसे युक्त करे। जिस पवित्र देश में उत्पन्न होकर हमारे पूर्वजोंने अद्भुत कार्य किये। जहां देवताओंने असुरोंको पराजित किया। जहां विविध प्रकारकी गौ, अश्व एवं पक्षी उत्पन्न होते हैं। वह हमारी विविध प्रकारकी गौ, अश्व एवं पक्षी उत्पन्न होते हैं। वह हमारी प्यारी जन्मभूमि हमें ऐश्वर्य एवं तेज प्रदान करे"।

इन मन्त्रों में जो कुछ कहा गया है वह हमारे लोकगीतोंका मूल संदेश है। वेदोंके युगसे आज तक जो यह भावधारा चली आयी है उसको लोकगीतोंमें ही प्रश्रय मिला है।

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलालम् उपहूती गृहेषु नः।
उपहूता भूरिधनाः सखायः स्वादु सन्मुदः।
अरिष्टाः सर्व पुरुषा गृहा नः सन्तु सर्वदा॥

"हमारे इन प्यारे गृहोंमें दूध देने वाली गायें हैं। भेड और बकरियां भी हैं। अन्न को अमृत तुल्य सुस्वादु बनाने वाले विविध पदार्थ हैं, प्रचुर धन वाले मित्र हमारे इन्हीं गृहोंमें आते रहते हैं। वे हंसी-खुशीके साथ हमारे संग स्वादिष्ट भोजन करते हैं। हमारे गृहों! तुम्हारे अन्दर रहने वाले समस्त प्राणी (पशु-पक्षी भी) नीरोग और अक्षीण रहें और उनका किसी प्रकारसे भी ह्रास नहीं हो।"

इस उदाहरणमें जो कुछ कहा गया है उसमें आजकी कामना भी निहित है। आज हमारा देश विपन्न है—

अथवा—

अयं पटो मे पितुरङ्ग भूषणं
पितामहाद्यै रुपभुक्तयौवनः।
अलंकरिष्यत्यथ पुत्र पौत्रकान्,
मयाऽधुना पुष्प वदेव धार्यते।

"यह वस्त्र मेरे पिताके शरीरका भूषण रहा है। जब नया था तो मेरे पितामहने इसका उपयोग किया था। अब वह मेरे पुत्र और पौत्रोंको अलंकृत करेगा। मैं इसे फूलकी तरह ही सम्भाल कर रखता हूं"।

हमें यह स्थिति बदलनी है। और अपने देश को धन-धान्यसे पूर्ण और अपने समाजको सुखी और समृद्ध बनाना है। हमें ऐसी स्थिति ला देनी है जिसमें वैदिक युगके वे सपने पूरे हो सकें। जिन्हें अपने तत्व-ज्ञान द्वारा हमारे ऋषियोंने देखा था और जो आज भी अधूरे हैं। इस विजय—अभियानमें हमारे लोकगीतोंका स्थान और सहयोग महत्वपूर्ण होगा। इसलिए हमें अपने लोकगीतोंका अध्ययन और उनकी व्याख्या अधिक सहानुभूति उदारता और जागृत राष्ट्रीय चेतनाके सहारे करनी होगी। स्वतंत्रताप्राप्तिके बाद हमारी सांस्कृतिक चेतना जिस द्रुत-गति से बढ़ी है और पश्चिमी सभ्यताका घटाटोप जिस तीव्रताके साथ छिन्न-भिन्न हुआ है और अब भी होता जा रहा है उसे देखकर हमारा आत्म-विश्वास बढ़ता है और अपने भविष्यके प्रति हम नित्यप्रति अधिकाधिक आश्वस्त

ज्योतिश्शास्त्रमें समयकी महत्ता

[लेखक—श्री हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

[ज्योति-शास्त्रका दूसरा नाम काल-विज्ञान-शास्त्र है, इसमें घटी, पल, विपल, अनुपल आदिका भी सूक्ष्मतम विचार किया गया है। थोड़े से समयके फेरसे ही लग्न, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश, षष्ट्यंश आदि में महान् अन्तर हो जाता है जिसके फलस्वरूप फलितमें भी विपर्यय होनेकी पूर्ण सम्भावना रहती है। इसी समयकी सूक्ष्मता पर दैवज्ञ समाजमें बहुत सी जन श्रुतियाँ प्रचलित हैं। नहीं कहा जा सकता इनमें सत्यांश कितना है, तथापि ज्योतिश्शास्त्रमें समयका सूक्ष्म विवेचन तो निर्विवाद निर्णीत है ही—तिस पर भी यदि किसीका जन्म संधि गत लग्नमें हुआ हो तो और भी कठिनाई हो जाती है—ऐसे समयमें थोड़ेसे समयका विपर्यय भी काफी महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुत घटना-चित्र-चित्रणमें वयोवृद्ध विद्वान् लेखक महानुभावने एक ऐसी ही सर्व विश्रुत जन श्रुतिको चित्रित करनेका प्रयास किया है। यह किम्वदन्ती अनेक प्रकार से अनेक ज्योतिर्विदोंके नामसे प्रचलित है—अतः इसकी सत्यता एवं ऐतिहासिकता तो संदिग्ध है किंतु इसे पढ़कर समयके महत्वकी ओर पाठकोंका ध्यान अवश्य आकर्षित हो सकेगा इस आशासे इसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक]

ज्योतिष शास्त्रकी गति अगाध है। इस शास्त्रके रहस्योंको हृदयंगम करना साधारण कार्य नहीं है तथापि निरन्तर परिश्रम तथा अनुभूतियोंके बलसे इस शास्त्र पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। अन्धकारमें भटकने वाले पथिकको ठोकरोंसे सुरक्षित होनेके लिये, अपनी ज्योति (प्रकाश) की उज्ज्वल किरणोंका जाल बिछा कर, स्पष्टतया मार्गको दर्शानेका एक मात्र साधन "ज्योतिष शास्त्र" ही है, इसीलिये ही, इसको "प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्" कह कर समस्त शास्त्रोंकी अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया है।

होते जाते हैं। हमारे लोक-गीत लोक-जीवनके सारे तत्वों को उभारने वाले, उन पर प्रकाश डालने वाले, सीधे सादे सच्ची भावनाओंको प्रकट करने वाले गीत हैं। लोकगीत पुरातत्व सम्बन्धी अन्य विषयोंकी भांति ऐसी वस्तु नहीं हैं जिनका अध्ययन लोक-जीवनसे अलग रहकर बन्द कमरे में बैठकर किया जा सके। इनको समझने, इनका मूल्य पहचानने, इसकी सही व्याख्या करवानेके लिये हमें वहां जाना पड़ेगा, उस लोक में जाना पड़ेगा जहां अग्निदेवता जानेसे इंकार करते हैं। हमें वहीं पूरी श्रद्धा, आस्था और पूरे विश्वास के साथ जाना पड़ेगा, क्योंकि हम वहीं उन गीतोंमें रमकर, उसके मूल तक पहुँचकर ही वह हीरा पा सकेंगे जो युग-युग से हमारे समाजको ज्योति देता आया है। और आगे भी देता रहेगा। यह सही है कि इस क्षेत्रमें काम करने वाले समर्थ विद्वानोंने अबतक पर्याप्त प्रयास किया है और उनका प्रयास बहुत अंशों तक सफल भी हुआ है। परन्तु संतोष करके बैठे रहनेका समय अभी नहीं आया है। हमारे गांवोंमें अभी अगणित बहुमूल्य लोकगीत भरे पड़े हैं। उनका संग्रह अधिक तेजी और चुस्तीके साथ होते जाना चाहिये। यदि हमारे ये गीत हमारी सुस्तीके कारण खो गये, धूलमें मिल गये, गलेसे उतर गये, तो हम अपराधी ठहराये जायेंगे। साथ ही लोकगीतोंका सही और वैज्ञानिक अध्ययन भी होते जाना चाहिये। हमारे यहाँ संग्रहका काम तो थोड़ा हुआ है। गीतोंके भावार्थ या शब्दार्थ भी दिये गये हैं। परन्तु उनका सही मूल्यांकन अभी तक पूरी तौरसे नहीं हो पाया है। क्योंकि उनकी सामाजिक व्याख्या पूरी तरह अभी नहीं हो सकी है। अब इस कार्यमें देर नहीं होनी चाहिये। क्योंकि हमें यथाशीघ्र "जाति, वर्ण, संस्कृति, समाजसे आगे चलकर मूल मनुज को फिरसे खोजना है।

इस प्रत्यक्ष शास्त्रमें निष्णात अनेकों आचार्य उत्पन्न हुए हैं। परन्तु त्रिस्कन्धात्मक ज्योतिष शास्त्रमें फलितकी महत्ताके निर्देशक श्री वराहमिहिराचार्यका नाम सर्वोपरि है। उन्हींके सम्बंधमें एक विलक्षण घटना लिपिबद्ध की जाती है।

ज्योतिष शास्त्रके पारंगत, श्रीवराह मिहिराचार्यके घर में, जिस समय पृथुयशका जन्म होना था, उस समय उन्होंने अपनी बहनसे कहा, कि जिस समय बालकका जन्म हो, उसी समय एक गेन्दको नाली द्वारा बाहर फैंक देना, तब मैं शिशुका जन्म समय निश्चित कर इसके जीवनकाल के सम्बन्धमें पूर्णतया विवेचन कर लूंगा।

इधर प्रसूति-समय समीप ही था। एक-एक करके प्रतीक्षा के अनन्त पल बीते ही जा रहे थे कि क्षणिक वेदनाके अन्तर्गत बालकका जन्म हो गया। उधर बहनने आचार्यजीको संकेत पहुंचानेके लिये, गेन्दको नालीकी ओर तीन बार फैंका, परन्तु वह गेन्द तीनों बार ही नालीसे बाहर न निकल सकी, अपितु, दीवारसे टकरा कर बाहर वापिस लौटती रही। ऐसी स्थिति में बहन अत्यन्त उतावली हो गई और उपरिभवनसे निकल कर सीढ़ियों द्वारा नीचेकी ओर जाने लगी। किन्तु शीघ्रतासे नीचेकी ओर भागती हुईका एक नूपुर पांवसे विलग हो गया। परन्तु वह अपनी गति में शिथिलता न करती हुई, नीचे की सीढ़ियोंसे पुनः ऊपरको आई और नूपुरको उठाकर, पांवमें पहन कर झट पट नीचे भाईके पास गई और बालकके जन्मका समाचार दिया। तब आचार्यजीने गणना करके लग्नादिकी स्थापना की। परन्तु कालान्तरमें इष्ट लग्न नवांशादि सब कुछ बदल चुका था; जिस कुण्डली द्वारा आचार्यजीको विचार करना था। पर्याप्त समय तक आचार्य जीने कुण्डलीके सम्बन्धमें विचार-विमर्श करके निश्चय किया, कि अमुक लग्नके अनुसार बालकका दुराचारी, व्यसनी, निर्धन, विलासप्रिय, तस्कर, नीच प्रकृति तथा कुलघातक होना अवश्यंभावी है। जो कि मेरे वंशके उज्ज्वल गुणोंके सर्वथा विपरीत है। अतः ऐसे पुत्र का मुख तक भी देखना उचित नहीं। यह सोचकर क्रोधावेशमें होकर उन्होंने घरको तिलाञ्जलि दे दी और उज्जयिनी नगरीकी ओर चल दिये।

उधर वह बालक धीरे-धीरे चन्द्रमाकी भांति उत्तरोत्तर घरमें पनपने लगा माता पिताके संस्कारोंका फल सन्तान पर अवश्य पड़ता है। पांच वर्षकी अवस्थामें ही बालकक सूझ बूझमें अलौकिकता टपकने लगी। कुछ ही समयमें विदुषी माताने अपने प्रिय पुत्रके हृदय-सिन्धुमें विद्वत्ता पूर्ण भाव भर दिये। वर्ष व्यतीत होते देर नहीं लगती। जब बालक उन्नीसवें वर्ष तक पहुंच चुका, और ज्योतिषशास्त्र में निष्णात हो चुका तब एक बार उस बालकने माताजीसे, अपने पिता जीके, घरसे निकलनेके सम्बन्धमें पूछा, तो माताने समस्त समाचार कह सुनाया। माता द्वारा अपने जन्मके इष्ट काल बतलाए जाने पर, श्री पृथुयशने, गेन्द तथा सीढ़ियों द्वारा प्राप्त हुए विलम्ब के समयको काट कर इष्ट लग्न नवांशादिको निश्चित करके जब विचारविमर्श किया, तो पता लगा कि इस कुण्डली वाला मानव, प्रतिष्ठित, गुणी, धनञ्जय, जनवल्लभ, राजमान्य, सर्वगुणसम्पन्न तथा अद्वितीय दैवज्ञ होना चाहिये। इसके अतिरिक्त एक ऐसा भी योग मिला कि जब पिता पुत्रका परस्पर मिलाप हो, उससे पांचवें दिन पिताको एक लाख मुद्राएं राजाकी ओरसे प्राप्त हों। परन्तु उक्त योगका दशाकाल बीस वर्षकी अवस्थामें होगा। समय ने पलटा खाया। पण्डित पृथुयश बीस वर्षका एक नवयुवक बनने लगा। कुछ दिन बीते, उसके हृदय-सागरमें देशाटनकी अनेकों भावतरंगें लहराने लगीं। एक दिन उन्होंने अपने मनका संकल्प माताजीके चरणोंमें स्वीकृतिके लिये सौंप ही दिया। माताजीने भी पुत्रके उत्साह विटपकी विकसित होने वाली भाव कलिकाओंके लिये सफलताका वरदान दे दिया। फिर क्या था, नवयुवकने शुभ मुहूर्त देख कर माता जीसे आज्ञा पा घरसे प्रस्थान किया। चलते चलते कुछ ही दिनोंमें वह उस स्थान पर जा पहुँचा, जहां पर कि सर्वसाधारणका पहुँचना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था। क्योंकि वह एक ऐसा असाधारण स्थान था, जिसके चारों ही ओर एक विशाल खाई खुदी हुई थी, जो जलसे भरपूर थी। उस परिखाके भीतरी ओर एक विशाल चतुर्मुखी प्राचीर थी। जिसके अन्तर्गत एक अनुपम नगर बसा हुआ था, उस नगरकी रमणीयता देखते ही बनती थी। उसका सौंदर्य मानों सुरलोकको भी पराजित कर रहा था। सड़कों तथा रत्नजटित राजभवनका दृश्य तो आंखोंसे ओझल होने पर भी स्मृतिपथसे विलग नहीं होने पाता था। राजभवनके बाहर द्वार पर प्रतिहारी नियुक्त थे। ऐसी नगरीकी समता संसार भरमें भी कोई स्थान नहीं कर

सकता था। यह थी उज्जयिनी नगरी; जिसके नवरत्नोंकी गणनासे आज भी इतिहासके पृष्ठ स्वर्णाङ्कित हैं। नवयुवक, द्वारपालसे मिला और उसने महाराजसे मिलनेकी प्रार्थना की, द्वारपालने उसके नाम धाम तथा रूप रेखाको भली भांति जानकर महाराज विक्रमादित्यके आगे सब कुछ निवेदन कर दिया। महाराजने उसे राजसभामें प्रविष्ट होने आज्ञा दी।

महाराज विक्रमादित्यकी सभामें बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वान् विद्यमान न थे। जिनमें एक विश्वविख्यात राजज्योतिषी श्री वराह मिहिराचार्य जी भी थे। इनका वास्तविक जन्म स्थान मधुपुरी था और ये कुछ वर्ष पूर्व ही यहां राज पण्डित नियत हुए थे। ये उन दिनों यथासमय ज्योतिष संबन्धी अनेकों चमत्कारोंसे सभासदोंको आश्चर्य चकित किया करते, तथा महाराजकी ओरसे मान संमान प्राप्त करते रहते थे। उनका पर्याप्त समय इसी प्रकार ही यापन होता गया। इनकी भविष्यवाणी सदा पत्थरकी लकीर बन कर रहा करती थी। परन्तु न जाने उस दिन क्योंकर सूर्यग्रास दिखाई देने लगा।

महाराज विक्रमादित्यकी सभामें उस दिन श्री आचार्य जीने भविष्यवाणी की कि आगामी भाद्रपद शुक्लपक्ष पूर्णिमाको उज्जयिनीमें महाकालेश्वर मन्दिरसे दो हजार हाथकी दूरी पर ईशान कोणमें मध्याह्नके पश्चात् सात घड़ी पांच पल (२ बजकर ५० मिनट) पर एक विशाल काय मत्स्य का पतन होगा। जनतामें उस समय बड़ा कौतूहल था। जनसमुदाय महाकालेश्वर मन्दिरके ईशान कोणकी ओर उमड़ पड़ा। सैनिक तथा राजकर्मचारी यथास्थान स्थित थे। महाराज तथा उनके सभासदोंके कैम्प लगे हुए थे। ठीक समय पर महाराज शिविरमें जानेकी प्रतीक्षामें ही थे, कि बहिर्द्वारकी ओर गया हुआ द्वारपाल उक्त नवयुवकको अपने साथ महाराजके पास ले आया। यह रेशमी पीताम्बर ओढ़े हुए था। कानोंमें स्वर्णिम कुण्डल और विशाल ललाट पर रक्त चन्दनका तिलक, उसके गौर मुख मण्डलको प्रातःकालीन सूर्यकी आभा प्रदान कर रहा था। महाराजने स्वागत करते हुए पं० पृथुयशको अपने पुराने राजज्योतिषीजी के पास बैठनेका संकेत किया। संकेत प्राप्त करते ही पं० पृथुयश सभ्यतापूर्वक दूसरोंसे वार्तालाप करने लगे। सभासदोंसे प्रश्न किये जाने पर यथोचित उत्तर देने तथा मौन मुद्रा साध लेते। ऐसी स्थिति देखकर लोगोंको आश्चर्य हुआ, कि युवककी आकृति हमारे राजज्योतिषीजीसे मिलती जुलती है, परन्तु इनका पूर्वकालीन परिचय प्रतीत नहीं हो रहा है। वे सभ्य जन अभी कुछ सोच ही रहे थे कि पं० पृथुयशने कहा महाराज! आपके राजज्योतिषीजी ने यहां मछलीके गिरनेकी जो भविष्यवाणी की है वह वहाँ न गिर सकेगी। अपितु वहाँसे चार हाथ पश्चिम दिशाकी ओर तीन पल पश्चात् गिर सकेगी। अभी थोड़ी ही देरमें देख लीजियेगा। नभ मण्डलमें काली घटाएँ कुछ ही क्षण में उमड़ती हुई दीख पड़ने लगीं। धीरे धीरे धीमी-धीमी बूंदे टपकने लगीं, लोग शिविरोंमें बैठे हुए घटी यन्त्रोंको अतीव उत्कण्ठाके साथ देख रहे थे। धीरे २ धीमी २ बूंदे मूसलाधार वर्षाके रूपमें बदलने लगीं। पुनः क्या था, पाँचवां पल बीतने के साथ ही निर्दिष्ट स्थानसे ठीक सामनेकी ओर कुछ बूंदें और तेज हुई। किन्तु मत्स्यपतन न हुआ। राज ज्योतिषी के पांव तले मिट्टी निकलने लगी। जनतामें कोलाहलकी ध्वनि गूंजने लगी। पर महाराज विक्रमादित्यके आदेशसे शीघ्र ही शान्तिका साम्राज्य छा गया। तीन पल (१ मिनट १२ सैकेन्ड) के अनन्तर देखा गया, कि राज ज्योतिषीजी के बतलाए गये स्थानसे चार हाथ पश्चिम दिशाकी ओर एक बड़ी मछलीका पतन हो गया है। तत्काल ही युवक की जयकारोंकी ध्वनि नभ मण्डलमें सुनाई देने लगी। वहीं पर शंख भेरी आदिके नाद भी देव समाजकी प्रसन्नता के ताल स्वरका उच्चरण कर रहे थे।

महाराजने तत्कालीन दृश्यको देखते हुए कहा, युवक! दैवज्ञ पृथुयश! आजसे आप हमारे द्वितीय राजज्योतिषी होंगे।

रात्रिके ग्यारह बज रहे थे। युवक ज्योतिषी पृथुयश स्वाध्याय समाप्त कर अभी शयनकक्षमें गये ही थे। कि किसीने आकर बाहरसे द्वार खटखटाया। किवाड़ खोलकर पृथुयशने देखा, कि राजज्योतिषीजी बाहर विराजमान हैं। श्रद्धा तथा भक्तिके साथ उन्हें शयनकक्षमें ले जाकर पं० पृथुयशने बैठनेके लिये आसन दिया, और स्वयं दूसरे आसन पर जा बैठे। उन्होंने कहा, सेवक इस कृपाके लिये कृतज्ञ है।

श्रीवराह मिहिराचार्यजीने कहा, मैंने सुना है कि आप मधुपुरीसे आए हैं। मैं भी वहांका ही निवासी हूं।

आपकी शिष्टता तथा अध्ययन तथा गंभीरतासे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। पं० पृथुयश ने कहा, यह आपकी सराहना है कि मुझ जैसे तुच्छ जीवको गौरव प्रदान कर रहे हैं।

श्री वराह मिहिरने उत्तर दिया कि—आपकी विनयशीलता और शिष्टता अतुलनीय है। मैं अपने अन्तःकरण की एक बात कहता हूँ आशा है आप अवश्य उत्तर देंगे। बतलाइये मेरा गणित त्रुटिपूर्ण क्यों हुआ ?

श्री पृथुयशने कहा—आप अपना गणित पुनः स्पष्ट करें।

श्री वराह मिहिरने बतलाया—सुनिये, मकर लग्नमें कर्क नवांशके ठीक मध्यमें जब चन्द्रमा आ जावे तथा भौम और शनिकी उस पर पूर्ण दृष्टि पड़े तो आकाशसे किसी जलचरका पतन होता है। यह योग महाकालेश्वर मन्दिर से पूर्वोक्त दूरीके अक्षांश देशान्तर पर ही था। इसी कारण कारण मैंने मत्स्य पतनकी घोषणा की थी। मैं गणितको बार २ संशोधित करके भी कोई अशुद्धि नहीं अनुभव कर रहा हूं।

श्री पृथुयशने उत्तर दिया—मेरा भी यही सिद्धान्त है। अपराध क्षमा हो। परन्तु इस घटनामें यह प्रमाद हुआ है कि आपने गगन मण्डलसे मत्स्यके पतनका समय तो ले लिया, परन्तु उसके पृथ्वी तक पहुंचनेमें जो समय व्यतीत हुआ तथा नक्षत्रोंके चलने और वातावरणसे जो उसमें विपर्यय हुआ उसकी ओर तनिक मात्र भी ध्यान नहीं दिया। मैंने भूमि पर मत्स्य-पतनकालकी गणना की जिससे मत्स्यके पृथ्वी पर गिरनेके समय एवं स्थानका शुद्ध निर्देश करनेमें सफल हो सका हूं। तब श्री वराहमिहिराचार्यजी नयन मूंद कर काफी समय तक ध्यानमग्न रहे। पुनः नेत्र खोलकर कहने लगे आपकी बात ठीक है। मैं अपनी त्रुटिको स्वीकार करता हूँ।

इसके अनन्तर पं० पृथुयशने, तत्कालीन प्रश्न लग्न को स्थापित कर पत्नी को कुलटा समझकर, इकलौते पुत्र को छोड़ घरसे निकलनेकी घटना का दृश्य ज्यों ही श्री आचार्यजीके सामने रखा, त्यों ही वे विस्मित दृगोंसे उसकी ओर आह भरते हुए देखने लगे और कहने लगे। हां ! क्या यह मेरी भूल थी ?

श्री पृथुयशने कहा—जी हाँ ! सर्वथा। श्रीआचार्य---कैसे ?

श्री पृथुयश—आपने समयका संशोधित करके शुद्ध लग्न स्थापित नहीं किया, अपितु तीन बार गेन्दके दीवार से टकराने और सोपानसे उतरने और चढ़नेके विलम्ब काल को भी लग्न निर्णय में सम्मिलित किया। जो कि आप की गणनामें भूलका एक मात्र साधन थी। अब आप ही अपने पुत्रके अनुमानित लग्नसे इतने विघ्नोंके विलम्बके कालको घटा कर देखें, निश्चित ही गत लग्न स्पष्ट हो जावेगा। श्री आचार्य जीके वैसे ही किए जाने पर पिछला लग्न स्पष्ट हुआ, अब दोनों लग्नोंके—परस्पर फलितमें आकाश-पातालका अन्तर था। तब श्री आचार्य जी अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने लगे और कहने लगे मैंने तो घोर अनर्थ कर मारा, जो कि अपनी जीवन संगिनी सती और अपने घरके दीपक, आंखोंके तारे सुकुमारको सूने भवनमें त्याग कर चला आया। मैं इस पापभार से किस प्रकार विमुक्त हो सकूंगा। किसके आगे अपनी करुणाजनक कथा रखूं ? इस प्रकार वे पश्चाताप कर ही रहे थे। कि पं० पृथु० ने कहा, पूज्य गुरुदेव ! चिन्तातुर क्यों हो ? कृपया मुझे वह कुण्डली दर्शाएँ। श्री आचार्य जीसे कुण्डली देने पर श्री पृथु० ने कहा महाराज ! इसमें एक ऐसा भी योग पाया गया है कि पिता पुत्रका परस्पर मिलाप होनेके पांचवें दिन पिताको महाराजकी ओरसे अकस्मात् एक लाख मुद्रा प्राप्त हो। तब श्री आचार्य जीने कहा कि इसमें यह भी योग है कि उज्जयिनी नगरीमें महाराज की सभामें पिता पुत्रका सम्पर्क हो। मेरे विचारमें तो आपको ही मेरा अतीतका सुनहला स्वप्न होना चाहिए। यह शब्द सुनते ही पं० पृथुयश श्री आचार्यजी के चरण कमलों पर नत मस्तक हो गए और गद्‌गद स्वरमें बोले—पिताजी ! मेरा अपराध क्षमा हो, मैं आप हीके चरण कमलोंकी धूलिके कणकी कृपासे दो चार अक्षर सीख पाया हूं। माताजीने भी मुझ पर विशेष कृपा की है जो कि यहां पहुंच कर आपके चरणरज से स्नात होकर निज जीवनको सफल कर सका हूं। इस प्रकार दोनों रात्रिके समय परस्पर वार्तालाप कर ही रहे थे कि दीवारके बहिर्मार्गमें स्थित गुप्तचरोंने समस्त समाचार सुना। इनके मिलापका यह चतुर्थ दिवस था। गुप्तचरोंने जाकर महाराजसे निवेदन कर दिया। दूसरे दिन प्रातः १० बजे महाराजने सभा लगाई तथा बड़ी प्रसन्नता और सम्मानके साथ श्रीवराहमिहिराचार्य जीको एक लाख मुद्रा समर्पित की। अनन्तर वे दोनों पिता पुत्र यशोधन प्राप्त करते हुए रहने लगे। (क्रमशः)

राष्ट्र-निर्माणमें :—

उपयोगी, उपेक्षित, ज्योतिर्विज्ञान

[लेखक—आचार्य श्रीरमानन्द सारस्वत शास्त्री]

[राष्ट्र निर्माणकी आधार शिला ज्योतिर्विज्ञान ही है, यह तथ्य प्रस्तुत लेखमें विद्वान् लेखकने भली भांति प्रतिपादित किया है। ज्योतिर्विज्ञानकी भारतीयता, ज्योतिर्विदोंके कर्तव्य तथा ज्यौतिष शास्त्र सम्बन्धी प्रचलित अनेक भ्रांतियोंका निराकरण इस लेखमें सुन्दर ढंगसे किया गया है। प्रत्येक ज्योतिष प्रेमीको यह लेख पढ़ना उपयोगी सिद्ध होगा।

—सम्पादक]

लेखका शीर्षक भले ही पाठकोंको विचित्र लगे किन्तु जो प्रत्यक्ष सत्य है उसे छिपाया नहीं जा सकता और न ईमानदारीका तकाजा ही है कि उससे इनकार किया जाए ? भारतीय राष्ट्रको यदि प्राचीनकालमें किसी साधन द्वारा सशक्त बनाया जा सका तो वह ज्ञानसे भी पृथक् 'विज्ञान' था। विज्ञानके आश्रयसे ही प्रकृतिका प्रभाव, दिन रात्रि, ऋतु, मास, पृथ्वी एवं उसके ही सदृश अनेकों पिण्डों एवं उनसे उत्पन्न परिवर्तनों आदि सबकी करतलागतामलकवत् प्रतीति भारतीयोंने प्राप्त की थी। उस काल ज्ञान विधायक 'विज्ञान'से ही वे संवत्सरादिके रूपमें अपनी 'स्मृति' परम्परागत अक्षुण्ण रूपमें निहित कर गए हैं। यदि उनके पास ऐसा विज्ञानमय ज्ञान प्रकार न होता तो अब तक भारतीयोंका कभीका नाम निःशेष हो चुका होता! तात्पर्य यह है कि अब भी भारतीय राष्ट्रका निर्माण एवं राष्ट्रीय सर्वाङ्गीण समुन्नतिका प्रकार उस विज्ञान पर आधारित होने पर ही पूर्ण हो सकता है जिसके द्वारा प्रकृति एवं नियतिकी गतिके परिवर्तनका आभास स्पष्ट रूपेण लक्षित हो।

भारतीय तत्त्ववेत्ता महर्षियोंने मानवमात्रको सतत अभ्युदयशील बनानेकी दृष्टिसे ही 'ज्योतिर्विज्ञान'को आविष्कृत किया था। ज्योतिश्शास्त्रके क्रमिक विकास पर दृष्टि डालनेसे यह स्पष्ट विदित होता है। साथ ही इस शास्त्रमें जैसी उदारता और 'विश्व बन्धुत्व'की भावना एवं विचार साम्य प्रतीत होता है। वैसा किसी अन्य शास्त्रमें परिलक्षित नहीं होता। आजसे बहुत समय पूर्व जब 'विश्व बन्धुत्व'का नाम भी लोगोंके ध्यानमें नहीं था और राष्ट्रमें दस्युओंका आक्रमण प्रारम्भ भी हो गया था ऐसे दुर्दान्त समयमें भी महर्षि गर्गने—

"म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥

—उद्घोषित कर म्लेच्छोंके प्रति आदरभाव प्रकट किया था ऐसी धार्मिक सहिष्णुता या उदारता किसी अन्य भारतीय शास्त्रके वचनोंमें नहीं मिलती। यही कारण है कि कुछ लोग इस विज्ञानको ही 'अभारतीय' या 'ग्रीकोंसे प्राप्त विज्ञान'के रूपमें मानने लगे हैं। किंतु यह भ्रान्त धारणा विद्वानोंके गम्भीर गवेषण और चिन्तनके बाद अब निरस्त होती जा रही है। महाभारतके शल्य पर्वमें संकेत मिलता है कि महर्षि गर्गने कुरुक्षेत्रमें सरस्वती नदीके तट अपनी अनुपम तपोनिष्ठासे इस विज्ञानका साक्षात्कार किया था—

"तत्र गर्गेण वृद्धेन तपसा भावितात्मना।
कालज्ञान गतिश्चैव ज्योतिषां च व्यतिक्रमः॥
उत्पाता दारुणाश्चैव शुभाश्च जनमेजय।
सरस्वत्यास्तटे तीर्थे विदिता वै महात्मना॥

इसके अतिरिक्त बलरामके गमनागमन, परीक्षितके जन्म के समयके भविष्य आदिके उल्लेख इस बातके प्रमाण हैं कि ज्योतिर्विज्ञान मूलतः भारतीय मस्तिष्ककी ही सृष्टि हैं। उदाहरणार्थ—

'पुष्येण संप्रयातोऽस्मि श्रवणे पुनरागतः।'
(बलराम गमनागमन)

"राजर्षीणां जनयिता शास्ता चोत्पथगाभिनाम्।
निग्रहीता कलेरेष भुवो धर्मस्य कारणात्॥
तक्षकादात्मनो मृत्यं द्विज पुत्रोपसर्पितात्।
प्रपश्यत उपश्रुत्य मुक्त संगः पदं हरेः॥
जिज्ञासितात्मा याथार्थ्यो मुनेर्व्यास सुतादसौ॥

"इति राज्ञ उपाश्रुत्य विप्रा जातक कोविदाः
लब्धोपचितयः सर्वे प्रति जग्मुः स्वकान् गृहान् ॥"

(परीक्षित भविष्य निर्देश) आदि वचन इसके प्रमाण हैं। यहां केवल महाभारतसे ही कुछ प्रमाण दिए गए हैं। महाभारतकालके पश्चात् ग्रीक सभ्यता पनपी थी ऐसा विद्वान् मानते हैं। किन्तु ज्योतिर्विज्ञान तो वैदिक कालसे ही प्रचलित है और—

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः
कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं काल विधान शास्त्रं
यो ज्यौतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥

वेदाङ्ग ज्योतिषके इस उल्लेखानुसार वैदिककालमें ही इसका अध्ययनाध्यापन एक आवश्यक विषय माना जाने लगा था—एवम् —

'यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तथा सर्वेषु शास्त्रेषु ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम् ॥'

प्रभृति घोषणाएं ज्योतिर्विज्ञानके हितैषियोंने घोषित कर दी थी। नारद, गर्ग एवं बृहस्पति प्रभृति महर्षियोंने इसका उद्देश्य बतलाते हुए—

'स्वभावादेव कालोऽयं शुभाशुभसमन्वितः।
अनादि निधनः सर्वो न निर्दोषो न निर्गुणः॥'
(बृहस्पतिः)

'प्रयोजनं तु जगतः शुभाशुभ समन्वितः' (नारदः)

आदि वाक्योंके अनुसार विश्वके हिताहितके लिये ही इस शास्त्रका आविष्कार किया था। केवल गणित ही नहीं फलित ज्यौतिषका भी विकास प्राचीनकालसे 'फल प्रक्रिया'के अनुसार भारतवर्षमें प्रचलित है यह भी अब निर्विवाद सिद्ध होता जा रहा है। कुछ पाश्चात्य शिक्षाके अन्ध भक्त या नवीन विज्ञानवादी फलित स्कन्धको मिथ्या वितण्डावाद या ब्राह्मणोंकी उदरपूर्तिका साधनमात्र बतलाकर जो उपहास किया करते थे वे भी अब राफेल, स्टेपहर्ड, व ऐलनलियो प्रभृति पाश्चात्य विद्वानोंकी पुस्तकोंमें फलितका निर्देश होनेसे धीरे धीरे इसे विज्ञानसम्मत मानने लगे हैं और ये मिथ्या धारणाएं दूर होती जा रही हैं। एक यूरोपीय लेखकने लिखा है :—

"The Hindus base their claim partly on a series of observations known as the tables of Tirvalore, which were brought in to Europe by legentil and partly on the work known as 'Surya Siddhant'. The former are assumed to date from year 3102 B.C. the begining of the 'Caliyug' or iron age of Hindu mythology. The Indian tables make the tropical year with in nearly two minutes of our tables. The place of sun agrees with our tables with in 46 minutes and 54 seeonds and the moon with in 37 minutes.

The early Hindoos practised trigonometry and Sexagesimal arithmetic. They are supposed to have taught that the earth was spherical, turned on its axis, that its diameter was 1,600 Yojans ond the moons distance 51,370 or 32 diameters."

(ज्यो० वि० रत्नाकर ५०६ से)

"अर्थात् हिन्दूलोग अपने ज्योतिष शास्त्रकी गणना सारिणियों पर (जो सारिणियां भारतवर्षसे लिजेंटिल द्वारा यूरोपमें लाई गई थीं) और सूर्य सिद्धान्त नामके ग्रन्थ परसे करते हैं। ये सारिणियां यीशुखीष्टके पहले ३१०२ वें वर्षमें अर्थात् कलियुगके प्रारम्भमें ही बनाई गई होंगी। हिन्दू सारिणियों परसे और पाश्चात्य कोष्ठक परसे किये हुये अयन वर्षके मानमें अन्दाजन दो मिनिटका अन्तर आता है। वैसे ही सूर्यके भोगमें ४६ मिनिट (कला) ५४ सैकेण्ड (विकला) चन्द्रके भोगमें ३७ मिनिट (कला) का अन्तर आता है।"

"प्राचीन हिन्दूलोग त्रिकोणमितिसे और जिस कोष्ठकमें ६०का अंक है ऐसे अंकगणितसे गणित करते थे। वे लोग यह जानते थे कि पृथ्वी गोल है और वह अपने आसपास घूमती है। वैसे ही पृथ्वीका व्यास १६०० योजन है और चन्द्रका अन्तर ५१,३७० योजन अथवा व्याससे ३२ गुना है, यह भी उनको ज्ञात था।"

"People think of the Hindoos as peathens, Yet their philosophers developed thoughts which none of the great Greek philosophers ever approched, which indeed have not been

surpassed in any writing which the World possesses."

(Mathematical Astronomy)

अर्थात् हम यूरोपीय लोग बहुधा यह समझते हैं कि हिन्दू लोग असभ्य हैं। परन्तु वास्तवमें उनके तत्ववेत्ताओंके विचार इतने परिपक्व होगये थे कि बड़ेसे बड़े यूनानी तत्ववेत्ता उन विचारों तक अभी भी नहीं पहुंच सके हैं। आर्य विद्वानोंसे अधिक विकसित विचार कहीं भी संसारकी किसी भी भाषाकी किसी पुस्तकमें प्रकट नहीं हुए हैं।"

उपर्युक्त उद्धरणोंसे विदित होता है कि धीरे धीरे विश्वके विद्वान अब इस तथ्यको समझने लगे हैं और वह दिन दूर नहीं जब एक स्वरसे उसकी महत्ताके प्रति विशेषकर फलितशास्त्रके प्रति 'नत शिरस्क' होंगे।

किन्तु जैसा कि ऊपर कहा गया है, ये सब बातें होते हुए भी आज इस शास्त्रकी या विज्ञानकी जैसी दुर्दशा है स्यात् ही किसीकी हो।

कोई भी 'नीम हकीम' 'नक्षत्र सूची' जिसे २७ नक्षत्र और १२ राशियोंका ज्ञान हो बाजारसे इधर उधरकी सस्ती मंहगी २, ४ पुस्तकें इकट्ठी कर 'ज्योतिर्विद' बन जाता है और त्रिकालकी भविष्यवाणी कर देता है, इसके फलस्वरूप शास्त्र परसे लोगोंकी श्रद्धा आस्था उठ जाती है। जो कुछ जानकार लोग हैं वे भी साधनोंके अभाव एवं पञ्चाङ्गोंके मत भेदके कारण किसी ठीक निश्चय पर नहीं पहुंच पाते। विदेशोंमें जिस शास्त्र पर अनुसन्धानके लिये अनेकों वेधशालाएं एवं प्रतिवर्ष अनेकों यन्त्र निर्माणके लिये अनुसन्धान पूर्वक लाखों रुपयेके व्ययके साथ परिश्रम किया जा रहा है वहां भारतवर्षमें इस शास्त्रके अध्यवसायी लोगोंको प्रोत्साहनका कोई क्षेत्र ही नहीं है।

सुना है कि उत्तरप्रदेशमें हालमें कृषि सम्बन्धी गवेषणाके लिये ज्योतिषकी भविष्यवाणियोंका धाघ, और भड्डलीके वचनों एवं संहिता वाक्योंका संग्रह परीक्षणके लिये किये जानेका प्रयत्न आरम्भ हो गया है किन्तु ये सब एक देशीय बातें हैं और उदर व्याधि ग्रस्तके लिये हाथमें औषधि लेपनके समान व्यर्थ ही सिद्ध होंगी वास्तवमें इसके लिये आधार भूत प्रयत्न इससे सर्वथा पृथक् हैं।

अब हम स्वतन्त्र हैं, और इस स्वतन्त्रताको चिरस्थायी रखनेके हेतु हमें इस विज्ञानको प्रोत्साहित करना अनिवार्य है। यदि समय रहते हम नहीं चेते तो कोई साधन हमारे पास नहीं रहेगा जिसके अनुसार हम विश्वको अपने पृथक् ज्ञानोन्मेषसे चमत्कृत कर सकें। अब तक पराधीनताके कारण ज्ञानवर्धनमें हमारे लिये जो बीसों कठिनाइयां थीं वे भी दूर हो गई हैं।

'ज्योतिर्विज्ञान'को सुरक्षित रखनेके हेतु तीन प्रकारके प्रयत्न तुरन्त तात्कालिक रूपेण अपनाने परमावश्यक हैं—

विद्वानों के लिये

सर्वप्रथम ज्योतिषके अधिकारी विद्वानोंको एकत्र होकर एक स्वरसे शास्त्रीय विवादोंकी जैसे पञ्चाङ्ग-भेद, अयन-प्रकार प्रभृतिकी एक तालिका बना लेनी चाहिये और भारतीय दृष्टिसे किसी एक वेधशालामें सभी पक्षोंके साधित ग्रहोंका वेध आदि करके एक पद्धति और प्रक्रियाको सार्वत्रिक रूप देना चाहिये। 'परप्रत्ययनेयबुद्धि'का सर्वथा बहिष्कार कर विज्ञान सम्मत प्रत्यक्ष शैलीको अपनाना चाहिये क्योंकि अब 'तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणः क्षारं जलं कापुरुषा पिबन्ति' के अनुसार दुराग्रह बुद्धिका त्याग करना ही उचित है किंतु 'नवीनताके लोभमें कहीं पुरानी अच्छी बातें न छूटें, इसका भी ध्यान रखना साथ ही परमावश्यक है।

इसके पश्चात् ही अधिकृत विद्वानोंका 'पञ्जीकरण' अथवा 'रजिष्टर' करनेकी भी वैद्य डाक्टरोंकी सी ज्योतिर्विदोंकी व्यवस्था करनी चाहिये। जिससे अनधिकारी नक्षत्र-सूचियोंसे शास्त्रकी सुरक्षा हो सके।

समस्त देशके ज्योतिर्विदोंकी परिषद् स्थापित की जाय और प्रांत प्रान्तमें एवं मण्डल २ में शाखाएं स्थापित कर विवादों पर विचार किया जाया करे।

कुछ व्यक्ति विशिष्ट विद्वान न होते हुए भी किसी अंश विशेषके विद्वान् होते हैं जैसे हस्तरेखा, शकुन, स्वर, अथवा जन्म पत्र। ऐसे व्यक्ति किसी एक प्रक्रियासे ही ऐसा चमत्कारिक फल कहते हैं जो तीर की तरह ठीक बैठता है वैसे शास्त्र या आचार्य उपाधिधारी भी नहीं कह सकते। बार-बार पूछने पर भी ऐसी विशेष क्रियाओंको 'ये साधारण ज्यौतिषी जन सम्पर्कसे दूर रहते हुए अपने प्रकारोंको गुप्त ही रखते हैं, अतः विद्वानोंका कर्तव्य है कि ऐसे लोगोंकी खोज करें और उस प्रक्रिया विशेषको प्राप्त कर अनुभवके 'निकषपर कसकर' लोक कल्याणार्थ प्रकाशित करें।

सिद्धान्त एवं फलितके अधिकारी ग्रन्थोंमें किस ग्रन्थका कितना अंश या योगायोग वर्तमान समयमें पूर्णतया मिलते हैं, इसका भी क्रमसे विवेचन सुविधानुसार विद्वानोंकी परिषद् गवेषणात्मक रूपमें करनेके बाद निर्धारित कर सकती है।

भारतवर्ष भरके अधिकृत ज्योतिर्विद् विद्वानोंका 'परिचय ग्रन्थ' तथा ज्योतिर्विज्ञानका क्रमिक इतिवृत्त एवं प्राच्यपाश्चात्य तुलनात्मक समीक्षा सम्बन्धी ग्रन्थोंका तो नितान्त अभाव ही है जिसे विद्वान् मिल जुल कर परस्पर के सहकारसे कर सकते हैं। ऐसे ही और भी अनेक विषय हो सकते हैं जिन्हें विद्वानोंको दृष्टिगत करना आवश्यक है यहां उपर्युक्त संकेत ही पर्याप्त होंगे।

सर्वसाधारण के लिये

आज सर्वसाधारण भी चाहे जिस ज्यौतिषीसे चाहे जिस समय चाहे जैसा प्रश्न कर लेते हैं। फल भी उन्हें वैसा ही मिलता है, ये दोनों बातें अनुपयुक्त हैं । सर्वसाधारणको आवश्यक है 'पानी पीजे छान गुरु कीजे जान' लोकोक्तिके अनुसार विशिष्ट विद्वानोंको ही अपने भविष्य निर्देशका अधिकार देना चाहिये। कैसा ज्यौतिषी हो और किस समय किस प्रकार क्या बातें पूछनी चाहियें इसका शास्त्रीय नियम जानकर ही उचित समयमें उचित रूपमें उचित दैवज्ञकी सेवामें समुपस्थित होना चाहिये। यदि अच्छा फल चाहें तो उसके अनुकूल ही पारिश्रमिककी व्यवस्था करें। 'श्रीफल' स्टैण्डर्ड अब स्थूल गणितका प्रतीक बन गया है और उससे स्थूल फल ही मिल सकता है। इसके साथ ही जब तक जन्म-पत्र शुद्ध न हो, या उसके सम्बन्धमें पूरी जानकारी जैसे जन्म समय, जन्म स्थान प्रभृति बातें नोट न हों और किसी विशिष्ट विद्वान्से संशोधित न हों, ठीक फल न मिले तो इससे दैवज्ञ पर उपालम्भ नहीं आरोपित करना चाहिये और न शास्त्रनिष्ठाको न्यून करना चाहिये।

यदि प्रान्त प्रान्तमें अथवा जिले जिलेमें कुछ विशिष्ट विद्वान् केवल पुराने जन्मपत्रोंके संशोधनका ही कार्य किया करें और उनसे संशोधित जन्मपत्र ही मान्य हों ऐसा प्रबन्ध किया जा सके तो सर्वोत्तम है। कुछ विद्वानोंको केवल गणित और कुछको केवल 'फलित' या फलादेश ही करना चाहिये इससे जहां ज्यौतिषियोंको सुविधा रहेगी वहां सर्वसाधारणको भी लाभ रहेगा और जनसाधारणको अपने भविष्य विज्ञानके इस 'दुहरे भार'को अवश्य आर्थिक दृष्टिसे सहन करना ही चाहिये।

ज्यौतिषके विद्यार्थियोंके लिये भी परिश्रमसे न बचकर 'नगर पालिका'में दर्ज किये हुए मुहल्लेके बच्चोंका जन्म समय प्राप्त कर अथवा मुहल्ले भरके दस पांच वर्ष तक उत्पन्न सभी बच्चोंके जन्म समयोंको ज्ञात कर लग्न निर्माण कर बालारिष्ट एवं नामस आदि योगोंके अनुसार बच्चोंका परीक्षण कर उसके अभिभावकोंसे सम्पर्क स्थापित करते हुए फलका समीक्षात्मक विश्लेषण करना चाहिये। प्रत्येक ज्योतिषके विद्यार्थीको फल कहनेके साहससे पूर्व इस प्रकार कमसे कम १० वर्ष या ५०० कुण्डलियोंका परीक्षण अवश्य कर लेना चाहिये । यद्यपि यह कठिन अवश्य है किंतु इस प्रकारके प्रयत्नके बिना हम इस शास्त्रको समुन्नत नहीं कर सकते। सर्वसाधारणका परम पावन कर्तव्य ऐसे विद्यार्थियोंको आर्थिक सहयोगादिसे प्रोत्साहित करना होना चाहिये।

सरकार के लिये

किंतु उक्त सभी बातें अधिकांशमें 'राज्याश्रय सापेक्ष' हैं। यदा कदा श्री नेहरूजीके इस बारेमें विचार या सरकारका रुख देख कर चित्तको अत्यन्त क्षोभ होता है। स्वतंत्र भारतके आठ नौ वर्ष बाद भी सरकारने गम्भीरता पूर्वक न तो अब तक इस पर विचार ही किया है और न पञ्चवर्षीय योजनाकी भांति कोई योजना ही बनाई है। जो कुछ हुआ है वह भी एक प्रकारसे नहींके तुल्य है । साथ ही श्रीनेहरूजीके विचारोंसे तो लोग और हतोत्साह एवं कुंठित-प्रयत्न हो जाते हैं। किंतु अब इस ओर ध्यान देनेकी आवश्यकताको उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

समस्त देश भरमें किसी एक स्थान पर कमसे कम सर्वसाधन सम्पन्न एक वेधशाला और एक ज्यौतिष महाविद्यालय (जिसमें ज्यौतिष सम्बन्धी समस्त अङ्गोपाङ्गों) (शकुन, रमल, केरल, प्रश्न, सामुद्रिक, प्रभृतिका अधिकारी विद्वानों द्वारा अध्यापन हो सके।) का स्थापन करना सरकारका सर्वप्रथम पुनीत कर्तव्य है ! विदेशी समुद्री पञ्चाङ्गों आदिके लिये प्राकृतिक साधनोंके पर्यवेक्षण एवं ऋतु विज्ञान व मौसम सम्बन्धी सूचनाओंके लिये जिस प्रकार अन्य सरकारें काफी व्यय करती हैं उसी प्रकार भारतीय

अनुभूत-योग-माला

[लेखक—राजगुरु ज्योतिषालङ्कार पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

(गताङ्कसे आगे)

जिसके जन्म समयमें लग्नमें चन्द्रमा होता है वह मूक उन्मत्त जड़ अन्धा हीन बधिर और प्रेष्य होता है।

मूकोन्मत्त जडान्धहीन बधिर प्रेष्यः शशाङ्कोदये
(वृहज्जातक)

उपपत्ति—वाणी का देवता अग्नि है।

नहीन्द्रियैः स्वातन्त्र्येण गुण ग्रहणं कर्तुं शक्यते,
ततस्तदधिष्ठातारो देवाः दिग्वातार्क प्रचेतो-
ऽश्विवह्नीन्द्रोपेन्द्र मित्रका॥ इति (मिताक्षर भाष्य)

चन्द्रमा अति शैत्यका अधिष्ठाता है। अति शैत्य से उष्णता रूपा आग्नेयशक्ति हीन हो जाती है।

जन्म समयमें जिस राशिका उदय होता है उ जन्म-लग्न कहते हैं। उदय कालमें अति तेजस्वी सूर्य किरण भी मृदु होते हैं। इसलिए जन्म-लग्नकी शक्ति का अति मृदुत्व असन्दिग्ध है। लग्नस्थ चन्द्रमाका अति शैत्य, लग्नकी अति मृदुता वाली शक्तियोंका वैकल्य क देता है। लग्न, शरीरका अधिष्ठाता विशेषतः सिरक अधिष्ठाता है। इसलिए लग्नस्थ चन्द्रमाके अति शैत्यसे सिरका समीपस्थ वाणीरूप आग्नेय अंश विशेष रूपसे विकृत हो जाता है। अतएव लग्नस्थ चन्द्रमा मूकता करने वाला होता है।

लग्नस्थ चन्द्रमा अति शैत्यसे सिरको विकृत करता है। सिरके भीतर मस्तिष्कके विकृत करने से वह उन्मत्तता और जड़ताका भी कारक है। तेजोमय होनेसे नेत्र भी आग्नेय हैं।

चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषाच्छ्लेष्मणो भयम्।
(अष्टाङ्ग हृदय संहिता)

इसलिए लग्नस्थ चन्द्रमा नेत्र विकार भी करता है। हीन और प्रेष्यजनोंमें तेजकी न्यूनता होती है। इसलिए लग्नस्थ चन्द्रमा हीनत्व और प्रेष्यत्व करने वाला भी है।

आग्नेयीवाणीका ग्रहण अति शैत्यसे नहीं हो सकता क्योंकि शैत्य उष्णताका विरोधी है। इसलिए लग्नस्थ चन्द्रमा कर्ण विकार भी करता है।

एक व्यक्तिकी जन्म-कुण्डलीमें वृश्चिक लग्नमें चन्द्रमा है। कृष्णपक्ष में जन्म हुआ है। उसका वचन स्खलित होता है। वह कुछ उन्मत्त-सदृश भी है। २० वर्षकी अवस्था से उसके नेत्र विकृत हैं। बाल्यावस्थामें तीन वर्ष तक वह कर्ण रोग से पीड़ित रहा है। उसमें हीनत्व और प्रेष्यत्व भी है।

यदि चन्द्रमाके अंश लग्नके अंशोंके समीपवर्ती होते हैं तो अनिष्ट फल विशेष रूपसे अनुभूत होता है। चन्द्रमा

सरकारको भी करना चाहिये। इसके अतिरिक्त स्थानीय ज्यौतिषके विशिष्ट विद्यार्थियोंको ग्रीन्विच आदिमें भी ज्ञान वर्धनके लिये विशेष परिज्ञान हेतु भेजनेकी व्यवस्था करनी चाहिये। 'यूनेस्को' के द्वारा जिस प्रकार सांस्कृतिक परिज्ञानके लिये 'दल' संयुक्तराज्यों एवं राष्ट्रसंघके प्रदेशोंमें परिभ्रमणार्थ जाते हैं उसी प्रकार भारतीय ज्योतिर्विदोंके दल भी विदेशोंमें भेजे जानेकी सरकारको व्यवस्था करनी चाहिये।

ज्योतिर्विज्ञानकी बहुतसी पुस्तकें अंग्रेजी, बंगला, मराठी आदि भाषाओंमें हैं, उनके हिन्दी अनुवादकी व्यवस्था एवं अप्रकाशित ग्रंथोंकी खोज एवं उनके सम्पादन, प्रकाशनका ही इतना कार्य सरकार सापेक्ष्य है जिसके लिये पृथक् रूपमें एक विभागके रूपमें पर्याप्त अर्थराशिका उपयोग हो सकता है। बहुतसी अनुपलब्ध विदेशी हस्तलिखित पुस्तकोंके फोटो स्टेट 'या' माइक्रो फिल्म' बनाकर इस वैज्ञानिक शास्त्रको अत्यधिक जन-जन उपयोगी बनाया जासकता है। क्या हम 'राष्ट्रीय सरकार'से आशा करें कि वह इस निवेदन पर ध्यान देगी? विद्वान् और सर्वसाधारण जन-जनार्दनसे भी आशा है इस लेख पर उचित ध्यान देकर इस उपेक्षाग्रस्त-शास्त्रको सार्वत्रिक-सर्वसुलभ बनाने का प्रयत्न होगा।

शिवम्।

भारतीय दृश्य गणितकी महत्ता

[लेखक—श्री पं० केदारनाथजी महाराज राज ज्यौतिषी]

[इस लेखके वयोवृद्ध विद्वान् लेखक पूज्यपाद श्री पं० केदारनाथ जी महाराज अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् दैवज्ञ हैं। भारत सरकारकी पंचांग कमेटीके केन्द्रीय विभागने आपसे भी परामर्श माँगा था, उस समय आपने बड़े ही सुदृढ़ शब्दोंमें उसके आलोच्य अंशका विवेचन किया था। हमने आपसे निवेदन किया था कि आप 'श्रीस्वाध्याय' के लिये भी आशीर्वादात्मक कुछ लेख आदि लिखनेका कष्ट करें। अवस्था धर्मके अनुसार शरीरके पर्याप्त शिथिल होने पर भी आपने यह लम्बा लेख अपने कर-कमलोंसे लिख भेजनेका अनुग्रह किया है तदर्थ हम आपके आभारी हैं। स्थानाभावसे इस बार लेखका थोड़ा अंश ही दिया जा सका है और आगामी अंकोंमें शेषांश दिया जायगा।

हालमें ही दिल्लीमें हुए अ० भा० ज्योतिष सम्मेलनके आप अध्यक्ष थे, आपके विद्वत्तापूर्ण भाषणसे लोकसभाके अध्यक्ष श्री अनंत शयनम् आयंगार आदि बहुतसे महानुभाव अत्यन्त प्रभावित हुए थे। हम आपकी दीर्घायु एवं सुन्दर स्वास्थ्यकी सतत कामना करते हैं। —सम्पादक]

भारतवर्ष ही ज्योतिष शास्त्रका प्रथम आविष्कर्ता है। इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है। क्योंकि सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदमें इसकी पूर्ण चर्चा प्राप्त है।

ऋग्वेदमें—

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ-
तच्चिकेत । तस्मिन्त्साकं ·······ऋग्वेद

इसमें द्वादश विभागों का और एक वर्ष की ७२० रात और दिनकी स्पष्ट गणनाका उल्लेख है। इसी प्रकार मलिम्लुचनामसे सूर्य चन्द्रकी ऋतु गणना कभी भी गड़बड़ में न आवे, इसके हेतु अधिक मासकी गणना भी उल्लिखित है। यह सौर चन्द्र मानोंका सामंजस्य सदा बना रखनेका प्रबन्ध है। इसी प्रकार सूर्यके ७ अश्व जिनको वैदिक परिभाषामें छन्द कहा जाता है उसका भी वैज्ञानिक ढंगसे वर्णन है जो कर्कके मकरतकके ७ वृत्तोंके ऊपर निर्भर है।

ज्योतिष शास्त्रके बिना वैदिक महर्षियोंका क्रिया-कलाप एक पद भी नहीं चल सकता था। अतः वैदिक कालसे भारतीय इस शास्त्रको

वेदचक्षुः किलेदं ज्यौतिषं संस्मृ म्'

यह मान देते आये हैं। वैदिक कालमें पृथ्वीकी गति मानी जा चुकी थी। इसी कारण पृथ्वीके नाम निरुक्त निघण्टुमें गौः ग्मा, ज्मा- क्षमा इत्यादि प्राप्त हैं इसमें गच्छ-

---

की क्षीणतामें क्षीणताके अनुसार अनिष्ट फलका प्राबल्य होता है।

यदि चन्द्रमा कर्क मेष या वृष लग्नमें होता तो वह शुभ फल देता है।

स्वर्क्षोच्चगते धनी बहुसुतः (बृहज्जातक)

कर्कस्थ चन्द्रमा स्वगृही होनेसे वृषस्थ चन्द्रमा उच्च-गृही होनेसे और मेषस्थ चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होनेसे शुभ होता है।

प्रधान राशि-बलके योगसे चन्द्रमाका शैत्य उपकारी हो जाता है। क्योंकि बल तेजो रूप होनेसे विकलता नहीं होने देता है।

इस लेखक सार-रूप बृहज्जातकके श्लोकपादसे सहित स्वनिर्मित तीन श्लोक पाद—

आग्नेयं वचनं वदन्ति नयने तेजोमये शैत्यत-
स्तन्नाशः श्रवणे क्षयश्च जड़ता हीनत्वतस्तेजसा।
हीनाः प्रेस्यजनाश्च हीनमहसो मत्तास्तदित्युच्यते,
मूकोन्मत्त जडान्ध हीन बधिर प्रेष्यः शशाङ्कोदये ॥

तीति गौः' तथा ग्मा ये दोनों ही शब्द पृथ्वीकी गतिके सूचक हैं। इसके प्रमाणमें ऐतरेय ब्राह्मणमें सूर्यके वर्णनमें—

'नैष कदाचन निम्लोचति'। 'दिवसस्यान्त गत्वा निम्लोचति।' यह प्रत्यक्ष प्रमाण सूर्यकी अपेक्षा पृथ्वीकी गतिको ही सिद्ध करता है। यदि—

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो देवो,
याति भुवनानि पश्यन्।

इस मन्त्रके आधार पर सूर्यमें गति सिद्ध की जाती है, किंतु लोकमें सूर्य पूर्वमें उदय होकर प्रति दिन पश्चिम में अस्त होकर फिर पूर्वमें उदय होता है, इस दृश्यस्थिति को आधार मानकर सूर्यको ही गतिशील माना जा रहा है। यह संशय होता है। किन्तु सूर्यकी दैनंदिन (प्रतिदिन होने वाली) गतिको माननेसे सूर्यमें दो गतियां प्राप्त होती हैं, एक पूर्वसे पश्चिम दूसरी पश्चिमसे पूर्व। जिसके कारण नक्षत्रोंका दीखना न दीखना माना जाता है। एक ही पदार्थ में दो गति मानना केवल कल्पनामात्र सिद्ध होता है। क्योंकि भास्कराचार्य आदि विद्वानोंने प्रवहवायुके वशसे पूर्वसे पश्चिम गति जो प्रति दिन देखनेमें सर्वसाधारणकी प्रत्यक्ष दीखती है। सारे आकाशके भचक्रकी गति मानी है। यह कल्पना मात्र है क्योंकि सारा भचक्र प्रति-दिन पूर्वसे पश्चिमको घूम आता है। और दूसरी पश्चिम से पूर्वकी गति माननी ही पड़ती है जिसके आधारसे नक्षत्रों का दीखना न दीखना अवलम्बित है। भास्कराचार्य जी ने कुम्हारके चाककी उलटी गतिसे चाक पर चलने वाली पिपीलिका (चींटी) का दृष्टान्त देकर एक ही सूर्यमें दो गति सिद्ध करनेका पूरा प्रयत्न किया है किंतु अनन्त आकाश के प्रतिदिन दीखने वाले नक्षत्रोंका ऋतुभेदसे दीखना न दीखना है, जो सूर्यके प्रकाशमें आ जानेके कारण आकाश में होते हुए भी नहीं दीखता है।

आज के विज्ञान युगमें ज्योतिष शास्त्रके ग्रहगणित विभागने पराकाष्ठाकी उन्नति की है। हम भारतवासी अब भी सूर्य सिद्धान्तकी पौने चार चार अंश की ज्याके गणितके भरोसे उसको ही लिए बैठे हैं।

अब इस समय भी पाश्चात्य देशोंके ही श्रमसे हम भारतवासी लाभ उठा सके तो उसमें कुछ भी क्षति नहीं है।

पृथ्वीकी गति प्रति सैकिण्ड १८ वीं सूर्यकी परिक्रमा के लिए वेधसिद्ध मानी जा चुकी है। इस तीव्र गतिसे पृथ्वी पूरे एक वर्षमें सूर्य देवकी परिक्रमा करती रहती है। पृथ्वी परिक्रमा करने करनेमें अपने अंश पर भी प्रति दिन घूमती हुई परिक्रमा करती है। जैसे एक मोटर का पहिया अपनी धुरी पर घूमता हुआ आगे बढ़ता है। इस अक्ष भ्रमणका काल २३ घण्टे ५६ मिनट ४.०९६० सैकिण्ड इतना है। इसका अर्थ यह है कि जिस स्थिर नक्षत्रको आपने आज किसी यन्त्रसे जिस नियत स्थान पर देखा है। घड़ीसे वही नक्षत्र इतने कालमें कल वाले जगह आ जायगा। आ ही नहीं जायगा; प्रति दिन आता ही रहेगा। ये एक नक्षत्र भ्रमण या यों कहिए कि पृथ्वी को अपना धुरी पर घूम जाने का काल १ यूनिट है।

भास्कराचार्यजी ने —

'समं भसूर्यावुदितौ किलादर्या
षष्ट्या वटीनामुदितं पुनर्भम्।

इत्यादि श्लोकमें इस बातको स्पष्ट लिख दिया है।

इसके अतिरिक्त उदयान्तर संस्कार और है। जो प्रत्यक्ष केवल घड़ीसे ही प्रति दिन देखते रहनेसे प्रतीत हो जाता है। सूर्य पूरे २४ घण्टेमें जहां आज दीखा है। उस ही स्थान पर फिर २३ घण्टा ५६ मिनटमें दीखता है, किन्तु ये भी चल है। उसका प्रकार ये है कि आप समधरातल (लेबल की गई भूमि) में एक सीधी कील गाड़ दीजिये, और सही सच्ची उत्तर दक्षिण रेखा खींच लीजिए। आप यह समझते होंगे कि ठीक २४ घण्टोंमें दूसरे दिन सूर्य घड़ी के १२ बजे ही मध्यान्ह पर आ जाता है। किन्तु ऐसी है नहीं। ये समय अधिकसे अधिक धन १४ मिनट कमसे कम १६ मिनट ऋण है। यह बात एक दो दिनमें तो नहीं किन्तु दस पांच दिनमें ही स्वयं आपको ज्ञात होगी कि घड़ीसे यदि आज सूर्य २४ घण्टोंमें आया है तो कलको कुछ सेकिण्ड आगे पीछे आवेगा। ये संस्कार उदयान्तर कहलाता है। यद्यपि यह संस्कार प्रत्यक्ष है, किंतु कमला कर भट्टने केवल इस कारणसे कि यह संस्कार सूर्य सिद्धान्त में नहीं दिया गया है इस कारण अमान्य किया है। इस उदयान्तरके खण्डनमें व्यर्थ सिद्धान्त तत्त्व विवेकमें कई छ रंग डाले हैं। जो

आजके विद्वत्समाजके हासके साधन हैं। प्रत्यक्षमें दूसरा प्रमाण भास्कराचार्यसे कमलाकरका व्यक्तिगत द्वेष उसके ग्रन्थ से प्रकट होता है। भारतीय सिद्धान्तवेत्ता इस से परिचित हैं। और तो और ये भट्ट कमलाकर जी एक श्लोक ऐसा लिख गये कि जो आज वेदकी ऋचाके तुल्य प्रामाणिक हो गया है। काशी के ज्योतिषी उसके आधार संवत् २००० वर्ष पुराने हिसाबको ही सही माने बैठे हैं।

गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा।
अदृष्टफल सिद्ध्यर्थं तथार्काद् गणितं कुरु॥

इसका अर्थ यह है कि चाहे कितना ही अन्तर प्रत्यक्ष में यन्त्रोंके द्वारा देखा जाय किन्तु ये संस्कार सूर्यसिद्धान्त के ग्रहोंमें नहीं पड़ता है। इस बातको, आज कोई भी समझदार व्यक्ति माननेको तैयार नहीं क्योंकि 'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्' ज्योतिष शास्त्र तो प्रत्यक्ष है।

वि० सं० २००२ के पंचाङ्गमें गुरु और शनिमें क्रम से आठ अंश और नौ अंशका अन्तर मैंने स्वयं विश्व पञ्चाङ्गके गुरु शनिके गणितमें देखा है। दैवयोगसे उन ही दिनोंमें मान्य श्रीयुत रामयत्न ओझाजी इन्दौरके ज्योतिष सम्मेलनसे लौटते समय जयपुरकी यन्त्रशाला देखने आये थे, उस समय समक्षमें मैंने सुझाया था। किन्तु खेद ही नहीं, अत्यन्त दुःख है कि यह कह कर कि जिसको फलित और गणितमें समान अधिकार हो वही यह कह सकता है। अर्थात् हमारे यहां विश्व-पंचाङ्गमें जो ग्रह हैं वह फलितके उपयुक्त होनेसे मान्य हैं।

मुझसे रहा नहीं गया, अन्तमें यह कहना ही पड़ा कि "दुनियाकी आंखमें धूल झोंकनेको इस विश्व-पंचांग में सूर्य ग्रहण शुक्रोदयास्त फिर क्यों नवीन गणितसे लगाये जाते हैं। अस्तु, ऐसे हठी और दुराग्रही विद्वज्जनों के लिए सिवाय प्रत्यक्ष करा देनेके कोई दूसरा उपाय नहीं, फिर आठ नौ अंशके प्रत्यक्ष अन्तरको भी न मानें, उसका कोई इलाज नहीं। आज सभ्य समाजसे ज्योतिष पर अनास्था होनेका एक मात्र कारण ये ही है कि ग्रह गणित अशुद्ध है। भारतके ३० पञ्चांग इकट्ठे करके देखें, फिर भी परस्पर मिलान नहीं, यह देखकर भारत सरकारको 'कलैण्डर रिफार्म कमेटी' नियत करनी पड़ी है। जिसका सं० २०१५ का पञ्चाङ्ग सन् १९५९ के अन्त तक प्रकाशित हो जाने की सूचना निकाली जा चुकी है। (पंचवर्षीय पंचांग और कमेटीकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है—सम्पादक) यहां इतना लिखना अप्रासङ्गिक नहीं होगा कि इस कमेटी से जो ५ वर्षका कलैंडर प्रकाशित हुआ है तदनुसार भारतीय चैत्र शुक्ला १ को वर्षारम्भ न कह कर सायन सूर्यकी मेष संक्रान्तिके दूसरे दिन अर्थात् २२ मार्चको १ चैत्र मानने का निर्देश है। यह केवल—

'भारतके ज्योतिषका दिवाला' ऐलान करनेके सिवाय कुछ नहीं हैं।

हमारे शास्त्रोंमें इस निर्णयको मूलोच्छेदी पाण्डित्य कहा जाता है।

कलैण्डर रिफार्म कमेटी भारतमें ग्रीगोरियन कलैण्डर को मान्यता दे चुकी है। इसमें एक मात्र कारण हम लोगों का परस्पर मतभेद है। अस्तु, राजाज्ञा सर्वदा मान्य है।

ग्रीगोरियन कलैण्डरकी भारतमें मान्यता हो जानेसे ज्योतिषके जानकारोंकी दृष्टिमें वह पुरानी संस्कृतिका समूल-उच्छेदन कर नया ही मत प्रचलित करना है।

जब कि भारतमें प्राचीनकालसे पंचाङ्गोंमें समय-समय पर संस्कार पहले भी कई वार दिया गया है और दिया जाता रहा है तो इस प्रकार का तिरस्कार कर नवीन मत चलाना—'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः' है। इसका मूल कारण हमारा मतभेद ही है यह स्वीकार करना पड़ता है।

आज विश्व-विद्यालय (काशी) के विद्वान् शनि गुरु के आठ नौ अंशों में अन्तरोंको अन्तर ही नहीं स्वीकारते हैं और उस पुरानी लकीरको छोड़ना किसी भी भाव नहीं चाहते हों तो घरकी फूट से ग्रीगोरियन कलैण्डरको प्रतिष्ठा भारत में मिल जाना कोई आश्चर्य नहीं।

भविष्यमें ऐसा कलैण्डर क्या फल देगा यह भविष्य यद्यपि प्रत्यक्ष है फिर भी उसका स्पष्टीकरण जानकारीके लिए करा देना कोई अपराध नहीं।

वर्षारम्भ २२ मार्च से होकर वह वर्ष २१ मार्च को समाप्त होगा। गत फाल्गुन शुक्ला ७ संवत् २०१२ में २२ मार्च को था वह ही अब भारतीयोंकी शुक्ला १ के स्थान पर वर्षारम्भ नियत किया गया है। और उसको १ चैत्र कहनेका आदेश है। इस निर्णय देनेके पहले यह विचार नहीं हुआ है कि भारतीय इस वर्षारम्भ को छोड़कर पारसी और यूनानियों के न्यूइयर्स डे माननेको तैयार हो जायेंगे। अस्तु गणतन्त्र राज्यमें जो गण स्वीकार करा ले वह ही ठीक है। (क्रमशः)

रुक्मिणी-हरणका स्थान अहार (उत्तरप्रदेश) नहीं है

[ले०—श्री पं० रघुवीरशरण शर्मा आयुर्वेद-बृहस्पति]

[भारतीय साहित्यके अनेक ऐसे ही ऐतिह्य विषय हैं जिन पर पर्याप्त शोध एवं अन्वेषण अभी अपेक्षित है। कितनी ही बातों पर यद्यपि प्रकाश डालनेका अनेक प्रकारसे विद्वानोंने प्रयत्न किया है, तथापि अभी मतैक्य नहीं हो सका है। ऐसे ही एक विषयका प्रस्तुत लेखमें विवेचन किया गया है। रुक्मिणी हरणका क्षेत्र यदि किसी प्रकार उत्तरप्रदेशवर्ती कुंडिनपुर स्थान (जि० अनूपशहर) मान लिया जाय तो कुशस्थली (द्वारका) से उसका अन्तर इतना अधिक है कि एक ही दिन में आना और 'हरण' कर लेना मानवीय शक्तिका 'अति' ही है। साथ ही यदि इसे न माना जाय तो प्रश्न हो सकता है कि इसका नाम 'अहार' क्यों पड़ा और 'रुक्मिणी कुण्ड' जिस रुक्मिणी के नाम पर इस कुण्डका नामकरण हुआ है वह कौन थी? हम चाहते हैं कि इस लेख पर अधिकारी विद्वान् गवेषणात्मक दृष्टिसे विचार करें। इस सम्बन्धमें हमें भी कुछ अन्य ऐतिहासिक सूत्र प्राप्त हुए हैं जिनका यथासमय हम बादमें उद्धरण करेंगे।]

—सम्पादक

श्रीकृष्ण भगवान्‌की सत्या, सत्यभामा, लक्ष्मणा आदि आठ पटरानियोंमें एक रुक्मिणी भी थी। रुक्मिणीके पिता राजा भीष्मकने चेदि देशके राजा शिशुपालके साथ रुक्मिणीका विवाह करना निश्चय किया था। किन्तु रुक्मिणीको शिशुपालकी पत्नी बनना स्वीकार नहीं था। वह श्रीकृष्ण भगवान्‌को अपना पति बनाना चाहती थी। अतः बुद्धिमती रुक्मिणीने विवाहसे एक दिन पूर्व किसी ब्राह्मणको संदेशवाहक बनाकर श्रीकृष्णके पास द्वारकामें भेजा। ब्राह्मणने द्वारका जाकर श्रीकृष्णको आद्योपान्त समाचार सुनाया। उसने बताया कि शिशुपाल विवाहके निमित्त विदर्भ देशकी राजधानी कुंडिनपुरमें आगया है विवाह महोत्सवके उपलक्ष्यमें राजा भीष्मकके सम्बन्धीगण भी आचुके हैं। कल विवाहकी तिथि निश्चित है, केवल रात बीचमें है। अतः प्रार्थना है कि इतने अल्प कालमें ही विदर्भ देशकी राजधानी कुंडिनपुर पहुंचकर रुक्मिणीका बलात् अपहरण करके द्वारका लाना है। श्रीकृष्णने ब्राह्मणकी बातें आद्योपान्त सुनकर गंभीरतासे विचार किया। शिशुपाल श्रीकृष्णकी बुआका लड़का (भाई) था। वह मगधसम्राट जरासन्धके दलका सदस्य था। जरासन्धका दल पूर्वसे पश्चिम, दक्षिणसे उत्तर समस्त भारतमें व्याप्त था जिसका श्रीकृष्ण कुछ काल पूर्व मथुराके युद्धमें अनुभव कर चुके थे। बात यह थी कि जरासन्धकी अस्ति और और प्राप्ति दोनों पुत्रियोंका विवाह कंसके साथ हुआ था। कंसको श्रीकृष्णने मार दिया इसीका बदला लेनेके लिए जरासन्धने २२ अक्षौहिणी सेनाके साथ मथुरा पर आक्रमण किया था जिसमें गान्धार (कन्धार) के नग्नजित, काश्मीरके राजा गोनर्द तक सम्मिलित थे। अन्तमें सपरिवार मथुरा छोड़कर श्रीकृष्णको द्वारका आनेके लिये बाध्य होना पड़ा था। इसके अतिरिक्त राजा भीष्मक स्वयं भी कम बलवान नहीं था वह स्वयं तथा उसका पुत्र रुक्मी दोनों ही महारथी थे एवं बहुत बड़े साम्राज्यके स्वामी थे। तथा ये भी जरासन्धके दलके थे और इन सब बातोंसे बढ़कर देवराज इन्द्रके मित्र भी थे। इन सभी बातों पर श्रीकृष्णने विचार करके ब्राह्मणको साथ ले रथमें बैठ कर कुंडिनपुरको प्रस्थान कर दिया था। वहां जाकर रुक्मिणीका हरण किया जो योद्धा लड़ने आये उनको समाप्त किया। रुक्मीने प्रतिज्ञा की थी कि यदि श्रीकृष्णका वध न करूंगा तो वापिस कुंडिनपुर नहीं आऊंगा। वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेमें असमर्थ रहा अतः वह कुंडिनपुर वापिस नहीं गया बल्कि मार्गमें ही उसने भोजकट नामक नगरमें अपना निवासस्थान बना लिया था। यह है संक्षेपमें कथा रुक्मिणीके विवाह की। किन्तु कुछ लोगोंका विचार है कि रुक्मिणीकी जन्मभूमि अहार थी, और अहारका प्राचीन नाम कुंडिनपुर था। श्रीकृष्णने रुक्मिणीकी प्रार्थना पर द्वारकासे आकर रुक्मिणीका हरण किया था इसी आधार

पर कुंडिनपुरका नाम अहार होगया था।

किन्तु मेरा निश्चित मत है कि न तो रुक्मिणीका जन्म स्थान अहार है, न यह विदर्भ देश है, न यहांका राजा भीष्मक था, और न यहांसे श्रीकृष्णने रुक्मिणीका हरण ही किया था। ये सभी मान्यताएं कपोलकल्पित निराधार एवं निःसार हैं।

अहार

वर्तमान उत्तर प्रदेशके ५२ जिलोंके अन्तर्गत एक बुलन्दशहर जिला है। बुलन्दशहरसे २७ मील उत्तरपूर्व गंगाके किनारे अहार नामका एक ग्राम है। अहारसे ६ मील पूर्व गंगा तट पर अनूपशहर है। अनूपशहरके गंगापार बदायूं और अहारके गंगापार जि० मुरादाबाद है। अहारमें एक अम्बिकेश्वर नामक महादेव जीका मन्दिर है। शिवचतुर्दशीको यहां पर अच्छा मेला लगता है। अहारमें ही गंगातट पर एक छोटा सा अवन्तिका नामकी देवीका मन्दिर है यहां पर चैत्र और आश्विन शुक्ल नवरात्रोंमें भी मेला लगता है। मन्दिरसे मिला हुआ ३०० बीघा सघन बन है यहां पर नील गायोंका निवास है। मन्दिरके समीपही एक कुण्ड है जो रुक्मिणीकुण्डके नामसे प्रसिद्ध है। यह है अहारकी स्थिति, अब हमको महाभारतकालीन उत्तरप्रदेश जिसको कि उस युगमें मध्यदेश कहते थे उस पर विचार करना है। मध्यदेश प्रयागसे कुरुक्षेत्र तकका पूर्व पश्चिम भूभाग कहाता था, उत्तरप्रदेश पूर्वमें कुछ अधिक और पश्चिममें कुछ कम रह जाता है। महाभारत कालमें उत्तर प्रदेशमें निम्नलिखित राज्य अथवा देश थे।

काशी, भर्ग, वत्स, दक्षिण कोशल, उत्तर कोशल, दक्षिण पाञ्चाल, उत्तर पाञ्चाल, शूरसेन, दक्षिण कुरु जनपद उत्तर कुरु जनपद और किरात। इस प्रकार महाभारतकालीन उत्तर प्रदेशमें ११ देश अथवा राज्य थे जिनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है। काशी देशकी राजधानी काशीमें थी। भर्ग देशकी जि० मिर्जापुर। वत्स देशकी जि० प्रयाग। दक्षिण कोशलकी राजधानी सम्भवतः जबलपुरके आसपास थी। दक्षिण कोशलकी राजकुमारी, दशरथ पत्नी भगवान श्रीरामचन्द्रकी माता थीं। कोशल देशके नाम पर ही कौशल्या कहाती थीं। उत्तर कोशलकी राजधानी अयोध्या थी। उत्तर कोशलकी भी दो राजधानी होगई थीं। श्रीरामके पुत्र 'लव'की अयोध्यासे २४ मील दूर श्रावस्तीमें जिसको सहेट महेट कहते हैं। और कुशकी अयोध्या रही, हालांकि कुछ काल तक कुश की भी कुशावती रही किन्तु कुछ काल बाद कुशावतीको छोड़कर पुनः कुशने अयोध्याको ही बना लिया था। 'लव'का वंश अन्त तक श्रावस्तीमें रहा। श्रावस्तीका राजा बृहद्बल भारतयुद्धमें दुर्योधनके पक्षमें लड़ा और अभिमन्यु द्वारा मारा गया। बौद्धकालमें श्रावस्तीका राजा प्रसेनजित् था जिसको बौद्ध साहित्यमें 'पसेनदि' नामसे लिखा है। महाभारतकालमें अयोध्याका राजा नग्नजित् था इसकी पुत्री सत्यासे श्रीकृष्णका विवाह हुआ था। दक्षिण पाञ्चालकी राजधानी कांपिल्य नगर जि० फरूक्खाबादमें थी आज वह नगर नहीं ग्राम मात्र है। यहां पर राजा द्रुपद राज करता था। इसी द्रुपदकी पुत्री द्रौपदीसे पांडव अर्जुनका विवाह हुआ था। कांपिल्यसे ३० मील उत्तर अहिच्छत्रपुर जि० बरेलीमें थी इस पर द्रोणाचार्यका अधिकार था। शूरसेन देशकी राजधानी मथुरा थी। यहांके राजा उग्रसेन अथवा कंस थे। इस देशमें बड़े सघन बन थे। वृन्दावन, काम वन, भांडीर वन, महावन, मांट वन और लोह वन आदि नामके १२ प्रसिद्ध वन थे। कुरुदेश अथवा जनपदकी राजधानी हस्तिनापुर जि० मेरठमें थी। इसमें दुर्योधनका राज्य था। द्रौपदीका अर्जुनके साथ विवाह होजानेके बाद कुरु राज्यके उत्तरी और दक्षिणी दो भाग होगये थे। पाँडवोंको पांचाल राज द्रुपदका बल मिलने पर धृतराष्ट्रने पांडवोंको इन्द्रप्रस्थ (देहली) का क्षेत्र दे दिया था। इसीके समीप कहीं दक्षिणकी तरफ खाण्डवप्रस्थ था इन्द्र यहांका शासक था। जिस प्रकार भारतमें चन्द्रनगर, पाण्डीचेरी आदि फ्रौंसके उपनिवेश थे। और गोआ डामन डीव पुर्तगालके उपनिवेश हैं। उसी प्रकार खाण्डवप्रस्थ देवोंका भारतमें उपनिवेश था। इसमें देव, मानव, दैत्य, दानव, राक्षस, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, गरुड़ और नाग जातिके मनुष्य रहते थे। यह खाण्डवप्रस्थ पाण्डवोंके लिए चिन्ताका विषय था। अर्जुनने इस सम्बन्धमें श्रीकृष्ण भगवान्से परामर्श किया, परामर्श करनेके बाद श्रीकृष्णको साथ लेकर खाण्डवनमें आग लगा दी। पन्द्रह दिन तक वन और प्राणी जलते रहे जो प्राणरक्षार्थ इधर उधर भागते थे; वे श्रीकृष्ण और अर्जुन

के बाणोंका निशाना बनकर मरते थे। यहां तककि तक्षक नागकी स्त्री भी अर्जुनके बाणसे न बच सकी। तक्षक उस समय खाण्डवप्रस्थमें नहीं था वह कुरुक्षेत्रमें था। तक्षक का पुत्र अश्वसेन नाग निकल कर 'पाताललोक' (दक्षिण भारत) में चला गया था। इस प्रकार केवल ७ प्राणी बचे थे। तक्षक नागका पुत्र अश्वसेन, तक्षक नाग, मयदानव और चार पुत्र ब्राह्मणके थे। इनमें मयदानव शिल्पी था। इसीने युधिष्ठिरकी राज्य सभा बनाई थी। जब यह खाण्डव प्रस्थ जल रहा था तब खाण्डवप्रस्थके रक्षक देवोंने इसकी सूचना स्वर्गमें जाकर इन्द्रको दी। स्वर्गका दूसरा नाम त्रिविष्टप है जिसका अपभ्रंश तिब्बत है। इन्द्र देवोंकी सेना लेकर खांडवप्रस्थमें अर्जुनसे युद्ध करने आये किन्तु कृष्णके सामने न डट सके पराजित होकर भागना पड़ा, साथ ही उपनिवेशसे हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार खांडवप्रस्थ पर पांडवोंका अधिकार हो गया। दानव 'मय' ने (जो शिल्प-शास्त्रके अद्वितीय पंडित थे) युधिष्ठिरकी राज्य सभा का निर्माण किया। यह राज्य सभा इतनी ही उत्तम थी जितनी कि तिब्बतमें इन्द्रकी। फिर युधिष्ठिरने ठाठके साथ राजसूय यज्ञ किया उसमें न केवल भारतके बल्कि बृहत्तर भारतके राजाओंको परास्त किया। उनसे भेंट ग्रहण की तथा दिगन्तव्यापी ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार पांडवों ने अन्धे धृतराष्ट्रकी उस योजनाको भी निष्फल कर दिया जो कि उसमें पांडवोंको इन्द्रप्रस्थ देनेमें सोची थी। धृतराष्ट्र ने पांडवोंको इन्द्रप्रस्थ सचाई, सद्भावनासे नहीं दिया था उसमें उसकी दुर्भावना थी। धृतराष्ट्रने समझा था कि इन्द्रप्रस्थके समीप ही खाण्डवप्रस्थ है। वह देवों का उपनिवेश है। यहांका शासक इन्द्र है, यहांके निवासी देव, दैत्य दानव, गन्धर्व, गरुड़, राक्षस और नाग हैं, ये सभी योद्धा, उद्धत तथा दिव्यास्त्रोंके ज्ञाता हैं। कभी न कभी इनमें संघर्ष होना अनिवार्य है, और यदि संघर्ष छिड़ गया तो सहज ही इनका नाश हो जायगा। किन्तु धृतराष्ट्र सम्भवतः यह भूल गए होंगे कि पांडवों के सहायक श्रीकृष्ण हैं। उन्होंने कालिय जैसे दुर्दान्त नागको नाथ कर अर्थात् दमन करके वृन्दावनसे उसके मूल स्थान 'रमणक द्वीप' भेज दिया था। अनेक असुरोंको मारा था, देव जातिके 'वरुण' को उसी के घर पर पश्चिम समुद्रके किनारे जाकर पराजित किया था, अनेक बार देवराज इन्द्रको युद्धमें परास्त किया था। स्वयं इन्द्रको भी आसामके राजा नरकका दमन करने के लिए श्रीकृष्णकी सहायताके लिए द्वारका जाना पड़ा था। ऐसे कृष्ण जिसके सहायक हों उनका खांडवप्रस्थवासी क्या बिगाड़ सकते थे। हुआ भी यही, श्रीकृष्णकी सहायतासे समस्या सहज ही सुलझ गई। और मुफ्तमें खाण्डवप्रस्थ भी मिलगया। हां निस्सन्देह एक बातमें धृतराष्ट्र अवश्य सफल हो गया। नाग पांडवोंके वंशानुवंश मात्र बच गए। अश्वसेन नाग जो खाण्डवप्रस्थ दाहके समय पाताल (दक्षिण भारत) चला गया था। इसके ४० वर्ष बाद भारत युद्धमें अर्जुन से बदला लेनेके लिए कर्णार्जुन युद्धके समय कर्णके पास आया था और बड़े बड़े दाहक बाण लाया था। किन्तु उस समय वह अर्जुनके केवल किरीट कुण्डल ही जला सका अर्जुनको न मार सका। यहां वह असफल प्रयत्न रहा। किन्तु निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर नाग महाभारतके ६० वर्ष बाद अर्जुनपौत्र परीक्षितके मारनेमें सफल हो गए। यह वैर यहीं समाप्त न हो गया। इसके लगभग ३०-३५ वर्ष बाद परीक्षित पुत्र राजा जनमेजयने नाग जातिका कदन किया इसमें तक्षकको भी समाप्त करना चाहते थे किन्तु दौर्भाग्यसे तक्षक नागका सहायक इन्द्र बन गया और अन्त में जरत्कारु ऋषिके पुत्र आस्तीकने जनमेजय पर प्रभाव डालकर इस कदनको समाप्त करा दिया था। आस्तीक के मध्यस्थ बननेका कारण यह था कि उसकी माता मानसीदेवी वासुकि नागके वंशकी कन्या थी। पुराण और इतिहास में इन नागोंके कदन —'कत्लेआम' को नाग यज्ञ अथवा सर्प यज्ञ नामसे लिखा है।

सुबाहुका राज्य

सुबाहु किरात देशका राजा था। यह राज्य हरद्वार से आगे देहरादूनके आस पास कहीं पर्वतीय प्रदेशमें था। बनवास कालमें पांडव, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, भीम और द्रौपदी गन्धमादन वन और विशाला पुरीसे जब गए थे तब सुबाहुके ही यहां ठहरे थे। सुबाहुने इनका हार्दिक स्वागत किया था। और यहीं पर अपने नौकर चाकर रथ और सारथीको भी छोड़ गए थे। और जब गन्धमादन वनसे वापिस आये थे तब भी अपना रथ और नौकर चाकरों को साथ ले आये थे। बात यह थी कि उस समय अर्जुन त्रिविष्टप (तिब्बत) में इन्द्रके यहां दिव्यास्त्रोंकी शिक्षा

प्राप्त कर रहा था उसने पांच वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की थी। उस समय तक युधिष्ठिर आदि अर्जुनसे मिलनेके लिए विशालापुरी अथवा गंधमादन पर्वत पर चले गये थे ताकि अर्जुनसे मिल सकें, गन्धमादन वन अथवा पर्वत बद्रीनाथ के क्षेत्र को कहते हैं। महाभारत कालमें यहां पर विशाला नामकी एक सुसमृद्ध नगरी थी। यहां पर देवर्षि और मानव ऋषियोंका पर्याप्त जमघट रहता था।

यह है स्थिति उत्तरप्रदेशकी जिसमें ११ राज्य थे इनमें भी कुरुजनपद सबसे बड़ा था। । ठीक तो नहीं अनुमानसे अलीगढ़, बुलन्दशहर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, देहली के समीपके क्षेत्र गुड़गांवा, झांसी, हिसार, अम्बाला और कुरुक्षेत्र तक कुरुजन पदमें था।

प्रसंगवश यह कहना भी उचित होगा कि कुरुक्षेत्र की राजधानीभी कभी कुरुक्षेत्रमें ही थी। कौरव पाण्डवों के पूर्वजोंमें एक कुरुक्षेत्र नामका राजा हुआ। उसने प्रतिष्ठानपुर (झूंसी प्रयागके पास) से राजधानीको हटा कर कुरु जंगल देश अर्थात् कुरुक्षेत्रमें स्थापितकी। इसी आधार पर इसका नाम कुरुक्षेत्र हुआ था। इसकी सन्ततिमें हस्ती हुआ था। उसने अपने नाम पर हस्तिनापुर नगरकी स्थापना की। फिर युधिष्ठिर के बाद ८ वीं पीढ़ी पर होने वाले निचक्षुने अपनी राजधानी कौशाम्बी (जिला प्रयाग) में जा बनाई। कौशाम्बी को आजकल कोसम कहते हैं। यह प्रयागसे १५ मील दक्षिण पश्चिममें है। इस प्रकार वंशके मूल पुरुष ययाति की जो राजधानी प्रतिष्ठानपुर (झूंसी) थी उसीके समीप पहुँच गए। बौद्धकालमें भी कौशाम्बी एक सुसमृद्ध नगरी थी। उस युगमें वहांका राजा उदयन था। उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि अहार (जि० बुलन्दशहर) निश्चित रूपसे कुरुजनपदमें था। जिसका राजा दुर्योधन था। न उत्तरप्रदेश में विदर्भ देश था, न कुन्डिनपुर नगर और न कोई राजा भीष्मक था फिर वहां रुक्मिणी हरणका प्रश्न ही नहीं।

विदर्भ देश

वस्तुतः बात यह है कि दक्षिण भारतमें विदर्भ नाम का देश था। वह यदु वंशी राजा विदर्भ के नाम पर प्रसिद्ध हुआ। इसको आजकल 'बरार' कहते हैं। आजकल यह मध्यप्रदेश में है। यहां के प्रधानमंत्री माननीय रविशंकर शुक्ल जी हैं। किन्तु प्राचीन विदर्भ केवल बरार ही नहीं था। इसमें खान देश तथा निजाम राज का उत्तरी भाग भी सम्मिलित था। महाभारत काल में यह भी कुरुजनपदसे कम विशाल नहीं था। निजाम राज्यमें ही कुंडिनपुर नगर है। यहीं पर यदुवंशी भोजकुलोत्पन्न राजा भीष्मक राज्य करता था। भीष्मक असाधारण बलवान् मगधसम्राट् जरासन्धके दल का तथा देवराज इन्द्र का मित्र था। इसकी पुत्री रुक्मिणी तथा रुक्मी, रुक्मरथ आदि ५ पुत्र थे। यहीं से रुक्मिणी का हरण हुआ था जिसके प्रमाण निम्नलिखित हैं—

हरिवंश में लिखा है कि एक बार परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने ऋषिवैशम्पायनसे पूछा था कि रुक्मिणी किस देश और किस वंशमें उत्पन्न हुई थी इसके उत्तरमें वैशंपायन ने कहा है कि—

> राजर्षेर्यादवस्यासीद् विदर्भो नाम वै सुतः
> विन्ध्यस्य दक्षिणे पार्श्वे विदर्भस्तु न्यवेशयत्।
> क्रथ कौशिक मुख्यास्तु पुत्रास्तस्य महाबलाः।
> तस्यान्वये तु भीमस्य जज्ञिरे वृष्णयो नृपाः।
> क्रथस्य त्वंशुमान् वंशे भीष्मकः कैशिकस्य तु।
> हिरण्यरोमेत्याहुर्यं दाक्षिणात्येश्वरं नृपः।
> अगस्त्यगुप्तामाशायां कुंडिनस्थोऽन्वशान्नृपः।
> रुक्मीत स्याभवत् पुत्री रुक्मिणी च विशां पते!
> (हरिवंश २।५८)

अर्थात् यदुके वंशमें एक विदर्भ नामका राजा हुआ उसने विंध्याचल पर्वतके दक्षिणकी तरफ अपने नाम पर विदर्भ देश बसाया। क्रथ और कैशिक नामके महापराक्रमी इसके दो पुत्र थे। इसी कैशिक वंशमें राजा भीष्मक हुआ। यह दक्षिण भारत के जनपद का राजा था और कुंडिनपुर नाम की इसकी राजधानी थी। पुत्रका नाम रुक्मी और पुत्रीका नाम रुक्मिणी था। इस प्रमाण से सिद्ध है कि विदर्भ देश विंध्यपर्वतके दक्षिणमें था और वह भी दक्षिण भारतमें था और अहार विंध्यके उत्तरमें और उत्तरी भारतमें है। भीष्मकको स्पष्ट रूप से दक्षिण भारतका राजा लिखा है "दाक्षिणात्येश्वरं नृपः" इसके अतिरिक्त "कुंडिन नगरके लिये ऋषि अगस्त्यसे

रक्षित दिशा दक्षिण दिशाका स्पष्ट रूपसे उल्लेख है "अगस्त्यगुप्तामाशायां कुंडिनस्थो" और अहार स्पष्ट ही उत्तरी भारत में हैं। इसके अतिरिक्त गर्ग-संहितामें भी लिखा है कि—

भीष्मको नाम राजा ऽभूद् विदर्भेषु प्रतापवान् ।
कुण्डिनाधिपति: श्रीमान् सर्वधर्म विदां वरः ।
रुक्मिणी तत्सुता जाता श्रियो मात्रातिसुन्दरी ।
गर्ग संहिता द्वारकावती खण्ड अ० ३ श्लोक ३

अर्थात् विदर्भ देशमें भीष्मक नामका राजा था कुंडिनपुर उसकी राजधानी थी और परमसुन्दरी रुक्मिणी नामकी उसकी कन्या थी। विदर्भ नरेश भीष्मक जरासन्ध का अनुयायी और देवराज इन्द्रका मित्र था। युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञके समय श्रीकृष्णने भीष्मक का परिचय देते हुए कहा है कि—

चतुर्थभाङ् महाराज भोजः इन्द्रसखो बली ।
सशक्तो मागधंराजा भीष्मकः परवीरहा ।
महाभारत सभापर्व अ० १४ श्लो० २२।

हे युधिष्ठिर! भोजकुलोत्पन्न राजा भीष्मक वह बलवान् है इन्द्र का मित्र है मेरा श्वसुर है किन्तु दौर्भाग्य से वह भी मगध सम्राट् जरासन्धका मित्र है। ऋग्वेद के ब्राह्मण 'ऐतरेय' में भोजवंशियोंका निवास दक्षिण भारत में लिखा है—"दक्षिणस्यां दिशि ये के च राजानो भोजत्येनानभिषिक्ताचक्षत" (ऐतरेय ब्राह्मण ३८।३)

मत्स्य पुराणमें भी विदर्भ देशको भारतके दक्षिण में ही लिखा है—"विदर्भो दण्डकै: सहदक्षिणापथवासिनः।" (मत्स्य०पु०११४।४८) इनके मूल पुरुष राजा यदुका भी राज दक्षिण भारतमें ही था। यही कारण है कि यदुवंशियोंके राज्य दक्षिण भारतमें ही रहे थे। विदर्भ चेदि (गवालियर) अवन्ति, निषध, माहिष्मती, दशार्ण (धसान) आदि इसके प्रमाण हैं। वास्तवमें यादवोंके एक सौ एक कुल थे। "कुलानां शतमेकं च यादवानां महात्मनाम्। (मत्स्य पुराण ४७।२८) जिनमें भोज अंधक वृष्टि और वीतिहोत्र आदि प्रधान हैं।

सूर्यवंशी राजा अज जोकि दशरथ का पिता था उसका विवाह भोज कुल की राजकुमारी इन्दुमती से हुआ था यह भी विदर्भ देश और कुण्डिनपुरकी ही थी। कवि कालीदासने रघुवंशमें इसका वर्णन बड़े रोचक ढंगसे किया है जब राजा अज अयोध्यासे कुण्डिनपुरको गये थे तब मार्गमें नर्मदा नामकी नदी पड़ी थी वहीं पर 'अज' ने विश्राम किया था। स्मरण रहे नर्मदा नदी दक्षिण भारत में है।

युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ

युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय सहदेवने दक्षिण भारतके राजाओंको विजय किया है। आइये तनिक इस पर भी दृष्टिपात कर लें। सहदेव ने दक्षिणमें उज्जैनके राजा विन्द और अनुविन्दको जीता (ये दोनों सहदेवके मौसेरे भाई थे) फिर एक दम सीधा किष्किन्धा (मैसोर स्टेट) पहुँचा वहांके द्विविद और मैन्द नामके वानर राजाओंको पराजित किया। फिर सुराष्ट्र या सौराष्ट्र (काठियावाड) के राजाको पराजित करके यहीं से कुण्डिनपुर वासी भीष्मक तथा भोजकटवासी रुक्मीको दूत भेजकर भेंट मंगवा ली। यह रुक्मी भीष्मकका ही पुत्र था। रुक्मिणीके विवाहके समयसे अपना पृथक् राज्य स्थापित कर लिया था जिसका वर्णन इस प्रकार है—

भोजकट का निर्माण

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं रुक्मिणीने एक ब्राह्मण द्वारा श्रीकृष्णको बुलाया था। श्रीकृष्णने संध्याके समय ही रथमें ब्राह्मणको बैठाकर द्वारकासे प्रस्थान कर दिया था। और वे प्रातःकाल कुंडिनपुर पहुंच गये थे। जैसे ही इस समाचार को बलदेवजी ने सुना तो फिर पीछेसे सेना लेकर बलरामजी भी कुंडिनपुर पहुंच गये। श्रीकृष्णने रुक्मिणी को रथमें बैठाकर द्वारकाको रथ हांक दिया। भीष्मक पुत्र रुक्मीने श्रीकृष्णका पीछा किया और प्रतिज्ञा की कि यदि श्रीकृष्णको मारकर रुक्मिणीको वापिस न लाऊं तो कुंडिन नगर में मुख न दिखाऊंगा। हुआ भी ऐसा ही। वहां अपना ही जीवन संकटमय हो गया। श्रीकृष्ण रुक्मीका सिर काट रहे थे तब रुक्मिणीने बचाया किन्तु फिर भी डाढी मूंछ मूंडकर रथमें बांधकर डाल लिया; तब बलराम जी ने छुड़ाया था। आखिर हारकर प्रतिज्ञानुसार अपने वंश के नाम पर भोजकट नगर बसाकर रहने लगा।

"चक्रे भोजकटं नाम निवासाय महत्पुरम्।
भागवत १०।३४।

इसके बाद संबंध अच्छे हो गये तब रुक्मीकी पत्री

रुक्मवतीसे कृष्णके पुत्र प्रद्युनका विवाह हुआ और रुक्मीकी पौत्री रोचनासे कृष्ण पौत्र अनिरुद्धका विवाह इसी भोजकटमें हुआ था ।

आजकल कुंडिनपुर निजाम राज्यमें है इसको 'कुण्डिलवती' कहते हैं। और भोजकटको भोजपुर कहते हैं । इन सबके अतिरिक्त महत्वपूर्ण एक बात और भी है। रुक्मिणीका दूसरा नाम वैदर्भी भी है । यह देशद्योतक नाम है । अर्थात् विदर्भ देशकी होनेके कारण वैदर्भी नाम है । जैसे कोशल देशकी कौशल्या, केकय देशकी केकयी. मद्रदेश को माद्री, पांचाल देशकी पांचाली (द्रौपदी) गान्धार देशकी गान्धारी । यदि रुक्मिणी अहारकी होती तो कुरुदेशकी होनेके कारण 'कौरवी' नाम होता न कि वैदर्भी ।

इसके अतिरिक्त यदि अहार ही कुण्डिनपुर होता तो अहार ही क्यों इसका भी कोई विकृत रूप होता जैसा कि निजाम राज्य में आज भी 'कुंडिलवती है' इसी का क्या जितने भी प्राचीन नगर या देश हैं उनके द्योतक विकृत रूप आज भी हैं जैसे—त्रिविष्टप का तिब्बत, गांधारका कंधार, पुरुषपुर पेशावर, भृगुकच्छ का भड़ौंच, वैशाली का वसाढ, विदिशा भेलसा, विरोचन स्थानका बिलोचिस्तान, हिरण्यपुरका हरनाई (प्रह्लाद की जन्मभूमि) शाकलका स्यालकोट, कौशाम्बीका कोसमा आदि आदि ।

पुराण इतिहास

खेद तो यह है कि इस प्रकारकी गड़बड़ी लेखकोंके प्रमादसे, बारहसौ वर्षके निरन्तर बने रहे विदेशी शासन से विशेषकर मुसलिम राज्योंसे जिन्होंने भारतीय साहित्य को जी भर कर अनेक प्रकार से नष्ट किया था हमारे इतिहास और पुराण भी नष्ट भ्रष्ट तथा पाठ भ्रष्ट हो गये हैं। संसारमें एक ही अथवा अनेक समयोंमें एक ही नाम के अनेक व्यक्ति हुए हैं या हो रहे हैं तथा होते रहेंगे उनको एक हो मान बैठना भारी भूल है।

सम्भव है कुछ शताब्दी पूर्व किसी रुक्मिणी नाम की स्त्रीका अहारसे भी हरण हुआ हो तो उसको कृष्ण पत्नी वैदर्भीसे मिलाना भारी भूल है, तथा इतिहासको विकृत करना है।

वायदा-व्यापार के लिए आवश्यक जानकारी

[ले० श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य]

वायदा-व्यापारकी आवश्यकता क्यों हुई—व्यापारियोंने जब यह देखा कि हाजिर मालका व्यापार करनेके लिए अनेकों झंझटोंका सामना करना पड़ता है—(१) क्रय करनेके लिए अधिकसे अधिक नकद रुपयेकी आवश्यकता है। (२) यदि आवश्यकतानुसार एक ही स्थान पर माल न मिल सका तो अन्य स्थानों पर माल ढूंढकर क्रय करना पड़ेगा इस प्रकार कई स्थानोंका माल होनेसे एक भाव और एक प्रकारका माल होना असम्भव सा है। (३) कार्य के लिए बहुतसे व्यक्तियोंकी आवश्यकता होगी। (४) माल के संग्रहके लिए गोदाम व खत्तियाँ चाहिए। (५) हवा पानी या वर्षासे कोई हानि न हो ऐसे साधन करने होंगे। (६) माल को मंतव्य स्थान पर भेजना होगा उसके लिए बहुत व्यय वहन करना होगा। (७) सम्भव है जब माल विक्रय करना हो तब क्रय करने वाले व्यापारी न मिल सकें ऐसी परिस्थितिमें माल सस्ता बेचना पड़े। (८) संभव हो सकता है कि बाजार भाव इतना नीचा गिर जाय कि व्यापारी घबड़ाकर अधिक उठाते हुए मालको विक्रय करनेके लिए बाध्य हो जावे। (९) माल अधिक दिनों तक पड़ा रहनेसे उसमें कीड़े आदि लग जावें या ऋतु परिवर्तन का कुप्रभाव हो जानेका भय हो। (१०) हमारे ऋणके सूद की भी हानि होगी यदि माल एक लम्बे समय तक विक्रय न हो सका हो। (११) हमें मंतव्य माल फसल पर ही सुविधापूर्वक मिल सकेगा और शेष दिनोंमें कठिनाईसे एवं विक्रय करने वालेकी इच्छासे ही प्राप्त होगा—आदि अनेकों और भी झंझटें हैं। हाजिर मालके व्यापारमें लाभकी दृष्टिसे व्यापार करने पर आगे चलकर घाटा उठानेकी समीक्षा सामने आजाती है।

इन सभी झंझटोंसे बचनेके लिए एवं शीघ्रसे शीघ्र तथा अधिकसे अधिक लाभ होनेके लिए व्यापारियोंने वायदा-व्यापार चालू किया। इसमें थोड़ी सी पूंजीसे अधिक व्यापार हो सकता है एवं पत्रव्यवहार द्वारा भी संतोषजनक व्यापार किया जा सकता है, तथा हर प्रकार की सुविधायें रहती हैं। यदि सौदा होने के आधे घंटे बाद भावोंमें भारी घट-बढ़ हो गई तथा लाभ दिखने लगे तो उसी समय ही सौदा समाप्त किया जा सकता है। बहुत से ऐसे व्यापारी हैं जिन्हें निश्चित समय पर मालकी आवश्यकता है वे भी इस व्यापारसे माल ले सकते हैं कारण जो वायदा डिलेवरीका समय होता है यदि उस समय तक ले-बेचकर व्यापार समाप्त नहीं किया गया तो मालकी डिलीवरी मिल जाती है और एशोसियेशनके नियमानुसार मालकी क्वालिटी आदि रहा करती है जिससे किसी प्रकार का आरोप करनेका कोई भी अवसर नहीं आ सकता। तदुपरान्त माल तैयारीके रूपमें मिल जाता है एवं तब तक माल संभाल रखनेकी चिन्ता नहीं होती। इस प्रकारकी और भी सुविधा बनानेके लिए छोटी-बड़ी पूंजी वाले सभी लोग सम्मिलित हो सकें इस दृष्टिसे इसमें तेजी-मंदी के व्यापारको भी स्थान दिया गया है।

तेजी-मंदी

व्यापारिक केन्द्रोंमें लोगोंकी तेजी-मंदी के सौदे करते हुए अवश्य ही देखा होगा तथा यह भी सुना होगा कि अमुक-अमुक व्यक्तियोंने तेजी-मंदीमें अमुक धन लगाकर इतना लाभ उठाया इस प्रकारके व्यापारको देखकर बहुत से व्यापारी अचंभित रह जाते हैं कि यह क्या है? जो इतने ही अल्प समयमें मनुष्यको धनवान् बनानेमें समर्थ है। यह है तेजी-मंदी।

बड़े-बड़े व्यापारिक केन्द्रोंमें जहां व्यापारकी कोई सीमा नहीं होती—व्यापारी वर्ग नाना प्रकारके व्यापार करके जीवनके उच्चतम शिखर पर शीघ्र पहुंच जाते हैं ऐसे वह कई प्रकारके धंधे करते हैं उनमें बहुत से ऐसे धंधे हैं जो वायदा-व्यापारसे होते हैं। तेजी-मंदीके सौदोंका अर्थ व्यापार में हानिकी सीमाकी निश्चित कर देना है, अपनी हैसियतके अनुसार हरेक छोटेसे छोटा और बड़े-से-बड़ा व्यापारी इस व्यापारको करके सीमासे अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है और इसी ही लिए तेजी-मंदी के सौदे चालू

किए गए हैं कि लखपतीसे लेकर दस रुपयेकी पूंजी वाला भी वायदे व्यापारके लाभसे वंचित न रह सके। आजकल सभी व्यापारिक केन्द्रोंमें तेजी-मंदीके सौदे बहुत ही अधिकता से हो रहे हैं।

तेजी-मंदी लगाकर व्यापार करनेसे दुतरफा लाभ

तेजी-मंदी लगाकर व्यापार करनेसे सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि भाव चाहे जितना भी नीचा या ऊंचा जाय लाभ ही रहेगा। विशेष लाभ यह होता है कि तेजी-मंदी पेटे यदि अपने मन्तव्य घट-बढ़ चले तो चाहे जितनी बार खुला लेवान या बेचान करके लाभ उठाया जा सकता है, और उस लेवान या बेचान कर लेनेके बाद बाजार अपने विरुद्ध भी हो गया तो हानि की कोई सम्भावना नहीं रहती।

एकतरफा तेजी

जिस प्रकारसे नजराना दोनों ओर के बाजारों अर्थात् तेजी-मंदीको बांधकर लगाया जाता है उसी प्रकारसे एकतरफा तेजी एक ओर के बाजारको बांधकर लगाया जाता है। जब कभी बाजार लम्बी तेजीके रूपमें चलता है तब यह सौदा करना बहुत ही लाभदायक सिद्ध होता है इस प्रकारके सौदोंमें नजरानेके धनसे प्रायः आधा धन लगाना पड़ता है, नजरानेके अनुसार इसमें भी बाजारकी घट-बढ़ के अनुसार अवसर आनेसे उसके पेटे खुली ले-बेचान करके अच्छा लाभ उठाया जा सकता है।

एकतरफा मन्दी

जिस प्रकार एकतरफा तेजीमें बाजार बढ़ने पर लाभ होता है उसी प्रकार एकतरफा मंदीमें बाजार घटने पर लाभ हुआ करता है। प्रायः सौदोंकी सूरत एकतरफा तेजी अथवा एकतरफा मंदी—लगानेमें एक सी है। एकतरफा तेजी लगानेमें भी नजराने (तेजी-मंदी) के धनसे प्रायः आधा धन लगा करता है और घट-बढ़के अनुसार ले-बेच करने के भी अनेकानेक अवसर प्राप्त होते हैं।

व्यापार के सम्बन्ध में अन्य जानकारी

एक्सचेंज—दो देशोंके बीचमें नाणाकीय (आर्थिक मुद्रा) चलनके सम्बन्धोंको एक्सचेंज कहते हैं। अलग-अलग देशोंमें अलग-अलग नाम और तौलका सिक्का प्रचलनमें होता है और उसमें सोनेका प्रमाण भी अलग-अलग मात्रामें रहता है जिससे एक देशका सिक्का दूसरे देशमें प्रचलन नहीं हो सकता। वर्तमान समयमें संसार के सभी देशोंमें नोटोंका चलन बढ़ गया है, एक देशके नोट दूसरे देशमें एक साधारण कागज से विशेष मूल्यवान् रहता नहीं है, उसी कारणसे आपसमें लेन-देन और व्यवहार के लिए दो देशोंके बीचमें सिक्कों या अन्य प्रचलन का एक विनिमय दर भुगतान करनेमें आता है और उसी प्रकार दोनों देशोंके बीच एक्सचेंज द्वारा व्यापार चलता है।

बहुत से देश संयुक्त नियम द्वारा हुँडियोंकी एक निश्चित दर निश्चय कर लेते हैं। जिस देशका निर्यात, तथा आयात अधिक होता है तो उस देशकी आयात माल के बदलेमें जितना मूल्य विदेशोंको देना पड़ता है उससे अधिक मूल्य निर्यात मालकी वस्तुएँ विदेशोंसे आती है इसका परिणाम मुख्यतः यह रहता है कि निर्यात करने वाले देशके चलनकी मांग विशेष रहती है और विनिमय दरमें उस चलन का मूल्य बढ़ता है और आयात करने वाले देश का मूल्य घटता है। इससे विपरीत यदि व्यापार उस देशके विरुद्ध रहें तो अधिक आयात करनेके बदलेमें विदेशोंको विशेष सोना देना पड़े तो उस देशकी हुंडियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार देशकी राजनैतिक अशांति अथवा दूसरी आर्थिक कमजोरी से भी देशके चलनका मूल्य घटता है।

भारतका सिक्का रुपया है, उसका ब्रिटिश पाउण्डके साथ १ शिलिङ्ग ६ पेंस की दर पर बहुत समयसे आपसमें संयुक्त नियम द्वारा विनिमय दर निश्चित है अर्थात् इंगलैंड के साथ के लेन-देन में रुपयेका मूल्य १ शि० ६ पे० के ऊपर नहीं जा सकती, वैसे ही नीचे नहीं आ सकती। सन् १९२५ से यह दर चल रही है, बीचमें इस दरको घटाकर १ शि० ४ पेंस आन्दोलन करनेसे हो गए थे परन्तु इस प्रकार करना इंगलैण्ड को लाभप्रद नहीं होने से सरकारने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। वैसे ही इंगलैण्ड भारतसे लेनदार देश था (ब्रिटिश पूंजीका ब्याज) इंगलैंड को पहुँचनेसे एक रुपया का बदला १ शि० ६ पें० मिलते हैं जबकि ब्रिटिश मालके १ पौण्डके बदलेमें भारतीयोंको लगभग १३।) देना पड़ता है। गत महायुद्ध में हिन्दके नोटोंके प्रचलनमें बढ़ावा

करके रुपयाका माल इङ्गलैण्ड पहुँचा और उस कारण भारत इङ्गलैण्डका देनदारके बदलेमें लेनदार हो गया। सन् १९४७में भारत स्वतंत्र होने से बहुत से लोग १ शि० ४ पें० की दर करनेकी माँग करने लगे परन्तु उसमें लाभ नहीं होने से दोनों देशोंके बीच आयात-निर्यात के सम्बन्ध पूर्ववत् चालू रहनेसे हुंडियोंके दरको भी यथावत् चालू रखना ही वर्तमान भारत सरकारने भी उचित समझा है।

दो देशोंके बीचके परस्पर सम्बन्ध और हुण्डीके भाव को "क्रासरेट" कहते हैं। क्रासरेटकी घट-बढ़के अनुसार उन देशोंके चलनका मूल्य दूसरे देशोंके चलनके अनुसार घटते-बढ़ते रहते हैं।

द्वितीय महायुद्धके पूर्व इङ्गलेण्ड और अमेरिकाके बीच क्रासरेट १ पौण्ड=४.८५ डालर था। आजकल उन्हीं देशोंके बीच १ पौण्ड=२.८० डालरके लगभग है इसका अर्थ यह है कि डालरका मूल्य बढ़ गया और उसके प्रमाणमें पौण्डका मूल्य घट गया इस कारण अमेरिकाकी वस्तुएँ इंगलेण्डमें मंहगी पड़ने लगीं और इङ्गलेण्डकी वस्तुएँ अमेरिकामें सस्ती पड़ने लग गई। भारतवर्षका रुपया भी इङ्गलैण्डके पौण्डके साथ सम्बन्धित होनेसे इसका मूल्य डालर के प्रमाणमें घट गया जिससे कि अमेरिकाका माल भारतमें मंहगा और भारतका माल अमेरिकामें सस्ता पड़ने लग गया। सन् १९४१ में १०० डालरके ३३३ रुपए चुकाने पड़ते थे। वर्तमान समयमें १०० डालरके ४८० रुपये देने पड़ते हैं। इस प्रचलनकी घटा-बढ़ीके कारण भावोंमें तेजी अधिक आती है जबकि मंदीको केवल रियेक्शनका ही अवसर मिलता है।

सोना-चांदी के बाजारोंके भावको घट-बढ़का आधार केवल क्रासरेटमें परिवर्तन होना है। गत दो वर्षोंमें यानी १९५५-५६ के बम्बई मारकेटसे अमेरिका अरंडी, अलसी, मूंगफली, तेल मूंगफली का निर्यात बड़ी तेजीके साथ कर रहा है। इसका कारण भारतीय तिलहन अमेरिकामें सस्ती पड़ने लग गई, अरण्डीका भाव बम्बईमें १०३) से ऊंचा १६४ तक हो गया इन भावों पर भी अमेरिकामें सस्ता पड़ता है। यही कारण तेजीका हेतु बन रहा है।

किसी भी वस्तु की, दो देशोंके भावोंके बीचके अन्तर को "पेरिटो" कहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारकी दिन प्रति-दिन प्रगति होनेके साथ पेरिटीका ज्ञान होना आवश्यक हो गया है। दो देशोंके बाजारोंके भावकी पेरिटी ज्ञात करनेमें निम्नलिखित बातें ध्यानमें रखना चाहिए—

(१) दो देशोंकी सप्लाय और डिमाण्डकी परिस्थिति।
(२) दो देशोंकी मालकी जाति।
(३) मालके हेरफेरका व्यय।
(४) भावोंके नियमन।
(५) चुंगी-ड्यूटीमें परिवर्तन।
(६) हुण्डियोंकी दरोंमें फेरफार।
(७) दो देशोंमें आकस्मिक कारण।
(८) भविष्यके आशावाद या निराशावादके कारण।
(९) युद्धकी परिस्थिति या शांतिका समय।
(१०) किसी बड़े देशों में तनावकी परिस्थिति के कारण।

पेरिटी की गणना—

बम्बईका भाव × रुपया डालर क्रासरेट = १ डालर = १००(सैंट)
२१ रतल = १ डालर

वायदा-व्यापार में सफलता

वायदा-व्यापारमें सफलता प्राप्त करनेके लिए वैज्ञानिक ढंगसे भावोंकी चाल ज्ञात करना चाहिए।

सट्टाका अर्थ है आगेकी धारणा। किसी वस्तुके वायदा व्यापारमें धारणा (रुख) प्राप्त करने के लिए निम्न विषयों की जानकारी आवश्यक है, यों तो भारत सरकार ने प्रत्येक वस्तुके ऊंचे-नीचे भाव बांध दिए हैं, तो भी घट बढ़ प्रमाण उस बीचमें रहता ही है। वस्तुकी साप्ताहिक घट बढ़की आंकड़ा स्थिति तथा वस्तुका व्यापार और उसका संचालन।

यदि आपको वायदा व्यापारमें धन कमाना है तो निम्न बातों पर सदा ध्यान देना आवश्यक है—

(१) अपनी हैसीयतसे अधिक धंधा मत करो।

(२) जितनी पूंजी बिना किसी दुःखके हानिमें दे सकते हो उतना ही लाभ लेनेकी आशा करो।

(३) बारह महीनोंमें १०० बार व्यापार नहीं करना चाहिए बल्कि १२ बार ही व्यापार करो।

(४ मंदी या तेजीके लेवलका भी ध्यान रखना चाहिए।

(५) बहुत दिनोसे मामूली घट-बढ़ चल रही हो तो तेजी-मंदीके पैसे कम लगते हैं। उसी समयमें अवश्य इक-

तरफा लाइन १५।२० दिनमें बनती है। तेजी-मंदी दोनों या इकतरफा मासिक, पाक्षिक नजराना लगाना लाभ दायक है।

(६) विशेष जानकारी उत्तम दैवज्ञ जो अर्घ शास्त्रका ज्ञाता हो उसकी सलाह लेना भी उत्तम लाभकारी होती है।

(७) दृश्य गणितके बने पंचांग—"श्रीविश्व-विजय पंचांग" तथा "व्यापारी महा लक्ष्मी पंचांग" अवश्य ही देखें।

(८) इकतरफा लाइन चलनेको बड़े सटोरियाकी खरीद बेचो पर सदैव ध्यान रखना लाभका संकेत है।

ज्योतिषियों एवं ज्योतिष प्रेमियोंको सुझाव—

ज्योतिषी क्यों कलंकित होते हैं और ज्योतिषके भरोसे व्यापार करने वाले क्यों हानि उठाते हैं ?

शुद्ध असली दृश्य गणितके पंचांगोंकी कमी है वर्तमान समयमें—अब दो तीन शुद्ध दृश्य गणितके प्रकाशित होने लगे हैं—"जन्मभूमि कार्तिकी पंचांग," "श्रीविश्व-विजय पंचांग," ,'व्यापारिक श्री महालक्ष्मी पंचांग" व्यापार भविष्य देखनेके परम उपयोगी हैं।

जिस मास व दिनकी तेजी-मंदी जानना हो उस समय तेजी-मंदी दोनों योगोंको एक पट्टी पर बराबर लिखते चलें, दोनोंका योग करके दोसे भाग दो, लब्धि अंकको तेजीके गिनती अंकमें जोड़ो, तथा मंदीके अंकमें भी जोड़ो, दोनोंकी बाहुल्यता पर विचार करके देखो कौन अधिक है जिस पक्ष के अंक अधिक हो वही लाइन प्रबल रहेगी। कोई भूल तो नहीं रह गई है तथा मंदी कर्त्ता व तेजी कर्त्ता प्रबल योग तो नहीं बन रहा है तथा कौन सा योग कितना प्रबल है एवं कौनसा निर्बल है। अर्थात् कितने टकेकी मंदी या तेजी करनेकी शक्ति रखता है। बाजार की घट-बढ़ प्रतिदिन कितने अंदाजकी चल रही है। वस्तुके भाव ऊंचे लेवल पर हैं या नीचे लेवल पर है। इन सब बातोंको पहिलेसे विचार करके व्यापारीको बतलाना चाहिए।

ज्योतिष विद्या एक अमूल्य रत्न है। इसकी सत्यता बुद्धिमानी, चतुराईके साथ परिश्रम द्वारा उपयोगसे मान प्रतिष्ठाके साथ-साथ लक्ष्मी भी प्राप्त होगी। ज्योतिषका फलित वर्तमान समयमें भी दृश्य गणना पर ही निर्भर है। इसलिये जहां हानि लाभका प्रश्न है वहाँ व्यापारी एवं ज्योतिषी दृश्य गणनाके पंचांगका ही उपयोग करें तो व्यापारी भाई एवं जनताका कल्याण होनेमें तनिक भी संशय नहीं रहेगा।

तीन मासका व्यापार भविष्य

[लेखकः—श्री प्रोफेसर बी० सी० महता. एम. आर. ए. एस.]

विजयादशमीसे हमारा "श्रीस्वाध्याय" अपने १६ वें वर्षमें प्रवेश करता है। गत १५ वर्षोंमें जिस प्रकार सफलता पूर्वक ज्योतिष संसारकी इसने सेवा की है वह आप से छुपी नहीं है। आजके संसारमें इस प्रकारका त्रैमासिक पत्र जिसने पाठकोंके हृदयमें इतना आदरका स्थान प्राप्त कर लिया हो, दूसरा दिखाई नहीं देता। आज सैकड़ों ही नहीं बल्कि हजारों की संख्यामें लोग हर तीसरे महीने इसके नये अंककी इन्तजारी बड़ी आतुरतासे करते हैं और हजारों व्यापारी प्रकाशित व्यापार भविष्यके आधार पर लाखों रुपयोंका व्यापार करते हैं।

इस सारी प्रगतिका श्रेय इसके यशस्वी सम्पादक जी श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी को है जिनके अथक परिश्रम व प्रयाससे यह त्रैमासिक इतनी उन्नति कर सका इस १५ वें वर्षमें पंडितजीने ज्योतिष विज्ञानकी उन्नतिके विशेष प्रयत्न किये, कई बार तो इनको राज्य सरकारके गण्य मान्य नेताओंसे मिलना पड़ा, तथा ऊ० भा० ज्योतिष सम्मेलन जो गत वर्ष दिल्लीमें हुआ उसके अध्यक्ष पद पर होनेसे विशेष सफलता प्राप्त हुई जिसका व्यौरा समय समय पर इसमें आप पढ़ते आ रहे हैं। इन सब प्रयत्नोंका फल हमें विश्वास है कि इस वर्षमें पाठकोंके समक्ष अवश्य आवेगा, तथा कार्य रूप से कोई ठोस काम ज्योतिष संसार की उन्नतिके लिये होगा। हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

'श्रीस्वाध्याय'के साथ है और हम पूर्ण आशा करते हैं कि श्रीस्वाध्याय शीघ्र ही त्रैमासिकसे मासिक बन जावेगा।

यह अंक पाठकोंके समक्ष अक्टूबरके द्वितीय तृतीय सप्ताह तक अवश्य पहुँच जावेगा। उस समय शनि ग्रह वश्चिक राशिमें ८ वे अंशमें प्रसार करेगा। तथा राहु भी इसी राशिमें इस वक्त ८ अंशका होनेसे दोनों बड़े ग्रहों की युति चलेगी। राहु शनिकी किसी भी राशिमें युति राजनैतिक व व्यापारिक स्थितिमें विशेष असर करती है। जब राहु शनि इकट्ठे होते हैं तब संसारमें अशान्ति व उत्पात लड़ाई झगड़े आदि होते हैं तथा देशोंमें खिचाव होता है। जबसे शनि राहु इकट्ठे हुए हैं भारत में कई जगह झगड़े व उत्पात हुए हैं; बम्बईमें महाराष्ट्रीयन तथा अन्य प्रान्तीय लोगोंकी खून खराबी, अहमदाबादमें द्विभाषी राज्य की घोषणा पर उत्पात आदि जो भी काण्ड हुए हैं वे इसी कारणसे बने हैं। स्वेज नहरकी गंभीर स्थिति भी इसी कारण से बनी है। ता० १७ अक्टूबरको शनि राहुकी युति समाप्त होती है तथा २८ अक्टूबरको गुरु ग्रह सिंह राशि छोड़कर कन्या राशिमें प्रवेश करता है तो इस अशान्त मय वातावरणमें शांतिकी लहर आवेगी तथा मौजूदा स्थितिमें भी सुधारा आवेगा। किन्तु पूर्ण शान्ति तो शनि राहु अलग हो जावेंगे तब ही सम्भव हो सकती है, जो मार्चके अन्तिम सप्ताहमें होवेगें।

राहु शनिका संयोग व्यापारिक घटाबढ़ीमें भी विशेष प्रभाव रखता है। जबसे राहु शनि इकट्ठे हुए हैं तबसे प्रत्येक बाजारमें तेजीका प्रभाव हुआ है, विशेषकर तेलवानामें इसका प्रभाव विशेष देखनेको मिला है। शनि राहुकी युति भी प्रत्येक बाजारोंमें तेजीका प्रभाव (फोर्स) पैदा करती हैं तथा सिंह राशिमें गुरु और शुक्रकी युति भी इस तेजी में सहायक (सपोर्ट) करती है। इस प्रकार अक्टूबरके प्रथम २० दिन घटाबढ़ीके साथ तेजीके ही समझने चाहिये। रुई, कपास, गुड़ गुवारा आदि प्रत्येक बाजारमें तेजीका प्रभाव (फोर्स) रह सकता है। इसलिये व्यापारियोंको पहले खरीदो फिर बेचोंका ध्यान रखना चाहिये।

ता० २८ अक्टूबरको गुरु ग्रह सिंह राशिको छोड़कर कन्या राशिमें प्रवेश करता है। कन्या राशि पाश्चात्यमतानुसार हमारे भारतकी लग्न राशि होनेसे इस राशिमें गुरु का प्रसार सुख शांति व समृद्धिका सन्देश देता है और यह बात निश्चय है कि इस गुरुके प्रभावसे संसारमें फैला हुआ अशांतिका वातावरण शान्त होगा तथा व्यापार जगत्में भी इसका असर हुए बिना नहीं रह सकेगा। तथा पाक व पैदावारमें तरक्की तथा इसके कारण बड़ी मन्दी इस योगसे आवेगी। इसलिये प्रत्येक व्यापारियों जो कच्चे मालका व्यौपार करता है उसे सावधान रहना चाहिये। रुई, कपास, अरंडा, बीया, गुड़, गुवार अनाज आदि प्रत्येक वस्तुमें मन्दी आनेकी सम्भावना है। इसलिये २१ ता० के पहले तेजी का धन्धा समाप्त कर देना चाहिये। तथा मन्दीका व्यापार प्रारम्भ कर देना चाहिये।

इस अवधिमें केवल मंगलको छोड़कर सब ग्रह मन्दी की तरफ हो जावेगें इसलिये ता० १५ नवम्बर तक मन्दीका ध्यान रखना चाहिये।

ता० १५ से २७ नवम्बर तक फिर बाजार में मंगलकी कृपासे सब वस्तुओंमें उछाला आ सकता है किन्तु ता० २७ नवम्बरसे फिर मन्दीकी बड़ी लाईन प्रारम्भ होने वाली है जो पर्याप्त समय तक चलेगी।

तारीख ४ दिसम्बरको गुरु कन्यामें तथा मंगल मीनमें प्रसार करते हुए एक दूसरेसे प्रतियोग बनाते हैं, ऐसा प्रतियोग (अपोजीशन) इन दोनों ग्रहोंका ठीक १२ वर्षके बाद बनता है और कच्ची चीजोंमें रुई कपास, गुड़, गुवार एरंडा, अनाज सरसों मूंगफली आदि सब चीजोंमें अच्छी मन्दी लाता है सो ध्यान रहें। तारीख २१ दिसम्बरसे शनि मंगलका त्रिकोण (ट्रायन) योग बन रहा है। यहां पुनः तेजीका उछाला आ सकता है जो लाभप्राप्तिका कारण हो सकता है, जो अधिक दिन नहिं रह सकता पुनः बाजारोंमें नर्माई आ जावेगी इसलिये उछाले आवे तब बेचकर लेने वाले व्यापारीको ही विशेष लाभ होनेकी सम्भावना है। विस्तृत, दैनिक तेजी मन्दी व स्पेशियल चान्सोंके लिये हमारी व्यौपार-भविष्य स्पेशियल त्रैमासिक रिपोर्टके लिये लिखिये।

'श्रीस्वाध्याय' हितोपदेश का प्रतीक है।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[लेखकः—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

आप हाजिर मालका सौदा करें या वायदाके व्यापारका जितने समय तक आपके अन्तः पटल पर लम्बी धारणाकी निश्चित रूपरेखा नहीं होगी उतने समयं तक व्यापार द्वारा आपको लाभ उठाना कठिन ही है, यह एक माना हुआ अटल सिद्धान्त है। अस्तु।

ग्रहयोगोंका सूक्ष्मरीत्या विश्लेषण करनेसे ज्ञात होता है कि विजयादशमीसे ग्रह चाल बड़ी ही अनिश्चित रूपात्मिका गतिको धारण करती है, जिसके लिए प्रथम ही सतर्क होना चाहिए। ता० १० अक्टूबरको मंगलका मार्गी होना ता० १२ अक्टूबरको बुधका मध्यमा गतिसे निकलकर शीघ्र गतिमें प्रवेश करना ता० १६ अक्टूबर रात्रि ६ बजकर ५६ मिनट पर वृषभ लग्ने प्रथम वाली कन्या संक्रान्तिसे यह तुला संक्रान्ति तीसरे वार चौथे नक्षत्रमें प्रवेश करनेके कारण अच्छी मंदी की अगाही दे रही है। यथा :—

तुर्ये धिष्ण्ये च पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीयके।
संक्रान्तिर्निशी सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम्॥

ऊभी स्थिति भौमवारी और अग्नि मण्डलमें होने के कारण भी मंदीकी आगाहीको देती है। यथा—

क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं शुभं स्वस्त्यं भविष्यति।
राजा सौख्यं प्रजा सौख्यं ऊर्ध्वस्थे च दिवाकरे॥
अग्निमण्डल नक्षत्रे भौमवारो यदा भवेत्।
ऊर्ध्वस्थे च दिवानाथे समर्घा धातुजातयः॥

ता० १८ अक्टूबरसे सूर्य नैपच्यूनका युति योग चालू है जो ता० २५-२६ अक्टूबर तक चलेगा वह भी मंदी कारक है।

ता० २६ अक्टूबरको गुरुदेव शुक्र और बुधके मध्य में से निकल जायेगा वहांसे आगे सूर्य पीछे शुक्र और मध्यमें बुध चलेगा, जो तेजीकारक है। यथा:—

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे च भृगुनन्दन।
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यन्नमहर्घता॥

ता० ४ नवम्बरको चन्द्रोदय अनुराधा नक्षत्रमें हो रहा है यह चन्द्र शनि-राहुसे युक्त और केतुसे दृष्टि है अतः व्यापारिक वस्तुओंमें तेजीकारक है। यथा अनुराधाधिकार की वस्तुयें:—

राधायां च तुवरी सर्वद्विदलान्नं च तण्डुलाः।
मकुष्ठश्चैव चणकाः सर्वं च शरत्समुत्पन्नम्॥

ता० २५ नवम्बरसे मीन राशिके मंगलको गुरुदेवकी पूर्ण दृष्टि चालू होगी अतः कपालसे उत्पन्न मणि रत्न अर्थात् गजमुक्ता, गोरोचनादि, जलसे उत्पन्न वस्तु, हीरे, जवाहरात, स्नेहद्रव्य (घी-तेल आदि) बहुत रूप वाले पदार्थ (कृत्रिम वस्तु) मछलियोंसे उत्पन्न वस्तु, गुड़, खांड, खल, तिल, चावल, चान्दी आदिमें मन्दी चले। यथाः—

मीने कपाल सम्भव रत्नाम्बूद्भवानि वज्राणि।
स्नेहाश्चनैकरूपा व्याख्याता मत्स्यजातं च॥
गुडः खंडा शर्करा च खलं तिलाश्च शालयः।
घृतं मणिमौक्तिकानि रजतं वारूणिकेस्तथा॥

ता० २ दिसम्बर का सूर्यग्रहण वस्तु मात्रमें मंदी कारक ही सिद्ध होगा। पहिले से ही जिसके लिए भूमिका बन चुकेगी अतः सावधानी पूर्वक व्यापार करिए।

ता० ३ दिसम्बरको चन्द्रोदय मूला नक्षत्रमें हो रहा है, जिस पर गुरुदेवकी पूर्ण दृष्टि होगी जो समस्त श्वेत रंगकी वस्तुओं व रसोंमें मंदीकी भयंकर प्रतिक्रियाको करने वाला सिद्ध होगा।

मूलाधिकारकी वस्तुएं—

मूले श्वेतानि वस्तूनि रसा धान्यानि सैन्धवम्।
कर्पास लवणाद्यं च रजत्सुवर्णयोस्तथा॥

ता० २१ दिसम्बर रात्रीको सूर्य उत्तरायण प्रवेशको गुरुदेवकी त्रिपाद दृष्टि है, उन दिनों सूर्य भी मूला नक्षत्र में चल रहा होगा—जो उपरोक्त वस्तुओंमें घोर मंदीको देने वाला है। ता० २ जनवरीको उत्तराषाढा नक्षत्रमें चन्द्रोदय हो रहा है जो बुधयुक्त है जिस पर गुरुका वेध है, अतः हाथी-घोड़े बैलादि चौपायों व लोह आदि धातुओं

तीन मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य

[लेखक—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

ता० १४ अक्टूबरसे २१ अक्टूबर तक (प्रथम सप्ताह)—

इस सप्ताहमें ता० १५ को १॥ बजे शेअर्स, बारदाना जूट बीटूयल, रुई, सूत, कपड़ा, अलसी, सरसों, अरण्डा, तेल, मूंगफली, गुड़, शक्कर, खरीदो, ता० १७ के ३ बजे तक लाभ लेकर डबल बेचो; ता० २० तक डबल लाभका संकेत है। चांदी, सोना, किराना, सुपारी, नारियल, कालीमिर्च, लालमिर्चके भावोंमें अचानक तेजी आकर ता० १७-१८को मंदी डबल खरीदने का अवसर देगी, भाग्यवान् व अच्छी दशा वाले व्यापारी ही लाभ उठा सकेंगे, शेष देखते रह जायेंगे। थोड़ी पूंजी वाले व्यापारी इस सप्ताहमें तेजी मंदी लगाकर ही व्यापार करें अच्छी घट बढ़में नजराने वालोंको भी आमदनी हो जावेगी।

इस सप्ताहमें फीचरों में अच्छी तेजीके योग हैं—

अङ्क—३-५-१ आर्डनरी, २-५-७ प्रबलांक हैं।

(२) २२ अक्टूबरसे ३१ अक्टूबर तक (द्वितीय सप्ताह)—

ता० २२ को स्टे० टा० ११ बजेसे १ बजे तक मंदी के समयमें तथा बाजार के उतारके समयमें चांदी, सोना, अलसी, सरसों, अरण्डी, मूंगफली, तेल मूंगफली, जस्ता, टीन, रबर, तांबा, बारदाना, आर्डनरी शेअर्स खरीदो, ता० २७ की सायं तक लाभका संकेत है। सावधान ता० २४ २५ के बाजार पर ध्यान रखे। हमारा मत-मन्दीका रियेक्शन व्यापारियोंको अच्छी खरीदका अवसर देगा। गर्म कपड़ेके खरीददार नवम्बरमें अच्छा लाभ उठा सकेंगे। रुई, सूत, कपड़ेके भावोंमें पर्याप्त तेजी रहेगी, गत सप्ताह में खरीद किया हुआ अवश्य ही लाभप्रद रहेगा। तिल, तैल, मूंग, बाजरा, चना, गेहूँके बाजारोंमें मंदीका रिएक्शन धीरे धीरे बराबर बना रहेगा। स्टाकिस्ट व्यापारियोंके संग्रहको साधारणतया हानि हो जाना सम्भव है।

इस सप्ताहमें अङ्क १-४-५ आर्डनरी, ३-७-८ प्रबलांक समझें।

(३) ता० १ से ७ नवम्बर तक (तृतीयसप्ताह)

इस सप्ताहमें ता० २ को रात्रि स्टे० टा० ८ बजे लक्ष्मी पूजनके शुभ मुहूर्तमें चांदी, रुई, सूत, कपड़ा, अलसी, अरण्डा, मूंगफली, तेल अलसी व मूंगफली, हाजिर माल खरीदो तथा वायदाके सौदे १५ दिन व ३१ दिन की डिलीवरी व्यापार अत्यधिक लाभकारी रहेगा। तेजी मंदीके नजराने लगाने वाले भी अच्छा लाभ उठा लेंगे। गुड़, मटर, गुवार अरहर, बारदाना जूट बीटूअल ता० ५ को २ बजे खरीदो, अगले सप्ताहमें मनमाना लाभ प्राप्त हो जायगा।

इस सप्ताह अंक ४-५-२-१ आर्डनरी, ३-५-७ प्रबलांक हैं, तीन दिनकी लड़ी १४-२४-११ की बराबर साथ देगी।

(४) ता० ८ से १५ नवम्बर तक (चतुर्थ सप्ताह)

ता० ८ दिसम्बर को स्टे० टा० २ बजे अच्छी मंदीके रियेक्शनमें चांदी, सोना, रुई, सूत, कपड़ा, अलसी, अरंडा, मूंगफली, बारदाना, जूट बीटूयल, आर्डनरी शेअर्स खरीदो, ता० १४ तक लाभ हो जायगा, १५ दिन की गलीयें लगाना भी लाभप्रद रहेगा। अरहर, मसूर, अलसी सरसों, तिल, तेल मंदीकी ओर रहेंगे। जौ, चना, खली, का भाव तेज रहेगा। भूसी, भूसा, लकड़ी, पत्थर के संग्रह करने वाले लाभ उठायेंगे, शेष देखते रह जायेंगे। साप्ताहिक अङ्क २-५-४-६ आर्डनरी, ३-७-६ प्रबलांक है।

(५) ता० १६ से २२ नवम्बर तक (पंचम सप्ताह)

तथा समस्त सार वस्तुओं व गेहूं तथा गुड़ादिमें मंदीकारक है।

उत्तराषाढाधिकारकी वस्तुएं—

उषायामपूर्व वृषभ गजलोहादि धातवः।
सर्वं च सारवस्त्वाज्यं गोधूमं च गुड़ादिकम ॥

नोटः—किसी वस्तुके स्पष्ट चांसके जाननेके लिए जबाबी पत्र द्वारा फीसका निश्चय कीजिए।

इस सप्ताह में ता० १६ को ३ बजेके बाजार उच्च शिखर पर रहेंगे, ता० २० तक ३ दिनमें मंदीका रियेक्शन जोरदार होगा। सावधान यह समय बेचनेका नहीं है, घटे भावोंमें माल संग्रह करनेका है। चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरंडा, जूट, बारदाना, कालीमिर्च, आर्डनरी शेअर ता० २० को ३ बजे खरीदो, ता० २२ के बन्द बाजारों में अच्छा लाभ दिखाई देगा। इस सप्ताहमें अच्छी घटबढ़ चलेगी। हमारे मतसे तेजी मंदीके नजराने लगाकर उसके पेटे खुला व्यापार करना भारी लाभका द्योतक है।

साप्ताहिक अंक १-४-६-८ आर्डनरी, ३-७-५ प्रवलांक हैं।

(६) ता० २३ से ३० नवम्बर तक (षष्ठ सप्ताह)

ता० २३ को १२ बजे स्टा० टा० पर चांदी, सोना, रुई, सूत, कपड़ा, अलसी, सरसों, तिली, मूंग, अरण्डा, मूंगफली, गुड़, मटर, गुवार, चना, हल्दी, सुपारी खरीदो, इस सप्ताहमें प्रायः सर्व वस्तुओं पर तेजी आ जायगी। सावधान ता० २६ के बाजार पर ध्यान रखें, इस दिन मंदीका रियेक्शन पीने वालोंकी घबराहटका कारण बन सकता है। व्यापारी घटे भाव खरीद करते रहें, ता० ३० तक डबल लाभका संकेत है। विदेशी वस्तुएं कलकत्ता बम्बई शेअर्समें एक दम तेजी आनेके योग बन रहे हैं।

साप्ताहिक अङ्क १-४-६-६ आर्डनरी, ३-५-७-८ प्रवलांक हैं।

(७) ता० १ से ७ दिसम्बर तक (सप्तम सप्ताह)

ता० १ को स्टे० टा० १॥ बजे चांदी, सोना, रुई, अलसी अरंडा, तेल मूंगफली, बारदाना, जूट बीटूअल, खरीदो, ३॥ दिनमें मनमाना लाभ सामने होगा। गुड़, गुवार, मटर, मूंग, तिली, चना, गेहूं, ता० १ से ३ तक मंदीका रियेक्शन लेकर ऊंचे जायेंगे, ता० ३ को २॥ बजे खरीद करके ता० ७ तक लाभ हो जायगा। सावधान ता० ३-५ के भावों पर बराबर ध्यान रखकर व्यापार करें। साप्ताहिक अङ्क २-४-०-८ आर्डनरी, ३-५-७-८ प्रवलांक हैं।

(८) ता० ८ से १५ दिसम्बर तक (अष्टम सप्ताह)

ता० ८ को २॥ बजे चांदी, सोना, रुई, अरण्डा, मूंगफली, बेचो, ता० १० के ३ बजे तक मंदीमें डबल खरीदो, ता० १४ के बंद बाजारोंमें डबल लाभ होने की आशा है। गुड़, मटर, गुवार, सरसों, अरहर, मसूर, चना, तिली, मूंगके भावोंमें अचानक तेजीके योग हैं, घटे भाव ता० १०-११ के बाजारोंमें खरीद करके ता० १५ तक लाभ उठा लेना ही चांस है।

इस सप्ताहके अंक २-५-७-० प्रवलांक हैं।

(९) ता० १६ से २३ दिसम्बर तक (नवम सप्ताह)

ता० १७ को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई, बिनौला, सरसों, अलसी, अरण्डा बेचो, ता० १६ को २॥ बजे डबल खरीदो ता० २५ तक डबल लाभका चांस है। गुड़ मटर, गुवार, अरहर, चना, मसूरकी ऊंचाई पर ध्यान देकर बेचो। ३॥ दिनकी मन्दी झलक दिखा देगी। अलसी, अरण्डा, मूंगफली आयरन शेअर, आर्डनरी शेअर्स उतार-चढ़ावके साथ तेजीमें चलेंगे। ता० १७ को खरीद करके ता० २३ तक लाभ उठाकर बराबर करो।

साप्ताहिक अंक १-५-६-० आर्डनरी, ३-७ प्रबलांक हैं।

(१०) ता० २४ से ३१ दिस० तक (दशम सप्ताह)

ता० २४ को स्टे० टा० १ बजे चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरण्डा, जूट, बारदाना, आयरन-आर्डनरी शेअर्स खरीदो, २४ घंटेके अन्तर्गत ही तेजीका रंग आयगा। सावधान लाभको संभाल कर लेना ही व्यापारीका भाग्य है। व्यापारका सुधार बराबर नीचे भावोंमें खरीद करके ऊंचे भावोंमें बेचान करके नफा ले लेना चाहिए। पकड़ कर बैठना ही घाटेका कारण होगा। इस सप्ताहमें तेजी मन्दी लगाकर व्यापार करके उसके पेटे खुला लेना-बेचना अधिक लाभ-प्रद रहेगा।

साप्ताहिक अंक—०-२-४-५ आर्डनरी, ५-३-७ प्रवलांक हैं।

(११) ता० १ जनवरी १६५७ से १० जनवरी तक (गयारहवां सप्ताह)

ता० १ जनवरीको स्टे० टा० २ बजे चांदी, सोना, रुई, बेचो। ता० ४ को १२ बजे डबल खरीदो, ता० ८ के बंद मारकेट तक मनमाना लाभ हो जावेगा। सावधान ता. ३,७ के बाजारों पर ध्यान रखना चाहिए। तिल, तैल, मूंग चना, उड़द, जौ, मसूर, अरहर, गुवार, मटर, गुड़, अलसी, अरंडा, मूंगफली, तेल सरसों, अलसी तथा आर्डनरी शेअर, आयरन इत्यादि ता० ३ को २॥ बजे खरीदो।

चांदी सोनेका त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[ले०—राजवैद्य डा० श्री अमरदत्तजी मिश्र, एच. एम. डी. एस. एस्ट्रोलोजर]

"श्रीस्वाध्याय" के पाठकोंके समक्ष त्रैमासिक व्यापार भविष्य अक्टूबरका संक्षेपमें तथा नवम्बर दिसम्बर और जनवरी १९५७ का प्रस्तुत किया जा रहा है । इस लेखमें खास-खास परिवर्तन जो बुलियन मार्केटमें होंगे उनका विशद बिवेचन किया गया है, पाठकगण इससे अवश्य ही लाभ उठाकर तथ्यसे अवगत करनेका कष्ट करें, ताकि लेखक अपने श्रमको सफल अनुभव कर सके या इसके विपरीत स्थिति रही हो तो भी अवगत करें ताकि भविष्यमें अपने लेखकी तथ्यताका पूरा-पूरा ध्यान रख कर ही अपनी लेखनी की आराधना कर सके ।

अक्टूबर १९५६ ई०

इस मासमें जो फल है वह सामान्य तौरसे गतांकमें दे दिया था, परन्तु इस मासमें एक मोटा कंजक्शन (Conjunction) हो रहा है उसका विशद फल केवल यहां दिया जाता है । श. रा. की युति १७ अक्टूबर १९५६ को हो रही है यह निरयन वृश्चिक राशिमें हो रही है और सायन धनुः में इसके प्रभावसे बाजारोंमें गरमागर्मी अवश्य ही आवेगी । अक्टूबर मास ता० १७ तक तेजी का अवश्य ही समझें, यह शनि राहुकी युति हर वस्तु को तेज करके ही रहेगी, कुछ वस्तुओंको काफी मंदी भी करेगी, अतः यह समय व्यापारियोंके लिए सावधान रहने का है, यह लम्बी तेजी और मंदी कारक है, जिस वस्तुको यह १७ तक तेज कर देगी उसे फिर शनैः शनैः २ अंशके अन्तर तक मन्दी करती हुई जावेगी और जिसे मंदी कर देगी उसे १७ के बाद २ अंशके अन्तर पड़ने तक तेजी करती हुई दो अंशका पूरा अंतर होने पर मंदी करी है उसे तेजी और तेज करी है उसे जोरदार मन्दी कारक होगी । कुछ ग्रहोंकी स्थिति का आभास होता है कि बुलियन मार्केट याने चांदी सोनेके बाजार पर इस युतिका प्रभाव दोनों प्रकारसे न्यून ही होगा । This Conjunction Should Inflate Prices of All Commodities Except Bullion इस वाक्य से स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि चांदी सोनेमें विशेष तेजी आवेगी ही नहीं, अन्य चीजोंमें ही विशेष तेजी आवेगी । अतः व्यपारी वर्ग सतर्क रह कर कार्य करें ।

नवम्बर १९५६ ई०

इस मासमें चांदी सोनेकी स्थिति तेजीमें ही चलेगी । सायन गणितानुसार सूर्य वृश्चिकमें २१ नवम्बर तक रहेगा पुनः धनुः में प्रवेश करता है जो तेजी कारक है । नेपच्यून भी वृश्चिकमें है, यह भी तेजी कारक है, हर्शल सिंहमें है यह मंदी कारक है । शनि-धनुमें है यह तेजी कारक है, मंगल मीनका है यह भी तेजी कारक है । शुक्र तुलाका है यह मंदी कारक राशिमें है, पुनः २६ नवम्बरमें वृश्चिक राशिमें प्रवेश करता है तब तेजी कारक हो जाता है । बुध वृश्चिकमें रहेगा । ता. १८ तक शीघ्र गतिवाला होता हुआ यह भी विशेष तेजी कारक है पुनः धनुमें प्रवेश करता है तब भी तेजी कारक है । ग्रह योगसे, यह मास बिशेष तेजी का ही द्योतक है । ता० १४ नवम्बरको शनिदेव पश्चिममें

ता० ६ के २॥ बजे तक इकतरफा तेजीसे लाभ उठायें ।

विशेष साप्ताहिकांककी लड़ी—११, १४,२२ तीन दिन की है । विशेष लाभ उठानेके लिए ता० १ को समय ३ से ५ तक साप्ताहिक तेजी मंदी लगाकर उसके पेटे ले-बेच का सौदा करके मोटा लाभ उठाया जा सकता है । व्यापारी अच्छी दशा (मं० श० रा०) अनुकूल पोने पर शिवार्चन, दान, मन्त्र, जप, इष्टदेवताका पूजन करके बड़ा व्यापार करनेसे केवल १० दिनके व्यापारमें मालामाल हो सकता है ।

सूचना—आश्विन शुक्ल १० से लगायत माघ शुक्ल १० तक इस चार मासोंमें तूफानी तेजी-मन्दी चलेगी । (शु० श० रा०) का तुला व वृश्चिक राशिमें योग होने से बाजारोंमें तूफानी तेजी मंदी चलेगी । सावधानी ! उत्तम ज्योतिषियोंकी रायसे व्यापारमें सफलता मिलेगी ।

—

अस्त हो रहे हैं, यह भी, एक दुर्भिक्षताका सूचक है, संसार को दुःखी बनावेगा। रुईमें प्रथम तेजी पुनः मंदी अन्नमें तेजी, शेयर और सोनामें मंदी अवश्य ही आवेगी, पर अन्य ग्रह सभी बहुमतमें शुभ कारक हैं अगर विशेष दुर्भिक्ष तो नहीं होगा पर संसारको कष्ट कुछ अंशोंमें भोगना ही पड़ेगा। चांदीका बाजार तेजीमें ही चलेगा, शन्यस्तसे सोनामें मंदी अवश्य ही आवेगी, अरण्डामें भी तेजी आवेगी ता० ८ नवम्बरको श. ह. क्रांति योग बबता है इसके प्रभाव से तेजी और मंदीके उछाले आवेंगे किन्तु चांदी सोनेमें मंदी विशेष नहीं आकर चांदी में ही आवेगी। इसी प्रकार ता० १८ को सू० ह० का क्रांति योग बनाता है इस के प्रभावसे चांदीके मूल्यमें जोरदार परिवर्तन निश्चित रूप से होगा। ता० १ सू. श. का क्रांति योग बनता है इसके प्रभावसे चांदीमें अवश्य ही तेजी आवेगी। विशेष विवरण हमारी रिपोर्ट प्राप्त करके लाभ उठा सकते हैं।

दिसम्बर १९५६ ई०

इस माहमें ग्रह स्थिति निम्न है—

सूर्य सायन धनुःमें २३ दिसम्बर तक रहेगा पुनः मकर में प्रवेश करता है। नेपच्यून वृश्चिकमें है, शनि धनुः में है, शुक्र वृश्चिकमें २० तक पुनः धनुःमें प्रवेश करेगा, बुध धनुः में है, पुनः मकरेमें रहेगा। सू० ने० शनि शुक्र बुध ये पांच ग्रह तो तेजी कारक स्थितिमें है और मंगल भी ता. ४ तक तेजी कारक रहेगा, पुनः मंगल मेषका गुरु कन्या और हर्शल सिंहका यह मं. गु. ह. मंदी कारक स्थितिमें है अतः बाजार चांदी सोने का अवश्य ही तेजीमें चलेगा मंदीका आना भी संभव है। क्योंकि पुनः ४ दिसम्बरको मं० गु० की सप्तम हो रही है यह चांदी सोने की तेजीमें अवरोधक होगी इनके अतिरिक्त वस्तुओंमें तेजी आवेगी। रुई कपड़े लोह शेयर आदिमें ता० ६ को शनि हर्शल की पंचम दृष्टि हो रही है। इसका प्रभाव ता. ८ तक ही होगा पुनः शनैः शनैः विपरीत प्रभाव होता रहेगा, २ अंशके अंतर तक। अतः इस पंचमका प्रभाव नवम्बर से ही प्रारम्भ होगा और दिसम्बर की ता० ८ तक हो चुकेगा, अतः नवम्बरके अन्तिम सप्ताहसे दिसम्बरके प्रथम सप्ताह ता० ८ दिसम्बर तक चांदी सोनेका बाजार मंदा रहेगा, यह मंदी २) ३) की संभव है, विशेष भी आ सकती है, पुनः ता० ८ को मंदी खतम होकर तेजी अवश्य ही आवेगी। इसी प्रकार २२ दिसम्बरको मंगल शनिकी पंचम दृष्टि हो रही है यह भी चांदी सोनेमें मंदी कारक रहेगी। अतः २० से २२ तक चांदी सोना मंदा रह कर पुनः २३ से चांदी सोना तेज होगा, जितना पहिले तेज हुआ है। दिसम्बर की १४ को शनि देव उदय हो रहे हैं पूर्वमें इसके प्रभावसे दिन ८ में रुईमें मंदी, धातुओंमें काले पदार्थोंमें गुड़ शक्कर आदिमें भी तेजी आवेगी, शेयरोंका भाव मंदा होगा, यह उदय वृश्चिकमें ही हो रहा है अतः वर्षासे कृषिको क्षति पहुंचावेगा, पर यह जँचता नहीं है कि ऐसा होगा ही।

जनवरी १९५७ ई०

इस मासके ग्रहयोग यह एक Tipical year है परिवर्तनकारी वर्ष १९५७ है। सूर्य मकरमें २० जनवरी तक रहेगा, पुनः कुम्भमें आ जाता है। नेपच्यून वृश्चिकमें ही रहेगा, शनि धनुः में रहेगा. गुरु कन्यामें रहेगा, मगल मेष और वृषमें रहेगा, शुक्र धनुः और मकरमें रहेगा, बुध मकर कुम्भमें रहेगा, राहु धनुःमें रहेगा, बुध बक्री हो जाता है अतः यह मकरमें ही चलेगा, बुधास्त पश्चिममें होता है बक्री हो कर ४जनवरी १९५७ को इसके प्रभावसे चांदीमें तेजी करेगा, इस तेजीमें बेचने पर १५ दिन बाद जब बुधका उदय होवे तब मंदी आवे तब खरीदकर पूरा करनेमें लाभ मिले। विरयनं गणितानुसार ज्येष्ठाके प्रथम पादमें शनिदेव प्रवेश करता है, इसके प्रभावसे पश्चिमके देशोंमें मोटा युद्ध और जनसंहार हो, निरयन गणितानुसार सूर्य मकर संक्रमण करता है मु० ३० रविवार है, इसके प्रभावसे अन्नका भाव बना रहेगा। कोई छोटा राष्ट्र बड़े राष्ट्र पर हमला करनेकी सोचेगा पर दीखता है मकरेऽर्क रविवार को है इसके प्रभाव से धान्यका भाव तेज ही रहेगा। चांदीका भाव भी तेज ही रहेगा। बुधका उदय पूर्वमें हो रहा है। चांदीमें बध घटके साथ तेजी आवेगी, सोनामें मंदी, गेहूँ जौ चना एरण्डा अलसी, तिल, तैल, घृत लालमिर्च आदि तेज होंगे। यह बुध का उदय १६ जनवरी १९५७ को हो रहा है, निरयनगणित से मंगल अश्विनीमें एवं मेषमें आता है १७ जनवरीको इसके प्रभावसे चांदीमें मंदी आवेगी, ज्वार बाजरा चने आदि तेज होंगे। इस मास में बाजार चांदीका तेजीमें ही चलेगा।

—

ज्यौतिषी दृष्टिमें सट्टे वायदेकी तेजी-मंदी

आश्विन शुदी १० से पौष शुदी दशमी तक

[ले० —श्री पं० ओंकारप्रसादजी दैवज्ञ ज्योतिर्भूषण]

इन तीन महीनोंके मध्य पहिले तेजी बाद जोरदार स्टेडी भावोंमें तूफानी मंदी चलेगी, ये कथन ग्रहयोगानुसार सिद्ध हो रहा है। ज्योतिष ग्रहगणितके अनुसार सुपीरियर इन्फीरियर दोनों ही योग इस उपरोक्त समयमें सम्पन्न होंगे। सुपीरियर इन्फीरियर लाइनोंका अर्थ सूर्यके साथ आगे पीछे बुध ग्रहके रहनेका है। बुध एक खास ग्रह व्यापारका स्वामी ज्योतिष शास्त्रमें माना गया है, जब भगवान् भास्कर बुधसे आगे चलते हैं तो विशेषतया तेजी मार्केटोंमें आया करती है और जब बुध भगवान् भास्करसे आगे परिभ्रमण करते हैं तो मंदी आया करती है ये एक मोटा सिद्धान्त है, जो कि कभी फेल नहीं होता। इस पर भी अन्य जब कोई ग्रह पूर्ण ताकतसे अपोजिट असर करता है, तब ये बातें गलत सी प्रतीत प्रत्यक्षरूपमें व्यापारियोंको तथा ज्योतिषियोंको मालूम पड़ा करती हैं, परन्तु हम दावेसे लिखते हैं कि ज्योतिष खगोल तथा फलितका एक अंश भी गलत नहीं है, ये है ज्योतिष वेत्ताओंकी बुद्धिका विचार, वे भूलसे गलत अर्थ लगा जायें या ग्रहोंके पारस्परिक सम्बन्ध समझमें न आयें इसीलिए हम व्यापार करने वालोंको हमेशासे सावधान किया करते हैं कि वे अंध विश्वास करके अपनी शक्ति क्षीण न करें, बल्कि स्वयं भी प्रथम प्रारम्भिक चांस तारीख पर ये आजमाइश करें कि चांस लिखित तारीख से ठीक चला है या नहीं। ठीक लिखित चांस चले तो सौदा करें वर्ना नहीं, ऐसा करनेसे व्यापारी ज्योतिषीकी भूलका शिकार नहीं होगा।

विजय दशमी ता० १४ अक्तूबर रविवारसे पहिले ही भौम मार्गी ४ दिन पूर्व हो लेंगे इसलिए भारी मंदी रुक जायेंगी, भौमसे अधिकृत वस्तु हर मंदेमें खरीदना, और जोरदार उछालेमें बेचकर तारूणी करना ही लाभप्रद होगा। यद्यपि भविष्यमें इन्फीरियर तेजीकी लाइन ता० १२ नवम्बर तक चलेगी, तो भी ऊपर लिखे शब्द ध्यान रखना। ता० २३ और ३१ ये अक्तूबर की खास टरनिंग डेट रहेंगी।

धारणा अक्तूबरमें गुड़ १।=) से १।।।=) मन मटरमें ।।।≡) से १-)।।। तिलहन लाहा सरसोंमें २।।) रु० मन तेलमें ७) रु० चांदीमें चारसे ७) रु० तक लाइन चलेगी। इतना ऊंचा या नीचा मार्केट चल जाने पर ऊंचेमें ले नहीं जाना और नीचेमें बेच नहीं जाना, बल्कि तारुणी करना।

कार्तिक मास

कार्तिकमें ५ शनिवार नेष्ट हैं और कार्तिकका स्वामी कृतिका नक्षत्र पूर्णिमामें होना महान् शुभ है, इस मासमें दुरंगे मार्केट चलेंगे, किसी वस्तुमें रुपएकी अठन्नी और किसी वस्तुमें मन्दीका अन्त होगा। सारांश रूपमें यहां हम स्पष्ट करते हैं कि इस महीनेमें मन्दीका एक बार धक्का लगकर तेजी आयेगी। तैयारी माल ही वायदेकी तेजी मंदीको विशेष रूपसे परास्त कर देगी। इस महीने वायदा और सट्टा ऊंचा रहेगा। ता० २० से २३ अक्तूबर तक तेजी। ता० २३ अक्तूबर १। बजे बाद मंदी गुड़ गुवार मटर अरहरमें आयेगी, धातु पदार्थोंमें स्टेडी या स्थिर भाव रहेंगे। २६ से ३१ अक्तूबर तक धातु पदार्थ तेज होंगे। २ नवम्बरसे फिर ६ नवम्बर तक चांदी स्टील शेयर तेजी पर, गुड़ मटर हरहर तेज होकर मंदे होंगे, इसके बाद इस मासमें १२ नवम्बर तक गुड़ मटर चना गुवार गेहूं तेजी पर जायेंगे, ता० १३ नवम्बरसे हल्दी लौंग बारदाना मेथी तेज, पर गुड़ यहां ऊंचेमें लेना नहीं बल्कि तेजीमें मंदेका अब व्यापार करना। ता० १७ नवम्बरको चांदी तेज रहे तो आगे चांदी मंदी होगी और गुड़ मटर गुवार तिलहन तेज होकर मंदा अवश्य ही होगा। शुदि चतुर्दशीसे पूर्णिमामें हर वस्तु तेजी पर होंगी। नवम्बर धारणा गुड़की प्रथम तेजी बाद मंदेकी है। प्रथम तेजी मंदे में ।।≡) या ।।।=)।। मन फिर मंदी होगी, ।।।) या ।।।≡)।। मन तक या १≡) मन लाहा चना अथवा मेथी प्रथम दो हफ्तेमें तेजी फिर कुछ मंदी। रुई सूत बिनौला तथा गुड़में महीनेके मध्यमें बेचकर लाभ उठायें। प्रथम

खरीद बाद बेचमें धारणा बनालें।

मार्गशीर्ष मास

मंगसीर सं० २०१३ में ५ सोमवार और सूर्यग्रहणका असर जोरदार मंदीमें जोरदार तेजी, फिर मंदी आयेगी मिति मंगसीर वदि प्रतिपदा ता० १६ नवम्बर से २२ नवम्बर बदी पंचमी मिति तक गुड़में तेजी, गुवार, मटर, अरहर, चनामें सूक्ष्म तेजी आयेगी। ता० २२ नवम्बरसे २६ नवम्बर तक चांदी गुवार मटर तेज गुड़ रस पदार्थोंके साथ जूट पाट बारदानामें मंदी आवेगी। ता० २७ से २६ नवम्बर तकमें जो वस्तु तेज रहें उन्हें बेचना वर्ना खरीदना तत्काल ७० या ६० घंटेमें जोरदार चांस सम्पन्न होगा। ता० ६ से ८ दिसम्बरमें मार्केट तेज होकर मंदे होंगे। ता० ६ से १५ दि० में मंदी आकर हर वस्तुमें तेजी आयेगी, परन्तु यहां रुई कलर शेयर मंदे होंगे। ता०१५दिसम्बरको तेजीमें गुड़ मटर ग्वारको बेचकर भविष्यमें लाभ उठाना। भोग विलासके सामान यहां विशेष मंदे होंगे। ता० १६ दिसम्बरके बाद ता० १७ दिसम्बरसे गुड़ ग्वार मूंग उड़द बाजरा चना तथा धातुपदार्थ हीरे जवाहरातोंमें तेजीके योग सम्पन्न होंगे।

धारणा दिसम्बर १९५६ में चना मटरमें ।।≥) से १।≥) तक चांदीमें ४) रु० से ७।।) रु० तक लाहामें २।) से ३।) रु० गुड़में कमसे कम २।।≥) अधिकसे अधिक ४।) मन तक मार्केट चल जानेकी सम्भावना है। प्रथम ही कट जाने पर द्वितीय डी० बनेगी ये ध्यान रक्खें।

पौष मास

पौष सं० २०१३ ता० १६ दिसम्बर १९५६ को ये महीना आरंभ होगा इस महीनेमें ५ भौम और वदि ६ तिथिका क्षय होनेसे तथा अन्य ग्रहोंके योग संयोगसे क्रमशः मंदीकी लाइनमें मंदीका जोर बढ़ेगा। अन्य तेजीके योग संयोग तेजी लायेंगे। वदि प्रतिपदा आर्द्रा क्षय होनेसे ध्यान रखिये १८ से २० दिसम्बर में चांदी सोना गुड़ मटर चना गुवार तिलहन मूंग अरहर तेज रहें तो २० दिसम्बर बाद मंदी आयेगी (विपरीतमें विपरीत चाल जानें) ता० २७ दिसम्बर यानि पूष बदि एकादशीका दिन आजमाइशका दिन है। आज सामान्य या मन्दे भाव चांदी आदि धातु पदार्थमें रहें तो २७ दिसम्बरसे २६ दिसम्बरमें तेजीके व्यापारसे लाभ उठायें। इसी प्रकार ता० ३१ दिसम्बरको तेजी गुड़ चना तेलमें और दालोंमें रहे तो मंदा ८ दिनमें जोरदार आयेगा। और अगर पूर्व ही मंदा जोरदार रहे तो तेजी अवश्य ही आयेगी। ता० ४ से ७ जनवरीमें मन्दी आने पर चांदी सोना आयरन खरीदें और १ खास चांस पौष शुदि ३ से १ हफ्तेमें मिलेगा। लोंग मेवे तथा बारदाना तेज होंगे। पूष शुदि ७ को गुड़, मटर, गुवार तेल बेचकर २ दिनमें लाभ उठाना और फौरन इस रियक्शन पर खरीद कर लाभ उठाना। ता० ११ जनवरीको बुध बक्री प्रथम तेजी करके बाद तमाम जनरल वस्तुओंमें सिवाये चांदी धातु पदार्थोंको छोड़कर मंदा करेगा। नोट—जिन वस्तुओंमें बुध बक्र से पहले मंदी रहें उन्हें ही खरीदना ये ध्यान अवश्य रखना। जनवरी १९५७ में विशेष रूप से गुड़ सट्टा नीचा न रहकर १) मन तक ऊंचा जायेगा। धारणा गुड़में जनवरी १९५७ में तेजीकी है, ऊँचे भावमें तारुणी करें। चांदी सोना हर मन्देमें खरीदना, मटर, मूंग, अरहर, चना जोरदार तेजीमें ऊंचे भावमें लेकर नहीं फंसना, बल्कि तात्कालिक चांसोंसे लाभ उठानेकी चेष्टा बनाये रखना।

तीन मासमें चांदी सोनेका सामाहिक रुख

[ले०—ज्योतिर्भूषण श्री पं० गिरिधारीलाल शर्मा दैवज्ञ]

(१) प्रथम सप्ताह—

आश्विन शुक्ला १० रविवार ता० १४-१०-५६ से १६ अक्टूबर तक तेज होवे वहाँ बेचो, मन्दीका ध्यान रखो। ता० १५-१६ को अवश्य मन्दी। ता० १७-१८ को बाजार बढ़के घटता रहेगा, ता० १९ को दिन भर घटबढ़से रुख तेजीका रहेगा।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० २० से २७ अक्टूबर तक जनरल ध्यान तेजी का रक्खो, परन्तु एक तर्फा कार्य नहीं है, दैनिक कार्य करो। ता० २० को २-३ बजेसे तेजी, ता० २२ को दोतरफा लगाओ, ज्यादा घटबढ़ होगी। पहले मन्दी होके तेजी होगी। ता० २३ को घटे। ता० २४ को १२ या २ बजे से तेजी। ता० २५ को अचूक मंदी, ता० २६-२७ घट-बढ़।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० २८ अक्टूबरसे ३ नवम्बर तक साधारण बाजार रहेगा। कुछ जनरलमें मन्दीका ध्यान है। या दैनिक काम करो, सोना, रुईमें मन्दी नहीं रहेगी। चांदी साधारण रहेगी। ता० २९-३० अवश्य मन्दी। ता० ३१ और १ नवम्बर को दोनोंमें एक अवश्य मन्दी। ता० २ तेजी ता० २९ से संसारमें उत्पात बहुत रहेंगे।

(४) चौथा सप्ताह—

ता० ३ से १० नवम्बर तक—ता० ३ तेजी ता० ४-५-६ मन्दी, ता० ७-८-९-१० तेजी। यह जनरल ध्यान है, कोई खास बात नहीं है।

(५) पाँचवा सप्ताह—

ता० ११ से १८ नवम्बर तक घटे भाव या बढ़े भाव तेजीका ध्यान रखो, रुईका इस हफ्तेका नजराना लगावें या तेजी लगावें। चांदी गत ता० ८ नवम्बरको यदि तेज रहेगी तो तेज नहीं तो तेज नहीं समझना। ता० १२-१३ में एक अवश्य तेजी। ता० १४-१५ में एक अवश्य मन्दी। ता० १६-१७ अचूक तेजी।

(६) छठा सप्ताह—

ता. १९ से २४ नवम्बर तक—रुई अवश्य तेज होगी। चांदी सोने में घट-बढ़ होगी। कुछ मंदी होगी। ता. १९ को एक तरफा बाजार रहेगा, ता. १९-२० में १ अवश्य तेज होगी। ता. २१-२२ को दोतरफा लगाना अच्छा है। ता. २३ को व्यापारमें उत्पात और तेजी। ता. २४ को अच्छी तेजी।

(७) सातवां सप्ताह—

ता. २५ से ३० नवम्बर तक सोना चांदीकी नहीं कह सकते। रुई अवश्य मंदी होगी। ता. २७ को शामको और २८ ता. को दिन में १२ बजे तक तेजी हो सकती है। ता. २९ और ३० को अच्छी तेजी या अच्छी मन्दी होगी। ता. १ को मंदीका दौर है।

(८) आठवां सप्ताह—

ता० १ दिसम्बर से ८ दिसम्बर तक रुईमें साधारण मन्दी का ध्यान है। चांदी सोना भी पड़ा रहेगा। कुछ तेज होगा। यहाँ ग्रहणका मामला है। हरेक वस्तुमें अच्छी घट-बढ़ होगी, विशेष विचार नहीं लिख सकते। स्पेशल रिपोर्ट कार्यालयसे मंगाना अच्छा है।

(९) नौवां सप्ताह—

ता० १० से १७ दिसम्बर तक अच्छी घट-बढ़ होगी। यह सप्ताह उत्पाती है, वहाँ भूकम्प रोग राज्यका भय रहेगा। रुईका नजराना लगाना अच्छा है। दैनिक भी जोटा लगाना अच्छा है। ता० ११-१२-१३ और १४ को जोता लगाना अच्छा रहेगा।

नोट—ता० ८ को चांदी तेज रहे तो तेजी रहेगी। १७ तक मन्दी रहेगी तो मन्दी। ता० ११ को न्यूयार्क में अच्छी घटबढ़ मन्दीमें होगी।

(१०) दसवां सप्ताह—

ता० १८ से २५ दिसम्बर तक घटबढ़ रहेगी एक तरफा बाजार नहीं है। ता० १९ को घटबढ़से मन्दी। ता० १९-२० में एक अवश्य तेज। ता० २१-२२ में मन्दी। ता० २४-२५ में १ तेज १ मन्दी। पहले दिन देखके काम करो। ता० २५ को घटबढ़ अच्छी।

खण्डग्रास-सूर्यग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० रविवार ता० २ दिसम्बर १९५६ ई० को खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। यह ग्रहण एशिया यूरोप पूर्वी अफ्रीका और भारत काश्मीर पाकिस्तान तथा अफगानिस्तानमें खण्डग्रास ही दिखाई देगा। खग्रास व कङ्कण कहीं नहीं होगा। भारत भूमण्डलीय गणितसे स्पर्श मोक्षकाल-दर्शक मानचित्र अगले पृष्ठमें दिया है। इस चित्रमें नीचेकी ओर खींची गई 'ग्रहणस्य दक्षिण मर्यादा' रेखासे नीचे दक्षिण भागमें स्थित मद्रास म्हैसूर रामेश्वर त्रिचनापल्ली पांडीचेरी त्रिवेन्द्रम् और लङ्कामें यह ग्रहण बिल्कुल दिखाई नहीं देगा। ग्रहण दक्षिणमर्यादासे नीचे जो सूर्यग्रहणका चित्र दिया है वह कुरुक्षेत्रमें मध्यकाल स्टैण्डर्ड टाइम २-७ का है।

कुरुक्षेत्रमें स्टैण्डर्ड टाइमसे इस सूर्यग्रहणका स्पर्शादि काल निम्नाङ्कित है।

स्टैण्डर्ड टाइम	घंटा मिनट
स्पर्श	१२—४८
मध्य	२— ७
मोक्ष	३—३०

(११) ग्यारहवाँ सप्ताह—

ता० २६ से ३१ दिसम्बर तक मन्दी होगी ता० २६ को १२--१ बजे तेज होगी। उसके बाद ता० २७-२८ को मंदी। ता० २९-३१ गो नजराना लगाना अच्छा है। ता० ३१ को ४ बजे तक एक तरफा रहेगा। ता० ३१ को शीचर अच्छा मन्दा।

(१२) बारहवां सप्ताह—

ता० १ से १० जनवरी तक साधारण रहेगा। ज्यादा दिन मन्दी थोड़े दिन तेज रहेगा। ता० १ को घट-बढ़ साधारण। ता० २ को मन्दी होके तेजी। ता० ३-४ को अच्छी घटबढ़। ता० ७ को चांदी तेज रहे तो तेजी, मन्दी रहे तो मन्दी। ता० ८ को घटबढ़। ता० ९ को मन्दी होके तेज होगी।

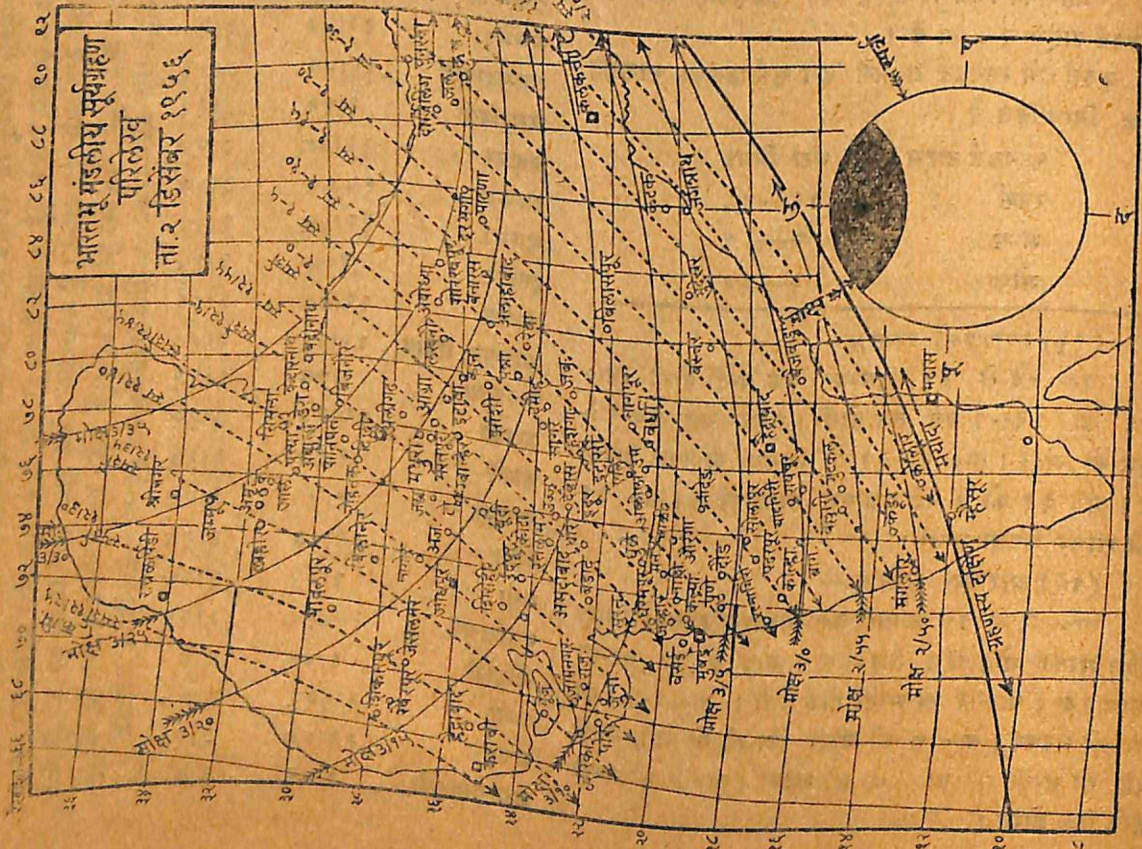
पर्वकाल (सर्वग्रहण) २ घंटा ४२ मिनट का है।

ग्रहण वेध—इस सूर्यग्रहणका सूतक पहले दिन मार्ग कृ. १४ शनिवार ता० १ दिसम्बरको रात्रिके १२-४८से प्रारम्भ होगा। ग्रहणवेधमें रोगी अशक्त और बालवृद्धके अतिरिक्त धार्मिक जनोंको भोजनादिका निषेध है। भारत और पाकिस्तानके कुछ प्रमुख नगरोंमें इस सूर्यग्रहणका स्पर्श मोक्ष काल मध्याह्नोत्तर स्टैण्डर्डटाइमके अनुसार निम्न है—

नगर	स्पर्श	मोक्ष
अयोध्या	१।८	३।२९
अमृतसर	१२।३८	३।२८
अजमेर	१२।४५	३।२०
अहमदाबाद	१२।४६	३।१३
अमरावती	१।१२	३।११
अलवर	१२।४८	३।२४
अम्बाला	१२।४४	३।२८
आगरा	१२।५५	३।२५
इन्दौर	१।०	३।१४
उज्जैन	१२।५८	३।१६
उदयपुर मेवाड़	१२।४९	३।१९
कलकत्ता	१।४८	३।११
कराची	१२।२६	३।१२
काशी	१।१५	३।२५
कानपुर	१।२	३।२४
कोटा	१२।५३	३।१८
गया	१।२२	३।२४
ग्वालियर	१२।५६	३।२३
गौहाटी	१।४७	३।३०
जम्मू	१२।३५	३।३०
जयपुर	१२।४८	३।२२
जगन्नाथपुरी	१।५२	३।५

ग्रहणका राशिफल—भारतमें यह सूर्यग्रहण अनुराधा ज्येष्ठा नक्षत्र और वृश्चिक राशिमें हो रहा है, अतः अनुराधा ज्येष्ठा नक्षत्र और मेष सिंह वृश्चिक धनुः राशि वाले प्राणियों तथा राष्ट्रोंको कष्ट भय चिन्ता हानि आदि अशुभ फलकारक है। वृषभ कर्क तुला मीन राशि वालोंको मध्यम और मिथुन मकर कुम्भ राशि वालोंको शुभफलकारक है। अशुभ राशिनक्षत्र वाले ग्रहण का दर्शन न करें। इस सूर्यग्रहणका विशेषफल पहले पृष्ठ १४-१५ पर दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र में दिया गया है वहाँ देखिये।

जब्बलपुर	११२	३।१४
जलन्धर	१२।३८	३।२६
जोधपुर	१२।४०	३।१६
झांसी	१।०	३।२२
त्र्यम्बक नासिक	१।१	३।८
दरभङ्गा	१।२१	३।२६
द्वारका	१२।३६	३।१०
दिल्ली	१२।५०	३।२७
नागपुर	१।१५	३।१२
प्रयाग	१।१०	३।२४
पटियाला	१२।४६	३।२६
पूना	१।६	३।६
बड़ौदा	१२।५१	३।१२
बद्रीनाथ	१२।५०	३।३३
बम्बई	१।१	३।७
बीकानेर	१२।३७	३।२२
भड़ौच	१२।५१	३।११
भरतपुर	१२।५२	३।२३
भुजकच्छ	१२।३५	३।१२
भोपाल	१।२	३।१७
मथुरा	१२।५३	३।२५
रतलाम	१२।५३	३।१५
राजकोट	१२ ४२	३।११
लखनऊ	१।५	३।२७
बिलासपुर म० प्र०	१।२२	३।१४
श्रीनगर काश्मीर	१२।३४	३।३०
सागर	१५	३।१८
सोलन शिमला	१२।४६	३।३१
हरिद्वार	१२।४८	३।३०
हजारीबाग	१।२३	३।२३
हिसार	१२।४३	३।२३
हैदराबाद दक्षिण	१।३३	३।३
औरंगाबाद	१।५	३।१५



❀ त्रैमासिक व्यापार रुख ❀

[लेखकः—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

गुड़

१५ अक्तूबरसे २३ अक्तूबर तक मन्दा रहेगा।

२४,२५ अक्तूबर घटाबढ़ी में ही निकलेंगे।

२६ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक मन्दा रहेगा।

७,८ नवम्बर तेजीमें जावेंगे।

९ नवम्बर से १२ नवम्बर तक मन्दा रहेगा।

१३ नवम्बरसे १९ नवम्बर तक तेज होगा।

२०,२१ नवम्बर घटाबढ़ी में ही व्यतीत होंगे।

२२ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक घटाबढ़ी होने पर भी रुख मन्देकी ओर ही रहेगा।

१५ दिसम्बरसे २२ दिसम्बर तक तेज रहेगा।

२३ ,, ,, २७ ,, ,, मन्दा ,,

२८ ,, ,, ३१ ,, ,, तेज ,,

१,२ जनवरी मंदेमें ही बह निकलेंगी। ता० ३ से १२ जनवरी तक गुड़की मार्केट घटा-बढ़ीमें ही बहती चली जावेगी।

आवश्यकीय सूचनाः—आश्विन मासमें १) ॥) की तेजीके आनेकी सम्भावना है। कार्तिकसे पौष मास तक २) २॥) के मन्देका आ जाना कोई असम्भव नहीं।

व्यापारियोंको मन्दी तेजी लगाकर रुपया कमानेका यह एक अलौकिक समय है।

रुई वायदा बाजार

१३ अक्तूबरसे २० अक्तूबर तक विशेष मन्दा।

२२ अक्तूबरसे ६ नवम्बर तक दोरंगी रुख प्रायः मन्दी की ओर ही बना रहेगा।

७ नवम्बरसे ९ नवम्बर तक मार्केट तेज रहेगा।

१० ,, ,, १४ ,, ,, ,, मन्दी रहेगी।

१५,१६ नवम्बर प्रायः तेजीमें जावेंगे।

१७ नवम्बरसे १९ नवम्बर तक मन्दी रहेगी।

२० ,, ,, २८ ,, ,, तेज रहेगा।

२९ ,, ,, ९ दिसम्बर तक मन्दी रहेगी।

१० दिसम्बर से १४ ,, ,, घटबढ़ रुख तेज।

१५ दिसम्बरसे २२ दिस० तक दोरंगी चलेगी।

२४ ,, से २७ ,, ,, मन्दी रहेगी।

२८ ,, से ३१ ,, ,, तेज रहेगी।

१ जनवरी से ७ जनवरी तक मन्दी रहेगी।

सावधानताः—मार्केटमें ३०,४० टकेकी मन्दीका आ जाना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मन्दी तेजीका काम करने वाले व्यापारी वर्गके लिये लाभ उठानेका यह एक सुनहला अवसर सिद्ध होगा।

—

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

अक्टूबर १९५६

ता० १५ सोमवार —पापांकुशा एकादशी व्रत ।
१७ बुधवार—प्रदोष व्रत तुला संक्रान्ति पुण्यकाल ।
१९ शुक्रवार—शरद् पूर्णिमा सत्यव्रत कार्तिक स्नानारम्भ ।
२२ सोमवार — श्रीगणेश ४ करवा चौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रात्रि ७।४८
२६ शुक्रवार— अहोई अष्टमी व्रत ।
२९ सोमवार —रमा एकादशीव्रत स्मार्त्तगृहस्थोंके लिए ।
३० मंगलवार—गोवत्सपूजन वैष्णव निम्बार्क ११ व्रत
३१ बुधवार—प्रदोषव्रत धन १३ यम दीपदान श्रीधन्वन्तरि जयन्ती, श्रीहनुमज्जन्मदिन

नवम्बर १९५६ ई०

ता० १ गुरुवार—नरक हरा १४ रूप चतुर्दशी ।
२ शुक्रवार—दीपमालिका श्रीमहालक्ष्मी पूजन श्री महावीर निर्वाण दिवस ।
३ शनिवार—अन्नकूट गोवर्धनपूजन वर्ष्टिकाकर्षण (रस्साकसी)
४ रविवार—यम २ भ्रातृटिक्का दूज, बलिराज महोत्सव दवात कलम पूजन, चन्द्रदर्शन ।
१० शनिवार—गोपाष्टमी ।
१२ सोमवार—अक्षया ९ कूष्माण्ड ९ आमला नवमी ।
१४ बुधवार—हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्मपंचकारम्भ, तुलसीविवाह, चातुर्मास समाप्तिः
१५ गुरुवार—प्रदोषव्रत वृश्चिक संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल अगले दिन ।
१६ शुक्रवार—वैकुण्ठ १४ व्रत ।
१७ शनिवार—सत्यव्रत स्व० ला० लाजपतराय निधन दिवस । जैन चातुर्मास समाप्तिः
१८ रविवार—मेला पुष्करराज गढ़मुक्तेश्वर भीष्मपंचककार्तिक स्नान समाप्ति, श्रीनानक जयन्ती ।
२१ बुधवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रात्रि ८।३८ ।
२५ रविवार—श्री महाकाल भैरव जयन्ती कालाष्टमी
२८ बुधवार—उत्पन्ना एकादशी व्रत ।
२९ गुरुवार—प्रदोषव्रत ।

दिसम्बर १९५६ ई०

ता० २ रविवार—खण्डग्रास सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र, चूड़ामणि योगयुक्तामावस्या ।
३ सोमवार—चन्द्र दर्शन मु० ३० ।
६ गुरुवार—श्री अरविन्द घोष निर्वाण दिन ।
१३ गुरुवार—मोक्षदा एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए, श्रीगीता जयन्ती ।
१४ शुक्रवार—एकादशी व्रत वैष्णव सम्प्रदाय ।
१५ शनिवार—शनि प्रदोष व्रत, धनुः संक्रान्ति पुण्यकाल सूर्यास्त पर्यन्त, सरदार पटेल निधन दिवस ।
१७ सोमवार—श्रीदत्त जयन्ती, सत्यव्रत श्रीत्रिपुर भैरवी जयन्ती ।
२० गुरुवार—श्रीगणेश चौथ व्रत चन्द्रोदय रात्री टे०-टा० ८।३३ ।
२७ गुरुवार—सफला एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए ।
२९ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत
३१ सोमवार—सोमवती अमावस्या

जनवरी १९५७ ई०

ता० १ मंगलवार—न्यूईयर्स डे सन १९५७ ई० प्रारम्भ ।
२ बुधवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५ ।
८ मंगलवार—श्री गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती ।

—

[पृष्ठ १६ से आगे]

२१ जनवरी १९५६ तक वर्तमान ३९वाँ वर्ष उनके लिए संघर्षकारक है। धनुःके शनिमें नासरकी नीति अरब साम्राज्यकी समर्थक और इजरायलके विरोधमें होगी।

गत २६ जुलाई (श्रावण कृ० ३ गुरुवार) को कर्नल नासरने काहिरामें रात्रिके ९ बजे स्वेज नहरके राष्ट्रीयकरणकी घोषणा की उस समयकी ग्रह स्थिति यह है—

१२ | १० | चं. मं. ११ | ९ | १ | २ के. | ८ श. रा. | ३ शु. | ५ गु. | ७ | ने. | हू. | ४ सू. बु. | ६

इस कुण्डलीकी ग्रह स्थितिका अध्ययन करने से तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि मागो किसी विशेषज्ञ दैवज्ञ वा मिश्रके 'नजूमी' ने ही घोषणाका यह महूर्त कर्नल नासरको बतलाया हो। मिश्र यूनान आदि में बड़े-बड़े ज्योतिषी हुए हैं और अब भी होंगे। जातक शास्त्रमें हमारे यहां यवनाचार्यका "यवन जातक' ग्रन्थ और ताजिकमें 'इक्कबाल—ईसराफ आदि योग वहींसे आये हैं। कर्नल नासरका ज्योतिष पर विश्वास है या नहीं यह हम नहीं जानते, परन्तु चाहे उन्होंने किसी नजूमीकी सलाह से वह समय रक्खा हो अथवा दैवात् परिस्थिति वश स्वयं ही अन्तःप्रेरणासे ही २६ जुलाईको रात्रिके समय राष्ट्रीयकरणकी घोषणा की हो—ग्रह स्थिति उनके अनुकूल है। विज्ञ पाठक देखेंगे कि इस कुण्डलीमें नासरकी जन्म राशिसे दशम चन्द्रमा स्थिर लग्न कुम्भमें, राज्येश मंगल लग्नमें और लग्नेश शनि राज्यमें है। यह राष्ट्रीयकरणके स्थायित्व-का सूचक है। मंगल शनिके कारण आतङ्क फैलना स्वाभाविक है, परन्तु गुरु दृष्टिके कारण हानि नहीं होगी और न स्वेज समस्या अभी विश्व युद्धका कारण ही बनेगी। गुरु अध्यात्मवादी शांति प्रिय ग्रह है यह भय आतङ्क और विनाशको रोकता है। गुरुके कारण ही मिश्रको भारतका सहयोग पूर्णरूपेण मिल रहा है। केन्द्रस्थ ६ ग्रह स्थिर राशियोंमें हैं अतः यह समस्या लम्बी चाहे भले ही खिंच जावे और मंगलके कारण पुलिस कार्यवाही आर्थिक नाकेबन्दी हो सकती है पर विश्वयुद्धकी शंका सर्वथा निर्मूल है। हमारे विचारमें तो १० अक्टूबरको मंगल मार्गी हो रहा है और १८अक्टूबरको शनि राहुसे आगे निकल जावेगा अतः यहां से ही वातावरण समाधान कारक बनने लगेगा और मार्गशीर्षमें ता० २१ नवम्बरको जब मंगल कुम्भ राशिको छोड़ देगा तब नवम्बरके अन्त वा दिसम्बरमें पारस्परिक वार्ता द्वारा समस्याका समाधान निकल जावेगा। स्वेज पर मिश्रकी प्रभुसत्ता स्वीकार कर ली जावेगी।

यह अभारतीय मनोवृत्ति !

[लेखकः—श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास ज्यौतिषाचार्य]

[इस लेखके विद्वान लेखक श्री व्यासजी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ज्योतिर्विज्ञानाचार्य हैं। आपके द्वारा सम्पादित 'विक्रम'में जिन्होंने सम्पादकीय टिप्पणियाँ पढ़ी हैं वे आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभासे भली भांति परिचित हैं। भारतके ज्योतिर्विदों एवं साहित्यकारोंमें आपका प्रमुख स्थान है। 'श्रीस्वाध्याय'के लिए आपने अभी यह लेख भेजनेकी कृपा की है। राज्यपुनर्गठन स्थापना दिवसके लिए हमने "दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र" पृष्ठ १४-१५ पर जो विचार व्यक्त किये हैं उसी चतुर्दशी चर्चाको आपने भी अशोभनीय बताया है। आशा है राष्ट्रनायक इस ओर ध्यान देंगे। —सम्पादक]

यह अणु और उद्‌जन-बमका युग है। समस्त विश्व विज्ञानके इस सर्वनाशी-सृजनसे आतंकित है और इसी कारण यह जगत् 'विज्ञान-युग' के रूपमें इतिहासमें व्यापक विनाशके पश्चात् भी स्मरणीय रह जाएगा। परन्तु विज्ञानने चाहे अणुका अन्वेषण किया हो, चाहे उद्‌जनका आविष्कार, किंतु विज्ञानके लोक कल्याणकारी सृजनके लिए हमें उन महर्षियोंकी स्मृतिमें ही स-सम्मान मस्तक अवनत करना पड़ेगा। आज जिस वायु पर आधुनिकोंने विजय की है, उसके सात स्तरोंका विश्लेषण विवेचन हजारों वर्ष पूर्व भारतीयोंने कर लिया था। बादलोंके कृत्रिम वर्षणके करिश्मे रावण जैसे आचार्योंने कर दिखलाए, पर किस प्रकारके समिध और उपाकरणोंसे वर्षाके बादलोंका निर्माण, आवाहन, और वर्षण करवाया जा सकता है। वह वातावरण बनाया जा सकता है, उन यज्ञोंका विधान भी उन्हीं लोगोंकी देन है, जो पुराण-पुरुष हो चुके हैं।

आजका वैज्ञानिक सूक्ष्म यंत्रोंसे चाहे आकाशके तारोंको नापता रहे और उनके चिन्होंको देखकर काल्पनिक कुतूहल उत्पन्न करता रहे, ऋषियोंने पूरे आकाशकी खाक छान कर, समस्त-ग्रह तारोंकी सूक्ष्मतम गतिविधियोंका, नापतोलका उनके गुण-धर्म, रूप रंग परिणामोंका जो तथ्य हमारे सामने रखा है वह आज भी आश्चर्य चकित कर छोड़ने वाला है। भारतवर्ष ही ऐसा देश है जहांके आचार्योंने इन ग्रहोंकी गतिविधि प्रभावका परीक्षण कर उनसे वातावरण, क्षेत्र, स्थल, व्यक्ति, और समष्टि पर होने वाले भले-बुरे परिणामोंका भावी-विज्ञानके रूपमें अनुसंधान किया है। और उनके द्वारा होने वाले परिणामोंको पकड़नेका प्रयास सफलतासे किया है। उद्‌जन बनाने वाले विज्ञानने सर्वनाशको चाहे नोता दिया हो, पर भविष्यमें होने वाली घटनाओंको खोजनेका किसी भी अभिनव विज्ञानने कोई मार्ग प्रस्तुत नहीं किया। भूकम्प हो जाने पर आधुनिक यंत्र उसकी भीषणता और दिशा दर्शन भले ही बतला दें। परन्तु भूकम्प किस परिस्थिति और ग्रह-तत्वोंकी गतिविधिसे प्रभावित हो, कब कैसे, कहां उत्पन्न हो सकते हैं, इसका निर्देश निःसंदेह आजके विज्ञानसे अपरिचित आचार्योंने अवश्य किया है। परन्तु अपने आचार्यों और उनके तात्विक अन्वेषणोंकी अवहेलना करने वालों, तथा अपने देशके संस्कारोंके विपरीत स्वतंत्रता दिवस पर 'केक' काट कर स्वतंत्र-संस्कृति-प्रधान-राष्ट्रका महोत्सव मनाने वाले लोग यह सब किस प्रकार सोचनेका सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं? १५ अगस्त १९४७को स्वतंत्रता स्वीकार करनेका जो लोग साहस ही नहीं—दुस्साहस कर देशको आपत्तियोंमें उतारने वाले न तो भारतीय परम्पराओंसे परिचित हैं, न वे परिचित होना चाहते हैं। देशको ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर अवलंबित कर 'पुरातन' को प्रश्रय देनेकी अपेक्षा आँख मूंदकर अज्ञानके आधार पर भले ही अंधकारके गहरे गड्ढेमें ले जाकर गिराना पसन्द कर सकते हैं। जिस राष्ट्रका आरम्भ कालरात्रि अमावास्याको हुआ हो, उसके भावीकी कल्पना भी भयावह है। उसके प्रत्यक्ष परिणाम प्रस्तुत होते जा रहे हैं, पर 'तारीखों' पर तैरने वाले भारतीय-नेता अमावास्याके दूषित वैज्ञानिक तथ्यको क्यों तौलने लगे? बम्बईके द्विभाषी-शासनका निर्णय भी ठीक अमावस्याको ही किया गया। और जिस प्रकार १५ अगस्त १९४७के

बाद हत्याकाण्ड हुए, वही पुनरावृत्ति बम्बे-प्रदेश-गुजरात में होकर रही, और जड़ोंमें जहरका सिंचन हो गया। सुना गया था कि राज्यपुनर्गठनका प्रारम्भ भी सर्वपितृ,-अमावास्याको ही होने जा रहा था, पर कुछ समझदारोंने उसे टालकर १ नवम्बर अर्थात् 'नरक-चतुर्दशी'को करना स्वीकार किया है। यह कैसी विचित्र संयोगकी बात है कि जाने अनजानेमें विशिष्ट कार्योंका इस देशमें आरम्भ अमावस्या को ही यथाक्रम होता जा रहा है, पता नहीं यह कम हमारे इस महान् राष्ट्रको किस गह्वरेमें ले जाकर गिराएगा। एकके बाद एक अनर्थका व्यापक संयोग एकत्रित बन रहा है। परम-प्रगतिशील विदेशी लोग भी अपनी परम्पराएं रखते हैं, और उनमें भले-बुरे को समझ-बूझसे बचाकर ही महत्त्वके कार्य करते हैं। महारानी एलिजाबेथका राज्यारोहण भी एक-एक परम्पराको सम्पूर्ण सम्मान देकर सम्पन्न हुआ, पर जिस देशने भले-बुरेकी सूक्ष्म खोज कर संस्कारोंमें समावेश किया, जिसका स्वास्थ्य, शुभाशुभ पर वैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, उनको अनजाने 'रूढ़ियां' समझकर हम इस प्रकार उपेक्षित करते जा रहे हैं, जैसे इस राष्ट्रकी अपनी कोई संस्कृति वा परम्परा ही न रही हो। अवश्य ही बहुतसे संस्कारोंके विषयमें—उनके धार्मिक रूप रहनेके कारण—हमने उसके वास्तविक वैज्ञानिक रूपको नहीं समझ पाया, इस कारण उन्हें 'पुरानी-प्रथा' समझ उपेक्षित किया और अनजाने ही हानि उठाई है, परन्तु जिन लोगोंने गहराईमें उतरकर इन विषयोंका अनुशीलन, अध्ययन, विश्लेषण किया है, वे स्वीकार करनेमें विवश हैं कि ये सर्वथा स्वास्थ्य-विज्ञान और वातावरणसे सुसंगत ही है। किंतु 'सन्' का सहारा लेकर 'तारीखों' पर तरल-तैरने वाले भारतीय शरीर पर विदेशी मस्तक (या मति) रखने वाले नेतावर्ग महान् राष्ट्रकी संस्कृतिके विपरीत जहां केक काटकर राष्ट्रका मंगलाचरण करते हैं, वहां उस देशका केवल भगवान् ही रक्षक है। अनीश्वर वादियोंको तो उसपर भी विश्वास नहीं है। बुद्ध जयन्ती पर शासकीय महोत्सव इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

—

रुई चांदी सोना शेयर एरण्डा अलसी आदिमें—

व्यापारकी गतिविधि

[लेखकः—विद्यारत्न श्री पं० हिम्मतराम जानी ज्योतिषाचार्य]

सं० २०१३ वि० के नये व्यापारी संवत्में बाजारोंकी गतिविधिमें कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। निम्नलिखित रूपसे व्यापारी जगत् अपना ध्यान केन्द्रित करे और आने वाली दिवाली उत्साहके साथ मनायें।

आश्विन मास—इस महीनेमें (अमान्तमें) पांच शुक्रवार हैं, चन्द्रदर्शन शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार ता० ५-१०-५६ को है। तुला संक्रान्ति शुक्ल १३ बुधवार को ४५ मुहूर्त्तसे लगती है अतः रुई और चांदीमें दिन-प्रति-दिन मंदी होनेका योग है। साथ साथ सभी खाद्य पदार्थोंमें मन्दी होगी। कार्तिक कृष्ण ५ के बाद रुई कपड़ा अलसी, चांदी, सोना, हेसियन, रेशम और सभी तरहके रस कस व चावलमें तेजी रहेगी।

रुई—१६-१०-५६ से ३१-१०-५६ मन्दी। शेयरमें जनरल मन्दी रहेगी। ता० १४ से १७ तक मन्दी। बादमें भी दिन प्रति दिन मन्दी आयेगी।

सोना—सामान्यतः तेज, ता० २३, २६, २७ अक्टूबरको मन्दा रहेगा।

चांदी—महीने भर जोरदार घटा बढ़ी चलनेका योग चालू है और अन्तमें मन्दी होगी।

एरण्डा अलसी मूंगफली—के बाजारोंमें सामान्य तेजी चालू रहेगी। एरण्डा और अलसीमें ता० २५ से ३० अक्टूबर तक मन्दीका योग है।

गेहूं चावल—तेजी ता० २३, २४, २५, और ३० अक्टूबर। मन्दी ता० १६, १७, २८, अक्टूबर।

घी और तैल—तेजी १६, २४ अक्टूबर। मन्दी २०, २१, २८ अक्टूबर।

जूट, सूत, कपड़ा—ता० १-१०-५६ से २२-१०-५६ तक तेजी। ता० २३-१०-५६ से ३१-१०-५६ तेजीमें तेजी।

कार्तिक मास—इस मासमें पाँच शनिवार हैं। चन्द्र-दर्शन शुक्ल २ रविवारको ३० मुहूर्त्त है और वृश्चिक संक्रान्ति शुक्ल १२ गुरुवारको ३० मुहूर्ती है, अतः व्यापारकी वस्तुओंमें कोई खास घटनेका या बढ़नेका योग नहीं है। राजकीय वातावरण कुछ अव्यवस्थित रहेगा। और प्रजामें भारी भय रहेगा। शुक्ल पूर्णिमासे हर चीजों का भाव घटने लगेगा। शुक्ल ४ बाद रुई, अलसी, गेहूँ, तिलहन और चांदी तेज होगी। शुक्ल १२ के बाद अनाज, घी, गुड़, शक्कर, कपूर और रसकस वाले पदार्थोंमें धीरे २ मन्दीकी हवा चलेगी। यहांसे चांदी, तांबा, गर्म कपड़ा, घास, लकड़ी, अत्तर, मोती, लालमिर्च और जलाने वाले तेलों (मिट्टीका तेल पैट्रोल) में तेजी रहेगी और बादमें मार्गशीर्ष वदी अमावसके आसपास बाजार मन्दीकी तरफ रहेगा।

नवम्बर १९५६

रुई—जनरल बाजार तेजीकी लाइनमें चालू रहेगा। अन्तर्गत मन्दी ता० ३, ५, १३, २१, २५ और २६ नवम्बर।

शेअर—सामान्यतः मन्दीकी लाइन ता० ३-११-५६ से ता० १७-११-५६ तक। तेजीकी लाईन ता. १८-११-५६ से ३०-११-५६ तक। अन्तर्गत चालू तेजी—ता० १, ४, ५, ६, ७, ९, १७, २१, २४, २७ मन्दीके योग, ता० २, १३, २०, २२, २५ नवम्बर।

सोना—बाजार भावमें खास कोई फरक नहीं होगा। ता० ३-११-५६ से ता० १६-११-५६ और ता० २०-११-५६ से लेकर ३०-११-५६ तक बाजार धीरे-धीरे मंदी की ओर झुकेगा, बाजार तेजी ता० २, १८, २६, २७। मंदी ता० ४, ५, १०, १४, २१, २२, २३, २५, २८, नवम्बर।

चांदी—दुतर्फा बाजार चलने पर भी तेजी चालू रहेगी।

तेजी—३, ६, ७, १५, १८, २१, २२, २३, २४।
मंदी—४, १०, १४, २०, २५, २६ नवम्बर।

अलसी एरण्डा मूंगफली—इन तीनों बाजारोंमें धीरे-धीरे मन्दी आनेका योग चालू है। परन्तु ता० १ से ता० १३ तक बाजार सुस्त रहेगा बाद सामान्य तेजीसे काम लेकर बादमें मन्दीकी राह पर चलेगा।

तेजी—ता० १६ तक बाद महीनेके अन्त भागमें मंदी, सारा महीना मन्दीमें रहेगा।

गेहूँ चावल—व्यापार थोड़ा सा नरम रहेगा।

तेल—ता० १, १३, १४, १५, १८, २३, नवम्बर।

मन्दी—ता० ४, ५, ८, १०, २१, २२, २५, २६ ३० नवम्बर।

घी तेल—सामान्य मन्दी—१-११-५६ से १०-११-५६। मन्दीमें और मन्दी १८-११-५६ से १०-११ ५६,
तेजी—ता० ७, १३, १८, २३, २७।

जूट सूत कपड़ा—तेजी ता० २, ३, ५, ७, ६, १३, १५, १८, २३। मन्दी—२, ४, १०, २१, २२ नवम्बर।

मार्गशीर्ष—सूर्यग्रहणसे बाजारोंमें नया रंग दिखाई देगा। पांच सोमवार और चन्द्रदर्शन शुक्ल १ सोमवार मुहूर्त्त ३० है। धनुःसंक्रान्ति शुक्ल १३ शनिवार मुहूर्त्त ३० है। महीनेका खास लक्षण रुईमें तेजी और चांदीमें दोनों तरफ बाजार चलेगा। तापमान अच्छा रहेगा, शुक्ल प्रतिपदासे रुईके भाव बढ़ते रहेंगे। शुक्ल ११ से मंदी की तरफ बाजार झुकेगा। कृष्णपक्षके आस-पास अलसी चीनी केसर आदिमें तेजी रहेगी।

दिसम्बर

रुई—मन्दीकी लाईन चालू है। ता० १-११-५६ से १३-१२-५६, मंदीमें मन्दी १३-१२-५६ से ३०-१२-५६ तक। तेजी—४, ११, १५, १७, १९, २२, २९ दिसम्बर।

मंदी—३, ६, १३, २३, २४, २६, दिसम्बर।

शेअर—तेजी, २, ४, ६, ७, १५, १६, २०, २९।

मंदी—३, ९, १०, १२, १६, २०, २८।

सोना—तेजी २, ७, १६, १७, २२,

मंदी—३, ६, ८, ९, २१, २६, २२, २३, २९

चांदी—जनरल तेजी चालू

ता० १-१२-५६ से ३१-१२-५६ तक।

तेजी—ता० १, १५, १७, १९, २०, २१,

मंदी—३, ६, १०, १४, २१, २६, २७,

एरण्डा, मूंगफली, अलसी—जनरल तेजी १-१२-५६, से १३-१२-५६ तक।

मन्दी—१४-१२-५६ से ३१-१२-५६ तक।

अनुभव सिद्ध व्यापारिक निर्णय

[लेखकः—ज्योतिषरत्न श्री पं० राजारामजी जैन सम्पादक—मासिक 'भविष्यदर्श']

सूर्य मंगल वेध १५ अक्टोबरको प्रातः साढ़े पांच बजे से २३ अक्टोबरको दोपहर बाद १।४७ बजे तक रहेगा जो कि रुई बारदाना पाट रेशम कपड़ामें मन्दी, चांदी सोनामें तेजी लावेगा। तुलासंक्रान्ति वेतकी ग्रन्थोक्त तीसरे वार चौथे नक्षत्रमें रात्रिमें टायम ८।५५ बजे पर लगेगी इसका फल "संक्रान्ति फल प्रकाश" में यों लिखा है —

तूर्ये धिष्ण्ये च पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीयके।
संक्रान्तिर्निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम्॥

अर्थात् खाद्य वस्तुओंमें मन्दीका श्रेष्ठ वातावरण बनेगा। १६ अक्टोबरको सायंकालसे शीतवृद्धि वायुवेग प्रत्यक्ष दिखाई देगा, मार्केटमें तूफानी ज्वार भाटा होगा। १७ अक्टोबरको सायं ६।४७ पर शनिराहु की युति (युद्ध) होगी। फल स्वरूप दिल्ली बम्बई गुजरात सौराष्ट्र महाराष्ट्र महाड बन्दरगाह जंजीराबाद आदि नगर व यहांके नेताओं पर विपत्ति, भयङ्कर रोगोपद्रव भूकम्प विग्रह आदिसे जनताको भी विशेष कष्ट होगा तथा मेष सिंह वृश्चिक धनु राशिके नगर वस्तु मनुष्य नेता लोगोंका अपमान भय कष्ट शोक आदि होंगे। इस वर्षमें वर्षाऋतुके अमरूद इधर कीड़े रहित हुये हैं। साथ ही जहां भी कीड़े रहित हुये होंगे, वहाँ आगे शीतकालमें श्रेष्ठ वर्षा होगी तथा ग्रीष्मान्न व तैलके समस्त बीज अधिक उत्पन्न होंगे। गतवर्ष सम्वत् २०१२ की होली जलनेके १३ दिन पूर्व ही बेरोंमें कीड़े पड़नेके फलस्वरूप यत्र तत्र वर्षामें हानि हुई है, यह दोनों ही वस्तुयें आगामी वर्षकी वर्षा और उपजका अनुभव करनेके लिये प्रत्यक्ष रूपसे पूर्वाचार्योंके गहन अध्ययनकी परिचायक हैं। २० अक्टोबरको सवेरे ५।२२ से २३ अक्टोबरको रातके ११।१० बजे तक सूर्य मंगलका चरणवेध रुई बारदाना पाट कपड़ाके भावोंमें मन्दा करेगा, इन वस्तुओंके व्यापारियोंको सुख मिलेगा। २४ अक्टोबरको बुधसे मंगलका वेध ३१ अक्टोबरको दोपहरके सवा बारह बजे तक रुई बारदाना चांदी सोना पाट व अन्य वस्तुओंके व्यापारियोंको नजराना (जोटा) लगानेका श्रेष्ठ अवसर है। मंगलवारी तुला संक्रांति में २५ अक्टोबरको पूर्वास्तं बुध गुड़में तेजी ला सकेगा साथ ही चावल मन्दे हो सकेंगे! किन्तु सामयिक प्रसङ्ग अवश्य ही देखियेगा। रात्रिको पौने दस बजे गुरु शुक्रकी युति (युद्ध) वस्तुमात्रमें ही अगले दिन तूफानी तेजी मन्दी करेगी। २८ अक्टोबरको देवाचार्य गुरुदेव सिंह राशि त्याग कर कन्या राशिमें पदार्पण करते समय दैत्याचार्य शुक्रदेव से समागम करेंगे। गुरुदेवके नवीन पदग्रहण कालमें वायु-वेग और वर्षा अनेकानेक स्थानोंमें होगी। जैसे मध्य लोक के किसी नेताके आने पर बड़ी धूमधाम सफाई छिड़काव आदि होता है उसी भांति गुरुदेव आकाश लोकके नेता होने के कारण उनका भी इसी भांति स्वागत किया जावेगा। अन्य सभी पञ्चाङ्गोंमें जो राशि त्याग लिखा है उसे भी देखें साथ ही दृगणितके पञ्चाङ्गकी सत्यताकी परीक्षा करें। यहाँ देवासुर मिलन (राजा मन्त्रीका मिलन) दो राष्ट्रोंको मिलने की सूचना है। रुई बारदानेके साथ वस्तुमात्रको भी मन्दी की शरण लेनी पड़े तो आश्चर्य नहीं, सावधान! जब कि चांदी सोनाकी दर्शनीय विचित्र स्थिति बनेगी। दीपावली शुभवारी शुक्रवारी गत सम्वत् २०१० में भी इसी वार नक्षत्र योग करणको पाकर भाग्याङ्क १।१ दोनों समय प्रत्यक्ष दिखाया था, साथ ही उस वर्षमें मन्दीकी भेरी बज गई थी। आने वाले वर्षकी तेजी मन्दीके इच्छुक दीपावली से पहले किसी भी वस्तुके भावोंको इस दिनके भावोंसे मिलाकर देखें, बाजार जिधर भी चले, तदनुरूप स्थिति आगे भी वर्ष भर तक चलेगी। यह शकुन वार्षिक तेजी मन्दीके लिये अच्छा मिलता है।

कार्तिक शुक्ला ४ मंगलवारी, सप्तमी शुक्रवारी बीयाँ दाल अन्न ग्वार सरसों कठोल चांदी सोनामें श्रेष्ठ तेजी

गेहूँ, चावल—जनरली तेजी (मन्द गतिसे) १-१२-५६ से ३१-१२-५६ तक।

घी, तेल—तेजी ता० ७, ८, १३ और १७

मन्दी—ता० ३, ४, ६, १०, २०, २४, २६, २८,

जूट, सूत, कपड़ा—मन्दी ता० ३, ६, १०, २३ से ३१ तक। तेजी—४, ७, १५ से १७ दिसम्बर तक।

—

करेगी तथा शुक्ला ५ बुधवारी (कार्तिक मासकी) समस्त तेलके बीज धान मूंगफली चावल दाल अन्न कठोल बीयाँ ज्वार बाजरा मक्का उड़द मूंग मोठ रमास ग्वारादिमें श्रेष्ठ तेजी आवेगी। ८ नवम्बरको वर्षा और गुड़ मन्दा होगा। १० नवम्बरको केतकी ग्रन्थोक्त शन्यस्त पश्चिममें गुड़में मन्दीकी लम्बी लायन चलावेगा। एरण्डा में तेजी चमकेगी अन्य तेलके बीज भी साथ होनेकी आशा है। १३ नवम्बरको चांदी तेज होगी। १४ नवम्बरको अच्छी मंदी आकर बाजार पलट भी सकेगा। १५ नवम्बरको वृश्चिक संक्रान्ति (सूय बुध शनि राहु योग) बाजारमें भयङ्कर उलट फेर करेगी। समस्त तेलके बीज दाल अन्न ग्वार खाद्यान्नमें तेजीका जोश आवे तो आश्चर्य नहीं। चांदी सोना भी साथ होगा। पूर्णिमाको कृत्तिका मन्दी सूचक है। रूई बारदाना पाटमें मन्दीका ठोस वातावरण बनेगा। कार्तिक मासमें पांच रविवार तथा पांच ही शनिवार भी हैं। इन पिता पुत्रमें घोर शत्रुता है, अस्तु। कृष्णपक्षसे शुक्ल पक्षकी स्थिति भिन्न ही रहेगी। १६ नवम्बरको गुड़में श्रेष्ठ मन्दी आवेगी। गुरुसे शुक्र अलग हो तुला राशिमें भौमसे संदृष्ट होकर (प्रतियुति) करेगा। मार्गशीर्ष मासमें पांच सोमवार हैं जो कि इस मासमें रिकार्ड तोड़ तेजी मन्दी प्रारम्भसे ही प्रारम्भ कर देंगे। गत वर्षा का अनुभव यही बताता है, सचेत २१ नवम्बरको सवेरे १०।३३ बजेसे सूर्य राहुकी युति चमत्कारिक तेजी मन्दी वस्तुमात्रमें प्रत्यक्ष ही दिखाने लगेगी। रातको ७।४५ बजे मीने भौमः २१ मईसे अबतक छः मासमें शनिसे राशि परिवर्तन करते हुये जिन जिन वस्तुओंमें तेजी, घोर तेजी की थी वह कुछ समयके लिये विलीन हो जावेगी। सरसों अरहर मटर रुई बारदाना गेहूं आदिके व्यापारियो चेतो! परीक्षाका समय आ गया है। जबकि शनि ६ नवम्बरको ही तुला नवांशमें आ चुका है, किन्तु सेनापति महोदय भौम ने आज अपनी यह कुर्सी छोड़ दी है, तब क्या होगा? कहीं २ वर्षा भी होगी। शनिदेवने तुला राशिके भोगकालमें बीयां सरसोंमें घोर मन्दी की थी किन्तु जैसे ही १३ नवम्बर सन् ५५ को वृश्चिक राशिमें आये राहुका समागम हुआ क्या, उससे डेढ़ मास पूर्वसे ही वस्तुमात्रमें ही विशेषकर बीयाँ सरसों रुई कपड़ामें तो तेजीका चमत्कार ही दिखा दिया इनका समागम ७ मार्च सन् ५७ तक रहेगा, उसके पश्चात् मन्दीका श्रीगणेश दर्शनीय होगा। २१ नवम्बरसे गुड़में तेजीकी लम्बी लायन चलनेकी पूर्णाशा है। सोना चांदी भी तेज होंगे। २७ नवम्बरको रातके ८।५० बजे सूर्य शनिकी युति (युद्ध) पिता पुत्रका युद्ध होगा, जो कि सभी वस्तुओंमें चमत्कारिक स्थायी मन्दी करेगा। एरण्डा व इसके साथकी वस्तुयें मन्दी होंगी। २ दिसम्बरको दोपहर बाद सूर्य ग्रहण होगा, इस कालमें जहां भी बादल वर्षा आदि दिखाई दें कि ग्रहण ही दिखाई न दे तो घोर मन्दा खाद्यवस्तु मात्रमें चलेगा। घी तेल खांड गुड़, उड़द, काली वस्तुके संग्रहके ढाई मास बाद लाभ होगा। रूई बारदानामें मन्दीका श्रेष्ठ चांस बनेगा। चांदी सोना साथ चलें या विपरीत चलेंगे। ६ व १४ दिसम्बरको बाजारमें बड़ा ही हेर फेर होगा, लायन बदल जावेगी। १४ दिसम्बरसे गुड़, सूत कपड़ा, घी तेल, तिल सोना विशेष तेज होगा। आज ही शुक्र वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेगा, यहाँसे ७ जनवरी सन् ५७ पर्यन्त यह योग चलेगा जो कि अनेक वस्तुओंको तेज, शेयर्स रुई बारदानामें श्रेष्ठ मन्दा, चांदी सोना भी साथ हो सकेगा। किन्तु जगत्प्रसिद्ध कुहिया अमावस अर्थात् पौष कृष्णा ३० सोमवारी मूल नक्षत्र युक्त मन्दीका ढोल बजवा देगी, सचेत्! लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व व्यापारी महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थिति और अपनी शक्तिको तौलकर ही कार्य करें।

नोट—ता० २८ अक्टोबरसे पुनः कन्या राशिमें गुरु शुक्र योग केवल भौम संदृष्ट है जो कि १६ नवम्बर पर्यन्त चलेगा अर्थात् ३० सितम्बर से १६ नवम्बर पर्यन्त का समय भारतवर्षमें कोई अघटित घटना प्रस्तुत करे तो आश्चर्य नहीं। इसके अतिरिक्त घाघजी कहते हैं:—

स्वातीमें दीवा बले, विशाखा खेलै गाय।
घना गयन्दा रण चढ़ै, उपजी साख नसाय॥

अर्थात् स्वातिनक्षत्रमें दीपमालिका हो, विशाषा नक्षत्र में गोवर्धनपूजा हो तो बहुतसे हाथी युद्धके लिये राजाओं द्वारा सजाकर चढ़ाये जावें, अर्थात् राजाओंमें युद्ध हो तथा पैदा हुई शाख नष्ट हो जाय।

—

साहित्य-समीक्षा

[समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां आनी आवश्यक हैं। एक प्रति आने पर केवल प्राप्ति स्वीकार ही किया जावेगा। —सम्पादक]

'ऋतूल्लासः'

लेखकः—कविपुण्डरीक श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र एम. ए. प्रकाशक—उल्लास श्रीभवन, भरतपुर। मूल्य एक रुपया।

संस्कृत-साहित्यमें ऋतु-वर्णन परम्पराका अपना अनुपम महत्त्व है। कविकुलगुरु कालिदास प्रणीत 'ऋतु संहार' तथा अन्यान्य कवियों द्वारा ऋतुवर्णनपरक काव्य सहृदयोंमें सुप्रसिद्ध हैं ही। अलंकार कालमें तो आचार्योंने 'महाकाव्य' नाटकादिकोंमें ऋतुवर्णनको आवश्यक ठहरा ही दिया था! न केवल प्राच्य साहित्य मनीषियों प्रत्युत प्रतीच्य पंडित पुङ्गवोंने भी काव्यमें प्रकृति वर्णनको प्रमुख स्थान दिया है। यह बात केवल संस्कृत ही में नहीं वरन् सभी भाषाओंके साहित्य पर संघटित होती है। आजकल जबकि लोग संस्कृत भाषाकी उपेक्षा-सी करने लगे हैं तथा मौलिक चिन्तन, अध्ययन, और अनुशीलनका अभाव बाहुल्यकर दिखलाई देता है ऐसे समयमें अभिनव विकसित कवि-पुण्डरीक श्री मिश्रका यह प्रयास सर्वथा स्तुत्य है। उक्त 'ऋतूल्लास' नामक पुस्तकमें कविने छहों ऋतुओंका वर्णन सुन्दर ढंगसे सरस सरल संस्कृतमें किया है यह सर्वथा श्लाघनीय है। रचनामें मौलिक सूझ एवं सुन्दर भावोंका गुम्फन नितान्त मनोरम है।

उदाहरणके लिये देखिये वर्षा कालमें पृथ्वीका उद्दीप्त-वासनामयी कामिनी सा वर्णन कितना हृदय ग्राही है—

जीमूतो चारभेतं दयित परिचिता चारमेवामनन्ती
तत्कालोद्भूतशाखैस्तरुभिरभिसृतै रोमहर्षाभिरामा।
वृद्धोच्छ्वासा सगन्धा परिचलितरजः स्तम्भकाले पृषद्भि—
र्दन्तस्पृष्टाधरेयं व्यवहरति धरा कामिनी बेद्धकामा॥

इसी प्रकार ग्रीष्म कालमें कठिन श्रम करने वाले ग्रामीणोंके जीवनकी झांकी निम्न पद्यमें क्या खूबीसे चित्रित हुई है—

सन्तानैः संवृतानां वत धरणिजुषां क्षामदेहस्वराणां
हित्वकं कर्षकाणां निजशरणगतं वस्तु वीतोत्सवानाम्।
औष्ण्यानौष्ण्यानपेक्षं मितकरणवतां जीवनं जीविकायै
रम्यं संभाव्यते यत्तदिति रसविदां काव्यरागानुबन्धः॥

कविका यह प्रथम-प्रयास अत्यन्त शुभ है। हम आशा करते हैं कि कवि अपनी साहित्य-साधनामें निर्बाधगतिसे अग्रसर हो इसी प्रकार सदैव सुरसरस्वती समुपासनमें निरत रहेगा। पुस्तकमें हिन्दी और अंग्रेजीके अनुवाद दिये हैं वे भी सुन्दर हैं, इससे पुस्तक और अधिक उपयोगी बन गई है। हां, ३१ पद्योंकी इस लघु-पुस्तिकाका मूल्य एक रुपया अवश्य खटकने वाला है—ऐसी पुस्तकें तो नाम मात्र मूल्यमें ही वितरित होनी चाहिये। साथ ही हेमन्तर्तुमें ही शिशिरका जो अन्तर्भाव व्यञ्जित किया गया है वह यदि प्रथक वर्णित किया जाता तो और अच्छा रहता। अस्तु। 'यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते'।

'त्रिलता स्तुति-मुक्तावली'

लेखक और प्रकाशक—कविरत्न श्री पं० तेजभानु वैद्य, मकान नं० ३२६५ काजीवाड़ा अम्बाला सिटी। मूल्य आठ आना। मूल संस्कृत हिन्दी टीका सहित।

यह एक संस्कृतका सुन्दर खण्ड काव्य है। इसमें कवित्वके साथ साथ भक्ति एवं अध्यात्मके भी उच्च भावोंका सन्निवेश है। पुस्तकमें भारतीय संस्कृति एवं ब्राह्मणोंकी अभ्युन्नतिके लिये बड़े ही सुन्दर विचार निबद्ध किये गये हैं। संस्कृत भाषाकी वर्तमान अवस्था पर देखिये कैसी करुण व्यंग्य है—

"धनार्जनोत्कृष्ट कलास्ति राष्ट्रगीर्द्विजैरतस्त्यक्ततमाऽतिदेवगीः।
परोऽनधीती न रसाभिलाषुकः कृतिस्तु कं लोकमलं करिष्यति"

अर्थात् राज्यकी भाषा ही धन देने वाली है (अंग्रेजी) इसलिये ही ब्राह्मणोंने उसे अपना लिया है और संस्कृतको छोड़ दिया है। अन्य ब्राह्मणातिरिक्त जन तो संस्कृत पढ़े ही क्यों? ऐसी स्थितिमें मेरी यह संस्कृतमें की गई रचना किसे अच्छी लगेगी? अर्थात् इसे कौन पढ़ेगा? कितनी मार्मिक बात इस श्लोकमें कही गई है! इसी

प्रकार वर्तमान आचार विचारों पर एक पद्यमें प्रकाश डाला गया है।

'शिखा गता किन्तु शिखावलेषु तत्तन्तुवायस्य करेषु सूत्रम्।
तेषां स्वसंज्ञोक्तिषु लज्जितानां स्टष्टिर्नवानामथवा नराणाम् ॥'

अर्थात् शिखा शायद मयूरोंके पास ही चली गई है क्योंकि वे 'शिखी' कहलाते हैं और सूत्र सम्भवतः तन्तुवायों (जुलाहोंके) पास ही चला गया है तभी तो शिखा सूत्र हीन ये मनुष्य अपनी संज्ञा 'हिन्दूपन' माननेसे भी लज्जित होते हैं—यानी 'हिन्दू' तक अपने लिये कहलानेमें लजाते हैं। क्या पता ये मनुष्य हैं भी या नहीं ? अथवा विधाता ने यह कोई नई सृष्टि ही की है।

इसी प्रकार भगवद्भक्तिके अभावका मूल कारण बताते हुए एक स्थान पर लिखा है—

"विकृता नर बुद्धिवृत्तयः विकृतं भोजनवेषधारणम्।
विकृत पठनं च पाठनं कथमास्तां तव पादयोर्मतिः ?"

अर्थात् इस समय मनुष्योंकी बुद्धि और वृत्ति, भोजन तथा वेष विन्यास, पढ़ना और पढ़ाना सभी वस्तुएं जब विकृत हो गई हैं तो फिर भगवान्का स्मरण निर्व्याज रूपसे कैसे हो ?

पुस्तक सर्वथा उपयोगी एवं लाभदायक है। भारतीय संस्कृतिके प्रेमियोंसे यह पुस्तक पढ़नेका हमारा अनुरोध है। पुस्तककी छपाई साधारण है। 'मुक्तावली'के प्रणेता कविरत्नजी जैसी प्रतिभाशाली विभूतियोंको पूर्ण प्रोत्साहन मिलना चाहिये, जिससे इनकी ज्ञान गरिमासे भारतीय राष्ट्र आलोकित हो उठे।

"जन्मभूमिपंचांग" सं० २०१३

(पृष्ठ १९६ मूल्य १।।।)

प्रधान सम्पादक—श्री देवशी वीरजी खोना गणित-ज्योतिषी, सहसम्पादक—श्री अमृतलाल लक्ष्मीचन्द शाह और पं० कृष्णाजी विट्ठल सोमण। प्रकाशक—जन्मभूमि प्रकाशन मंदिर, २२-२६ घोघा स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई—१

खगोलसिद्ध सूक्ष्म दृग्गणितका यह एक अद्भुत निरयन कार्तिकी पंचांग विगत १२ वर्षोंसे गुजराती भाषामें प्रकाशित हो रहा है। इस पंचांगमें प्रतिवर्ष जितनी शुद्ध सामयिक श्रमसाध्य सामग्री गणित फलित विषयक दी जाती है—उतनी भारतीय भाषाके अन्य किसी पंचांगमें हमारे देखनेमें नहीं आई। ग्रीन्वीच वेधशालाके Nautical Almanac नामक विशालकाय पंचांगमें केवल गणितकी ही बाहुल्यता है। तिथि नक्षत्र आदिका मान और भौमादि ग्रहोंका राश्यादि भोग उसमें नहीं रहता, विषुवांशसे विपरिणमनक्रिया द्वारा राश्यादि लाना पड़ता है। अतः 'नाटिकलएलमानक' रेफल्सएफेमरीज—एलमानक आदि यूरोपियन बहुमूल्य पंचांगोंकी अपेक्षा 'जन्मभूमिपं--चांग' अधिक उपयोगी एवं सस्ता है। खगोलचमत्कृतिमें भूमण्डलीय ग्रहणोंका सचित्र विवेचन, ग्रह नक्षत्रोंकी युति और प्रति मासकी शुक्ल द्वितीयाके चन्द्र दर्शनका चित्र, हर्शल-नैपच्यून सहित ग्रहोंकी क्रांति शर एवं विदेशी एफेमेरीजकी अभाव पूर्तिके लिए ग्रहोंका राशि प्रवेश नक्षत्र प्रवेश नवमांश प्रवेश नवमांश युति ग्रहयोग (Aspectarican) आदि भी दिये गये हैं। तिथि नक्षत्र योगका मान घटीपलों और घण्टा मिनटोंमें दिया गया है। अन्य सब विषय स्टेण्डर्ड टाइम घण्टा मिनटोंमें ही दिया गया है। विवाह उपनयनादि मुहूर्तोंका शुद्ध समय, सर्वतोभद्रचक्रके अनुसार ग्रहोंका परस्पर वेध और संसार भरमें कहीं भी इस पंचांगका उपयोग करनेकी प्रक्रिया तथा उत्तर अक्षांश १ से २८ तक साम्पातिक कालसे निरयन सूक्ष्म लग्न बनानेकी सारणी आदि अनेक विषय बहुत उपयोगी हैं। प्रत्येक वर्ष इस पंचांगमें फलित सम्बन्धी विशिष्ट विद्वान्का कोई अन्वेषणात्मक लेख भी दिया जाता है। इस वर्ष प्रस्तुत पंचांगमें "अष्टकवर्ग सूर्य चंचाचक्र" की प्रक्रिया अप्राप्य हस्तलिखित ग्रन्थोंसे दी गई है, जो मनन करने योग्य है। 'जन्म भूमि पंचांग' को गण्यमान्य विद्वानोंका सहयोग प्राप्त है। ऐसे सर्वाङ्गपूर्ण शुद्ध सूक्ष्मगणितसे पंचांग प्रकाशनके लिए सम्पादक बधाईके पात्र हैं। श्री खोना एवं शाह महोदय शुद्धगणित प्रचारार्थ शास्त्रोन्नति में जिस सत्यनिष्ठासे कार्य कर रहे हैं वह श्लाघनीय है। दो वर्ष पूर्व हमने स्वयं 'जन्मभूमि पंचांग कार्यालयका' निरीक्षण किया था। श्री देवशीवीरजी खोना और श्री अमृतलाल शाहसे बम्बईमें ही हमारा परिचय हुआ था। उनकी सहृदयता एवं कार्यप्रणालीसे हमें संतोष हुआ। हिन्दीमें भी 'जन्मभूमि पंचांग' प्रकाशनका परामर्श हमने उसी समय दिया था। तदनुसार इस वर्षके प्रस्तुत पंचांगमें कुछ विषय हिन्दी भाषामें देना प्रारम्भ

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

वार्षिक मूल्य ४।) रु० शीघ्र भिजवाइये

वर्तमान बारहवें वर्षका यह अन्तिम अङ्क आपके हाथमें है। आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः आप आगामी तेरहवें वर्षका मूल्य ४।) चार रुपये चार आने शीघ्रसे शीघ्र कार्यालयमें मनीआर्डर द्वारा भेजकर वर्ष भरके लिए सब प्रतियां सुरक्षित करा लीजिए। कृपा हुआ मनीआर्डर-फार्म इसी अङ्कके साथ भेजा जा रहा है। गत जून माससे भारत सरकारने बुकपोस्ट पर डाक खर्चकी दर दुगुनी कर दी है। अब श्रीस्वाध्यायके साधारण अङ्क पर एक आनेके स्थान पर दो आनेका टिकट लगाना पड़ेगा अतः बाध्य होकर हमें आगामी तेरहवें वर्षसे 'श्रीस्वाध्याय'के मूल्यमें चार आने बढ़ाने पड़े हैं। प्रत्येक ग्राहक अब ४।) सवा चार रुपये भेजें। कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या और पूरा पता स्पष्ट अक्षरोंमें लिखें। विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' लगभग १०० पृष्ठका होगा। उस अङ्कका मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्कका मूल्य ।।-) होगा। परन्तु ता० १५ सितम्बर १९५३ से पहिले मूल्य जमा करा देने वालोंको यह विशेषांक और वर्षभरके शेष सब अङ्क ४।) रु० में ही प्राप्त हो सकेंगे। जो सज्जन समर्थ हैं और श्रीस्वाध्यायसे विशेष स्नेह रखते हैं वे संरक्षक सहायक अथवा कमसे कम ११) रु० भेजकर सम्मान्य ग्राहक बनकर सहयोग देनेकी कृपा करें। सम्मान्य ग्राहकोंके शुभ नाम सधन्यवाद 'नववर्षाङ्क'में प्रकाशित किये जावेंगे।

नये ग्राहक बनाइये

हम अपने प्रत्येक पाठकसे प्रार्थना करते हैं कि वे स्वयं तो मूल्य शीघ्र भिजवा ही दें, साथ ही कमसे कम एक नये ग्राहकका मूल्य भी अवश्य भिजवायें। यदि प्रत्येक सदस्य एक नया ग्राहक बना दें तो हम और अधिक उत्तम सेवा कर सकेंगे। आशा है इस बार श्रीस्वाध्याय-परिवारका प्रत्येक सदस्य अपने इस परम पुनीत कर्तव्यका पालन कर हमें पूर्ण सहयोग देगा। जो सज्जन गत चैत्र मासके 'वसन्ताङ्क'से (अप्रैल १९५३ से) ग्राहक बने हैं उनका मूल्य अभी समाप्त नहीं हुआ है, वे महानुभाव साथके मनीआर्डर फार्म पर किसी अपने परिचित मित्रका वार्षिक मूल्य भिजवानेकी कृपा करें। मनीआर्डर फार्मके कूपन पर पुराने ग्राहकोंको अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखनी चाहिए। यदि नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द अवश्य लिखना चाहिए।

वी० पी० किसीको नहीं भेजी जायेगी

अब आगामी तेरहवें वर्षका 'नववर्षाङ्क' किसी भी ग्राहकको वी० पी० द्वारा नहीं भेजा जायगा। क्योंकि डाक नियमानुसार श्रीस्वाध्यायके नववर्षाङ्ककी V. P. P. वी० पी० पर ॥=) दश आनेका मार्ग व्यय (टिकट) लगेगा। कुछ भले मानुष तो वी० पी० मंगवाकर भी लौटा देते हैं और किसीके समय पर न छुड़ानेसे लौट आती है, अतः कार्यालयको व्यर्थमें हानि उठानी पड़ती है, इसलिए हमने अब वी० पी० न भेजनेका निश्चय किया है। अतः अब कोई ग्राहक वी० पी० द्वारा 'श्रीस्वाध्याय' पानेकी आशामें न रहें। पहले वार्षिक मूल्य ४।) भेज देनेसे ग्राहकोंको दश आनेकी बचत है और अङ्क भी छपते ही उन्हें मिल जाता है। वी० पी० ४॥।)में पड़ती है और सब ग्राहकोंको भेजनेके बाद विलम्बसे मिलती है। इस दृष्टिसे भी पहले मूल्य भेजनेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। जिन ग्राहकोंको अङ्क सुरक्षित न पहुँचने वा डाकमें गुम होनेका भय हो वे वार्षिक मूल्यके साथ ॥) अधिक भेजें तो उन्हें 'नववर्षाङ्क' रजिस्ट्रीसे भेजा जा सकेगा। चारों अङ्क रजिस्ट्रीसे मंगानेके लिए १॥) अधिक भेजना चाहिए।

ग्राहकोंको विशेष लाभ

'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहकोंको विशेष लाभ पहुँचानेके लिए इस वर्ष यह निश्चय किया गया है कि जो २०० दोसौ ग्राहक सर्वप्रथम श्रीस्वाध्यायके तेरहवें वर्षका मूल्य ४।) चार रुपये चार आने मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे उन्हें संस्थाकी ओरसे शीघ्र प्रकाशित होने वाली ॥) मूल्यकी अद्भुत पुस्तक उपहारसें भेंट की जावेगी। तथा ३३) रु० की पुस्तकें २०)में भेजी जावेंगी। [इसका विवरण पृष्ठ ५५ पर देखें] साथ ही व्यापारी ग्राहकोंको किसी भी एक वस्तुकी आगामी १५दिनकी अनुभूत सही रुख वा एक स्पेशल चांस एक अनुभवी तेजी-मंदी-विशेषज्ञ विद्वान्के द्वारा बिना मूल्य भेजा जावेगा। यह श्रीस्वाध्यायके ग्राहक व्यापारियोंके लिए सुवर्ण अवसर है। विजयादशमीसे पहले ४।) तेरहवें वर्षका मूल्य भेज देने वाले ग्राहक ही यह लाभ प्राप्त कर सकेंगे। मनीआर्डरकी रसीद या नम्बरके साथ ही जिस वस्तुका चांस चाहिए उसका नाम और उत्तरके लिए दो आनेका टिकट भेजना चाहिए। आगामी अङ्कमें भारतके बड़े बड़े धुरन्धर विद्वानोंके पूर्वनिश्चित सभी स्तम्भोंके गम्भीर लेख और ज्योतिर्विज्ञान तथा तेजी मंदीके अनुभवी विशेषज्ञोंके लाभप्रद लेख भी प्रकाशित होंगे। तुलालग्नका फल विस्तृत रूपमें दिया जावेगा और ज्योतिष सामुद्रिक स्वरोदय एवं शकुन शास्त्रकी जानकारीसे भरपूर महत्वपूर्ण सामग्री आपको इसमें मिलेगी। पिछले सभी अङ्कोंसे इस 'नववर्षाङ्क'को विशेष उपयोगी बनानेका प्रयत्न किया जा रहा है। जो सज्जन 'श्रीस्वाध्याय'के ५ नये ग्राहकोंका मूल्य २१।) भिजवायेंगे उन्हें एक वर्ष तक 'श्रीस्वाध्याय' निःशुल्क भेजा जायेगा।

पत्र व्यवहार राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही करें

प्रत्येक ग्राहकको चाहिए कि पत्र हिन्दीमें ही लिखें और उत्तरके लिए टिकट वा जवाबी कार्ड भेजना आवश्यक है। उर्दू अंग्रेजी वा अस्पष्ट लिपिमें लिखे गये पत्रों तथा जवाबी पत्रोंके अतिरिक्त अन्य आवश्यक पत्रोंका समय पर उत्तर नहीं दिया जायेगा। पत्र व्यवहार और मनीआर्डरके कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या (जो आपके पतेके चिट–रैपर–पर नाम के साथ लिखी रहती है) अवश्य लिखें।

पत्र-व्यवहार और मूल्य भेजनेका एकमात्र पता—

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)